महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री सागर

श्री राज श्यामाजी

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री सागर

सागर पेहेला नूरका

भोम तले की क्यों कहूं, विस्तार बडो है अत ।
नेक नेक निसान दिए हादियों, मैं करूं सोई सिफत ॥ १

महामति कहते हैं, मैं परमधाम रङ्गभवनकी प्रथम भूमिकाका वर्णन कैसे करूँ, इसका विस्तार ही अनन्त है. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने मुझे संक्षिप्त रूपसे जो सङ्केत दिए थे, उसी शोभाको मैं यहाँ पर व्यक्त कर रहा हूँ.

चौसठ थंभ चबूतरा, दरबाजे तखत बरनन ।
रूह मोमिन होए सो देखियो, करके दिल रोसन ॥ २

मूलमिलावेके प्रासाद (हवेली) के मध्यमें एक चूबतरा है. उस पर चौंसठ स्तम्भ सुशोभित हैं. चारों दिशाओंमें चार द्वार हैं. चबूतरेके मध्यमें दिव्य सिंहासन सुशोभित है. जो आत्माएँ परमधामकी हैं वे अपने हृदयको आलोकित कर इस दिव्यताका अनुभव करें.

म्याराज हुआ महंमद पर, पोहोंच्या हक हजूर ।
सो साहेदी दई महंमदें, सो मोमिन करें मजकूर ॥ ३

रसूल मुहम्मदको जब ध्यानावस्थामें दर्शन हुए उस समय वे धामधनीके

निकट पहुँचे. उन्होंने ही कुरानमें इसकी साक्षी दी है. अब ब्रह्मात्माएँ उस पर चर्चा करेंगी.

सो रूहें अरस दरगाह की, कही महंमद बारे हजार ।
दे साहेदी गिरो महंमदी, जाको वतन नूर के पार ॥ ४

रसूल मुहम्मदने कुरानमें उल्लेख किया है कि परमधाममें बारह हजार ब्रह्मात्माएँ हैं. यह साक्षी श्यामाजीकी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माओंकी है, जिनका मूलघर अक्षरसे भी परे अक्षरातीत परमधाम है.

हुकम से अब केहेत हों, सुनियो मोमिन दिल दे ।
हक सहूरें बिचारियो, हकें सोभा दई तुमें ए ॥ ५

अब मैं श्रीराजजीके आदेश अनुसार वर्णन करता हूँ. हे ब्रह्मात्माओ ! ध्यानपूर्वक सुनो एवं धामधनी प्रदत्त ब्रह्मज्ञानसे विचार करो. स्वयं धामधनीने तुम्हें यह शोभा प्रदान की है.

हकें अरस किया दिल मोमिन, सो मता आया हक दिल से ।
तुमें ऐसी बडाई हकें लिखी, हाए हाए मोमिन गल ना गए इनमें ॥ ६

श्रीराजजीने ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम बनाया है. यह तारतम ज्ञानरूपी सम्पदा भी उनके ही हृदयसे आई है. स्वयं धामधनीने तुम्हारी इतनी बड़ी प्रशंसा की है तथापि खेद है कि ब्रह्मात्माओंका हृदय द्रवित नहीं हो रहा है.

नूर सिफत द्वार सनमुख, और नूर द्वार पीछल ।
एक दाएं बाएं एक, हुआ बेवरा चारों मिल ॥ ७

मूलमिलावेके सम्मुख तथा पीछे ज्योतिर्मय द्वारकी शोभा अवर्णनीय है. इन दोनोंके अतिरिक्त दायीं तथा बायीं ओर भी अन्य दो द्वार हैं. इस प्रकार यहाँ पर चार द्वारोंका उल्लेख है.

सोभित द्वार सनमुख का, नूर थंभ पाच के दोए ।
थंभ नीलवी दो इनों लगते, सोभा लेत अति सोए ॥ ८

सम्मुख (पूर्वकी ओर) के द्वारमें दो ज्योतिर्मय स्तम्भ पाच (रत्नविशेष) के

हैं. इनके साथ संलग्न दो स्तम्भ नीलमणिके हैं. इस प्रकार इनकी शोभा अद्वितीय है.

इन सामी द्वार पीछल, थंभ दोए नीलवी के ।
दो थंभ जो इनों लगते, नूर पाच के थंभ ए ॥ ९

इस मुख्य द्वारके सम्मुख पश्चिम दिशा (पृष्ठभाग) में दो स्तम्भ नीलमणि (नीलवी) के हैं एवं इनके साथके अन्य दो ज्योतिर्मय स्तम्भ पाच रत्नके हैं.

नूर द्वार थंभ दो मानिक, तिन पासे दो पुखराज ।
ए द्वार तरफ दाहिनी, रह्या नूर इत बिराज ॥ १०

दक्षिण दिशामें स्थित ज्योतिर्मय प्रकाशमान द्वारमें दो स्तम्भ माणिक्य (मानिक) के हैं एवं उनके साथके अन्य दो स्तम्भ पुखराज रत्नके हैं. इस प्रकार दायीं ओरके द्वारके ये प्रकाशमय स्तम्भ शोभायमान हैं.

तरफ बाईं द्वार पुखराजी, दो मानिक थंभ तिन पास ।
चार थंभ नूर सरभर, ए अदभुत नूर खूबी खास ॥ ११

बायीं ओर (उत्तर दिशामें) स्थित द्वारमें दो स्तम्भ पुखराजके हैं एवं उनके साथके अन्य दो स्तम्भ माणिक्य (मानिक) के हैं. इस प्रकार प्रकाशसे परिपूर्ण इन चारों स्तम्भोंकी शोभा अद्वितीय है.

नूर चारों पौरी बराबर, जो करत हैं झलकार ।
ए जुबां खूबी तो कहे, जो पाइए कहूं सुमार ॥ १२

चारों दिशाओंके द्वारोंमें एक समान चार तोरण (मेहराब) झलकते हैं. इनकी भव्यताकी अभिव्यक्ति जिह्वाके द्वारा तभी सम्भव हो सकती है जब इस अपरिमित शोभाकी कोई सीमा हो.

थंभ बारे बारे चारों खांचों, कहूं तिनका बेवरा कर ।
बारे नंग चार धात के, रंग जुदे जुदे जोत बराबर ॥ १३

चारों द्वारोंके चार-चार स्तम्भको छोड़कर एक द्वारसे दूसरे द्वार तक चारों कोणों (खाचों) में बारह-बारह स्तम्भ हैं. इनका विवरण इस प्रकार है, ये बारह स्तम्भ रत्नजड़ित हैं. अन्य चार स्तम्भ धातुओंसे निर्मित हैं. विभिन्न

रङ्गोंके इन स्तम्भोंका प्रकाश एक समान है.

नेक देखाए रंग अरस के, कै खूबी रंग अलेखे ।
रूह सहूर करे हक इलमें, हक देखाए देखें ॥ १४

यद्यपि परमधाममें अनेकों रङ्गोंकी शोभा है किन्तु यहाँ पर उनमें-से कतिपय रङ्गोंकी थोड़ी-सी झलक दिखाई है. ब्रह्मात्माएँ तारतम ज्ञानके द्वारा विचार करनेसे एवं स्वयं धामधनीकी आज्ञासे इस शोभाके दर्शन कर सकतीं हैं.

असल पांच नाम रंग के, नीला पीला लाल सेत स्याम ।
एक एक रंगमें कै रंग, सो क्यों कहे जाए बिना नाम ॥ १५

इन स्तम्भोंमें मूलतः पाँच रङ्ग हैं. यथा-नील (नीला), पीत (पीला), रक्त (लाल), श्वेत (सफेद) एवं श्याम (काला). किन्तु एक-एक रङ्गमें अनेकों रङ्गोंकी आभा झलकती है. इन विविध रङ्गों एवं उनकी अनुपम शोभाको किस नामसे विभूषित किया जाए ?

देखो चौसठ थंभ चबूतरा, रंग नंग अनेक अरस ।
नाम लिए न जाए रंगों के, रंग एक पें और सरस ॥ १६

मूलमिलावेके प्रासादके मध्यमें स्थित चबूतरे पर चौंसठ स्तम्भोंकी शोभा देखिए, जहाँ पर परमधामके विविध रङ्गोंके अनेकों रत्न शोभायमान हैं. इन रङ्गोंके नाम लिए नहीं जा सकते क्योंकि सभी एक दूसरेसे बढ़कर सुन्दर हैं.

मैं तो नाम लेत जवेरों, जानों बोहोत नाम लिए जांएं ।
नंग नाम धात कहे बिना, रंग नाम आवे ना जुबांएं ॥ १७

मैं तो इन रत्नोंके नाम ले लेता किन्तु इनके नाम ही अनेक हो जाते हैं. इन रत्नों तथा धातुओंके नामके बिना मात्र रङ्गोंका वर्णन करना जिह्वाके द्वारा सम्भव भी नहीं है.

एकै रस के सब रंग, करें जुदे जुदे झलकार ।
रंग नंग धात तो कहिए, जो आवे कहूं सुमार ॥ १८

ये सभी रङ्ग एक ही रस (दिव्य प्रकाश) के हैं, किन्तु वे विभिन्न रङ्गोंमें प्रकाशित होते हैं. इन रङ्गों तथा रत्नोंकी शोभा शब्दोंमें तभी व्यक्त की जा सकती जब इनकी कोई सीमा हो.

पर हिरदे आवने रूहों के, मैं कै विध करत बयान ।
ना तो क्यों कहूं रंग नंग धात की, ए तो खिलवत बका सुभान ॥ १९

किन्तु परमधामकी यह विविधता ब्रह्मात्माओंके हृदयमें अङ्कित हो जाए इसीलिए मैंने विविध प्रकारसे इनका उल्लेख किया है. अन्यथा श्रीराजजीके इस नित्य, शाश्वत एवं अखण्ड परमधामके इन रत्नों एवं रङ्गोंकी व्याख्या कैसे हो सकती है ?

अरस धात ना रंग नंग रेसम, जित नया न पुराना होए ।
जित पैदा कछू नया नहीं, तित क्यों नाम धरे जाए सोए ॥ २०

परमधाममें धातु, रत्न, रेशम तथा रङ्ग न कभी पुराने होते हैं और न ही नवीन होते हैं. वे तो सदा शाश्वत (एकरूप) हैं. जब कोई वस्तु उत्पन्न ही नहीं होती तो उसे किस नए नामसे विभूषित किया जाए ?

हेम जवेर या जो कछू, सो सब जिमी पैदास ।
तित नाम पैदास के क्यों कहिए, जित पैदा न नास ॥ २१

स्वर्ण, रत्न या अन्य जो कुछ हैं वे सभी इसी भूमिमें उत्पन्न होते हैं. जब परमधाममें कोई वस्तु उत्पन्न ही नहीं होती तो फिर उसके नष्ट होनेका कोई प्रश्न ही नहीं उठता.

थंभ और चीज न आवे सबद में, कर मोमिन देखो सहूर ।
अरस बानी देख विचारिए, तब हिरदें होए जहूर ॥ २२

इसीलिए परमधामके स्तम्भ तथा अन्य सामग्री शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं होती. ब्रह्मात्माएँ इस पर विवेक पूर्वक विचार कर सकतीं हैं. परमधामकी इस वाणी (तारतमवाणी) पर विचार कर देखेंगे तभी हृदय प्रकाशित होगा.

नाम निमूना इत झूठ है, तो भी तिन पर होत साबूत ।
जोत झूठी देख नासूत की, अधिक है मलकूत ॥ २३

सो मलकूत पैदा फना पलमें, कै करत खावंद जबरूत ।
सो रोसनी निमूना देख के, पीछे देखो अरस लाहूत ॥ २४

यद्यपि इस नश्वर संसारके नाम तथा उदाहरण अनित्य हैं तथापि परमधामकी

नित्य वस्तुओंके लिए इनका उदाहरण देना पड़ता है. इस नश्वर जगतकी अनित्य ज्योतिको देखकर वैकुण्ठके अधिक प्रकाशकी कल्पना की जा सकती है. अक्षरधामके स्वामी अक्षरब्रह्म ऐसे अनेक वैकुण्ठ लोकोंको पलमात्रमें बनाकर मिटा सकते हैं. इसीलिए नश्वर जगत, वैकुण्ठ तथा अक्षरधामके प्रकाशको देखकर दिव्य परमधामके अलौकिक प्रकाशका अनुभव करना चाहिए.

इन विध सहूर जो कीजिए, कछू तब आवे रूह लजत ।
और भांत निमूना ना बने, ए तो अरस अजीम खिलवत ॥ २५

जब इस प्रकार चिन्तन करने लगोगे तब आत्माको थोड़ी-सी आनन्दकी अनुभूति हो सकेगी. अन्यथा परमधामके एकान्त स्थल मूलमिलावेके लिए दूसरे उदाहरणका कोई विकल्प भी तो नहीं है.

आगूं नूर मकान की कंकरी, देखत ना कोट सूर ।
तिन जिमी नंग रोसनी, सो कैसो होसी नूर ॥ २६

जब अक्षरधामकी दिव्य भूमिके एक कणमात्रके समक्ष भी करोड़ों सूर्यका प्रकाश निस्तेज हो सकता है तो फिर उस दिव्य भूमिकाके रत्नोंके दिव्य तेजके लिए कौन-सी उपमा दी जाए.

ए नूर मकान कह्या रसूलें, आगूं जाए ना सके क्योंए कर ।
तिन लाहूत में क्यों पोहोंचहीं, जित जले जबराईल पर ॥ २७

अक्षरधामके विषयमें रसूल मुहम्मदने ऐसा उल्लेख किया कि जिब्रील फरिश्ता इससे आगे किसी भी प्रकार नहीं जा सका. वस्तुतः वह दिव्य परमधाममें कैसे पहुँच सकता है, वहाँ पर जाते हुए उसके पङ्ख जलते हैं.

ए देखो तुम रोसनी, हक अरस इन हाल ।
जित पर जले जबराईल, कोई फिरस्ता न इन मिसाल ॥ २८

हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीके इस तेजोमय परमधामकी स्थितिको देखो. जहाँ पर प्रवेश करते हुए जिब्रील फरिश्ताके भी पङ्ख जलने लगते हैं. यद्यपि इसके समान अन्य कोई देवदूत नहीं है.

म्याराज हुआ महंमद पर, नेक तिन किया रोसन ।
अब मुतलक जाहेर तो हुआ, जो अरस में मोमिनों तन ॥ २९

रसूल मुहम्मदको साक्षात्कार हुआ तभी उन्होंने इस दिव्य परमधामका थोड़ा-सा उल्लेख किया. ब्रह्मात्माओंके द्वारा अभी इसीलिए इसका वर्णन हो रहा है कि उनका मूल शरीर अखण्ड परमधाममें ही है.

दिल अरस भी तो कह्या, हकें जान ए निसबत ।
इन गिरो पर म्याराज तो हुआ, जो दिन ऊग्या हक मारफत ॥ ३०

धामधनीने इन ब्रह्मात्माओंको अपनी अङ्गना समझकर उनके हृदयको अपना धाम बनाया है. जब अक्षरातीत धनीकी पूर्ण पहचानका ज्ञानरूपी सूर्य उदय हुआ तभी इन ब्रह्मात्माओंको साक्षात्कार हुआ.

ए जो अंदर अरस अजीम के, खिलवत मासूक या आसक ।
नूरतजल्ला क्यों कहूं, बका वाहेदत हक ॥ ३१

इस दिव्य परमधामके मूलमिलावेमें प्रियतम धनी एवं उनकी अङ्गनाएँ श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं. धामधनीकी इस अद्वैत भूमिकाका वर्णन कैसे किया जाए ?

इन भांत निमूना लीजिए, करियो हक सहूर मोमन ।
तुम ताले आया लुदंनी, तुम देखो अरस रोसन ॥ ३२

हे ब्रह्मात्माओ ! तारतम ज्ञानके द्वारा विचार कर परमधामकी इन विशेषताओंको हृदयङ्गम करो. तुम्हारे लिए ही इस ब्रह्मज्ञानका अवतरण हुआ है. इसलिए तुम परमधामके दिव्य प्रकाशको देखो.

ए तुम ताले तो आइया, जो तुम असल खिलवत ।
निसदिन सहूर एही चाहिए, हक बैठे तुमें खेलावत ॥ ३३

तुम्हारे लिए इस ब्रह्मज्ञानका अवतरण इसी कारण हुआ है कि तुम्हारा सम्बन्ध अद्वैत परमधामके मूलमिलावेसे है. इसलिए अहर्निश इसका चिन्तन करते रहो. यहीं पर बैठाकर धामधनी तुम्हें यह खेल दिखा रहे हैं.

अब गिन देखो थंभ चौसठ, बीच चारों हिसों चार द्वार ।
नाम रंग नंग तो कहिए, जो कित खाली देखूं झलकार ॥ ३४

अब मूलमिलावेके इन चौंसठ स्तम्भोंकी गणना करो. जिसके मध्यमें चारों ओर चार द्वार हैं. इन रत्न जड़ित स्तम्भोंके रङ्गोंका नाम तभी बताया जा सकता है जब इनके प्रकाशसे कोई स्थान खाली दिखाई देता हो.

एक जोत सागर सब हो रह्या, और ऊपर तले सब जोत ।
कै सूर उडें आगूं कंकरी, तिन भोम की जोत उदोत ॥ ३५

इस मूलमिलावेमें दसों दिशाओंमें ऊपर-नीचे सर्वत्र दिव्य प्रकाशका सागर ही तरङ्गित हो रहा है. इस दिव्य भूमिकामें ऐसा उज्ज्वल प्रकाश है कि वहाँके एक कणका प्रकाश भी करोड़ों सूर्योंके प्रकाशको निस्तेज कर सकता है.

चंद्रवा दुलीचा तकिए, सब जोतै का अंबार ।
जित देखों तित जोत में, नूर क्यों कहूं लेहेरें अपार ॥ ३६

मूलमिलावेके ऊपर टँगा हुआ चँदवा तथा नीचे बिछा हुआ कालीन, तकिए आदि सभी प्रकाशपुञ्जकी भाँति चमकते हैं. जहाँ भी देखते हैं वहाँ पर सर्वत्र ज्योतिर्मयी किरणोंकी अपार लहरें उठ रहीं हों ऐसा प्रतीत होता है.

दो दो नंग थंभों के बीच में, बिना नूर न पाइए ठौर ।
दिवाल बंधाई नूर की, क्यों कहूं रंग नंग और ॥ ३७

रत्नोंके दो स्तम्भोंके बीचमें प्रकाशके अतिरिक्त अन्य कोई रिक्तस्थान नहीं है. दोनों स्तम्भोंके बीचका प्रकाश ही दीवारकी भाँति प्रतीत होता है. इन रत्नोंके रङ्गोंकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ?

बीच खाली जित जाएगा, तित लडत थंभों का नूर ।
उत जंग होत नंगन की, तित अधिक नूर जहूर ॥ ३८

दो स्तम्भोंके मध्यमें यदि कोई स्थान खाली भी होगा तो वहाँ पर भी दोनों स्तम्भोंके रत्नोंका प्रकाश परस्पर स्पर्धा करता हुआ होगा जिससे वहाँ पर और अधिक प्रकाश दिखाई देगा.

नूर नूर सब एक हो गई, एक दूजी को खैंचत ।
दूनी जोत बीच खाली मिनें, रंग क्यों गिने जाए इत ॥ ३९

इस प्रकार दोनों स्तम्भोंका प्रकाश परस्पर एक दूसरेको आकृष्ट करता हुआ एकाकार हो जाता है. जिससे दोनों स्तम्भोंके मध्यका खालीस्थान दो गुणा प्रकाशित होता है. यहाँ पर उठती हुई रङ्गमयी किरणोंकी गणना नहीं हो सकती है.

जिमी जात भी रूह की, रूह जात आसमान ।
जल तेज बाए सब रूह को, रूह जात अरस सुभान ॥ ४०

यहाँ पर भूमिसे लेकर आकाश तक जल, तेज, वायु आदि सभी आत्माकी भाँति स्वयं प्रकाशमान तथा चैतन्यस्वरूप हैं. ब्रह्मात्माएँ तो स्वयं धामधनीकी अङ्ग स्वरूपा हैं.

पसू पंखी या दरखत, रूह जिनस हैं सब ।
हक अरस वाहेदत में, दूजा मिले ना कछुए कब ॥ ४१

यहाँके पशुपक्षी तथा वृक्ष आदि भी ब्रह्मात्माओंके समान स्वयं प्रकाशमान एवं चैतन्य स्वरूप हैं. धामधनीकी इस अद्वैत भूमिकामें चैतन्यके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है.

दूजा तो कछू है नहीं, दूजी है हुकम कुदरत ।
सो पैदा फना देखन की, फना मिले न माहें वाहेदत ॥ ४२

चैतन्यके अतिरिक्त यहाँ पर अन्य कुछ भी नहीं है. यदि अन्य कुछ भी है तो वह श्रीराजजीके आदेशका ही चमत्कार है. उसने इसी अद्वैत भूमिकामें ब्रह्मात्माओंको नश्वर जगतका खेल दिखाया अन्यथा अद्वैत भूमिकामें नश्वरता होती ही नहीं है.

जो कछुए चीज अरस में, सो सब वाहेदत माहिं ।
जरा एक बिना वाहेदत, सो तो कछुए नाहिं ॥ ४३

परमधामकी सभी सामग्रियाँ धामधनीके अद्वैत स्वरूपके अन्तर्गत ही आतीं हैं. अद्वैतके अतिरिक्त वहाँ पर अन्य कुछ भी नहीं है.

ए खिलवत हक नूरकी, नूर आला नूर मकान ।
बिछौना सब नूर का, सब नूरै का सामान ॥ ४४

यह मूलमिलावा धामधनीके ही प्रकाशसे परिपूर्ण है. यहाँका भवन तथा उस पर बिछी हुई कालीन आदि सभी सामग्री धामधनीके ही प्रकाशसे परिपूर्ण हैं.

नूर चंद्रवा क्यों कहूं, नूरै की झालर ।
तलें तरफें सब नूर की, देखो नूरै की नजर ॥ ४५

चबूतराके ऊपर सुशोभित चँदवा तथा उसमें लगी हुई झालरें सभी धामधनीके ही प्रकाशसे प्रकाशमय हैं. इसके नीचे चबूतरे पर बिछी हुई कालीन भी उसी प्रकाशसे ओतप्रोत है. जहाँ भी देखते हैं सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त दिखाई देता है.

रूहें मिलावा नूर में, बीच कठेडा नूर भर ।
थंभ तकिए सब नूर के, कछू और ना नूर बिगर ॥ ४६

ब्रह्मात्माएँ इसी प्रकाशमय चबूतरेमें कटहराके अन्दर पूर्णरूपसे भरकर बैठतीं हैं. यहाँके स्तम्भ तथा तकिए आदि भी प्रकाशमय हैं. प्रकाशके अतिरिक्त यहाँ पर अन्य कुछ नहीं है.

तखत सोभित बीच नूर का, नूर में जुगल किसोर ।
बैठे हक बडी रूह नूर में, नूर सोभा अति जोर ॥ ४७

चबूतरेके मध्यमें प्रकाशमय सिंहासन शोभायमान है. इसमें युगलस्वरूप श्रीराजश्यामाजी विराजमान हैं. चारों ओर ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं. उनके दिव्य प्रकाशकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

नूर सरूप रूप नूरके, नूर बस्तर भूषन ।
सोभा सुंदरता नूरकी, सब नूरै नूर रोसन ॥ ४८

उनके दिव्य स्वरूप प्रकाशमय हैं. उनके वस्त्र आभूषण तथा उनकी शोभा एवं सुन्दरता सभी प्रकाशमय हैं जिनसे चारों ओर प्रकाश फैलता है.

गुन अंग इन्द्री नूर की, नूरै बान वचन ।
पिंड प्रकृति सब नूरकी, नूरै केहेन सुनन ॥ ४९

उनके गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ, वाणी, वचन आदि सभी प्रकाशमय हैं. उनके दिव्य विग्रह एवं स्वभाव भी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं साथ ही उनका कथन तथा श्रवण भी प्रकाशयुक्त है.

रूहें बडी रूह नूरमें, नूर हकके सदा खुसाल ।
हक नूर निस दिन बरसत, नूर अरस परस नूरजमाल ॥ ५०

इसी दिव्य प्रकाशमें ब्रह्मात्माएँ तथा श्यामाजी विराजमान हैं. वे धामधनीके दिव्य प्रकाशको देखकर सदा सर्वदा प्रसन्न होतीं हैं. धामधनी रात-दिन उनके ऊपर इसी प्रकाशकी वर्षा करते हैं. इस प्रकार धामधनी एवं ब्रह्मात्माओंका दिव्य प्रकाश परस्पर सुशोभित होता है.

नाम ठाम सब नूरके, कहूं जरा ना नूर बिन ।
मोहोल मंदिर सब नूरके, माहें बाहेर नूर पूरन ॥ ५१

परमधामका कोई भी नाम या स्थान प्रकाश रहित नहीं है. इतना ही नहीं वहाँका एक कण भी प्रकाश विहीन नहीं है. वहाँके प्रासाद, मन्दिर आदि सभी प्रकाशमय हैं. उनके बाहर या अन्दर सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश परिपूर्ण है.

अरस भोम सब नूरकी, नूरै के थंभ दिवाल ।
द्वार बार कमाडी नूरके, नूर गोख जाली पडसाल ॥ ५२

रङ्गभवनकी सभी भूमिकाएँ प्रकाशमयी हैं. वहाँकी दीवार, स्तम्भ, द्वार, चौखट, किवाड़, गवाक्ष, जाली तथा खुलास्थान (पड़साल) आदि सभी प्रकाशसे परिपूर्ण हैं.

मेहेराब झरोखे नूरके, जरे जरा सब नूर ।
अरस माहें बाहेर सब नूरमें, नूर नजीक नूर दूर ॥ ५३

रङ्गभवनके तोरण (मेहराब) तथा झरोखेसे लेकर कण-कण सभी प्रकाशमय हैं. परमधाममें बाहर या भीतर, दूर या निकट सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश शोभायमान है.

नूर नाम रोसनका, दुनी जानत यों कर ।
सो तो रोसनी जित अंधेरकी, दुनी क्या जाने लुदंनी बिगर ॥ ५४

इस नश्वर जगतके प्राणी सूर्यके प्रकाशको ही प्रकाश समझते हैं. यह तो अन्धकारपूर्ण जगतका प्रकाश है. तारतम ज्ञानके बिना जगतके जीव परमधामके प्रकाशको कैसे समझ पाएँगे ?

तले भोम चबूतरा, बैठा हक मिलावा इत ।
हक हादी ऊपर बैठके, गिरोंको खेलावत ॥ ५५

रङ्गभवनकी प्रथम भूमिकामें स्थित मूलमिलावेके चबूतरे पर विराजमान होकर धामधनी श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंको यह नश्वर खेल दिखा रहे हैं.

अरस मता अपार है, दिलमें न आवे बिना सुमार ।
ताथें ल्याऊं बीच हिसाबके, ज्यों रूहें करें बिचार ॥ ५६

परमधामकी सभी सामग्रियाँ अपार हैं. इनको शब्दोंमें सीमित किए बिना हृदयमें ग्रहण नहीं किया जा सकता. इसीलिए इनको शब्दोंके द्वारा व्यक्त कर रहा हूँ जिससे ब्रह्मात्माएँ इस अमूल्य निधि पर विचार कर सकें.

अरस नाहीं सुमारमें, सो हक ल्याए माहें दिल मोमन ।
बेसुमार ल्याए सुमार में, माहें आवने दिल रूहन ॥ ५७

परमधामकी कोई सीमा ही नहीं है. ऐसे परमधामको धामधनीने ब्रह्मात्माओंके हृदयमें अङ्कित कर दिया है. स्वयं ब्रह्मात्माओंके हृदयमें विराजमान होनेके लिए ही धामधनीने इस असीम परमधामको उनके हृदयमें अङ्कित कर दिया है.

इत फिरते साठ मंदिर, तिन बीच गलियां चार ।
चारों तरफों देखिए, जानों जोतैका अंबार ॥ ५८

मूलमिलावेमें चारों ओर साठ मन्दिर शोभायमान हैं. उनके मध्यमें चारों दिशाओंमें चार वीथिकाएँ है. चारों ओर जहाँ भी दृष्टि पड़ती है वहाँ प्रकाशपुञ्ज ही दिखाई देता है.

चौकठ ताके घोडले, और दिवालों चित्रामन ।
सोभा क्यों कहूं जोतमें, भरयो नूर रोसन ॥ ५९

द्वारोंकी चौखटें, ताक (दीवारमें बना हुआ समान रखनेका स्थान), अश्वकी मुखाकृतिकी खूँटियाँ एवं दीवारों पर चित्रित चित्रकारीकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए. ये सभी दिव्य प्रकाशसे परिपूर्ण हैं.

दिवालों चित्रामन, कै जोत उठें तरंग ।
साम सामी ले उठत, करत माहों माहें जंग ॥ ६०

दीवारों पर अङ्कित चित्रकारीसे विभिन्न प्रकारकी ज्योतिर्मयी तरङ्गें उठतीं हैं. आमने-सामनेसे उठी हुई ये तरङ्गें परस्पर द्वन्द्व करती हुई प्रतीत होतीं हैं.

वृख बेली कै जवेर की, सकल बनसपती ।
नकस कटाव केते कहूं, बनी पसू पंखी जात जेती ॥ ६१

यहाँ पर अङ्कित वृक्ष तथा लताएँ रत्नोंकी भाँति प्रतीत होते हैं. इस प्रकार सम्पूर्ण वनस्पति तथा पशुपक्षियोंकी विभिन्न जातियाँ भी यहाँ पर चित्रकारीके रूपमें अङ्कित हैं.

देख देख के देखिए, सोभा अति सुन्दर ।
जैसी देखियत दिवालों, तिनसे अधिक अंदर ॥ ६२

यह सम्पूर्ण शोभा इतनी अधिक सुन्दर है कि इसे देखते रहनेका मन होता है. इन दीवारोंको जैसे-जैसे देखते हैं उनके अन्दरके चित्र एक-दूसरेसे अधिक सुन्दर दिखाई देते हैं.

अधिक चित्रामन अंदर, क्या क्या देखों इत ।
जिनको देखों निरख के, जानों एही अधिक सोभित ॥ ६३

इन दीवारोंके अन्दर विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी सुशोभित हैं. उनमें किन-किनको देखें. जिसको भी देखते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि यही सबसे अधिक सुशोभित है.

अंदर कै बस्तां धरीं, कै सेज्या चौकी संदूक ।
जित सोभा जो लेत है, तित देखिए तिन सलूक ॥ ६४

इन भवनोंमें अनेक वस्तुएँ सुशोभित हैं. यहाँ पर शय्या, चौकी, सन्दूक आदि जो भी वस्तुएँ हैं वे जहाँ पर रखनेसे अधिक सुशोभित हो सकतीं हैं, वहीं पर रखी हुई हैं.

कै सीसे प्याले डबे, कै अंदर गिरद देखत ।
कै तबके छोटी बडियां, कै सीकियां लटकत ॥ ६५

इन वस्तुओंमें अनेक दर्पण, प्याले, डिब्बे आदि चारों ओर शोभायमान हैं साथ ही अनेक छोटी-बड़ी तस्तरियाँ एवं दीवारके साथ लटके हुए छीके भी सुव्यवस्थित दिखाई देते हैं.

अंदर की बस्तां क्यों कहूं, और क्यों कहूं चित्रामन ।
जो मंदिरों अंदर देखिए, तो दिल होवे रोसन ॥ ६६

यहाँ पर अन्दरकी ओर शोभायमान वस्तुओंके विषयमें क्या कहूँ ? दीवारों पर अङ्कित चित्रकारी भी अनुपम है. मन्दिरोंमें सुशोभित इन वस्तुओंको देखते हैं तो हृदयकमल खिल उठता है.

बार साखे द्वार ने, सोभें साठों मंदिरों के ।
सोभें गिरद बराबर, एक एक पें अधिक सोभा ले ॥ ६७

मूलमिलावेमें चारों ओर स्थित साठ मन्दिरोंके द्वारशाख (चौखट) चारों और समान रूपसे दिखाई देते हैं एवं एक दूसरेसे अधिक शोभा धारण करते हैं.

बारीक इन कमाडियों, अनेक चित्रामन ।
रंग नंग या तखतें, ए सब जवेर चेतन ॥ ६८

इनके किवाड़ों पर अति सुन्दर चित्रकारी अङ्कित है. यहाँ पर शोभायमान सिंहासनके रत्नोंका रङ्ग भी चैतन्यवत् प्रतीत होता है.

ना चितारे चेतरी, ना घडी ना किन समारी ।
ए अरस जिमी थंभ मोहोलातें, या दिवालें या द्वारी ॥ ६९

यहाँकी सभी वस्तुएँ किसीके द्वारा चित्रण करने पर चित्रित नहीं हुई हैं, इन्हें न किसीने बनाया है और न ही इनको सम्हारा है. इस दिव्य भूमिके भवन उनकी दीवारें, स्तम्भ, द्वार आदि सभी दिव्य तथा शाश्वत हैं.

किनार दिवालें द्वारने, लाल दोरी दोए दोए ।
मंदिर मंदिर की हद लग, सोभा लेत अति सोए ॥ ७०

द्वारोंके चारों ओर दीवार पर लाल रङ्गकी दो-दो किनारियाँ चित्रित हैं जो एक मन्दिरकी सीमासे लेकर दूसरे मन्दिरकी सीमा तक बहुत ही सुन्दर ढङ्गसे अङ्कित होनेसे अत्यन्त शोभायुक्त लगतीं हैं.

दोरी लगती कांगरी, सब ठौरों गृदवाए ।
चित्रामन तिनके बीच में, जो देखों सो अधिक सोभाए ॥ ७१

दीवार पर चित्रित इन किनारियोंके साथ-साथ द्वारोंके चारों ओर काँगरी हैं. इन किनारियों एवं काँगरियोंके मध्यमें अति सुन्दर चित्र अङ्कित हैं. उन चित्रोंमें जिसको भी देखते हैं वही दूसरेसे अधिक सुन्दर दिखाई देता है.

साठों तरफों मंदिर, नई नई जुदी जुगत ।
ए साठों फेरके देखिए, सोभा और पें और अतंत ॥ ७२

इन साठ मन्दिरोंके चारों ओर नई-नई कलाकृति अलग-अलग ढङ्गसे सुशोभित हैं. सभी मन्दिरोंका अवलोकन करेंगे तो इनकी शोभा एक दूसरेसे बढ़कर सुन्दर लगती है.

क्यों कहूं जुगत अंदर की, क्यों कहूं जुगत बाहेर ।
जित देखों तित लग रहों, जानों नजरों आवे जाहेर ॥ ७३

इन मन्दिरोंके अन्दर तथा बाहरकी कलात्मकताका वर्णन कैसे करें ? जहाँ भी देखते हैं वहीं पर दृष्टि लगी रहती है, मानों ये कलाकृतियाँ मूल रूपमें (सजीव) दिखाई दे रही हो.

उपली भोम चढन को, सीढियां अति सोभित ।
नई नई तरह नए रंगों, सामी जोतें जोत उठत ॥ ७४

ऊपरकी भूमिकामें चढ़नेके लिए यहाँ पर सुन्दर सीढ़ियाँ सुशोभित हैं. इनमें जड़े हुए नवीन प्रकारके रत्नोंसे निकली हुई किरणें परस्पर टकरातीं हैं.

सीढियां अति झलकत, जब सखियां उतर चढत ।
प्रतिबिंब सखियों सोभित, पडघा मीठे स्वर उठत ॥ ७५

ये सीढ़ियाँ उस समय और अधिक चमकतीं हैं जब सखियाँ इनसे चढ़तीं अथवा उतरतीं हैं. उस समय एक तो इनका प्रतिबिम्ब सीढ़ियोंमें झलकता है दूसरा उनके पदाघातकी कर्णप्रियध्वनि अति मनोहारी लगती हैं.

स्वर भूषन के बाजत, मीठे अति रसाल ।
इनकी सोभा क्यों कहूं, जाको खावंद नूर जमाल ॥ ७६

उस समय सखियोंके आभूषणोंके मधुर स्वर अत्यन्त रसप्रद लगते हैं. इन सखियोंकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ जिनके स्वामी स्वयं अक्षरातीत धनी हैं.

सीढियां अति सोभित, माहें मंदिरों सबन ।
कहूं कहूं देहेलान में, जो जित सो तित रोसन ॥ ७७

सभी मन्दिरोंकी कलात्मक सीढ़ियाँ अत्यन्त सुन्दर हैं. कहीं-कहीं पर दालानोंमें भी सीढ़ियाँ हैं. जो सीढ़ी जहाँ पर भी है वह वहाँ पर अति सुन्दर दिखाई देती है.

दो दो थंभ आगूं द्वारने, तिन आगूं दूसरी हार ।
ए थंभ अति बिराजत, सोभा नाहीं सुमार ॥ ७८

मूलमिलावेके चारों द्वारोंके सामने दो-दो स्तम्भ हैं. उनके आगे स्तम्भोंकी दूसरी पङ्क्ति सुशोभित है. ये स्तम्भ अत्यन्त सुन्दर हैं जिनकी शोभाकी व्याख्या ही नहीं हो सकती है.

चार हांस तले थंभ के, आठ ऊपर तिन ।
सोले बीच आठ तिन पर, और चार ऊपर इन ॥ ७९

इन स्तम्भोंमें नीचेकी ओर चार पहल (हाँस) हैं उनके ऊपर आठ एवं उनके ऊपर सोलह पहल हैं . इस प्रकार उनके ऊपर पुनः आठ एवं चार पहल शोभायमान हैं.

इन विध हांस थंभन की, माहें नकस कै कटाव ।
जुदी जुदी जुगतों चित्रामन, माहें जुदे जुदे कै भाव ॥ ८०

इस प्रकार शोभायमान स्तम्भोंके इन पहलोंमें भी विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी है. अलग-अलग चित्रकारीसे अलग-अलग प्रकारके भाव प्रकट होते हैं.

एक एक रंग का जवेर, उसी जवेर में नकस ।
जुदे जुदे कै कटाव, एक दूजी पें सरस ॥ ८१

इन स्तम्भोंमें एक स्तम्भ एक ही रङ्गके रत्नका है, जिसमें अनेक प्रकारकी अलग-अलग चित्रकारी है जो एक दूसरेसे अधिक सुन्दर है.

इनके बीच चबूतरा, इत कठेडा गृदवाए ।
ए खूबी इन चबूतरे, इन जुबां कही न जाए ॥ ८२

इन चौंसठ स्तम्भोंके मध्यमें एक सुन्दर चबूतरा है, जिसके चारों ओर कटहरा शोभायमान है. इस दिव्य चबूतरेकी सुन्दरताका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

तो भी नेक कहूं मैं इन की, जो आए चढत है चित ।
ए जो बैठक खावंद की, सो नेक कहूं सिफत ॥ ८३

तथापि इस चबूतरेकी शोभाका संक्षिप्त वर्णन करता हूँ. जिसकी छवि मेरे स्मृतिपटल पर अङ्कित हो गई है. मध्यमें स्थित धामधनीके दिव्य सिंहासनकी शोभाका भी मैं थोड़ा-सा वर्णन करता हूँ.

भोम उजल कै नकस, कहा कहूं जिमी इन नूर ।
जानों कोटक उदे भए, अरस के सीतल सूर ॥ ८४

यह भूमिका अति उज्ज्वल है. इसमें अनेक प्रकारकी चित्रकारियाँ हैं. इस

भूमिकाके प्रकाशका वर्णन कैसे करूँ ? ऐसा प्रतीत होता है मानों यहाँ पर परमधामके करोड़ों शीतल सूर्य उदय हो गए हों.

फिरते थंभ जो चौसठ, चारों तरफों द्वार ।
दो दो सीढी आगूं द्वारने, सोभित है अति सार ॥ ८५

चबूतरेके चारों ओर चौंसठ स्तम्भ हैं एवं चारों दिशाओंमें चार द्वार हैं. इन द्वारोंके सम्मुख चबूतरेसे नीचे उतरनेके लिए दो-दो सीढ़ियाँ हैं जिनकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है.

कै थंभ हैं मानिक के, कै पाच कै पुखराज ।
नूर रोसन एक दूसरे, मिल जोतें जोत बिराज ॥ ८६

यहाँ पर कतिपय स्तम्भ माणिक्यके हैं तो कतिपय पाच एवं पुखराजके हैं. इन स्तम्भोंसे निकला हुआ प्रकाश एक-दूसरेसे मिलकर इतना सुशोभित होता है, मानों वहाँ पर प्रकाश ही प्रकाश हो.

कै लसनियां नीलवी, एक थंभ एक नंग ।
यों फिरते थंभ नंगन के, जुदे जुदे सब रंग ॥ ८७

इनमें कतिपय स्तम्भ वैदूर्यमणि (लसनियाँ) के हैं तो कतिपय नीलमणिके हैं. ये एक-एक स्तम्भ एक-एक रत्नके हैं. इस प्रकार चारों ओर स्थित ये रत्नमय स्तम्भ अलग-अलग रङ्गके हैं.

सोले थंभो कठेडा, यों थंभ कठेडा किनार ।
कठेडा थंभों लगता, सोले सोले तरफ चार ॥ ८८

चबूतरेके किनार पर चारों दिशाओंके सोलह-सोलह स्तम्भोंमें प्रत्येकके साथ कटहरा शोभायमान है.

थंभ थंभ को देखत, ज्यों सूर के सामी सूर ।
बढत है बीच रोसनी, क्यों कहूं नूर को नूर ॥ ८९

इन एक-एक स्तम्भोंको देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों एक सूर्यके समक्ष दूसरा सूर्य उदय हुआ हो. इनका प्रकाश स्तम्भोंके बीचमें इतना अधिक बढ़ जाता है कि उसका वर्णन ही नहीं हो सकता है.

यों थंभ थंभ जोत में, देखो सबन का जहूर ।
ऊपर तले सब जोत में, जम्या नूर भरपूर ॥ ९०

ये प्रत्येक स्तम्भ ज्योतिर्मय हैं. इन सभीके दिव्य तेजपुञ्जको देखो, ऊपरसे लेकर नीचे तक सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश भरपूर दिखाई देता है.

ऊपर चंद्रवा थंभों लगता, तले जेता चबूतर ।
जडाव ज्यों अति झलकत, एता ही इन पर ॥ ९१

चबूतरेके विस्तारके अनुरूप ही चबूतरेके ऊपर इन स्तम्भों पर चँदवा सुशोभित है. इसकी चित्रकारी भी पूरे चबूतरे पर प्रतिबिम्बित होती है.

कै रंगों के जवेर, करत जोत अपार ।
कै बेल फूल पात नकस, ए सिफत न आवे सुमार ॥ ९२

इस चँदवामें अनेक रङ्गोंके रत्नोंकी चित्रकारी है, जिससे अपार किरणें निकलतीं हैं. इस पर चित्रित अनेक लताएँ, पुष्प तथा पत्ते आदिकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

बिछौना बिछाइया, करत दुलीचा जोत ।
बेल फूल पात नकस, कै उठत तरंग उदोत ॥ ९३

चबूतरे पर बिछा हुआ कालीन भी प्रकाशमय है. इस पर अङ्कित लताएँ, पुष्प तथा पत्तेकी चित्रकारीसे प्रकाशकी तरङ्गें उठतीं हैं.

चारों तरफों दुलीचा, फिरता बिछाया भर कर ।
चबूतरे लग कठेडा, सोभा अति सुंदर ॥ ९४

इस चबूतरे पर चारों ओर पूरा भरकर गलीचा बिछा हुआ है. कटहरा तक लगे हुए इस कालीनकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है.

क्यों कहूं रंग दुलीचे, फिरती दोरी चार ।
स्याम सेत हरी जरद, ए फिरती जोत किनार ॥ ९५

इस कालीनके रङ्गकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? इसके अन्दर गोलाईमें चार रेखाएँ (दोरी) हैं जो क्रमशः श्याम, श्वेत, हरित तथा पीत (जरद) रङ्गकी हैं.

कै विध के कटाव, कै वृख बेली नकस ।
पात फूल बीच फिरते, और पें और सरस ॥ ९६

इस कालीन पर विभिन्न प्रकारके वृक्षों तथा लताओंकी चित्रकारी अङ्कित है. इनके बीच-बीचमें चारों ओर पत्ते तथा फूल सुशोभित हैं जो एकसे बढ़कर सुन्दर हैं.

लग कठेडे तकिए, क्यों कहूं तकियों रंग ।
बारे हजार दाब बैठियां, एक दूजे के संग ॥ ९७

इस कालीनके ऊपर चारों ओर कटहरासे लगते हुए तकिए सुशोभित हैं. इन्हीं तकियोंके साथ बारह हजार ब्रह्मात्माएँ एक-दूसरेसे मिलकर बैठी हुई हैं.

बैठत दोऊ संघासन, चार पाए एक तखत ।
पीछल तकिए दोऊ जुदे, रख्या ऊपर दुलीचे इत ॥ ९८

मध्यमें स्थित सिंहासन पर श्रीराजश्यामाजी विराजमान हैं. इस सिंहासनके चार पाए हैं. उस पर बिछे हुए गलीचेके ऊपर पीछेकी ओर दो तकिए शोभायमान हैं.

मोती रतन मानिक, हीरे हेम पाने पुखराज ।
गोमादिक पाच पिरोजा परवाल, रहे कै रंग नंग धात बिराज ॥ ९९

इस सिंहासनमें मोती, रत्न, माणिक्य, हीरा, हेम, पन्ना, पुखराज, गोमादिक, पाच, पीरोजा, परवाल आदि विभिन्न रङ्गोंके विभिन्न रत्न शोभायमान हैं.

नंग नाम केते कहूं, कहूं केती अरस धात ।
वरनन तखत अरस का, कहा कहे जुबां सुपन नंग जात ॥ १००

परमधामके रत्नों तथा धातुओंमें-से किन-किनके नाम लिए जाएँ, यह तो परमधामके सिंहासनका वर्णन है. इसमें जड़े हुए रत्नोंकी अनुपम शोभाका वर्णन स्वप्नकी जिह्वा द्वारा नहीं हो सकता है.

चार थंभ चार खूट के, छत्री सोभा अति जोर ।
जो कदी नैनों देखिए, तो झूठे तन बंध देवे तोर ॥ १०१

इस सिंहासनके चारों कोनों पर चार स्तम्भ हैं. उन स्तम्भों पर अति उत्तम छत्री सुशोभित है. यदि इस दिव्य सिंहासनका दर्शन हो जाए तो यह आत्मा नश्वर देहके बन्धनको तत्काल तोड़ देगी.

पीछल तकिए दोऊ तरफों, बीच चढती कांगरी चार ।
फूल पात बेल कटाव कै, जुबां कहा कहे नकस अपार ॥ १०२

सिंहासनके पृष्टभागमें दोनों ओर दो तकिए हैं. किनारे पर (चढ़ती) चार काँगरी सुशोभित हैं. इसके अतिरिक्त फूल, पत्ते तथा लताओंकी इतनी चित्रकारी है कि इसकी अपार शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

दोऊ छेडों में थंभ दोए, बीच तीसरा सरभर ।
तिन गुल पर गुल कटाव, नूर रोसन सोभा सुंदर ॥ १०३

सिंहासनके दोनों किनारों पर दो-दो स्तम्भ सुशोभित हैं. इन स्तम्भोंके मध्यमें तीसरा स्तम्भ भी समान रूपसे सुशोभित है. इन स्तम्भों पर फूलोंके ऊपर फूलोंकी चित्रकारियाँ हैं. जिनकी सुन्दर शोभा चारों ओर प्रकाशित होती है.

जो वरनन करूं पूरे पात को, तो चल जाए काहूं उमर ।
तो पात न होवे वरनन, ए अरस तखत यों कर ॥ १०४

इन चित्रकारियोंमें मात्र एक पत्तेका भी वर्णन करने लग जाएँ तो भी पूरी उमर व्यतीत हो सकती है. परमधामका यह सिंहासन इतना सुन्दर है कि इसकी चित्रकारीके पत्ते मात्रका भी वर्णन नहीं हो सकता.

एक पात कै बेल कांगरी, बेल फूल पात कटाव ।
तिन बेलों पात कै बेलें, ऐसे बारीक अति जडाव ॥ १०५

एक ही पत्ते पर अनेक लताएँ एवं काँगरी चित्रित हैं. इस प्रकार लताओं, पुष्पों एवं पत्रोंमें अनेक प्रकारकी चित्रकारी हैं. उनमें भी अन्य अनेक लताएँ तथा पत्र सूक्ष्मरूपसे अङ्कित हैं.

एक नंग बारीक इत देखिए, ताकी जोत न माए आसमान ।
अपार जरे अरस की, ना आवे माहें जुबान ॥ १०६

यहाँके सूक्ष्म रत्नको भी देखते हैं तो उसकी ज्योति आकाशमें नहीं समा रही हो ऐसा प्रतीत होता है. ऐसे अपार रत्नकणोंकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती.

दोऊ तरफों सिंघासन के, बगलों तकिए दोए ।
बारीक तिन कटाव कै, ए वरनन कैसे होए ॥ १०७

सिंहासनके पार्श्वभागमें दोनों (दायीं तथा बायीं) ओर दो तकिए सुशोभित हैं. इनमें भी अति सूक्ष्म चित्रकारियाँ हैं जिनका वर्णन किस प्रकार किया जाए.

ऊपर छत्रियां क्यों कहूं, कै रंग नंग जोत किनार ।
कै दोरी बेली कांगरी, सोभा फिरती तरफ चार ॥ १०८

सिंहासनके ऊपरकी छत्रीका वर्णन कैसे करें ? इसके किनारे पर विभिन्न रङ्गोंके रत्न सुशोभित हैं. इन छत्रियोंके किनारे पर चारों ओर विभिन्न पङ्क्तियोंमें लताएँ तथा काँगरी सुशोभित हैं.

चार थंभ जो पाइयों पर, तिन में बेली अनेक ।
रंग नंग बारीक अलेखे, तिनको क्यों कर होए विवेक ॥ १०९

सिंहासनके चारों पायोंके ऊपर स्थित चारों स्तम्भोंमें भी अनेकों लताएँ चित्रित हैं. इन पर विभिन्न रङ्गके असंख्य रत्न जड़े हुए हैं, उनका वर्णन कैसे हो सकता है ?

चार खूनें के चार नकस, कै कांगरी कटाव फूल ।
बीच पांखडी फिरती फूल ज्यों, ए अरस तखत इन सूल ॥ ११०

चारों कोनों पर चार चित्रकारी हैं. उसमें विभिन्न प्रकारके फूल अङ्कित हैं. मध्यमें पुष्पकी भाँति गोलाकार रूपमें पुष्पदल सुशोभित हैं. इस प्रकार परमधामके सिंहासनकी शोभा अद्वितीय है.

फूल कटाव कै बीच में, कै विध के नकस ।
इन के बीच में मानिक, गृदवाए नीलवी सरस ॥ १११

इन फूल आदिके मध्यमें भी विभिन्न प्रकारकी चित्रकारी हैं. इनके मध्यमें माणिक्य तथा चारों ओर नीलमणि जड़े हुए हैं जो अत्यन्त सुन्दर दिखाई देते हैं.

दोऊ सरूपों ऊपर, दो फूल ज्यों बिराजत ।
देखी और अनेक चित्रामन, पर अचरज एह जुगत ॥ ११२

इस प्रकार दोनों स्वरूपोंके ऊपर पुष्पोंकी भाँति दो छत्रियाँ शोभायमान हैं. सिंहासन पर अन्य भी अनेक चित्रकारियाँ हैं. किन्तु ये दोनों छत्रियाँ युक्तिपूर्वक सुशोभित होनेसे अत्यन्त आश्चर्यजनक हैं.

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस गृदवाए ।
ए आठ कलस है हेम के, सुदर अति सोभाए ॥ ११३

दोनों छत्रियोंके ऊपर दो कलश एवं चारों ओर छः कलश सुशोभित हैं. ये आठों कलश हेम (स्वर्ण) के हैं. जिनकी सुन्दरता अत्यन्त सुशोभित है.

जोर करे जोत जवेर, ऊपर हक तखत ।
ए नूर जिमी आसमान में, रोसन बढयो अतंत ॥ ११४

श्रीराजजीके सिंहासन पर जड़ायमान विभिन्न प्रकारके रत्न अत्यन्त प्रकाशमय हैं. इनकी ज्योतिसे भूमि तथा आकाशका प्रकाश अति देदीप्यमान होता है.

सोए धरया इत तखत, जानों नजर ना छोडूं छिन ।
पल न चाहे बीच आवने, ऐसी सोभा तखत बीच इन ॥ ११५

यहाँ पर ऐसा सुन्दर सिंहासन सुशोभित है कि क्षण भरके लिए भी इससे दृष्टि हटानेकी इच्छा नहीं होती है. इस सिंहासनकी शोभा ही ऐसी है कि इसको देखते हुए पलक भी बन्द होना नहीं चाहती.

एक गादी दोए चाकले, पीछल वाही जिनस ।
चौखूने कटाव कै पसमी, जो देखों सोई सरस ॥ ११६

इस सिंहासन पर एक गद्दा बिछा हुआ है जिस पर दो आसन सुशोभित हैं.

सिंहासनके पीछेकी ओर भी उसी प्रकारकी चित्रकारी है. इन आसनोंके चारों कोनोंमें रेशमके ऊपर चित्रकारी है. इन चित्रकारियोंमें-से जिसको भी देखें वही अधिक सुन्दर दिखाई देती है.

किनार बाएं बीच जवेरके, और रोसन बेसुमार ।
ए तखत नूर जमालका, अरस सब चीजों अपार ॥ ११७

सिंहासनके बायें किनार पर अनेक रत्न सुशोभित हैं. इनका तेजोमय प्रकाश भी अनन्त है. श्रीराजजीका यह सिंहासन परमधामकी अन्य सभी वस्तुओंसे अधिक शोभायुक्त है.

इन सिंघासन ऊपर, बैठे जुगलकिसोर ।
बस्तर भूषन सिनगार, सुंदर जोत अति जोर ॥ ११८

ऐसे दिव्य सिंहासन पर युगलस्वरूप श्रीराजश्यामाजी विराजमान हैं. उनके वस्त्र आभूषण सहित सम्पूर्ण शृङ्गार इतना सुन्दर है कि उसकी ज्योति सर्वत्र विस्तृत हुई है.

एक जोत जुगल की, और बीच बैठे सिंघासन ।
बल बल जाऊं मुखाबिंद की, और बल बल जाऊं चरन ॥ ११९

इस तेजोमय सिंहासन पर विराजमान युगलस्वरूपके मुखकमल तथा चरणकमल पर बार-बार समर्पित होनेका मन होता है.

कहा कहूं जोत रूहन की, और समूह भूषन बस्तर ।
ए कही जोत पूरन सिंध की, जो अव्वल नूर सागर ॥ १२०

चारों ओर बैठी हुई ब्रह्मात्माओंके दिव्य स्वरूप एवं वस्त्र तथा आभूषणकी ज्योतिका वर्णन कैसे करें ? इस तेजपुञ्जको सागरकी उपमा देते हुए इसे सर्वप्रथम नूरसागरकी शोभासे विभूषित किया गया है.

ए सागर भर पूरन, तेज जोत को गंज ।
कै इन सागर लेहेरें उठें, पूरन नूर को पुंज ॥ १२१

यह सागर श्रीराजजीके दिव्य स्वरूपके तेजसे परिपूर्ण है. इसमें अनन्त तरङ्गें उठतीं हैं एवं पूर्ण प्रकाशपुञ्जकी भाँति सुशोभित होतीं हैं.

महामत कहे सिंध दूसरा, सोभा सरूप रूहन ।
ए सुखकारी अति सुंदर, ए बका वतन बीच तन ॥ १२२

महामति कहते हैं, अब मैं दूसरे सागरका वर्णन करता हूँ जो ब्रह्मात्माओंके स्वरूपकी शोभासे परिपूर्ण है. जिनका मूल तन (परात्मा) ही अखण्ड परमधाममें है ऐसी ब्रह्मात्माओंके सुन्दर सुखदायी शोभाका यह सागर है.

प्रकरण १ चौपाई १२२

सागर दूसरा, रूहों की सोभा

हक बैठे रूहें मिलाएके, खेल देखावन काज ।
बडी भई रदबदल, रूहें बडी रूहसों राज ॥ १

खेल दिखानेके लिए ब्रह्मात्माओंको मूलमिलावामें बैठाकर श्रीराजजी स्वयं सिंहासन पर विराजमान हुए. तब श्रीराजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंमें परस्पर परिसम्वाद हुआ.

देखन खेल जुदागीय का, दिलमें लिया रूहन ।
हक आप बैठे तखत पर, खेल रूहों को देखावन ॥ २

ब्रह्मात्माओंने वियोगजन्य खेल देखनेकी उत्कट इच्छा की तभी इनको खेल दिखानेके लिए श्रीराजजी स्वयं सिंहासन पर विराजमान हुए.

देहेसत सबों जुदागीयकी, पर खेल देखन का चाह ।
देखें पातसाही हककी, देखें इसक बडा किन का ॥ ३

ब्रह्मात्माओंके मनमें श्रीराजजीके वियोगका भय भी व्याप्त है एवं खेल देखनेकी इच्छा भी प्रबल है. वे चाहतीं हैं कि श्रीराजजीकी प्रभुसत्ताको देखकर किसका प्रेम बड़ा है वह अनुभव करें.

एह जोत जो जोतमें, बैठियां ज्यों सब मिल ।
क्यों कहूं सोभा इन जुबां, बीच सुंदर जोत जुगल ॥ ४

सभी ब्रह्मात्माएँ एक ज्योतिके साथ दूसरी ज्योतिकी भाँति परस्पर मिलकर बैठी हुई हैं. इनके बीचमें युगलस्वरूप श्रीराजश्यामाजी विराजमान हैं. उनकी दिव्य शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा कैसे करूँ ?

सुंदर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए ।
यों सबे हिल मिल रही, सरूप कहे न जावें दोए ॥ ५

सभी ब्रह्मात्माएँ एक साथ मिलकर इस प्रकार बैठ गई हैं जैसे वे सभी एक स्वरूप हों. वे इस प्रकार हिल-मिलकर बैठीं हैं कि जिससे यह नहीं कहा जा सकता कि यहाँ पर कोई दो स्वरूप हैं.

एक सरूप होए बैठियां, माहें बस्तरों कै रंग ।
क्योंए बरनन न होवहीं, रंग रंग में कै तरंग ॥ ६

यद्यपि सभी ब्रह्मात्माएँ एक स्वरूप होकर बैठ गई हैं तथापि उनके वस्त्रोंमें विभिन्न रङ्ग दिखाई देते हैं. इन रङ्गोंसे उठती हुई तरङ्गोंका वर्णन किसी भी प्रकारसे नहीं हो सकता है.

देखो अंतर आंखे खोलके, तो आवे नजरों विवेक ।
बरनन ना होवे एक को, गलगलसों लगी अनेक ॥ ७

यदि अन्तर्दृष्टिको खोलकर देखेंगे तभी इनकी अद्वितीय शोभा दृष्टिगोचर हो सकेगी. किसी एककी शोभाका भी वर्णन नहीं हो सकता है, ऐसी अनेक ब्रह्मात्माएँ यहाँ पर परस्पर गले लगकर बैठीं हुई हैं.

एक सागर कह्यो तेज जोतको, दूजो सोभा सुंदर ।
कै तरंग उठें इन रंगों के, खोल देखो आंख अंदर ॥ ८

एक सागर तो ब्रह्मात्माओंके दिव्य तेजका है, दूसरा उनकी सुन्दर शोभाका है. उनके वस्त्र एवं आभूषणोंसे विभिन्न रङ्गोंकी तरङ्गें उठतीं हैं. अन्तर्दृष्टिको खोलकर इस शोभाके दर्शन करें.

ए मेला बैठा एक होएके, रूहें एक दूजीको लाग ।
आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग ॥ ९

ब्रह्मात्माएँ एक दूसरीके साथ इस प्रकार सटकर बैठी हुई हैं कि उनके मध्यसे हाथकी एक अङ्गुली भी निकल नहीं सकती.

गिरदवाए तखत के, कै बैठियां तलें चरन ।
जानों जिन होवें जुदियां, पकड रहें हम सरन ॥ १०

अनेक ब्रह्मात्माएँ सिंहासनके चारों ओर धामधनीके चरणोंमें बैठीं हुई हैं. वे

चाहतीं हैं कि धामधनीसे अलग न हो कर उन्हींके श्रीचरणोंको पकड़कर उनकी ही शरणमें रहें.

चबूतरे लग कठेडा, रहियां चारों तरफों भराए ।
ज्यों मिल बैठियां बीच में, यों ही बैठियां गिरदवाए ॥ ११

ब्रह्मात्माएँ पूरे चबूतरेमें किनारे पर लगे हुए कटहराके साथ भरकर बैठीं हुईं हैं. वे जिस प्रकार मिलकर मध्यमें बैठीं हैं उसी प्रकार चारों ओर बैठीं हैं.

एक दूजीको अंक भर, लग रहियां अंगों अंग ।
दिलमें खेल देखनका, है सबों अंगों उछरंग ॥ १२

सभी ब्रह्मात्माएँ एक दूसरेके कण्ठमें बाँहे डालकर तथा अङ्गसे अङ्ग मिलाकर बैठीं हुईं हैं. उनके मनमें खेल देखनेकी उत्कण्ठा है जिससे उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग पुलकित हुए हैं.

जाने जिन कोई जुदी पडे, ए डर दिल में ले ।
मिल कर बैठियां एक होए, बडी अचरज बैठक ए ॥ १३

मानों परस्पर वियुक्त हो जानेका भय हृदयमें लेकर ये सभी ब्रह्मात्माएँ एक साथ मिलकर बैठीं हुईं हैं. इसलिए उनकी यह बैठक अति अद्भुत दिखाई देती है.

अतंत सोभा लेत हैं, कबूं ना बैठियां यों कर ।
यों बैठियां भर चबूतरे, दूजा सोभा अति सागर ॥ १४

इस प्रकार अनन्त शोभा लिए ये ब्रह्मात्माएँ आज तक कभी ऐसे नहीं बैठीं थीं. जिस प्रकार आज पूरे चबूतरेमें छायी हुई अभिन्न रूपसे बैठीं हैं. इससे ऐसा प्रतीत होता है मानों सौन्दर्यका यह दूसरा सागर उमड़ पड़ा हो.

माहें ऊंची नीची कोई नहीं, सब बैठियां बराबर ।
अंग सकल उमंग में, खेल देखन को चाह कर ॥ १५

सभी सखियाँ समान रूपसे बैठीं हैं. कोई भी ऊँची-नीची नहीं है. खेल देखनेकी उत्कण्ठाके कारण उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें उमङ्ग भरा हुआ है.

सोभा सुंदरता अति बडी, हक बडी रूह अरवाहें ।
ए सोभा सागर दूसरा, मुख कह्यो न जाए जुबाएं ॥ १६

श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके विराजमान होनेसे इस चबूतरेकी सुन्दरता अत्यन्त अधिक हो जाती है. इस दूसरे सागरकी अद्वितीय शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

अरस अरवाहों मुख की, जुबां कहा करे वरनन ।
नैन श्रवन मुख नासिका, सोभा सुंदर अति घन ॥ १७

यह नश्वर जिह्वा परमधामकी आत्माओंके मुखारबिन्दकी शोभाका वर्णन कैसे कर पाएगी ? उनके नयन, श्रवण, मुखकमल एवं नासिकाके सौन्दर्यकी शोभा अनुपम है.

गौर रंग लालक लिएं, सोभा सुंदरता अपार ।
जो एक अंग वरनन करूं, वाको भी न आवे पार ॥ १८

गौर वर्णकी ये ब्रह्मात्माएँ लालिमायुक्त मुखमण्डलकी अपार शोभाके साथ अति सुन्दर लगतीं हैं. यदि उनके किसी एक अङ्गकी शोभाका वर्णन करने लगें तो भी उसका पार पाया नहीं जा सकता.

मुख चौक छबि की क्यों कहूं, सोभा हरवटी दंत अधूर ।
बीच लांक मुसकनी कहां लग, केहे केहे कहूं मुख नूर ॥ १९

उनकी मुखाकृतिका वर्णन कैसे करें ? उनका चिबुक (ठोड़ी), दन्तावलि तथा अधर अत्यन्त सुशोभित हैं. मुस्कराते समय चिबुक एवं अधरका भाग बहुत ही सुन्दर लगता है. उनकी ऐसी तेजोमयी आकृतिकी आभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

साडी चोली चरनी, जडाव रंग झलकार ।
कै जवेर केते कहूं, सोभा सागर सुखकार ॥ २०

उनके वस्त्रोंमें साड़ी, चोली, लहङ्गा आदि सभी रत्न जड़ित होनेसे अनेक रङ्गोंमें चमकते हैं. इन वस्त्रोंमें जड़ायमान अनेक रत्नोंकी शोभाका वर्णन कैसे करें, इनकी शोभा सागरके समान सुखकारी है.

रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे वस्तर ।
केते रंग कहूं साडियों, निपट बैठियां मिल कर ॥ २१

एक साथ हिल-मिलकर बैठी हुई इन ब्रह्मात्माओंके वस्त्र अलग-अलग रूपमें सुशोभित हैं. यद्यपि वे सभी मिल कर अभिन्न रूपसे बैठीं हैं तथापि उनकी साड़ियाँ अनेक रङ्गोंमें झलकतीं हैं.

कै साडी रंग सेत की, और कै साडी रंग नीली ।
कै साडी रंग लाल हैं, कै साडी रंग पीली ॥ २२

कतिपय ब्रह्मात्माओंकी साड़ी श्वेत रङ्गकी है तो कतिपयकी नीले रङ्गकी है. इसी प्रकार कितनी ब्रह्मात्माओंकी साड़ी लाल रङ्गकी है तो कितनेकी पीले रङ्गकी है.

एक लाल माहें कै रंग, और कै रंग नीली माहे ।
कै रंग पीली कै सेत में, कै रंग क्यों कहूं जुबांएं ॥ २३

इनमें एक लाल रङ्गमें भी अनेक रङ्ग दिखाई देते हैं एवं एक नीले रङ्गमें भी विभिन्न रङ्ग सुशोभित हैं. इसी प्रकार पीले तथा श्वेत रङ्गमें भी अनेकों रङ्ग हैं जिह्वाके द्वारा जिनका वर्णन नहीं हो सकता है.

मैं नाम लेत एक रंग का, कहूं केते लाल माहें एक ।
एक नाम नीला कहूं, माहें नीले रंग अनेक ॥ २४

यदि मैं इनमें-से एक लाल रङ्गका नाम लूँ तो भी इसमें अन्य अनेक रङ्ग दिखाई देते हैं. इसी प्रकार नीले रङ्गकी बात करूँ तो इसमें भी अनेकों रङ्ग सुशोभित हैं.

इन विध कै रंग वस्तरों, ए वरन्यो क्यों जाए ।
तिनमें भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए ॥ २५

इस प्रकार अनेक रङ्गोंके वस्त्र शोभायमान हैं जिनका वर्णन कैसे किया जाए ? उसमें भी सभी ब्रह्मात्माएँ अलग-अलग न होकर एक साथ मिलकर बैठीं हुई हैं.

अनेक रंगों साडियां, माहें कै वृख बेली पात ।
फल फूल नकस कटाव कै, ताथें वरन्यो न जात ॥ २६

अनेक रङ्गोंकी साड़ियोंमें भी वृक्ष, लताएँ, पत्ते, फल, फूल आदिकी विभिन्न चित्रकारियाँ सुशोभित हैं इसलिए उनका वर्णन नहीं हो सकता है.

कै रंग कहूं वस्तरों, कै कहूं जवेरों रंग ।
इन विध रंग अनेक हैं, ताके उठें कै तरंग ॥ २७

इस प्रकार अनेक रङ्गोंके वस्त्रोंमें अनेक रङ्गोंके रत्न जड़े हुए हैं. इन अनेक रङ्गोंसे उठनेवाली तरङ्गोंका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

कै किरने उठें कंचन की, कै किरने हिरन ।
पाच पांने मोती मानिक, किरने जाए न कही जवेरन ॥ २८

इन वस्त्रोंसे अनेक किरणें कञ्चन रङ्गकी तथा अनेक किरणें हरित रङ्गकी निकलतीं हैं. इसी प्रकार पाच, पन्ना, मोती, माणिक्य आदि रत्नोंसे उठती हुई अनन्त शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

सो किरने लगे जाए ऊपर, और द्वार दिवालों थंभन ।
आवें उतथें किरने सामियां, माहों माहें जंग करें रोसन ॥ २९

वस्त्रोंमें जड़ायमान रत्नोंसे निकली हुई ये किरणें ऊपर चँदवा तक जातीं हैं एवं वहाँसे द्वार, दीवारों तथा स्तम्भों तक पहुँचतीं हैं. उन द्वारों, दीवारों तथा स्तम्भोंसे उठनेवाली किरणोंके साथ इन किरणोंका परस्पर द्वन्द्व होता है.

और चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए ।
वरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए ॥ ३०

इन ब्रह्मात्माओंके वस्त्रोंमें चोली, लहङ्गा आदि उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें समाए हुए हैं. इनके एक अङ्गका भी वर्णन नहीं हो सकता है. इस प्रकार सभी सखियाँ परस्पर अङ्गसे अङ्ग मिलाकर बैठी हुई हैं.

हेम हीरा मोती मानिक, कै रंगों के हार ।
पाच पांने नीलवी लसनिएं, कै जवेरों अंबार ॥ ३१

इन ब्रह्मात्माओंके कण्ठमें हेम (स्वर्ण), हीरा, मोती, माणिक्य, पाच, पन्ना,

नीलमणि, वैदूर्यमणि (लहसुनिया) आदि विभिन्न प्रकारके रत्नोंके अनेक रङ्गोंके चमकते हुए हार सुशोभित हैं.

सोभा अतंत है भूषनों, स्वर बाजत हाथ चरन ।
मीठी बानी अति नरमाई, खुसबोए और रोसन ॥ ३२

इन आभूषणोंकी शोभा भी अनन्त है. ब्रह्मात्माओंके हाथ एवं पाँवके सामान्य हलन-चलन मात्रसे ही इन आभूषणोंमें स्वर मुखरित होता है. उनकी मधुरवाणी, कोमलता, सुगन्ध तथा प्रकाशका वर्णन नहीं हो सकता.

वस्तर भूषन सब अंगों, क्यों कहूं केते रंग ।
एक एक नंग के अनेक रंग, तिन रंग रंग कै तरंग ॥ ३३

इस प्रकार ब्रह्मात्माओंके वस्त्र तथा अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें धारण किए हुए आभूषणोंके रङ्गोंका वर्णन कैसे करूँ ? इनमें जड़े हुए एक-एक रत्नोंसे अनेक रङ्ग निकलते हैं. उन रङ्गोंसे असंख्य तरङ्गें उठतीं हैं.

निलवट श्रवन नासिका, सिर कंठ उर कै हार ।
हाथ पांउ चरन भूषन, अति अलेखें सिनगार ॥ ३४

इन ब्रह्मात्माओंके ललाट, श्रवण, नासिका, सिर, कण्ठ आदि विभिन्न अंग आभूषणोंसे सुशोभित हैं. वक्षस्थल भी अनेक हारोंसे सुशोभित है. उनके हाथ, पाँवमें भी विभिन्न आभूषण हैं. इस प्रकार इनके शृङ्गारका वर्णन नहीं हो सकता है.

जो होवें अरवा अरस की, सो लीजो कर सहूर ।
अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर ॥ ३५

जो आत्माएँ परमधामकी हैं वे परस्पर विचार कर इस दिव्य शृङ्गारका चिन्तन करें. उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंसे उठनेवाला विभिन्न रङ्गके रत्नोंका प्रकाश परस्पर स्पर्धा करता हुआ एक प्रकाशपुञ्जकी भाँति सुशोभित होता है.

महामत कहे बैठियां देख के, हक हंसत हैं हम पर ।
कहे देखों इन विध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर ॥ ३६

महामति कहते हैं, ब्रह्मात्माओंको इस प्रकार एक साथ मिलकर बैठी हुई

देखकर श्रीराजजी मुस्कराते हुए कहते हैं, देखो ! नश्वर खेलमें इस प्रकार एक साथ कैसे रह सकोगी ?

प्रकरण २ चौपाई १५८

ढाल दूसरा, इसी सागरका

लेहेरी सुख सागर की, लेसी रूहें अरस ।
याके सरूप याको देखसी, जो हैं अरस परस ॥ १

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ ही इन विशाल सागरोंकी सुखमयी तरङ्गोंके आनन्दका अनुभव कर सकतीं हैं. ये ही आत्माएँ अपने मूल स्वरूप (पर-आत्मा) को देख सकेंगी क्योंकि उनका पारस्परिक सम्बन्ध है.

ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन ।
वह देखें हमको ख्वाब में, जो असल हमारे तन ॥ २

ब्रह्मात्माओंके इस स्वप्नके स्वरूप पर भी सदैव परमधामके अखण्ड स्वरूप (पर-आत्म) की दृष्टि बनी रहती है. क्योंकि हमारी पर आत्मा इस नश्वर शरीरको स्वप्नमें देख रही है.

उन अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर ।
अंदर चूभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर ॥ ३

पर-आत्माकी आँखें तभी खुलेंगी (उनकी स्वप्नावस्था तभी दूर होगी) जब हम जागृत होकर उनकी ओर देखेंगी. जब ब्रह्मात्माओंके हृदयमें अपना मूल स्वरूप अङ्कित होगा तब यहीं बैठे-बैठे परमधामका अनुभव होगा (परमधाममें जागृत हो जाएँगी).

सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम ।
ए जो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक इलम ॥ ४

यद्यपि हम इस स्वप्नवत् जगतमें अलग-अलग शरीर धारण कर बैठीं हैं तथापि पर-आत्माकी सुरता हमारे ऊपर ही लगी हुई है. इस स्वप्न जगतमें जो बातें कर रहीं हैं वह भी धामधनीका आदेश ही करवा रहा है.

इन विध हक का इलम, हमको जगावत ।
इलम किल्ली हमको दई, तिनसे बका द्वार खोलत ॥ ५

इस प्रकार धामधनी द्वारा प्रदत्त ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) हमें जागृत कर रहा है. धामधनीने सद्गुरुके रूपमें आकर हमें तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी प्रदान की है जिससे परमधामके द्वार खुल जाते हैं.

बीच असल तन और सुपने, पट नींदें का था ।
सो नींद उडाए सुपना रख्या, ए देखो किया हक का ॥ ६

परमधामके मूल शरीर (पर-आत्मा) और इस स्वप्नवत् जगतके स्वप्नके शरीरके मध्यमें अज्ञानरूपी निद्राका आवरण पड़ा था. धामधनीने तारतम ज्ञानके द्वारा निद्राके उस आवरणको तो दूर किया किन्तु स्वप्नको यथावत् बनाए रखा. यह धामधनीकी ही विचित्र लीला है.

ना तो नींद उडे पीछे सुपना, कबलों रेहेवे ए ।
इन विध सुपना ना रहे, पर हुआ हाथ हुकम के ॥ ७

अन्यथा नींदके उड़ जाने पर यह स्वप्न कब तक बना रह सकता ? इस प्रकार यह स्वप्न नहीं रहना चाहिए किन्तु धामधनीके आदेशसे ही यह अभी तक टिका हुआ है.

हुकमें खेल देखाइया, जुदे डारे फरामोसी दे ।
खेल में जगाए इलमें, अब हुकम मिलावे ले ॥ ८

धामधनीके आदेशने ही यह खेल दिखाया है. उसीने अज्ञानका आवरण डालकर इस खेलमें हमें अलग-अलग कर दिया है. यही आदेश हमें तारतम ज्ञानके द्वारा खेलमें भी जागृत कर रहा है. अब यह (हम सभीको) मूलमिलावेका अनुभव कराएगा.

बात पोहोंची आए नजीक, अब जो कोई रेहेवे दम ।
उमेदा तुमारी पूरने, राखी खसमें तुम हुकम ॥ ९

अब परमधाममें जागृत होनेका समय निकट आ गया है. अभी जितने श्वास (समय) शेष रहे हैं उसमें भी तुम्हारी मनोकामनाओंको पूर्ण करनेके लिए

ही धामधनीके आदेशने तुम्हें इस प्रकार खेलमें रखा है.

जो रूहें अरस अजीम की, सो मिलियो लेकर प्यार ।
ए बानी देख फजर की, सब हुजो खबरदार ॥ १०

जो परमधामकी ब्रह्मात्माएँ हैं वे पस्पर प्रेमपूर्वक मिलें. आत्म जागृतिके प्रभातकी यह वाणी सुनकर सभी सावचेत हो जाएँ.

अब फरामोसी क्यों रहे, जब खोल्या बका द्वार ।
रूबरू किए हमको, तन असल नूर के पार ॥ ११

जब पारके द्वार खुल गए हैं तब यह नींद कैसे रह सकेगी ? धामधनीने तो हमें तारतम ज्ञानके द्वारा परमधामके मूलतन (पर-आत्मा) का प्रत्यक्ष अनुभव करवाया है.

बैठी थी डर जिनके, सब हिम मिल एक होए ।
हुकम हक के कौल पर, उलट तुमको जगावे सोए ॥ १२

धामधनीके वियोगके भयकी जिस आशङ्कासे सभी ब्रह्मात्माएँ मूलमिलावेमें एक साथ मिलकर बैठी थीं, अब वे ही धामधनी अपने वचनके अनुसार अपने आदेशके द्वारा तुम्हें जागृत कर रहे हैं.

ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेलै को खैंचत ।
सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत ॥ १३

अन्यथा ये स्वप्नके स्वरूप तो स्वप्नवत् जगतके खेलकी ओर ही खींचते हैं. यह तो श्रीराजजीका आदेश ही है जो इस स्वप्नके तनमें भी श्रीराजजीके साथ तुम्हारा मिलन करा रहा है.

यों सीधी उलटीय से, कौन करे बिना इलम ।
इत जगाए उमेदां पूरन कर, खैंचत तरफ खसम ॥ १४

अन्यथा तारतमज्ञानके अतिरिक्त अन्य कौन-सा ज्ञान परमधामसे विमुख आत्माओंको परमधामकी ओर उन्मुख कर सकता है ? यही ज्ञान ब्रह्मात्माओंके मनोरथोंको पूर्ण कर उन्हें जागृत करते हुए धामधनीसे मिलनेके लिए प्रेरित करता है.

ए होत किया सब हुकम का, ना तो इन विध क्यों होए ।
जाग सुपना मूल तन का, जगाए हुकम मिलावे सोए ॥ १५

धामधनीके आदेशसे ही यह सब हो रहा है अन्यथा इस प्रकार कैसे हो सकता है ? इस स्वप्नके शरीरसे सुरताको जागृत कर मूल शरीरके साथ मिलानेका कार्य धामधनीके आदेशसे ही सम्भव है.

सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरबान ।
ना तो कै मेहेर आपन पर, करत हैं रेहेमान ॥ १६

परमकृपालु धामधनी हम पर कैसी अहैतुकी कृपा कर रहे हैं, इसकी हमें लेशमात्र भी सुधि नहीं है. अन्यथा धामधनी तो हम पर प्रतिपल कृपाकी ही वर्षा कर रहे हैं.

महामत कहे मेहेर हक की, रूहों आवे एक नजर ।
तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करें फजर ॥ १७

महामति कहते हैं, यदि ब्रह्मात्माओंको धामधनीकी अहैतुकी कृपाका लेशमात्र बोध भी हो जाए तो उसी समय अज्ञानरूपी रात मिटकर ज्ञानका प्रभात हो जाएगा.

सागर तीसरा, एक दिली रूहन की

अब कहूं सागर तीसरा, मूल मेला विराजत ।
रूह की आंखों देखिए, तो पाइए इनों सिफत ॥ १

अब तीसरे सागरका वर्णन करता हूँ. यह ब्रह्मात्माओंके एकात्मभावका प्रतीक है. ब्रह्मात्माएँ मूलमिलावामें विराजमान हैं. आत्मदृष्टिसे देखने पर ही इनकी अपार महिमा ज्ञात होगी.

अरस की अरवाहें जेती, जुदी होए ना सकें एक खिन ।
ए माहें क्यों होए जुदियां, असल रूहें एक तन ॥ २

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ क्षणमात्रके लिए भी अपने धनीसे भिन्न नहीं हो सकतीं. इन ब्रह्मात्माओंमें वियोग कैसे हो सकता है ? क्योंकि ये सभी अद्वैत स्वरूपा हैं.

इन सबन की एक अकल, एक दिल एक चित ।
एक इसक इनों का, सनेह कायम हित ॥ ३

इन सबकी बुद्धि, हृदय एवं चित्त एक ही है. इनका परस्पर प्रेम भी इतना प्रगाढ़ है. इनका प्रगाढ़ स्नेह सर्वदा प्रेम-प्रीतिसे भरा रहता है.

इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सब दिल ।
देखो इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल ॥ ४

इनके विशाल हृदयको ही तीसरा सागर कहा है. इन सभी ब्रह्मात्माओंका हृदय विशाल सागरके समान है. इनके हृदयमें प्रवेश कर इन्हें देखें तो ज्ञात होगा कि ये सभी एकसाथ मिलकर किस प्रकार बैठी हुई हैं.

हांस विलास सुख एक है, एक भांत एक चाल ।
तो इन वाहेदत की क्यों कहूं, कौल फैल जो हाल ॥ ५

इनका हास-परिहास, आनन्द-विलास, सुखोंकी अनुभूति आदि सभी एकरूपमें हैं. इनकी जीवन शैली भी एक ही प्रकारकी है. इन अद्वैत स्वरूपा ब्रह्मात्माओंके वचन, आचरण एवं मनःस्थितिका वर्णन कैसे करें ?

तो कह्या वाहेदत इनको, अरस अरवा हक जात ।
ज्यों जोतें जोत उदोत है, त्यों सूरत की सूरत सिफात ॥ ६

इन ब्रह्मात्माओंको इसीलिए अद्वैतस्वरूपा कहा है क्योंकि परमधामकी ये आत्माएँ स्वयं धामधनीकी अङ्गस्वरूपा हैं. जिस प्रकार सूर्यकी ज्योतिसे अन्य सभी ज्योति प्रकाशित होती है उसी प्रकार ये ब्रह्मात्माएँ अक्षरातीत धनीकी ही शक्तिसे ओत-प्रोत हैं.

इन एक दिली रूहन की, ए क्यों कर कही जाए ।
एक रूह कहे गुझ हक का, दूजी अंग उमंग न समाए ॥ ७

इन ब्रह्मात्माओंके एकात्मभावकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ? यदि इनमें-से कोई एक श्रीराजजीके अन्तरङ्ग रहस्यकी बात करती है तो उसे सुनकर दूसरीके हृदयमें उमङ्ग नहीं समाता है.

वह सुख केहेवे अपना, जो किया है हक से ।
दिल दूजी के यों आवत, सब सुख लिया मैं ॥ ८

यदि कोई धामधनीके सान्निध्यमें प्राप्त सुखद अनुभूतिकी बात करती है तो दूसरीको ऐसा आभास होता है कि उसने स्वयं भी उसी प्रकारकी अनुभूति प्राप्त की है.

एकै बात के वास्ते, सुख दूजी को उपज्या यों ।
यों सबन की एकदिली, जुदा वरनन होवे क्यों ॥ ९

यदि कोई ब्रह्मात्मा किसी बातसे आनन्दित होती है तो दूसरीको भी उसी आनन्दका अनुभव होता है. इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माओंमें एकात्म भाव है. इसलिए उनका अलग-अलग वर्णन कैसे करें ?

एक रूह बात करे हक सों, सुख दूजी को होए ।
जब देखिए मुख बोलते, तब सुख पावें दोए ॥ १०

यदि कोई एक ब्रह्मात्मा श्रीराजजीसे वार्तलाप करती है तो उसकी सुखद अनुभूति दूसरीको भी होती है. प्रत्युत्तरमें श्रीराजजीको कुछ कहते हुए देखती है तो दोनों ही आनन्दित हो जातीं हैं.

अरस परस यों हक सों, आराम लेवें सब कोए ।
अति सुख पावें बडी रूह, ए तिने के अंग सब सोए ॥ ११

इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माएँ धामधनीके साथ परस्पर आनन्दका अनुभव करतीं हैं. उससे श्रीश्यामाजीको अपार आनन्दका अनुभव होता है क्योंकि सभी ब्रह्मात्माएँ उनकी ही अङ्गस्वरूपा हैं.

जो सुख पावत बडी रूह, सब तिनके सुख सनकूल ।
ज्यों जल मूल में सींचिए, पोहोंचे पात फल फूल ॥ १२

त्यों सुख जेता हक का, पोहोंचत है बडी रूह कों ।
बडी रूह का सुख रूहन, आवत है सब मों ॥ १३

जब श्यामाजीको आनन्दका अनुभव होता है तब सभी ब्रह्मात्माएँ भी उसी प्रकार आनन्दित होतीं हैं. जिस प्रकार किसी वृक्षके मूलको सींचनेसे उसकी शाखाएँ, पत्ते, फल, फूल आदि सभी हरे-भरे रहते हैं उसी प्रकार

श्रीराजजीसे श्यामाजीको जितना आनन्द प्राप्त होता है, वह आनन्द श्रीश्यामाजीसे सभी ब्रह्मात्माओंको पहुँचता है.

या भूषन या वस्तर, सिनगार के वखत ।
एक पेहेने सुख दूजी को, यों सबों सुख होत अतंत ॥ १४

शृङ्गारके समय यदि एक ब्रह्मात्मा वस्त्र या आभूषण धारण करती है और उससे उसे जितना आनन्द होता है उतना ही आनन्द उसको देखनेवाली दूसरी ब्रह्मात्माको भी होता है. इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माओंको अनन्त सुखका अनुभव होता है.

या जो वखत आरोगने, या कोई अरस लजत ।
सो एक रूह से दूसरी, सुख देख केहे पावत ॥ १५

भोजनलीलाके समय अथवा आनन्दकी अन्य घड़ीमें किसी एक ब्रह्मात्माको जो आनन्दका अनुभव होता है उसे देखकर दूसरी ब्रह्मात्माको भी उसी प्रकारके सुखकी अनुभूति होती है.

ए सुख बातें अरस की, अलेखे अखंड ।
क्यों वरनों मैं इन जुबां, बैठ बीच इन इंड ॥ १६

इस प्रकारके असंख्य सुख परमधाममें हैं. इस नश्वर संसारमें रहकर नश्वर जिह्वाके द्वारा मैं उनका वर्णन कैसे करूँ ?

मै नेक कही इन विध की, सो अरस में विध बेसुमार ।
इन मुख बानी क्यों कहूं, जाको वार न पार ॥ १७

मैंने तो यहाँ पर थोड़ा-सा वर्णन किया है. किन्तु परमधाममें ऐसे अनन्त सुख प्राप्त होते हैं. इस मुखके द्वारा उनका वर्णन कैसे हो सकता है, जिनका कोई पारावार ही नहीं है.

तो कह्या रसूल ने, अरस में वाहेदत ।
सो कह्या इन माएनों, ए रूहें एकदिल एक चित ॥ १८

रसूल साहबने भी इसीलिए कहा कि परमधाममें एकात्मभाव है. यह इसी अर्थमें कहा है कि परमधाममें ब्रह्मात्माएँ एकात्मभाव (एकदिली) में रहतीं हैं.

एक रूह सुख लेत है, सुख पावत बारे हजार ।
तो कही जो चीजें अरस की, सो चीजें चीज अपार ॥ १९

यदि कोई एक ब्रह्मात्माको सुखद अनुभूति होती है तो वही अनुभूति बारह हजार ब्रह्मात्माओंको भी होती है. इसीलिए परमधामकी जिन विशेषताओंका वर्णन हुआ है उनका कोई अन्त नहीं है.

जो कोई चीजें अरस में, बाग जिमी जानवर ।
ताको सुख बल इसक का, सो पार न आवे क्योंए कर ॥ २०

परमधाममें वन, उपवन, भूमि तथा पशुपक्षी आदि जो भी हैं उन सबको प्राप्त होनेवाला सुख तथा उनकी शक्ति श्रीराजजीके ही प्रेमका परिणाम है. इसीलिए इस प्रेमका कोई पारावार नहीं है.

या पसू या वृख कोई, अपार तिनों की बात ।
तो रूहों के सुख क्यों कहूं, ए तो हैं हक की जात ॥ २१

जब परमधामके पशुपक्षी तथा वृक्ष आदिके सुखका भी कोई पारावार नहीं है तो ब्रह्मात्माओंके अपार आनन्दके विषयमें कैसे कहा जाए ? ये तो स्वयं श्रीराजजीकी ही अङ्गस्वरूपा हैं.

जिन किन को संसे उपजे, खेल देख के यों ।
ए जो रूहें अरस की, तिनका इसक न रह्या क्यों ॥ २२

यदि किसीको सन्देह हो जाए कि ये सभी ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीकी ही अङ्गभूता हैं तो इस नश्वर खेलको देखकर श्रीराजजीके प्रति उनका शाश्वत प्रेम क्यों नहीं रहा, अर्थात् कहाँ विलीन हो गया?

इसक रूह दोऊ कायम, और कायम अरस के माहिं ।
क्यों इसक खोवे आवे क्यों, उत कमी कोई आवत नाहिं ॥ २३

जब प्रेम और ब्रह्मात्माएँ दोनों ही परमधाममें शाश्वत हैं तो इस संसारमें आकर ब्रह्मात्माएँ उस प्रेमको कैसे भूल सकतीं हैं. परमधाममें तो किसी भी वस्तुकी कोई कमी नहीं है.

उत कमी क्यों आवहीं, और रूहें आवें क्यों इत ।
और इसक जाए क्यों इनों का, जिनकी एती बडी सिफत ॥ २४

जब परमधाममें किसी भी वस्तुका अभाव नहीं है तो इस जगतमें

ब्रह्मात्माओंका आगमन क्यों हुआ और उन ब्रह्मात्माओंसे यह प्रेम भी कैसे लुप्त हो सकता है, जिसकी इतनी बड़ी महिमा है.

जात हक की कहावहीं, और कहावें माहें वाहेदत ।
जो इलम विचारे हक का, ताको इसक बढत ॥ २५

ये ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीकी ही अङ्गरूपा कहलातीं हैं एवं दिव्य परमधाममें श्रीराजजीके अद्वैत स्वरूपमें शोभायमान हैं. यदि वे धामधनी द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञान पर चिन्तन करेंगी तो उनका प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता चला जाएगा.

ए केहेती हों मैं तिनको, कोई संसे ल्यावे जिन ।
ए अनहोनी हके करी, वास्ते हांसी ऊपर रूहन ॥ २६

ब्रह्मात्माओंके लिए ही मैंने यह सब कहा है जिससे उनके मनमें किसी भी प्रकारकी शङ्का न रहे. ये सभी असम्भव बातें स्वयं धामधनीने सम्भव बनायीं हैं और वह भी अपनी आत्माओंके साथ हँसी करनेके लिए ही है.

ना तो ए कबूं नहीं, जो हक रूहें देखें सुपन ।
एक जरा अरस का, उडावे चौदे भवन ॥ २७

अन्यथा ऐसा कभी भी सम्भव नहीं होता कि धामधनीकी आत्माएँ स्वप्न जगतको देखें. क्योंकि परमधामका एक कण मात्र भी चौदह लोकोंको उड़ा सकता है.

ए हके हिकमत करी, खेल देखाया झूठ रूहन ।
पट दे झूठ देखाइया, नैनों देखें बका वतन ॥ २८

यह तो धामधनीका ही अद्भुत चमत्कार है कि उन्होंने अपनी आत्माओंको यह मिथ्या जगत दिखाया. अज्ञानरूपी निद्राका आवरण डालकर ही ब्रह्मात्माओंको यह मिथ्या खेल दिखाया है. वास्तवमें ब्रह्मात्माओं (पर-आत्मा) के नेत्र तो अखण्ड धामको ही देख रहे हैं.

आडा पट दे झूठ देखाइया, पट न आडे हक ।
सो हक को हक देखत, हुई फरामोसी रंचक ॥ २९

धामधनीने ब्रह्मात्माओं पर निद्राका आवरण डाल कर उन्हें यह खेल दिखाया

है. किन्तु यह आवरण श्री राजजीके सम्मुख नहीं है. वास्तवमें ब्रह्मात्माएँ धामधनीको ही अपने सम्मुख देख रहीं हैं. यह भ्रमका आवरण तो रज्जक मात्र है.

इन विध खेल देखाइया, ना तो रूहें झूठ देखें क्यों कर ।
अपने तन हकें जानके, करी हांसी रूहों ऊपर ॥ ३०

इस प्रकार धामधनीने क्षणमात्रमें यह नश्वर खेल दिखाया है. अन्यथा ये सत्य आत्माएँ इस मिथ्या जगतको कैसे देख सकतीं हैं ? श्रीराजजीने इन्हें अपने अभिन्न अङ्ग समझकर इनके ऊपर थोड़ी-सी हँसी की है.

सो भी किया सुख वास्ते, पर अब सुध किन को नाहिं ।
खेल देसी सुख बडे, जब जागें अरस के माहीं ॥ ३१

यह उपहास भी ब्रह्मात्माओंको आनन्दकी अनुभूति करवानेके लिए ही है परन्तु अभी तक उनमें-से किसीको भी यह सुधि नहीं है. जब वे सभी परमधाममें जागृत होंगी तब इस खेलको स्मरण करते हुए उन्हें अपार सुखका अनुभव होगा.

हादी नूर हैं हक का, और रूहें हादी अंग नूर ।
इन विध अरस में वाहेदत, ए सब हक का जहूर ॥ ३२

श्रीश्यामाजी स्वयं श्रीराजजीके ही अङ्गकी तेजरूपा हैं और ब्रह्मात्माएँ श्रीश्यामाजीके अङ्गकी तेजरूपा हैं. इस प्रकार परमधाममें अद्वैत भाव है क्योंकि ये सभी श्रीराजजीके ही प्रकाशस्वरूप हैं.

महामत कहें ए तीसरा, ए जो रूहों दिल सागर ।
अब कहूं चौथा सागर, पट खोल देखो अंतर ॥ ३३

महामति कहते हैं, यह तीसरा सागर ब्रह्मात्माओंके हृदयके एकात्मभावका सागर है. अब मैं चौथे सागरका वर्णन करता हूँ जिसे अन्तरके पटको खोलकर देखनेका प्रयत्न करो.

प्रकरण ४ चौपाई २०८

श्रीराजजी का सिनगार पेहेला-मंगलाचरन

चौदे तबक की दुनी में, किन कह्या न बका हरफ ।
ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ ॥ १

चौदह लोकोंके प्राणियोंमें किसीने भी परमधामके सन्दर्भमें एक बात भी नहीं की है. वस्तुतः वे परमधामकी बात कैसे कर सकते जबकि अभी तक किसीको भी परमात्माकी दिशा ज्ञात नहीं हुई है.

आया इलम लुदंनी, केहे साहेदी एक खुदाए ।
तरफ पाई हक इलमें, मैं बका पोहोंची इन राहे ॥ २

जब इस जगतमें ब्रह्मज्ञानका अवतरण हुआ उसने ऐसी साक्षी दी कि परब्रह्म परमात्मा एक हैं. मुझे भी इसी ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान) से परमात्माकी दिशा मिली और मैं इसी मार्गसे परमधामका अनुभव कर सका.

अरस देख्या रूहअल्ला, हक सूरत किसोर सुंदर ।
कही वाहेदत की मारफत, जो अरस के अंदर ॥ ३

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने परमधामके दर्शन किए और कहा कि परमात्मा किशोर स्वरूप हैं एवं अत्यन्त सुन्दर हैं. उन्हें परमधाममें जिस अद्वैत स्वरूपकी पहचान हुई उसीका उन्होंने वर्णन किया.

नदी ताल बाग जानवर, जो अरसकी हकीकत ।
रूहअल्ला दई साहेदी, हक हादी खास उमत ॥ ४

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने यमुनाजी, हौजकौसर ताल, वन, उपवन, पशुपक्षी आदि परमधामकी सभी वस्तुओंकी यथार्थता समझाते हुए श्रीराजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके समूहकी साक्षी दी.

महंमद पोहोंचे अरस में, देखी हक सूरत ।
हौज जौए बाग जानवर, कही सब हक मारफत ॥ ५

रसूल मुहम्मदकी सुरता भी परमधाम पहुँची. उन्होंने भी परमात्माका स्वरूप

देखा और हौजकौसर ताल, यमुनाजी, वन, उपवन, पशुपक्षी आदिका परिचय देते हुए परमात्माकी पहचानकी बात की.

देखी अमरद जुल्फें हक की, और बोहोत करी मजकूर ।
कही बातें जाहेर बातून, पोहोंचके हक हजूर ॥ ६

उन्होंने परमात्माके किशोर स्वरूपके दर्शन किए और उनके श्यामल कुन्तल (जुल्फें) युक्त छविको अपने नयनोंमें बसाया एवं उनसे परिचर्चा की. इस प्रकार परमात्माके निकट पहुँचकर उन्होंने प्रकट और अप्रकट विभिन्न प्रकारकी बातें कीं.

ए साहेदी आई इन विध की, कहे खुदा एक महंमद बरहक ।
सो क्यों सुध परे बिना इलम, हक इलमें करी बेसक ॥ ७

रसूल मुहम्मदका यह कथन सत्य है कि सर्वश्रेष्ठ परब्रह्म परमात्मा एक ही हैं. कुरानमें इसी प्रकारकी साक्षी दी गई है. किन्तु तारतम ज्ञानके बिना इसकी सुधि कैसे हो सकती है ? स्वयं परब्रह्म परमात्माने अपना ज्ञान (तारतम ज्ञान) देकर इन सभी शङ्काओंका निवारण किया है.

महंमद की फुरमानमें, कही तीन सूरत ।
बसरी मलकी और हकी, एक अव्वल दो आखरत ॥ ८

कुरानमें मुहम्मदके तीन स्वरूपों (सूरतों) का उल्लेख है. उनमें-से बशरी पहले हुए हैं एवं शेष दो मलकी एवं हकी अन्तिम समयमें होंगे.

मेरी रूह जो वरनन करत है, करी हादियों मेहेरबानगी ।
ना तो अव्वलसे आज लगे, कहूं जाहेर न बका की ॥ ९

मैंने आत्म-दृष्टिसे देखकर परमधामका जिस प्रकार वर्णन किया है वह सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीकी अपार कृपा एवं रसूल मुहम्मदकी साक्षीके आधार पर ही है. अन्यथा सृष्टिके आरम्भसे लेकर आज तक अखण्डकी बात किसीने भी नहीं की है.

आतम चाहे वरनन करूं, जुगल किसोर विध दोए ।
ए दोए वरनन कैसे करूं, दोऊ एक कहावत सोए ॥ १०

मेरी आत्मा चाहती है कि मैं युगलस्वरूप श्रीराजश्यामाजीकी अद्वितीय

छविका वर्णन करूँ. किन्तु इन दोनोंका पृथक्-पृथक वर्णन कैसे करूँ क्योंकि ये दोनों ही अद्वैत स्वरूप हैं.

बरनन होए इलमसे, जो इलम हक का होए ।
एक देखाऊं बातूनमें, जाहेर वरनवूं दोए ॥ ११

स्वयं परब्रह्म परमात्मा प्रदत्त (तारतम) ज्ञानके द्वारा ही उनके स्वरूपका वर्णन हो सकता है. मूलरूपमें तो परब्रह्म परमात्मा एक ही हैं, मात्र लीलाके रूपमें उनके युगलस्वरूपका वर्णन करता हूँ.

रूह चाहे बका सरूप की, वरनन करूं जिमी इन ।
इलम लुदंनी खुदाई से, जो कबहूं न सुनिया किन ॥ १२

मेरी आत्मा इस नश्वर जगतमें रहकर अखण्ड स्वरूपका वर्णन करना चाहती है. स्वयं परब्रह्म परमात्मा प्रदत्त तारतम ज्ञानसे उनके स्वरूपका वर्णन हो सकता है जिनके विषयमें आज तक किसीने भी नहीं सुना है.

जिन जानो ए वरनन, करत आदमी का ।
ए सबथें न्यारा सुभान जो, अरस अजीम में बका ॥ १३

ऐसा नहीं समझना कि मैं किसी व्यक्ति विशेषका वर्णन कर रहा हूँ. परब्रह्म परमात्मा तो क्षर एवं अक्षरसे परे अखण्ड परमधाममें विराजमान हैं.

मलकूत ऊपर हवा सुंन, तिन पर नूर अक्षर ।
नूर पार नूर तजल्ला, ए जो अक्षरातीत सब पर ॥ १४

इस ब्रह्माण्डमें वैकुण्ठ (मलकूत) से आगे शून्य-निराकारका विस्तार है. उससे आगे तेजोमय अक्षरधाम है, ऐसे अक्षरधामसे भी परे अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माका परमधाम है. वह सर्वोच्च कहलाता है.

अरस ठौर हमेसगी, हमेसा हक सूरत ।
सिनगार सबे हमेसगी, ना चल विचल इत ॥ १५

यह परमधाम शाश्वत है एवं इसके स्वामी परब्रह्म परमात्मा भी शाश्वत हैं. इन धामधनीका स्वरूप एवं शृङ्गार भी नित्य है. इस प्रकार परमधाममें किसी भी प्रकारका परिवर्तन नहीं है.

जित जैसा रूह चाहत, तहां तैसा बनत सिनगार ।
नित नए वाहेदत में, सोभा अखंड अपार ॥ १६

दिव्य परमधाममें ब्रह्मात्माएँ जहाँ पर जैसा शृङ्गार चाहतीं हैं वहाँ उसी प्रकारका शृङ्गार होता है. इस प्रकार अद्वैत परमधाममें नित्य नूतन अपार शोभा अखण्ड रूपमें विद्यमान है.

या वस्तर या भूषन, जो दिल रूह चहे ।
सो उन अंगों सोभा लिए, जानों आगूहीं बन रहे ॥ १७

ब्रह्मात्माएँ धामधनीको जैसे वस्त्र या आभूषणोंसे सुसज्जित देखना चाहतीं हैं वे वस्त्राभूषण धामधनीके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें पहलेसे ही सुशोभित हो जाते हैं.

हाथ न लगे भूषन को, जो दीजे हाथ ऊपर ।
चित चाह्या अंगों सब लग रह्या, जुदा होए न आग्या बिगर ॥ १८

श्री राजजीके दिव्य आभूषणोंको हाथसे स्पर्श करना चाहें तो भी स्पर्श नहीं कर सकते. उनका सम्पूर्ण शृङ्गार उनकी इच्छाके अनुरूप ही सुशोभित है. उनकी आज्ञाके बिना वह उनके अङ्गोंसे दूर नहीं होता.

जिन खिन चित जो चाहे, सो आगूंहीं बनि आवे ।
इन विध सिनगार सब समें, नित नए रूप देखावे ॥ १९

जिस क्षण जैसे शृङ्गारकी इच्छा होती है, उस समय वही शृङ्गार दिखाई देता है. इस प्रकार परमधाममें सभीका शृङ्गार नित्य नवीन स्वरूप धारण करता है.

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या नित सुख ।
वाहेदत हमेसा ए सुख, हक सींचल सनमुख ॥ २०

दिव्य परमधाममें न किसी परिधानको धारण करना पड़ता है और न ही उतारना पड़ता है. वहाँ तो इच्छा मात्रसे ही उसका नित्यसुख प्राप्त होता है. अद्वैत भूमिकामें यह आनन्द शाश्वत रूपसे विद्यमान है क्योंकि स्वयं श्रीराजजी सम्मुख होकर इसका सिञ्चन करते हैं.

सबद न लगे सोभा असलें, पर रूह मेरी सेवा चाहे ।
तो वरनन करूं इनका, जानों रूहों भी दिल समाए ॥ २१

धामधनीकी अनुपम शोभाके वर्णनके लिए लौकिक शब्द असमर्थ हैं. किन्तु मेरी आत्मा सेवाभावसे इसका वर्णन करना चाहती है. इसीलिए मैं इसका वर्णन करता हूँ जिससे ब्रह्मात्माओंके हृदयमें उनका स्वरूप अङ्कित हो जाए.

इन जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आसमान ।
तो ए वरनन क्यों होवहीं, अरस साहेब सुभान ॥ २२

परमधामकी दिव्य भूमिकाके एक कण मात्रका प्रकाश भी आकाशमें नहीं समाता है तो फिर ऐसे परमधामके स्वामीके अलौकिक स्वरूपका वर्णन कैसे हो सकता है ?

आसिक क्यों बरनन करें, इसक लिए रेहेमान ।
एक अंगको देखन लगी, सो तितहीं भई गलतान ॥ २३

प्रेमी आत्मा अपने प्रियतम धनीके दिव्य स्वरूपका वर्णन कैसे कर सकती है ? क्योंकि जब उसकी दृष्टि अपने प्रियतमके एक अङ्गमें पड़ती है तो वह उसीमें स्थिर (तल्लीन) हो जाती है.

सोभा जुगलकिसोर की, सुख सागर चौथा ए ।
आवें लेहेरें नेहेरें अति बडी, झीलें अरवाहें जो इन के ॥ २४

युगलस्वरूप श्रीराजश्यामाजीकी अनुपम शोभाका यह चौथा सागर है (जिसे दधि सागर कहा है). इसमें उठती हुई अनन्त लहरोंमें स्नान कर ब्रह्मात्माएँ आनन्दका अनुभव करतीं हैं.

खूबी जुगलकिसोर की, प्रेम वचन इन रीत ।
आसिक इन मासूक की, भर भर प्याले पीत ॥ २५

युगलस्वरूप श्रीराजश्यामाजीके दिव्य प्रेम एवं वचनोंमें यह विशेषता है कि प्रेमी आत्माएँ प्याले भर-भर कर उनकी प्रेमसुधाका पान करतीं हैं. ।

मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन ।
तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन ॥ २६

मेरी आत्मा रूपी नेत्रकी पुतलीके भी यदि नेत्र होते तो मैं उन नेत्रोंमें अपने

प्रियतम धनीकी छविको बसा लूँ जिससे मेरी आत्माको आनन्दकी अनुभूति हो जाए.

मंगलाचरन तमाम

सिर पाग बांधी चतुराईसों, हकें पेच हाथ में ले ।
भाव दिल में लेयके, सुख क्यों कहूं विध ए ॥ २७

श्रीराजजीने हाथमें पेच लेकर बड़े सुन्दर ढङ्गसे अपने सिर पर पाग बाँधी है. श्रीराजजीके इस दिव्य स्वरूपको हृदयमें भावपूर्वक धारण करनेसे जो सुख प्राप्त होता है उसका मैं कैसे वर्णन करूँ ?

केस चुए में भिगोए, लिए जुगतें पेच फिराए ।
पेच दिए ता पर बहुविध, बांधी सारंगी बनाए ॥ २८

श्रीराजजीके श्यामल कुन्तल (केश) सुगन्धित द्रव्यसे भरपूर हैं. उनके ऊपर पर युक्तिपूर्वक पेच घुमाते हुए पागको इस प्रकारसे बाँधा है कि उसकी आकृति सारङ्गी (वाद्ययन्त्र) की भाँति दिखाई देती है.

उजल हस्तकमल सों, कोमल नरम अतंत ।
बांधी हिरदें विचार के, दोऊ क्यों कर करूं सिफत ॥ २९

श्रीराजजीने हृदयकी भावनाके अनुरूप अपने अत्यन्त सुकोमल उज्ज्वल हस्तकमलसे यह पाग मृदुताके साथ बाँधी है. उनकी यह पाग एवं इन सुकोमल हस्तयुगलकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ?

रंग लाल जरी माहें बेल कै, कै फूल पात नकस कटाव ।
कै रंग नंग जबेर झलकें, बलि जाऊं बांधी जिन भाव ॥ ३०

धामधनीके इस लालिमा युक्त पागमें जरीसे अनेक लताएँ, पुष्प एवं पत्तोंकी सुन्दर ढङ्गसे चित्रकारी हुई है. उसमें विभिन्न रङ्गोंके अनेक रत्न झलकते हैं. जिस भावसे धामधनीने सुन्दर पाग बाँधी है उस पर मैं स्वयंको समर्पित करता हूँ.

आसिक एही विचारहीं, तब याही में रहें लपटाए ।
अंदर हक पेचन से, क्यों कर निकस्यो जाए ॥ ३१

अनुरागिनी आत्माएँ यही विचार करतीं रहतीं हैं कि हम धामधनीके इसी

पागमें ही लिपटे रहें. उनकी दृष्टि श्रीराजजी द्वारा बाँधी गई पागके प्रत्येक पेचमें बँध जाती है जिससे उनको उससे बाहर निकलना कठिन हो जाता है.

ऊपर कलंगी लटकत, झलकत है अति जोत ।
याको नूर आसमान में, भराए रह्यो उदोत ॥ ३२

इस पाग पर कलङ्गी सुशोभित है. उसकी ज्योति सर्वत्र झलकती है. उसका तेजोमय प्रकाश पूरे आकाशमें व्याप्त है.

ऊपर सारंगी दुगदुगी, करे जोत झलझलाट ।
ए देखे अंतर आंखें खुलें, ए जो हैडे के कपाट ॥ ३३

सारङ्गीकी आकृति वाले इस पागके ऊपर दुगदुगी (आभूषण विशेष) सुशोभित है. उसकी ज्योति चमकती रहती है. इसकी अद्वितीय शोभाको देखकर अन्तर्दृष्टि खुल जाती है एवं हृदयका आवरण भी दूर हो जाता है.

इन परन का नूर क्यों कहूं, देख देख रूह अटकत ।
और न्यारी जोत नंगन की, ए जो दुगदुगी लटकत ॥ ३४

कलङ्गी पर सुशोभित पङ्खोंकी ज्योतिर्मयी आभा अवर्णनीय है. इसकी अद्वितीय शोभाको देखकर आत्मा स्थिर हो जाती है. इसके नीचे लगे दुगदुगीकी रत्नमयी आभा और भी आकर्षक लगती है.

ऊपर दुगदुगी जो मानिक, आसमान भर्‌यो ताके तेज ।
आसमान जिमी के बीच में, जोत पोहोंची रेजारेज ॥ ३५

इस दुगदुगीमें लगे माणिक्य रत्नका तेजोमय प्रकाश पूरे आकाशमें व्याप्त हो जाता है और आकाश तथा भूमिके मध्यमें कण-कणमें व्याप्त हो जाता है.

सुंदरता इन मुख की, सबद न पोहोंचे कोए ।
नूर को नूर जो नूर है, किन मुख कहूं रंग सोए ॥ ३६

श्रीराजजीके देदीप्यमान मुखमण्डलकी शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है. वह तो प्रकाशके भी प्रकाश समान है. इसकी आभाका वर्णन ही नहीं हो सकता है ।

ए उजल रंग अंग अरस का, माहें गेहेरी लालक ले ।
मुख चौक छबि इनकी, किन विध कहूं मैं ए ॥ ३७

श्रीराजजीका यह तेजोमय अङ्ग अत्यन्त उज्ज्वल है. उसमें गहन लालिमा झलकती है. ऐसे दिव्य मुखमण्डलकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ?

तिलक सोभित रंग कंचन, असल बन्यो सुन्दर ।
चारों तरफों करकरी, सोहे लाल बिंदी अंदर ॥ ३८

उनके ललाट पर कञ्चन (स्वर्णिम) रङ्गका तिलक अत्यन्त सुशोभित है. उसके मध्यमें लाल बिन्दी है जिसके चारों ओर छोटी-छोटी अन्य बिन्दियाँ दिखाई देतीं हैं.

लवने केस कानों पर, तिन केसों का जो नूर ।
आसमान जिमी के बीच में, जोत भराए रही जहूर ॥ ३९

उनके श्रवणके अग्रभाग तक श्यामल कुन्तल सुशोभित हैं. उनका देदीप्यमान प्रकाश आकाश और भूमिके मध्य चारों ओर व्याप्त दिखाई देता है.

नैनन की मैं क्यों कहूं, नूर रंग भरे तारे ।
सेत माहें लालक लिए, सोहें टेढे अनियारे ॥ ४०

उनके नेत्रकमलकी शोभाका वर्णन किन शब्दोंमें करूँ ? उनकी रङ्गमयी पुतलियोंमें प्रकाश ही प्रकाश भरा हुआ है. उनके नुकीले तिरछे नयन श्वेत एवं लालिमायुक्त होकर अत्यन्त सुशोभित हैं.

रूह के नैनों से देखिए, अति मीठे लगे प्यारे ।
कै रंग रस छबि इनमें, निमख न होए न्यारे ॥ ४१

आत्म-दृष्टिसे देखने पर ये मधुर नयन अति प्रिय लगते हैं. धामधनीके इस दिव्य स्वरूपमें अनेक रङ्ग दिखाई देते हैं. जिनके दर्शन करते हुए पलमात्रके लिए भी नेत्रकी पलकें बन्द नहीं होतीं.

नासिका की मैं क्यों कहूं, कोई इनका निमूना नाहिं ।
जिन देख्या सो जानहीं, वाके चूभ रहे हैडे माहिं ॥ ४२

श्रीराजजीकी नासिकाकी सुन्दरता किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ? उसके लिए कोई उपयुक्त उदाहरण ही नहीं है. जिन्होंने इसे देखा है वे ही इस सौन्दर्यका

अनुभव कर सकते हैं. उन्हींके हृदयमें इसकी दिव्य शोभा अङ्कित हो सकती है.

कानन मोती लटकत, उजल जोत प्रकास ।
बीच लालकी लालक, जोत मावत नहीं आकास ॥ ४३

उनके कर्णके आभूषणमें मोती लटक रहे हैं. जिनका प्रकाश अति उज्ज्वल है. इनके मध्यका लाल रत्न रक्तिम आभा लिए बड़ा मोहक लगता है. इसकी ज्योतिर्मयी किरणें आकाशमें भी नहीं समातीं हैं.

लाल बाला अरस धात का, करडे बने चार चार ।
इन मोती और लालकी, रूह देख देख होए करार ॥ ४४

इस श्रवण अङ्गमें परमधामकी ही धातुसे निर्मित लालिमायुक्त बाली है जिसके चार-चार बल (लपेट) पड़े हुए हैं. इसमें मोती एवं रक्तिम आभायुक्त लाल रत्नकी सुन्दरताको देखकर आत्मा आनन्दका अनुभव करती है.

गौर रंग अति गालों के, माहें गेहेरी लालक लिए ।
दोऊ भृकुटी बीच नासिका, ऊपर सुंदर तिलक दिए ॥ ४५

कपोलोंका वर्ण गौर है जिनमें गहरी लालिमा झलकती है. दोनों भृकुटियोंके मध्य नासिकासे लेकर ललाट पर सुन्दर तिलक सुशोभित है.

गौर हरवटी अति सुंदर, बीच लांक ऊपर अधूर ।
बल बल जाऊं मीठे मुख की, मिल दोऊ करें मजकूर ॥ ४६

गौरवर्णका चिबुक (ठोड़ी) अति सुन्दर है. उसके और अधरके मध्यकी गहराई भी अति सुन्दर है. श्रीराजश्यामाजी परस्पर मधुर वार्तालाप करते हैं. उनके दिव्य तेजोमय मुखारविन्द पर मैं स्वयंको समर्पित करता हूँ.

कट कोमल अति पेट पांसली, पीठ गौर सोभे सरस ।
गरदन केस पेच पाग के, छबि क्यों कहूं अंग अरस ॥ ४७

उनका कोमल उदर (पेट), कटि (कमर) तथा पसलियाँ एवं पृष्ठ भागका गौरवर्ण अत्यन्त सुन्दर है. उनकी ग्रीवा (गर्दन) केस तथा पागके पेच (लपेट) भी सुन्दर हैं. इस प्रकार दिव्य परमधामके इन स्वरूपकी आकृतिका वर्णन कैसे करूँ ?

कोमल अंग कंठ हैडा, खभे मछे गौर लाल ।
कोनी कांडे कोमल देखत, आसिक बदलत हाल ॥ ४८

श्रीराजजीके सभी कोमल अङ्ग यथा–कण्ठ, हृदय, भुजाएँ, दोनों ओरका स्कन्धभाग, कोहनी, कलाई आदि लालिमा युक्त गौर वर्णके हैं. जिनको देखकर मनकी स्थिति बदल जाती है.

लीकें सोभित हथेलियां, रंग उजल कहूं के गुलाल ।
रूह थें पलक न छूटहीं, अंग कोमल नूर जमाल ॥ ४९

उनके कोमल हस्तकमलमें रेखाएँ सुशोभित हैं. उसकी रक्तिम आभा अत्यन्त उज्ज्वल है. धामधनीके इन कोमल अङ्गोंके दर्शन करते हुए आत्माकी आँखकी पलकें भी बन्द नहीं होतीं.

नरम अंगुरियां पतली, पोहोंचे सलूकी जुदे भाए ।
रंग सलूकी पोहोंचे हथेलियां, किन मुख कहूं चित ल्याए ॥ ५०

हाथोंकी अङ्गुलियाँ पतली एवं कोमल हैं. मणिबन्ध (कलाई) की मृदुलता सर्वाधिक सुन्दर है. इस प्रकार हथेलियाँ एवं मणिबन्धकी सुन्दरताको हृदयमें धारण कर उसे किन शब्दोंमें व्यक्त करूँ ?

नैन श्रवन मुख नासिका, मुख छबि अति सुंदर ।
देखतहीं आसिक अंगों, चूभ रेहेत हैडे अंदर ॥ ५१

श्रीराजजीके नयन, कर्ण, मुखकमल, नासिका सहित मुखमण्डलकी छवि अत्यन्त सुन्दर है. अनुरागिनी आत्माओंके हृदयमें यह दिव्य स्वरूप देखते ही अङ्कित हो जाता है.

बीडी सोभित मुख मोरत, लेत तंबोल रंग लाल ।
ए वरनन रूह तोलों करे, जोलों लगे न हैडे भाल ॥ ५२

उनके मुखारविन्दमें ताम्बूलका बीड़ा सुशोभित है. इस ताम्बूलके कारण मुखारविन्दकी लालिमा और भी बढ़ जाती है. ब्रह्मात्मा इस अद्वितीय शोभाका वर्णन तभी तक कर सकेगी जब तक उसके हृदयमें प्रेमकी गहरी चोट नहीं लगेगी.

जानों के जोवन नौतन, अजूं चढता है रंग रस ।
ऐसा कायम हमेसा, इन विध अंग अरस ॥ ५३

श्रीराजजीका किशोर स्वरूप नित्य नूतन है. उनके दर्शनसे आनन्दकी उमङ्ग बढ़ती रहती है. परमधामके दिव्य स्वरूपमें इस प्रकार नित्य नवीनता होती है.

सेत जामा अंग लग रह्या, मीहीं चूडी बनी दोऊ बांहें ।
दांवन क्यों वरनन करूं, इन अंग की जुबांएं ॥ ५४

उनके अङ्ग पर श्वेत परिधान (जामा) सुशोभित है. इसकी दोनों बाँहोंकी सलवटें चूड़ियोंकी भाँति लगतीं हैं. इस परिधानके घेरेकी शोभा नश्वर अङ्गकी जिह्वासे किस प्रकार व्यक्त करूँ ?

बेल नकस दोऊ बगलों, चीन झलकत मोहोरी जडाव ।
नकस बेल गिरबान बंध, पीछे अतंत बन्यो कटाव ॥ ५५

दोनों ओर पार्श्वभागमें लताएँ चित्रित हैं. बाँहोंकी कलाईका चूड़ीदार अग्रभाग रत्नजड़ित है. दामनबन्द पर भी लताएँ चित्रित हैं. इसके पृष्टभागमें अत्यन्त सुन्दर चित्रकारी सुशोभित हैं.

ए देत देखाई रंग जवेर, नकस कटाव बेली जर ।
लगत नाहीं हाथ को, रंग नंग धागा बराबर ॥ ५६

इस परिधानमें विभिन्न रङ्गोंके रत्न सुशोभित हैं. जरीसे लताओंकी चित्रकारी हुई है. इसके रङ्ग, रत्न तथा धागा आदि एक समान होनेसे हाथके स्पर्श (छूने) में नहीं आते हैं.

इजार रंग जो केसरी, झांई जामें में लेत ।
दावन जडाव अति जगमगे, रंग सोभे केसरी पर सेत ॥ ५७

केसरिया रङ्गकी चूड़ीदार इजार (पायजामा) की चमक जामे पर भी दिखाई देती है. इसके घेरेमें की गई चित्रकारी भी चमकती है. केसरिया इजारके ऊपर श्वेत रङ्गकी जामा अति सुन्दर सुशोभित है.

नीले पीले के बीच में, झांई लेत रंग दोए ।
सो पटुका कमर बन्या, रंग कह्या सुंदरबाई सोए ॥ ५८

कटि पर नील तथा पीतके मध्यके रङ्गका कटिबन्ध (पटुका) दोनों रङ्गोंमें चमकता है. इस रङ्गके कटिबन्धका उल्लेख सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (सुन्दरबाई) ने किया है.

जरी पटुका कटाव कै, कै नकस बेल किनार ।
पाच पांने हीरे पोखरे, कै रंग नंग झलकार ॥ ५९

इस कटिबन्धके किनारे पर विभिन्न प्रकारकी लताओंकी चित्रकारी है. इसमें पाच, पन्ना, हीरा, पुखराज आदि रत्नोंकी आभा झलकती है.

मनी मानिक लसनियां नीलवी, अतंत उदोतकार ।
फूल पात बेल नकस, ए जोत न छेडों सुमार ॥ ६०

इसके साथ-साथ मणि, माणिक्य, वैदूर्यमणि, नीलमणि आदि रत्न भी अत्यन्त प्रकाशित हो रहे हैं. इसके किनार पर चित्रित लताएँ, पुष्प तथा पत्तोंकी चित्रकारीके प्रकाशकी शोभा भी असीम है.

हेम वस्तर नंग नूर में, नरमाई अतंत ।
जो कोई चीज अरसकी, खुसबोए अति बेहेकत ॥ ६१

देदीप्यमान रत्न जड़ित स्वर्णिम आभायुक्त ये वस्त्र अत्यन्त कोमल हैं. परमधामकी यावत् सामग्री सुगन्धसे परिपूर्ण हैं.

एक हार मोती एक नीलवी, और हार हीरों का एक ।
एक हार लाल मानिक का, एक लसनियां बिसेक ॥ ६२

श्रीराजजीके कण्ठमें मोती, नीलमणि, हीरा, माणिक्य, वैदूर्यमणि (लहसुनिया) आदि रत्नोंके एक-एक हार विशेष रूपमें सुशोभित हैं.

इन हारों में दुगदुगी, नूर नंग कह्यो न जाए ।
जोत अंबर लों उठके, अवकास रह्यो भराए ॥ ६३

इन सभी हारोंके मध्यमें दुगदुगी है जिसके रत्नमय प्रकाशका वर्णन नहीं किया जा सकता. इसकी ज्योति आकाशमें पहुँच कर सर्वत्र व्याप्त हो जाती है.

इन पांचों हारके फुमक, तिन फुमक पांचों रंग ।
रंग पांचों सोभें जुदे जुदे, जरी सोभित धागे संग ॥ ६४

इन पाँचों हारोंके फुँदने भी अलग-अलग पाँच रङ्गोंके हैं. ये पाँचों रङ्ग पृथक्-पृथक् रूपसे सुशोभित हैं. इनके धागेके साथ लगी हुई जरी भी अत्यन्त सुशोभित है.

ए पांच रंग एक कंचन, ताके बने जो बाजूबंध ।
इन जुबां सोभा क्यों कहूं, झूलें फुंदन भली सनंध ॥ ६५

इन पाँचों रत्नोंसे जड़ित स्वर्णके भुजबन्ध बाँहों पर अति सुन्दर लगते हैं. इनमें लगे हुए फुँदने झूलते हुए दिखाई देते हैं. इनकी सुन्दर शोभाका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

दोए पोहोंची दोए जिनस की, मनी मानिक मोती पुखराज ।
हेम हीरा लसनियां नीलवी, दोऊ पोहोंची रही विराज ॥ ६६

दोनों मणिबन्ध पर बँधी हुई सुवर्णकी पहुँची मणि, माणिक्य, मोती, पुखराज, हीरा, वैदूर्यमणि (लहसुनिया) एवं नीलमणि आदि रत्नोंसे अत्यन्त सुसज्जित हैं.

एक पोहोंची एक दुगदुगी, और सात सात दूजीकों ।
सो सातों जिनस जुदी जुदी, आवत ना अकल मों ॥ ६७

धामधनीके आभूषणोंमें पहुँची तथा दुगदुगीमें जड़े हुए उक्त सातों रत्न अलग-अलग सुशोभित होते हैं. इनकी अद्वितीय शोभा बुद्धिकी सीमासे परे है.

पाच पांने हीरे पोखरे, मुंदरी अंगुरियों सात ।
नीलवी मोती लसनियां, साज सोभित हेम धात ॥ ६८

पाच, पन्ना, हीरा, पुखराज, नीलमणि, मोती तथा वैदूर्यमणि (लहसुनिया) आदि रत्न जड़ित सात स्वर्ण मुद्रिकाएँ धामधनीकी सात अङ्गुलियोंमें सुशोभित हैं.

एक अंगूठी आठमी, सो सोभा लेत सब पर ।
सोए एक मानिक की, जुड बैठी अंगूठे भर ॥ ६९

आठवीं अङ्गुष्ठी सबसे अधिक शोभायुक्त है. अंगूठेमें धारण की हुई यह अङ्गुष्ठी माणिक्यकी रक्तिम आभाके कारण अत्यन्त सुन्दर लगती है.

इन मुख नख जोत क्यों कहूं, कै कोट सूरज ढंपाए ।
ए सुखकारी तेज सीतल, ए सिफत न कही जाए ॥ ७०

नश्वर शरीरकी जिह्वासे धामधनीके प्रकाशमय नखोंकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? इनके प्रकाशसे करोड़ों सूर्य ढँक हो जाते हैं. ये दिव्य नख शीतल एवं सुखद तेजयुक्त हैं. इनकी शोभा अवर्णनीय है.

अजब रंग आसमानी का, जुडी जामें मीहीं चादर ।
ए भूषन बेल कटाव जामें, सब आवत माहें नजर ॥ ७१

परिधान (जामा) पर आकाशी रङ्गकी सुन्दर पतली चादर (पीछौरी) सुशोभित है. आभूषण तथा परिधान पर अङ्कित विभिन्न लताओंकी चित्रकारी इस चादरके अन्दर स्पष्ट दिखाई देती हैं.

लाल नीले पीले रंग कै, सोभें छेडों बीच किनार ।
जामें चादर मिल रही, लेहेरी आवत किरनें अपार ॥ ७२

चादरके किनारे पर लाल, नीले तथा पीले रङ्गकी रत्नमयी आभा झलकती है. श्वेत परिधान पर धारण की हुई इस चादरसे निकली हुई अपार किरणें तरङ्गकी भाँति दिखाई देतीं हैं.

गेहेरा रंग जो केसरी, लेत दांवन झांईं इजार ।
सेत केसरी दोऊ रंग के, सोभा होत सुखकार ॥ ७३

गहरे केसरिया रङ्गकी चूड़ीदार इजारकी झलक श्वेत जामेके घेरेमें-से झलकती हुई अति सुन्दर लगती है. इस प्रकार श्वेत तथा केसरिया दोनों रङ्गोंकी शोभा सुखदायी होती है.

नेफे मोहोरी चीन के, बेल बनी मोती नंग ।
लाल नीली पीली चुनियां, सोभित कंचन संग ॥ ७४

चूड़ीदार इजारके नेफे तथा मोहरी पर बहुत-सी सलवटें हैं जिनके चारों ओर

अङ्कित लताओंकी चित्रकारीमें मोती जैसे रत्न जड़ायमान हैं. लाल, नीले तथा पीले रङ्गमें चित्रित छोटे-छोटे फूल स्वर्णके साथ जड़ित होनेसे अति सुन्दर दिखाई देते हैं.

कै रंग इजार बंध में, अनेक विधके नंग ।
सारी ऊमर वरनन करूं, तो होए ना सुपनके अंग ॥ ७५

इजारबन्दमें विभिन्न रङ्गोंके अनेक रत्न सुशोभित हैं. इनकी अद्वितीय शोभाका वर्णन जीवन पर्यन्त करने लगें तो भी स्वप्नकी देहसे यह सम्भव नहीं है.

एक एक रंग नाम लेत हों, रंग रंग में रंग अनेक ।
एकै इजार बंध में, क्यों कहूं रंग नंग विवेक ॥ ७६

इस अनुपम शृङ्गारमें मैंने तो एक-एक रत्नका नाम लिया है. किन्तु एक-एक रत्नमें भी अनेक रङ्गोंकी आभा झलकती है. इस प्रकार एक ही इजारबन्धमें सुशोभित विभिन्न रङ्गोंके रत्नोंका वर्णन कैसे किया जाए ?

याकी रंग सलूकी क्यों कहूं, बका धनीके चरन ।
लांक तली रंग सोभित, ग्रहूं रूह के अंतसकरन ॥ ७७

अखण्ड परमधामके स्वामी श्रीराजजीके श्रीचरणोंकी रङ्गमयी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? उनके चरणतलके अनुपम रङ्गको मैं अपने अन्तःकरणमें स्थापित कर लूँ.

देखूं रंग चरन अंगूठे, और सलूकी कहूं क्यों कर ।
नख उतरते छोटे छोटे, सोभा लेत अंगुरियों पर ॥ ७८

श्रीराजजीके चरणकमलोंके अङ्गुष्ठोंकी सुन्दरताका वर्णन किन शब्दोंमें करूँ ? अङ्गुष्ठसे लेकर कनिष्ठ अङ्गुली तक इनके नख क्रमशः छोटे-छोटे होते गए हैं. अङ्गुलियोंके ऊपर सुशोभित इन नखोंकी अनुपम शोभाका वर्णन हो नहीं सकता है.

फना सोभित रंग सुंदर, टांकन घूंटी कांडे कोमल ।
लांक एडी पीडी पकड, बेर बेर जाऊं बल बल ॥ ७९

श्रीचरणोंकी फणी का रङ्ग अति सुन्दर है. उसके ऊपरी भाग (टांकण), गाठों

तथा काँडा (कड़ा पहनेके स्थान) अति सुकोमल हैं. एड़ियों एवं पिण्डुरियोंके मध्यकी गहराई भी अति सुन्दर है. इस प्रकार धामधनीके सुकोमल चरणकमल पर बार-बार स्वयंको समर्पित करता हूँ.

ए चरन नख अति सोभित, जानों तेज पुंज भर पूर ।
लेहेरें लगें आकास को, नेहेरें चलत तेज नूर ॥ ८०

इन चरणोंके नख अत्यन्त सुन्दर हैं. ऐसा प्रतीत होता है मानों कोई तेजपुञ्ज प्रज्वलित हो रहा है. उनसे उठती हुई ज्योतिर्मयी किरणें आकाशमें तरङ्गोंकी भाँति दिखाई देतीं हैं मानों आकाशमें प्रकाशमय नहरें प्रवाहित हो रही हों

अब जो भूषन चरन के, हेम झांझर घूंघर कडी ।
अनेक रंग नंग झलकें, जानों के जवेर जडी ॥ ८१

चरणोंके सभी आभूषण स्वर्णके हैं. उनमें-से झाँझरी, नूपुर (घुँघरु) एवं कड़ीमें अनेक रङ्गोंकी रत्नमयी आभा झलकती है. ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी रत्नजड़ित हों.

जडी न घडी समारी किने, ए तो कामय सदा असल ।
नई न पुरानी अरस में, इत होत न चल विचल ॥ ८२

इन आभूषणोंको न किसीने बनाया है और न ही कोई इन्हें सम्हारता है. ये तो सदा सर्वदा शाश्वत रूपमें विद्यमान हैं. परमधाममें न कोई वस्तु नई बनती है और न ही कोई पुरानी होती है. वहाँ पर किसी भी प्रकारका परिवर्तन नहीं है.

जरी जवेर रंग रेसम, नकस बेल फूल पात ।
ए सिनगार सोभा कही इन जुबां, पर सबद न इत समात ॥ ८३

इस प्रकार जरी, रत्न, रङ्ग, रेशम तथा लता, पुष्प, पत्र आदिकी चित्रकारीसे सुसज्जित शृङ्गारकी शोभाका वर्णन इस नश्वर जिह्वासे किया है किन्तु इस अद्वितीय शोभाको व्यक्त करनेमें सभी शब्द असमर्थ होते हैं.

अब जो वस्तर भूषन की, क्यों कर होए वरनन ।
इत अकल ना पोहोंचत, और ठौर नहीं बोलन ॥ ८४

इस प्रकार धामधनीके दिव्य वस्त्र एवं आभूषणका वर्णन कैसे हो सकता है

? नश्वर जगतकी यह बुद्धि वहाँ तक पहुँचती नहीं है. इससे अधिक बोला भी नहीं जा सकता.

ए भूषन अरस जवेर के, हक सूरत के अंग ।
कहा कहे रूह इन जुबां, रंग रेसम सोबरन नंग ॥ ८५

श्री राजजीके अङ्गों पर सुशोभित ये सभी आभूषण परमधामके रत्नोंके हैं. इसलिए स्वर्ण पर मण्डित विभिन्न रङ्गोंके इन रत्नोंकी शोभाका वर्णन यह जिह्वा कैसे कर सकती है ?

आसिक इन चरन की, अरस मेला रूहन ।
ए खिलवत खाना गैबका, जिन इत किया रोसन ॥ ८६

धामधनीके दिव्य चरणोंकी अनुरागिनी ब्रह्मात्माएँ मूलमिलावेमें उनके चरणोंमें ही बैठी हुई हैं. उन्होंने ही इस जगतमें (सुरता रूपमें) आकर मूलमिलावेके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया है.

चरन तली ना छूटत, रंग लाल लिए उजल ।
ताए क्यों कहिए आसिक, जो इतथें जाए चल ॥ ८७

उनसे अपने प्रियतम धनीके रक्तिम आभायुक्त उज्ज्वल चरणकमल नहीं छूटते हैं. जो इन चरणोंसे दूर होतीं हैं उन आत्माओंको कैसे अनुरागिनी कहा जाए ?

पांऊं तलें पडी रहें, याको इतहीं खानपान ।
एही दीदार दोस्ती कायम, जो होए अरवा अरस सुभान ॥ ८८

ब्रह्मात्माएँ तो धामधनीके इन चरणोंमें ही पड़ी रहतीं हैं. धनीके चरण ही इनके सब कुछ हैं. इनका आहार-विहार, दर्शन तथा मैत्रीभावका परिचय ही इसीसे है.

इतहीं जगात इत जारत, इत बंदगी परहेजी जान ।
और आसिक न रखे या बिना, इतहीं होवे कुरबान ॥ ८९

इन ब्रह्मात्माओंका दान-पुण्य, तीर्थयात्रा, पूजा-उपासना तथा साधना ही

धामधनीके श्रीचरण हैं. वे इनके बिना अपने शरीरको ही धारण नहीं कर सकतीं. वे तो इन्हीं चरणोंमें समर्पित हैं.

खाना दीदार इनका, यासों जीवें लेवें स्वास ।
दोस्ती इन सरूप की, तिनसे मिटत प्यास ॥ ९०

अपने प्रियतम धनीके दर्शन ही इनका आहार है. इसीके लिए वे श्वास लेती हुई जीवित हैं. धामधनीकी प्रीति (मित्रता) से ही इनकी प्यास मिटती है.

हक खिलवत जाहेर करी, इत सेजदा हैयात ।
इतहीं इमाम इमामत, इतहीं महंमद सिफात ॥ ९१

ऐसे दिव्य परमधामकी अन्तरङ्ग बैठक (मूलमिलावा) का वर्णन मैंने प्रकट रूपमें किया है. यह शाश्वत भूमिका सर्वदा वन्दनीय है. वस्तुतः गुरुका गुरुत्व इसीमें है. इसके लिए ही रसूल मुहम्मदने ब्रह्मात्माओंकी प्रशंसा की है.

कोई खाली न गया इन खिलवतें, कछू लिया हक का भेद ।
सो कहूं जाए ना सके, पड्या इसक के केद ॥ ९२

जिस ब्रह्मात्माने परब्रह्म परमात्माके रहस्यको थोड़ा-सा भी समझ लिया है वह इस मूलमिलावेसे कदापि विमुख नहीं होगी. प्रेममें बँधी हुई ऐसी आत्माएँ इस भूमिकासे दूर जा ही नहीं सकतीं.

आसिक पकडे जो दांवन, तो छूटे नहीं क्योंए कर ।
देखत देखत चीन लगे, तोलों जात निकस उमर ॥ ९३

जो ब्रह्मात्माएँ अपने धामधनीके दामन (जामाका छोर) को एक बार पकड़ लेतीं हैं फिर वह उनसे किसी भी प्रकार छूटता नहीं है. धामधनीके परिधानकी सलवटको देखते हुए उनकी पूरी आयु व्यतीत हो जाती है.

बोहोत अटकाव है आसिक, कछू सेवा भी किया चाहे ।
ए तो वरनन सिनगार, सेवा उमंग रही भराए ॥ ९४

इस प्रकार प्रेमी आत्माके समक्ष अनेक व्यवधान हैं. वह अपने प्रियतम धनीके शृङ्गारका वर्णन भी करना चाहती है और उसके हृदयमें उनकी सेवाका उमङ्ग भी समाता नहीं है.

जो कदी कमर अटकी, तो आसिक न छोडे ए ।
ए लांक पटुका छोडके, जाए न सके उर ले ॥ ९५

यदि किसी ब्रह्मात्माकी दृष्टि धामधनीकी कटि पर पड़ी तो वह वहीं स्थिर हो जाती है. वह कटिके गहरा भाग एवं उस पर बँधे हुए पटुकाको देख कर वक्षस्थल तक नहीं पहुँच सकती.

जो दिल हक का देखिए, तो पूरा इसक का पुंज ।
क्यों छोडे आसिक इनको, हक दिल इसक गंज ॥ ९६

धामधनीके हृदयका भाव समझनेका प्रयत्न करें तो ज्ञात होगा कि उनका हृदय प्रेमसे परिपूर्ण है. ऐसे हृदयको ब्रह्मात्माएँ कैसे भूल सकतीं हैं, जिसमें प्रेमका अथाह प्रवाह प्रवाहित होता है.

मोमिन दिल अरस कह्या, सो अरस हक का घर ।
इसक प्याले हक फूल के, देत भर भर अपनी नजर ॥ ९७

ऐसी ब्रह्मात्माओंके हृदयको ही परमधाम कहा गया है. परमधाम तो वह है जहाँ स्वयं धामधनी विराजमान हैं. इसलिए धामधनी उनको अपनी प्रेममयी दृष्टिसे वारंवार प्रेमसुधाका पान करवाते हैं.

इसक सुराही लेयके, आए बैठे दिल पर ।
इसक प्याले आसिकों, हक देत आप भर भर ॥ ९८

श्रीराजजी अपने प्रेमकी सुराही लेकर ब्रह्मात्माओंके हृदयमें विराजमान हैं और स्वयं प्याले भर-भरकर उनको अपनी प्रेमसुधाका पान करवाते हैं.

जो कदी आवे मस्ती में, तो एक प्याला देवे गिराए ।
सराब तहूरा ऐसा चढे, दिल तबहीं देवे फिराए ॥ ९९

जब कभी ब्रह्मात्माएँ प्रेमसुधाका पान करती हुई अधिक उन्मत्त हो जातीं हैं तो उनको अन्य कोई सुधि नहीं रहती जिससे वे प्रेमके प्यालेको ही गिरा देतीं हैं (श्रीराजजीके प्रेमका महत्त्व नहीं समझतीं) जिससे धामधनी उनकी सुरताको फिराकर नश्वर जगतमें डाल देते हैं.

जाए हक सराब पिलावत, आस बांधत है सोए ।
वाको अरस सराब की, आवत है खुसबोए ॥ १००

जब धामधनी इस नश्वर जगतमें भी उनके समक्ष प्रकट होकर उन्हें प्रेमसुधाका पान करवाते हैं तब ब्रह्मात्माओंमें पुनः आशाका सञ्चार होता है एवं उन्हें परमधामके प्रेमकी सुगन्ध आने लगती है.

आई जो कदी खुसबोए, ए जो अरस की सराब ।
इन मद के चढाव से, देवे तबहीं उडाए ख्वाब ॥ १०१

जब ब्रह्मात्माओंको परमधामके दिव्य प्रेमकी सुगन्धि आने लगती है एवं धामधनीकी प्रेमसुधाका मद चढ़ने लगता है तभी धामधनी उनकी निद्राको उड़ा देते हैं.

आज लगे ढांप्या रह्या, हकें मोहोर करी तिन पर ।
सो अछूत प्याला फूल का, हकें खोल दिया मेहेर कर ॥ १०२

आज तक यह प्रेम छिपा हुआ रहा था. इस पर धामधनीके नामकी मुद्रा अङ्कित थी. अब धामधनीने कृपा कर इस अछूते (अनस्पर्शित) प्रेमपात्रकी ढक्कन खोल दी है अर्थात् सभी शास्त्रोंके गूढ़ रहस्य स्पष्ट कर दिए हैं.

एकों पिया एक पीवत हैं, एक प्याले पीवेंगे ।
खोल्या दरवाजा अरस का, वास्ते अरस अरवाहों के ॥ १०३

अब तो धामधनीने तारतम ज्ञानके द्वारा ब्रह्मात्माओंके लिए परमधामके द्वार खोल दिए हैं. जिससे अनेकों ब्रह्मात्माओंने धामधनीके दिव्य प्रेमसुधाका पान किया है, अनेकों पान कर रहीं हैं और अनेको भविष्यमें करतीं रहेंगी.

अंग आसिक उपले देख के, इतहीं रहे ललचाए ।
जो कदी पैठे गंज में, तो क्यों कर निकस्यो जाए ॥ १०४

ब्रह्मात्माएँ धामधनीके दिव्य स्वरूपकी बाह्य आभाको देखकर उसीमें ललचाती रहतीं हैं. यदि वे धामधनीके दिव्य प्रेमके सरोवरमें डूब जाएँगी तो उससे बाहर कैसे निकल सकेंगी ?

हस्त कमल को देखिए, तो अति खूब कोमल ।
ए छोड आगे जाए ना सके, जो कोई आसिक दिल ॥ १०५

श्रीराजजीके हस्तकमलको देखते हैं तो वे अत्यन्त कोमल एवं सुन्दर लगते हैं. जिनके हृदयमें अत्यधिक प्रेम होगा ऐसी ब्रह्मात्माओंकी दृष्टि इस शोभाको छोड़कर अन्यत्र नहीं जा सकती.

नख अंगुरियां निरखते, मुंदरियां अति झलकत ।
ए रंग रेखा क्यों छूटहीं, आसिक चित गलित ॥ १०६

उनके नख एवं अङ्गुलियोंको देखने पर उनमें पहनी हुई रत्न जड़ित मुद्रिकाएँ झलकती हुई दिखाई देती हैं. धामधनीकी हथेलियोंका उज्ज्वल रङ्ग तथा उसकी रेखाओंसे दृष्टि कैसे हट सकती हैं, क्योंकि प्रेमी आत्माओंका चित्त उसीमें द्रवित होता है.

पोहोंची बांहें बाजूबंध, दोऊ निरखत नीके कर ।
एक नंग और फुंदन, चूभ रेहेत हैडे अंदर ॥ १०७

धामधनीके हस्तकमलमें सुशोभित पहुँची तथा भुजबन्ध दोनोंको भलीभाँति देखने पर इनके रत्न तथा फुँदने दोनों ही हृदयमें अङ्कित हो जाते हैं.

हिरदे कमल अति कोमल, देख इन सरूप के अंग ।
जो आसिक कहावे आपको, क्यों छोडे इनको संग ॥ १०८

धामधनीका हृदयकमल भी अति कोमल है. जो ब्रह्मात्मा स्वयंको धामधनीकी अङ्गना समझती है वह इस दिव्य स्वरूपको देखकर अपनी दृष्टिको इनसे दूर नहीं कर सकती.

हार कंठ गिरवान जो, अति सुंदर सुखदाए ।
लाल लटकत मोती पर, ए सोभा छोडी न जाए ॥ १०९

श्रीराजजीके कण्ठ पर जामेके किनारके ऊपर सुशोभित हार अत्यन्त सुन्दर एवं सुखदायी हैं. इनके मोती पर लालरत्न लटके हुए हैं. इस दिव्य शोभासे दृष्टिको हटाया नहीं जा सकता.

मुख सरूप अति सुंदर, क्यों कहूं सोभा मुख इन ।
एक अंग जो निरखिए, तो तितहीं थके वरनन ॥ ११०

श्रीराजजीका मुखारविन्द अत्यन्त सुन्दर है. इसकी दिव्य शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? यदि उनके किसी एक अङ्गको भी देखकर वर्णन करना चाहें तो शब्द वहीं पर थक जाते हैं.

छवि सरूप मुख छोड के, देख सकों न लांक अधूर ।
ए लालकी लालक क्यों कहूं, जो अमृत अरस मधूर ॥ १११

धामधनीके स्वरूपके दर्शनमें उनके मुखारविन्दकी शोभाको छोड़कर अधर तथा उसके नीचेकी गहराई भी देखी नहीं जाती. इस अधरकी लालिमाकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त करें जो परमधामके सुमधुर अमृततुल्य है.

ए मुख अधुर लांक छोडके, क्यों कर दंत लग जाए ।
देत नाम निमूना इतका, सो इन सरूपें क्यों सोभाए ॥ ११२

इस तेजोमय स्वरूपके मुखारविन्द, अधर तथा उसके नीचेकी गहराई (लाँक) का दर्शन छोड़कर यह दृष्टि उनकी दन्तावलि तक कैसे पहुँचेगी ? इनके लिए यदि लौकिक वस्तुकी उपमा दी जाए तो भी श्रीराजजीके स्वरूपके लिए यह शोभास्पद नहीं है.

सो दंत अधुर लांक छोडके, जाए न सकों लग गाल ।
सो गाल लाल मुख छोडके, आगूं नजर न सके चाल ॥ ११३

इसी प्रकार उनकी दन्तावलि, अधर एवं उसके नीचेकी गहराईको छोड़कर उनके कपोलों तक पहुँचना कठिन होता है. मुखमण्डलकी इन लालिमायुक्त कपोलोंको छोड़कर यह दृष्टि आगे नहीं बढ़ सकती.

मुख नासिका देखत आसिक, सुन्दर सोभा अतंत ।
नेत्र बीच निलाट तिलक, आसिक याही सों जीवत ॥ ११४

अनुरागिनी आत्माएँ अपने प्रियतम धनीके तेजोमय मुखारविन्द एवं नासिकाकी अपार शोभाको प्रेमपूर्वक निहारतीं हैं. उनके दोनों नेत्रोंके मध्य ललाट पर सुशोभित तिलकके दर्शनसे ही इन्हें नवजीवन प्राप्त होता है.

भृकुटी तिलक सोभा छोडके, जाए न सकों लग कान ।
सो कान कोमल अति सुंदर, सुख पाइए हिरदें आन ॥ ११५

श्रीराजजीकी भृकुटी एवं तिलककी अद्वितीय शोभाको छोड़कर इस दृष्टिको उनके कर्ण तक जाना भी कठिन होता है. ये कर्ण इतने कोमल एवं सुन्दर हैं कि इन्हें हृदयमें अङ्कित करने पर अपार सुखकी अनुभूति होती है.

और भी खूबी कानन की, दिल दरदा देवें भान ।
जाको केहे लेऊं पडउतर, कोई न सुख इन समान ॥ ११६

इन कर्णोंकी अन्य विशेषता यह भी है कि ये हमारे हृदयकी पीड़ाको हर लेते हैं. क्योंकि हमारे प्रश्नोंका प्रत्युत्तर इन्हींके कहने पर प्राप्त होता है. इसलिए इनके समान अन्य कोई सुख ही नहीं है.

कहें सुनें बातें करें, ए जो अरस मेहेरबान ।
सो खिलवत सुख छोड के, लग जवाए नहीं नैन बान ॥ ११७

धामधनी इतने कृपालु हैं कि वे ब्रह्मात्माओंकी कही हुई बातें भी सुनते हैं और उन्हें अपनी बातें भी सुनाते हैं. ऐसे अन्तरङ्ग सुखोंको छोड़कर हमारी दृष्टि वाणोंके समान तीक्ष्ण नेत्रों तक कैसे पहुँचेगी.

ए नैन बान सुभान के, क्यों छोडें रूह मोमिन ।
ए नैन रस छोड आगे चले, रूहें नाम धरत हैं तिन ॥ ११८

ब्रह्मात्माएँ श्री राजजीके इन तीक्ष्ण (नुकीले) नेत्रोंको कैसे छोड़ सकतीं हैं ? इन नेत्रोंकी अमीवृष्टिको छोड़कर जो आत्माएँ आगे बढ़तीं हैं उनको ब्रह्मात्मा कैसे कहा जाएगा ?

नैन अनियारे अति तीखे, पल देत तारे चंचल ।
स्याम उजल लालक लिएं, क्यों कहूं सुपन अकल ॥ ११९

इनके नयन नुकीले एवं अति तीक्ष्ण हैं. इनकी पुतलियाँ एवं पलक अति चञ्चल हैं. इनकी श्यामल उज्ज्वल एवं रक्तिम आभाको यह स्वप्नकी बुद्धि कैसे व्यक्त कर सकती है ?

नैन रसीले रंग भरे, खैंचत बंके मरोर ।
सो आसिक कहूं जाए ना सके, जाए लगे बान ए जोर ॥ १२०

धामधनीके ये नयन आनन्दरससे परिपूर्ण हैं. जिनको ये अपनी तिरछी दृष्टिसे देख लेते हैं वे ब्रह्मात्माएँ अन्यत्र कहीं नहीं जा सकतीं. ये नेत्र तीक्ष्ण वाणकी भाँति उनके हृदय पर चुभ जाते हैं.

ए नेत्र रसीले निरखते, उपजत है सुख चैन ।
ए क्यों न्यारे होए नैन रूह के, सामी छोड नैन की सैन ॥ १२१

ऐसे रसयुक्त नयनोंको देखने पर अपार सुखका अनुभव होता है. ब्रह्मात्माओंकी दृष्टि श्रीराजजीके ऐसे नेत्रकमलसे कैसे दूर होंगी जो सामनेसे उन्हें सङ्केत प्रदान करते हैं.

जो चल जाए सारी उमर, तो क्यों छोडिए सुख नैनन ।
इन सुख से क्यों अघाइए, आसिक अंतसकरन ॥ १२२

सम्पूर्ण जीवन क्यों न व्यतीत हो जाए तो भी इन सुन्दर नेत्रकमलोंकी शोभासे दृष्टि दूर नहीं जा सकती. अनुरागिनी ब्रह्मात्माओंका हृदय इस सुखसे कैसे तृप्त हो सकता है ?

निलवट सुंदर सुभान के, सोभा मीठी मुखारबिंद ।
ए छवि कही न जाए एक अंगकी, ए तो सोभा सागर खावंद ॥ १२३

श्रीराजजीका ललाट अत्यन्त तेजोमय है. उनके मुखारविन्दकी शोभा माधुर्यपूर्ण है. इस प्रकार धामधनीके एक अङ्गकी शोभा भी व्यक्त नहीं हो सकती. वे तो स्वयं शोभाके सागर हैं.

हंसत सोभित हरवटी, दंत अधुर मुख लाल ।
आसिक से क्यों छूटहीं, सब अंग रंग रसाल ॥ १२४

मन्दहास्य पर धामधनीका चिबुक (ठोड़ी), दन्तावलि, अधर तथा मुखकमलकी लालिमा अनुपम लगती है. प्रेमी आत्माओंसे यह सुन्दर स्वरूप कैसे छूट सकता है जिसके सभी अङ्ग रसयुक्त हैं.

अति कोमल अंग किसोर, कायम अंग उनमद ।
ए छवि अंग अरस के, पोहोंचत नाहीं सबद ॥ १२५

श्रीराजजी किशोर स्वरूप हैं. उनके सभी अङ्ग अत्यन्त सुकोमल हैं. उनमें प्रेमानन्द परिपूर्ण है. यह सुन्दर शोभा परमधामके स्वरूपकी है इसलिए उसके वर्णनमें नश्वर जगतके शब्द सक्षम नहीं हैं.

मुख नासिका नेत्र भौंह, तिलक निलाट और कान ।
हाथ पांउ अंग हैयडा, सब मुसकत केहेत मुख बान ॥ १२६

जब धामधनी अपने श्रीमुखसे मधुर वचन बोलते हैं उस समय उनके मन्दहास्यसे उनका मुखकमल, नासिका, नेत्र, भृकुटी, तिलक, ललाट, कर्ण, करकमल, पादपद्म, हृदय आदि सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग पुलकित हो उठते हैं.

जो आसिक इन मासूक की, सो अटक रहे एकै अंग ।
और अंग लग जाए ना सके, अंग एकै लग जाए रंग ॥ १२७

जो आत्माएँ इन प्रियतमकी अनुरागिनी हैं उनकी दृष्टि धामधनीके एक ही अङ्ग पर स्थिर हो जाती है. उसको छोड़कर अन्य अङ्ग तक जा ही नहीं सकती. वह तो एक ही अङ्गके रङ्गमें रङ्ग जाती है.

देख बीडी मुख मोरत, रूह अंग उपजत सुख ।
पीऊं सराब लेऊं मस्ती, ज्यों बल बल जाऊं इन मुख ॥ १२८

जब ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीके मुखारविन्दमें सुशोभित ताम्बूलकी बीड़ाको देखतीं हैं तो उनका हृदय आनन्द विभोर हो जाता है. उन्हें लगता है कि श्रीराजजीकी प्रेमसुधा लेकर मस्त हो जाएँ एवं उनके मुखारविन्द पर समर्पित हो जाएँ.

ए छवि छोडके आसिक, क्यों कर आगे जाए ।
मोहि लेत मुख मासूक, सो चित रह्यो चुभाए ॥ १२९

अनुरागिनी आत्माकी दृष्टि इस सुन्दर शोभाको छोड़कर आगे कैसे बढ़ सकती है ? प्रियतम धनी उसे अपने मुखारविन्दसे ही मोहित कर लेते हैं इसलिए उनके हृदयमें यही छवि अङ्कित हो जाती है.

नैनों निलवट निरखते, देखी बनी सारंगी पाग ।
दुगदुगी कलंगी ए जोत, छवि रूह हिरदें रही लाग ॥ १३०

जब ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीका ललाट देखतीं हैं तो उन्हें सारङ्गीके आकारकी पाग दिखाई देती है. पागके ऊपर लगी कलङ्गी एवं दुगदुगीकी ज्योतिर्मयी आभायुक्त शोभा उनके हृदयमें अङ्कित हो जाती है.

होए वरनन चतुराई से, आसिक धरे ताको नाम ।
एक अंग छोड जाए और लगे, सो नाहीं आसिक को काम ॥ १३१

यदि चातुर्य्यसे प्रियतम धनीके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका वर्णन कर भी लिया जाए तो उसे आसिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनके एक अङ्गको छोड़कर अन्य अङ्गकी ओर दृष्टि दौड़ाना यह अनुरागिनियोंका काम नहीं है.

आसिक कहिए हक की, जो लग रहे एकै ठौर ।
आसिक ऐसी चाहिए, जो ले न सके अंग और ॥ १३२

वही आत्मा प्रियतम धनीकी प्रिया कहलाती है जिसकी दृष्टि उनके एक ही अङ्ग पर टिकी रहती हो. वस्तुतः अनुरागिनी आत्मा तो ऐसी ही होती है जिसकी दृष्टि प्रियतम धनीके एक ही अङ्गमें स्थिर होकर अन्यत्र नहीं जा सकती हो.

इन आसिक की नजरों, दिल एकै हुआ सागर ।
सो झीलें याही सुख में, निकसे नहीं क्योंए कर ॥ १३३

इन प्रेमी ब्रह्मात्माओंकी दृष्टिमें धामधनीका हृदय ही विशाल सागर बन जाता है. इसलिए वे इसी सागरमें सुखपूर्वक अवगाहन करतीं रहतीं हैं एवं यहाँसे किसी भी प्रकार बाहर नहीं निकल सकतीं.

तो सोभा सारे सरूप की, क्यों कहे जुबां इन ।
लेहेरें नेहेरें पोहोंचे आकास लों, और ठौर न कोई मोमिन ॥ १३४

श्रीराजजीके दिव्य स्वरूपकी सम्पूर्ण शोभाका वर्णन इस जिह्वाके द्वारा कैसे किया जाए ? इसी शोभाकी तरङ्गें नहरोंके आकारमें आकाश तक पहुँचतीं हैं. इसके अतिरिक्त ब्रह्मात्माओंके लिए अन्य कोई स्थान नहीं है.

आसिक न लेवे दानाई, पर ए दानाई हक ।
इसक आपे पीवहीं, औरों पिलावें बेसक ॥ १३५

प्रेमी आत्माएँ अपना चातुर्य नहीं दिखातीं हैं. यह सम्पूर्ण चातुर्य्य तो श्रीराजजीका ही है. ऐसी आत्माएँ तो स्वयं भी धामधनीकी प्रेमसुधाका पान करतीं हैं एवं अन्यको भी पिलातीं हैं.

ए चतुराई हक की, और हकै का इलम ।
ए सुख इन सरूप के, देवें एही खसम ॥ १३६

वस्तुतः यह कुशलता (चातुर्य) श्री राजजीकी ही है और यह ज्ञान भी उन्हींसे प्राप्त हुआ है. अपने दिव्य स्वरूपकी अनुभूति भी वे स्वयं ही कराते हैं.

इन सरूप को वरनन, सो याही की चतुराए ।
याको आसिक जानिए, जो इतहीं रहे लपटाए ॥ १३७

इसलिए श्रीराजजीके दिव्य स्वरूपका वर्णन उन्हींके द्वारा दिए गए ज्ञानके आधार पर किया है. उसी आत्माको धामधनीकी अनुरागिनी कहना चाहिए जो इस स्वरूप पर स्वयंको समर्पित करती है.

ए सुख इन सरूप को, और आसिक एही आराम ।
जोलों इसक न आवहीं, तोलों इलम एही विश्राम ॥ १३८

इस दिव्य स्वरूपके दर्शनसे जो आनन्दकी अनुभूति होती है उसीमें ब्रह्मात्माओंको शान्तिका अनुभव होता है. जब तक हृदयमें प्रेमका आविर्भाव नहीं होता है तब तक ज्ञानके द्वारा वे आनन्दका अनुभव करतीं हैं.

इसक को सुख और है, और सुख इलम ।
पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम ॥ १३९

प्रेमका आनन्द कुछ और है एवं ज्ञानका आनन्द कुछ और किन्तु प्रेमी आत्माओंकी बात ही भिन्न है. धामधनी जिसको जो देना चाहते हैं उसे वही स्वीकार्य होता है.

ए इलम ए इसक, दोऊ इन हक को चाहे ।
पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवें सिर चढाए ॥ १४०

ज्ञान एवं प्रेम दोनों उसी परमात्माको चाहते हैं (यद्यपि ये दोनों मार्ग अलग-अलग प्रतीत होते हैं). परन्तु परमात्मा जिन आत्माओंको जो देना चाहते हैं वह उसीको शिरोधार्य करती है.

महामत कहे अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अरस ।
सराब प्याले इसक के, ल्यों प्याले पर प्याले सरस ॥ १४१

महामति अपनी ब्रह्मात्माओंको कहते हैं, यदि तुम परमधामकी आत्मा हो तो धामधनीकी प्रेमसुधाके प्याले भर-भर कर पान करो. ये रसपूर्ण प्याले एकसे बढ़कर एक आनन्ददायी हैं.

श्री ठकुरानीजी का सिनगार पेहेला

मंगलाचरन

वरनन करूं बडी रूह की, रूहें इन अंग का नूर ।
अरवाहें अरस में वाहेदत, सो सब इनका जहूर ॥ १

अब मैं श्रीश्यामाजीकी दिव्य शोभाका वर्णन करता हूँ. सभी ब्रह्मात्माएँ उनकी ही अङ्गस्वरूपा हैं. उनके ही दिव्य प्रकाशके कारण परमधाममें सभी ब्रह्मात्माएँ एकात्मभावसे रहतीं हैं.

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोडाइयो छिन ।
लांक तली लाल एडियां, मेरे जीव के एही जीवन ॥ २

सर्वप्रथम मैं श्रीश्यामाजीके दोनों चरणकमलोंमें प्रणाम करता हूँ. हे धामधनी ! इन चरणोंसे मुझे क्षणमात्रके लिए भी दूर न करें लालिमायुक्त इन चरणोंकी एड़ियाँ तथा चरणतलकी गहराईको देखकर मुझे ऐसा अनुभव होता है ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

सिफत नख कहूं के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांक ।
कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ३

इन चरणोंकी अङ्गुलियाँ, उनके नख तथा ऊपरका भाग (पहुँचा) एवं

टाँकनकी शोभा तथा इनकी कोमलताका वर्णन भी कैसे करूँ ? ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

रंग नरमाई सलूकी, अरस अंग चरन ।
बल बल जाऊं देख देख के, मेरे जीवके एही जीवन ॥ ४

इनकी सुन्दर आभा एवं अतिशय कोमलताको देखकर मैं बार-बार इनके ऊपर समर्पित होता हूँ. ये चरण दिव्य परमधामके हैं ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

इन पांउ तलें पडी रहूं, धनी नजर खोलो बातन ।
पल न बालूं निरखूं नेत्रे, मेरे जीवके एही जीवन ॥ ५

मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं इन चरणकमलोंमें ही रहूँ. हे धामधनी ! आप मेरी अन्तर्दृष्टिको खोल दें. पल भरके लिए भी नेत्रोंको हटाए बिना मैं इन चरणोंको देख लूँ, ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

चारों जोडे चरन के, और अनवट बिछिया रोसन ।
बानी मीठी नरमाई जोत धरे, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ६

श्रीश्यामाजीके युगल चरणोंमें अनवट एवं बिछुआके अतिरिक्त अन्य चार आभूषण भी सुशोभित हैं. ये परस्पर टकराते हुए मधुर स्वरमें मुखरित होते हैं. अत्यन्त कोमल एवं तेजोमय ये आभूषण मेरे जीवके आधार हैं.

प्यारे मेरे प्रान के, मोहे पल छोडो जिन ।
मैं पाई मेहेर मेहेबूब की, मेरे जीवके एही जीवन ॥ ७

हे मेरे प्राणोंके प्रियतम ! क्षण भरके लिए भी आप मुझे इन चरण कमलोंसे दूर न करें. मुझ पर आपकी महती कृपा हुई है. तभी जीवके आधार स्वरूप ये चरण मुझे प्राप्त हुए हैं.

ए चरन पुतलियां नैन की, सो मैं राखूं बीच तारन ।
पकड राखूं पल ढांप के, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ८

आँखकी पुतलियोंके समान इन युगल चरणोंको मैं अपनी आँखोंकी पुतलियोंमें स्थापित कर दूँ एवं अपनी पलकोंको बन्द कर इनको पकड़े रखूँ, क्योंकि ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

मेरे मीठे मीठरडे आतम के, सो चूभ रहे अंतसकरन ।
रूह लागी मीठी नजरों, मेरे जीवके एही जीवन ॥ ९

मेरी अन्तरात्माको अत्यन्त मधुर लगने वाले ये चरणकमल मेरे अन्तःकरणमें अङ्कित हुए हैं. इसलिए आत्म-दृष्टिको भी ये अत्यन्त मधुर लगते हैं क्योंकि ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

ए चरन कमल अरस के, इनसे खुसबोए आवे वतन ।
ए तन बका अरस अजीम, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १०

ये दिव्य चरणकमल परमधामके हैं. इसीलिए इनसे परमधामकी सुगन्धि आती है. श्रीश्यामाजीका सम्पूर्ण शरीर दिव्य परमधामका है, यही मेरे जीवनका आधार है.

ए चरन निमख न छोडिए, राखिए माहें नैनन ।
ए निसबत हक अरस की, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ११

इन चरण कमलोंको क्षणमात्रके लिए भी अपनी दृष्टिसे दूर न करें अपितु इन्हें अपने नयनोंमें ही स्थापित करें. धामधनी तथा अखण्ड परमधामके सम्बन्धकी पहचान इन्हींके द्वारा होती है. ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

मेहेरें नेहेरें ल्याए चरन अंदर, द्वार नूर पार खोले इन ।
मोहे पोहोंचाई बका मिने, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १२

नदियोंकी धाराके रूपमें प्रवाहित हो रही श्रीराजजीकी असीम कृपासे ही श्रीश्यामाजीके ये चरणकमल मेरे हृदयमें प्रस्थापित हुए हैं. इन्हींके प्रतापसे अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामके द्वार खुले हैं. इन्हीं चरणोंने मुझे अखण्ड परमधामका अनुभव करवाया है. ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

सोभा सिनगार अंग सुखकारी, मेरी रूह के कंठ भूषन ।
सब खूबियां मेरे इन सों, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १३

श्रीश्यामाजीके इन सुखदायी अङ्गोंके शृङ्गारकी शोभा ही मेरी आत्माके कण्ठका आभूषण है. इन्हींके प्रतापसे मेरे गुणोंका विकास हुआ है. ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

ए मेहेर अलेखे असल, मेरे ताले अरस के तन ।
क्यों न होए मोहे बुजरकियां, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १४

धामधनीकी अपार कृपासे मुझे दिव्य परमधामके स्वरूपोंका वर्णन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है. इसलिए मुझेमें दिव्य समझ कैसे नहीं आएगी ? क्योंकि ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

चित खैंच लिया इन चरनों, मोहे सब विध करी धन धन ।
ए सिफत करूं क्यों इन जुबां, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १५

इन श्रीचरणोंने मुझे अपनी ओर आकृष्ट किया एवं मेरे जीवनको धन्य बना दिया है. जिह्वाके द्वारा इन चरणोंकी महिमाका वर्णन कैसे करूँ ? ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

ज्यों जानो त्यों मेहेबूब करो, ए सुख दिया न जाए दूजे किन ।
कहूं तो जो दूजा कोई होवहीं, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १६

हे प्रियतम धनी ! आपको जैसा ठीक लगे वैसा ही करें. आपके अतिरिक्त अन्य किसीसे भी इस प्रकारका सुख प्राप्त नहीं हो सकता है. यदि आपके अतिरिक्त अन्य कोई होता तभी अन्यकी बात हो सकती है. मेरे लिए तो ये ही श्रीचरण मेरे जीवके आधार हैं.

क्यों कहूं चरन की बुजरकियां, इत नाहीं ठौर बोलन ।
ए पकड सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १७

इन चरणकमलोंकी दिव्यताको कैसे व्यक्त करूँ. इस सन्दर्भमें कुछ कहनेका स्थान ही नहीं है. इनके चिन्तन मात्रसे ही सम्पूर्ण स्वरूपके दर्शन हो सकते हैं क्योंकि ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन ।
प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १८

जिन पर इन चरणकमलोंकी अपार कृपा होती है उन्हें सम्पूर्ण स्वरूपके दर्शन हो जाते हैं. उन्हींको पूर्ण प्रेम भी प्राप्त होता है इसलिए ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

ए चरन दिल आवें निसबतें, मता ए अरस रूहन ।
ए धनी के दिए क्यों छूटहीं, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १९

परमधामके सम्बन्धके कारण ही ये दिव्य चरण हृदयमें अङ्कित हुए हैं क्योंकि ये परमधामकी आत्माओंकी अमूल्य निधि हैं. जब स्वयं धामधनीने कृपापूर्वक यह निधि प्रदान की है तो फिर ये चरण हमसे कैसे छूट सकते हैं ? ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

धनी देवें सहूर सब विध, तो मैं नैनों निरखूं निसदिन ।
आठों जाम चौसठ घडी, मेरे जीवके एही जीवन ॥ २०

जब धामधनी मुझे पूर्णरूपसे विवेक प्रदान करेंगे तभी मैं रात-दिन आठों प्रहर अपने नेत्रोंसे श्रीश्यामाजीके इन चरणकमलोंको निहार लूँ, क्योंकि ये मेरे जीवके आधार हैं.

महामत चाहे इन चरन को, कर मनसा वाचा करमन ।
आए बैठे मेरे सब अंगों, मेरे जीवके एही जीवन ॥ २१

महामति इन चरणकमलोंको मन, वचन एवं कर्मसे प्राप्त करना चाहते हैं. मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें अब ये चरणकमल अङ्कित हुए हैं. ये ही मेरे जीवके आधार हैं.

मंगलाचरन तमाम

ए रूह सरूप नहीं तत्वको, इनको अस्वारी मन ।
खान पान सुख सिनगार, ए होए रूह के चितवन ॥ २२

श्री श्यामाजीका स्वरूप सांसारिक तत्त्वोंसे बना हुआ नहीं है. वे मनके ऊपर सवार होतीं हैं. खान-पान तथा शृङ्गार आदिका सुख उन्हें चिन्तन मात्रसे ही प्राप्त है.

जो पेहेनावा अरस का, अचरज अदभुत जान ।
कहूं दुनियां में किन विध, किन कबहूं न सुनिया कान ॥ २३

परमधामका परिधान आश्चर्यजनक एवं अद्भुत है. इस जगतमें उसकी उपमा कैसे दी जाए क्योंकि यहाँ पर किसीने भी अभी तक उसके सन्दर्भमें सुना तक नहीं है.

कंठ कान मुख नासिका, ए जो पेहेनत हैं भूषन ।
ए दुनियां जो पेहेनत हैं, जिन जानो विध इन ॥ २४

श्रीश्यामाजीके कण्ठ, कर्ण, मुखारविन्द, नासिका आदि अङ्ग अलौकिक हैं. ये जैसे आभूषणोंका परिधान करतीं हैं उनको इस नश्वर जगतके प्राणियोंके आभूषणोंकी भाँति नहीं समझना चाहिए.

या वस्तर या भूषन, सकल अंग हाथ पाए ।
सो असल ऐसे ही देखत, जैसा रूह चित चाहे ॥ २५

इनके वस्त्र, आभूषण तथा हस्त-पाद आदि सभी अङ्ग जैसा वे चाहतीं हैं उसीके अनुरूप हैं.

अंग संग भूषन सदा, दिलके तालूक असल ।
ए सरूप सिनगार दिल चाहे, अरस में नाहीं नकल ॥ २६

इनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें सुशोभित ये आभूषण सदैव इनकी हार्दिक इच्छाके अनुकूल रहते हैं. समस्त शृङ्गार ही उनकी इच्छानुकूल होता है. दिव्य परमधाममें किसीकी भी अनुकृति (नकल) नहीं है.

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूषन, होत हमेसा बने ।
दिल जैसा चाहे छिन में, तैसा आगूंहीं पेहेने ॥ २७

इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग जैसे दिव्य हैं उसीके अनुरूप वस्त्र एवं आभूषण भी दिव्य हैं. वे सर्वदा उनके अङ्गोंमें अक्षुण्ण रहते हैं. वे जैसे वस्त्र आभूषण पहननेकी इच्छा करतीं हैं उसी क्षण उनके अङ्गोंमें वे वस्त्र आभूषण मानों पहलेसे ही धारण किए गए हों इस भाँति दिखाई देते हैं.

जाको नामै कायम, अखंड बका अपार ।
सोई भूल जानो अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥ २८

दिव्य परमधामको अखण्ड, अपार तथा शाश्वत कहा गया है. मेरी सबसे बड़ी भूल यही रही कि मैंने इस अपार शोभाको अपने शब्दोंकी सीमामें निबद्ध करनेका प्रयास किया है.

पेहेले सोभा कही सुभान की, सोई सोभा बडी रूह जान ।
नहीं जुदागी इनमें, जुगल किसोर परवान ॥ २९

सर्वप्रथम मैंने श्रीराजजीके दिव्य स्वरूपकी शोभाका वर्णन किया. श्रीश्यामाजीकी शोभा भी उसी प्रकार दिव्य है. इन युगल स्वरूपमें किसी भी प्रकारका अन्तर नहीं हैं. ये दोनों ही एक समान हैं.

हक सूरत को नूर हैं, जिन जानो अंग और ।
इनको नूर रूहें वाहेदत, कोई और न पाइए इन ठौर ॥ ३०

श्री श्यामाजी श्रीराजजीकी ही अङ्गभूता हैं. उनका स्वरूप श्रीराजजीसे भिन्न नहीं है. अद्वैत परमधाममें सभी ब्रह्मात्माएँ इन्हीं की तेजरूपा हैं. वहाँ पर उनके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है.

सोभा स्यामाजीय की, निपट अति सुन्दर ।
अंतर पट खोल देखिए, दोऊ आवत एक नजर ॥ ३१

श्रीश्यामाजीकी अनुपम शोभा अतीव सुन्दर है. अन्तरपटको खोलकर देखने पर श्रीराजजी एवं श्रीश्यामाजी दोनोंका स्वरूप एक-सा दिखाई देता है.

लाल साडी कटाव कै, कै छापे बेली नकस ।
क्यों कहूं छेडे किनार की, सोभित अति सरस ॥ ३२

श्रीश्यामाजीकी केसरिया (लाल) रङ्गकी साड़ीमें अनेक लताओंकी चित्रकारी अङ्कित है. उसके आँचलके किनारेकी शोभा कैसे व्यक्त की जाए ? वह अत्यन्त सुन्दर दिखाई देती है.

माहें जरी जवेर नंग कै, जानों आगूंहीं बने असल ।
जित जुगत जो चाहिए, सोभित अपनी मिसल ॥ ३३

इसके अन्दर जरीमें जड़ायमान विभिन्न रङ्गोंके अनेक रत्न हैं. ये ऐसे प्रतीत होते हैं मानों पहलेसे ही सुशोभित हैं. इसमें जहाँ पर जैसी शोभा होनी चाहिए वहाँ पर उसी प्रकारकी अनुपम शोभा है.

बेली किनार छेडे बनी, सुंदर अति सोभित ।
कटाव फूल नकस कै, जुदी जुदी जडाव जुगत ॥ ३४

किनारे पर अङ्कित लताएँ अति सुन्दर शोभायमान हैं. इन लताओं पर पुष्प, पत्ते आदिकी अलग-अलग प्रकारकी चित्रकारी अङ्कित है.

ऐसे ही असल के, ना कछू बुने वस्तर ।
ऐसे ही भूषन बने, किन घडे न घाट घडतर ॥ ३५

दिव्य परमधामकी यह विशेषता है कि वहाँ पर न कोई वस्त्र बनाए जाते हैं और न ही आभूषण आदिको गढ़ा जाता है अपितु ये सभी शाश्वत हैं.

चोली स्याम जडाव नंग, माहें हेम जवेर अनेक ।
जडतर कंठ उर बांहें, कहां लग कहूं बिवेक ॥ ३६

श्रीश्यामाजीकी श्यामवर्णकी चोलीमें विभिन्न प्रकारके रत्न जड़े हुए हैं. इन रत्नोंको सुवर्णके साथ जड़ा हुआ है. इस प्रकार कण्ठ, वक्षस्थल तथा बाँहों पर बहुत सुन्दर जड़ाव है जिनकी शोभा किन शब्दोंके द्वारा व्यक्त करें ?

जित बेली बनी चाहिए, और कांगरी फूल ।
कै नकस खजूरे बूटियां, चोली सोभित है इन सूल ॥ ३७

इस चोली पर जहाँ जैसी लताएँ, काँगरी तथा फूल आदि जड़ायमान होने चाहिए वहाँ उसी प्रकार जड़े हुए हैं. साथ ही इसमें छोटे-छोटे फूल तथा खजूरकी भाँति पत्तोंकी चित्रकारी सुशोभित है.

नंग हेम मिले तो कहूं, जो किन जडे होए जडतर ।
नकस कटाव बेली तो कहूं, जो किन बनाए होए हाथों कर ॥ ३८

ये रत्न तथा स्वर्ण आदि यदि मिल जाते तो कह सकते कि किसीने इनको जड़ा होगा. इस प्रकार इन वस्त्रोंमें चित्रित लताओंकी चित्रकारीका वर्णन तभी हो सकता है जब किसीने इनको अपने हाथोंसे बनाया हो.

चरनी नीली अतलस, माहें अनेक विध के रंग ।
चीन पर बेली नकस, बीच जरी बेल फूल नंग ॥ ३९

श्रीश्यामाजीका नीले रङ्गका लहँगा अत्यन्त कोमल रेशमी धागोंसे बना है.

उसमें विभिन्न प्रकारके अन्य रङ्ग भी सुशोभित हैं. इसकी चुन्नट ,पर अनेक लताओंकी चित्रकारी अङ्कित है एवं बीच-बीचमें जरीसे अनेक लताएँ एवं पुष्प चित्रित हैं उनके मध्यमें रत्न भी सुशोभित हैं.

क्यों कहूं किनारकी कांगरी, मानिक मोती सात नंग ।
हीरे लसनिएं पांने पोखरे, माहें पाच कुंदन करें जंग ॥ ४०

इसके किनारेकी काँगरीकी शोभा कैसे व्यक्त करूँ ? जिसमें माणिक्य, मोती, हीरा, वैदूर्यमणि (लहसुनिया), पन्ना, पुखराज, पाच आदि कुन्दन (सोना) में जड़े हुए सात रत्न परस्पर स्पर्धा करते हुए दिखाई देते हैं.

वस्तर धागा न सूझहीं, सरभर जरी नकस ।
ए वस्तर भरयो न बुन्यो किने, असल सबे एक रस ॥ ४१

इस वस्त्रमें धागा तो कहीं दिखाई ही नहीं देता है, सर्वत्र जरीकी ही चित्रकारी दिखाई देती है. इस वस्त्रको न किसीने बुना है और न ही किसीने चित्रकारीसे भरा है. सभी चित्रकारियाँ मूलतः एक रस दिखाई देतीं हैं.

नव रंग इन नाडी मिने, कंचन धात उजल ।
ए केहेती हों सब अरस के, ए देखो दिल निरमल ॥ ४२

इसके नेफेमें नौ रङ्गोंका इजारबन्द (नाड़ा) सुशोभित है जिससे स्वर्णमयी उज्ज्वल आभा निकलती है. यह सम्पूर्ण सौन्दर्य परमधामका बताया जा रहा है. निर्मल हृदयसे इसके दर्शन करने चाहिए.

क्या वस्तर क्या भूषन, चीज सबे सुखकार ।
खुसबोए रोसन नरमाई, इन विध अरस सिनगार ॥ ४३

श्रीश्यामाजीके वस्त्र तथा आभूषण ये सभी अत्यन्त सुखदायी हैं. इनकी सुगन्ध, प्रकाश तथा कोमलता अवर्णनीय है. इस प्रकार परमधामका शृङ्गार अति अनुपम है.

सिर पर सोहे राखडी, जोत साडी में करे अपार ।
फिरते मोती माहें मानिक, पांने पोखरे दोऊ किनार ॥ ४४

श्री श्यामाजीके मस्तक पर राखड़ी (आभूषण) सुशोभित है. जिसका

ज्योतिर्मय प्रकाश साड़ीमें-से झलकता है. इसके मध्यमें लगे हुए माणिक्यके चारों ओर मोती जड़े हुए हैं एवं किनारों पर पन्ना तथा पुखराज रत्न सुशोभित हैं.

ऊपर राखड़ी जो मानिक, क्यों देऊं इनकी मिसाल ।
आसमान जिमीके बीच में, होए गयो सब लाल ॥ ४५

इस राखड़ीके मध्यमें स्थित माणिक्यकी सुन्दरताके लिए कोई उपमा नहीं दी जा सकती. इसकी रक्तिम आभासे भूमि एवं आकाशके मध्यमें चारों ओर लालिमा छा जाती है.

कुंदन माहें धरे अति जोत, आकास न माए झलकार ।
वेन गूंथी तीन गोफने, जडित घूंघरी घमकार ॥ ४६

कुन्दनमें जड़े हुए अन्य रत्न भी अति प्रकाशमय हैं. जिनका प्रकाश आकाशमें भी न समाता हुआ चारों और झलकता है. सुन्दर ढङ्गसे गूँथी हुई वेणीके नीचे तीन फुँदने लटके हैं जिनमें जड़े हुए घुँघुरु मधुर स्वरमें मुखरित होते हैं.

तीन रंग जरी फुंदन, गोफनडे नंग जडतर ।
बारीक नंग नीले नकस, ए वरनन होए क्यों कर ॥ ४७

जरीसे निर्मित इन रत्नजड़ित फुँदनोंमें तीन रंग सुशोभित हो रहे हैं. वेणीके नीचे लटके हुए फूलों (गोफड़)में रत्न जड़े हुए हैं. नीले रंगके अति सूक्ष्म रत्नोंसे इस पर चित्रकारी की गई है जिनकी अनुपम छटाका वर्णन कैसे किया जाए ?

पांन सोहे सेंथे पर, माहें बेल कांगरी कटाव ।
हारें खजूरें बूटियां, मानोंके जुगत जडाव ॥ ४८

माँगके ऊपर पानके पत्तेके आकारका आभूषण सुशोभित है. जिसमें विभिन्न प्रकारकी लताओंकी चित्रकारी है. उस पर लहरीदार छोटे छोटे फूलोंकी पङ्क्तियाँ अति सुन्दर ढँगसे जड़ी हुई हैं.

सिर पटली मोती सरें, माहें पांच नंग के रंग ।
मोती सर सेंथे लग, नीले पीले लाल सेत नंग ॥ ४९

ललाटके ऊपरी भागमें पटली नामक आभूषणोंके साथ मोतियोंकी लड़ियाँ लगी हुई हैं. जिनमें पाँच रंगोंके रत्न जड़े हुए हैं. ये मोतियोंकी लड़ियाँ माँग तक पहुँची हुई हैं. इनमें नीले, पीले, लाल और श्वेत रत्न सुशोभित हैं.

तिन नंगों के फूल बने, आगूं सिर पटली कांगरी ।
निलवट से ले राखडी, बीच लाल मांग भरी ॥ ५०

उक्त पानके आकारके आभूषण पर काँगरी शोभायमान है. जिसके साथ उपरोक्त रत्नोंके फूल हैं. ललाटसे लेकर राखड़ी (सिर आभूषण) पर्यन्त रक्तिम आभायुक्त सिन्दूरसे माँग भरी हुई है.

अदभुत सोभा ए बनी, कहूं जो होवे और कांहिं ।
ए देखेहीं बनत है, केहेनी में आवत नांहिं ॥ ५१

इस प्रकार श्यामाजीके सिनगारकी यह अद्भुत शोभा है. इस अनुपम शोभाको तभी व्यक्त किया जा सकता है जब इसके तुल्य कहीं पर उदाहरण प्राप्त हो. यह शोभा देखते ही बनती है. इसे शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

बेनी गूंथी एक भांत सों, पीठ गौर ऊपर लेहेकत ।
देत देखाई साडी मिने, फिरती घूंघरडी घमकत ॥ ५२

अनुपम ढङ्गसे गूँथी हुई श्यामाजीकी वेणी (चोटी) उनके गौर वर्णके पृष्ठभाग पर लटकी हुई है. साड़ीके अन्दरसे यह अति सुन्दर दिखाई देती है. इसके फुँदनोंमें लगी हुई घुँघुरु मुखरित होतीं हैं.

चोली के बंध चारों बंधे, सोभित पीठ ऊपर ।
झलकत फुंदन चोली कांगरी, सोभा देखत साडी अंदर ॥ ५३

चोलीके चारों बन्धन गौर पृष्ठ पर सुशोभित हो रहे हैं. उन पर लगे हुए फुँदने एवं चोलीकी काँगरी साड़ीके अन्दर भी अत्यन्त शोभायमान हैं.

ए छबि पीठकी क्यों कहूं, रंग गौर लांक सलूक ।
ए सोभा केहेत सखत जीवरा, हुआ नहीं टूक टूक ॥ ५४

पृष्ठ भागकी इस शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ? जिसके मध्य भागमें गौर वर्णकी गहराई (लाँक) सुशोभित है. ऐसी अनुपम शोभाका वर्णन करते हुए यह कठोर जीव कैसे छिन्न-भिन्न नहीं हुआ ?

मुख चौक छबि निलवट बनी, क्यों कर कहूं सिफत ।
ए सोभा अरस सरूप की, क्यों होए इन जुबां इत ॥ ५५

श्रीश्यामाजीकी मुखाकृति एवं ललाटकी अनुपम शोभाका वर्णन कैसे करूँ ? यह सम्पूर्ण शोभा परमधामके दिव्य स्वरूपकी है. इस नश्वर जगतकी जिह्वाके द्वारा उसका वर्णन नहीं हो सकता है.

पाच हीरे मोती मानिक, बेना चौक टीका सोभित ।
सेंथे लाल तले मोती सरें, नूर रोसन तेज अतंत ॥ ५६

पाच, हीरा, मोती एवं माणिक्य आदि रत्नोंसे जड़ा हुआ बेंदा (ललाट पर लटकने वाला आभूषण) ललाटपर सुशोभित है. इसकी मोतियोंकी लड़ियाँ लालिमा युक्त माँगके नीचे शोभायमान हैं जिनका तेजोमय प्रकाश अनन्त है.

जडित पानडी श्रवनों, लरें लाल मोती लटकत ।
ए जरी जोत कही न जावहीं, पांच नंग झलकत ॥ ५७

श्रवण अङ्गोंमें पानके आकारके रत्न जड़ित आभूषण सुशोभित हैं. इनमें माणिक्य एवं मोती लटक रहे हैं. इनमें जड़े हुए पाँच रत्न इस प्रकार झलकते हैं कि उनके प्रकाशका वर्णन नहीं हो सकता.

काजल रेखा तो कहूं, जो होए सुपन के नैन ।
ए स्याम सेत लाल असल, सदा सुखकारी सुख चैन ॥ ५८

श्रीश्यामाजीके नयन यदि स्वप्नके शरीरके होते तभी उनमें लगे काजलकी सूक्ष्म रेखाकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त की जा सकती. श्याम, धवल एवं लालिमायुक्त ये नयन सदा सर्वदा आनन्द प्रदान करते हैं.

ए तन नैन अरस के, नहीं और कोई देह ।
ए निरखो नैनों रूहके, भीगल प्रेम सनेह ॥ ५९

श्रीश्यामाजीके दिव्य नेत्र परमधामके दिव्य शरीरके हैं. इस भौतिक देहकी भाँति नहीं हैं. इसलिए जब आत्म दृष्टिसे इन्हें देखेंगे तो ये दिव्य प्रेम और स्नेहसे ओत-प्रोत देखाई देंगे.

नैन तीखे अति अनियारे, कछू ए छबि कही न जाए ।
आधे घूंघट मासूक को, निरखत नैन तिरछाए ॥ ६०

श्रीश्यामाजीके नयन तीक्ष्ण और नुकीले हैं. इनकी दिव्य छवि शब्दोंकी सीमामें बाँधी नहीं जा सकती. वे अपने प्रीयतम श्रीराजजीको आधे घूँघटकी ओटमें तिरछे नयनोंसे देखतीं हैं.

सब अंग उमंग करत हैं, करने बात रेहेमान ।
दिल मासूक का देख के, खैंचत हैं प्रेम वान ॥ ६१

अपने प्रीयतम धनी श्रीराजजीसे बात करनेके लिए श्रीश्यामाजीके अङ्गोंमें ऊमंग भर आती है. वे श्रीराजजीके प्रेम परिपूर्ण हृदयको देखकर अपने प्रेमपूर्ण वचनोंसे उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करतीं हैं.

कहा कहूं नूर तारन का, सेत लालक लिए ।
काजल रेखा अनियों पर, अंग असल ही दिए ॥ ६२

श्रीश्यामाजीके नयनोंकी पुतलियोंका प्रकाश किन शब्दोंमें व्यक्त किया जाए. जिनमें स्वेत रङ्गके साथ लालिमा युक्त आभा शोभायमान है. नेत्रकोणकी काजलकी रेखाएँ भी असली अङ्गकी भाँति हैं.

तिन तारन में जो पुतलियां, माहें नूर रंग रस ।
पीउ देखें प्यारी नैनों, साम सामी अरस परस ॥ ६३

उन नयनोंके तारोंकी पुतलियोंमें प्रेमकी मस्तीका दिव्य प्रकाश सुशोभित है. श्रीश्यामाजी इन प्रेमपूर्ण नयनोंसे अपने प्रीयतम धनी श्रीराजजीको निहारतीं हैं तो श्रीराजजी भी उनको निहारते हैं. इस प्रकार परस्पर प्रेमका आदान प्रदान होता है.

चकलाई चंचलाई की, छबि होए नहीं वरनन ।
जो धनी देवें पट खोलके, तो तबहीं उडे एह तन ॥ ६४

श्रीश्यामाजीके नयनोंकी चपलताकी शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है. यदि श्रीराजजी मोहका आवरण दूर कर दें तो यह स्वप्नका तन तत्काल उड़ जाएगा और आत्मा इस दिव्य शोभामें समा जाएगी.

बंके भौं भृकुटी लिए, सोभित गौर अंग ।
अंग अंग भूषन भूषन, करत माहों माहें जंग ॥ ६५

श्रीश्यामाजीके नयनोंकी बङ्किम (तिरछी) भृकुटी गौर अङ्ग पर अत्यन्त शोभा देती है. उनके अङ्ग प्रत्यङ्गमें धारण किए हुए आभूषण परस्पर स्पर्धा करते हैं.

दोऊ जडाव अदभुत, सात रंग नंग झाल ।
सूछम झाल सोभा अति बडी, झांई उठत माहें गाल ॥ ६६

श्रीश्यामाजीके श्रवण अङ्गोंमें सुशोभित रत्न जड़ित झाल (कर्णाभूषण) की शोभा अति अद्भुत है. जिसमें सात रङ्गोंमें सात रत्न जड़ायमान हैं. अत्यन्त शोभा युक्त इन दोनों आभूषणोंकी आभा कपोलों पर पड़ती है.

फूल झालों के मुख पर, सोभा लेत अति नंग ।
तिन नंगों जोत उठत हैं, तिनके अनेक तरंग ॥ ६७

इन झालोंके मुख पर शोभायमान छोटे छोटे फूलोंमें रत्नोंकी शोभा अति सुन्दर देखाई देती है. इन रत्नोंसे उठती हुई ज्योतिर्मयी किरणोंसे अनेक तरङ्गें उठतीं हैं.

ऊपर किनार साडी सोभित, लाल नीली पीली जर ।
छब फब बनी कोई भांत की, सेंथे लवने झाल ऊपर ॥ ६८

श्रीश्यामाजीके कर्णोंके उपर उनकी साड़ीकी किनारी सुशोभित है. जिसमें लाल, नीली और पीली जरीकी चित्रकारी है. इसकी छवि इतनी सुन्दर है कि वह माँग तथा झालोंके उपर तक सुशोभित है.

ए जो कांगरी इन नंग की, सोभित माहें किनार ।
गौर निलवट स्याम केसों पर, जाए अंबर लगी झलकार ॥ ६९

साड़ीकी किनारीकी कांगरीमें रत्नोंकी रङ्गमयी आभा झलकती है. गौरवर्णके सुन्दर ललाट तथा श्यामवर्णके केशोंके उपर शोभायमान साड़ीकी आभा आकाश तक जगमगाती है.

सोभा कहूं अंग माफक, इन सुपन जुबां अकल ।
सो क्यों पोहोंचे इन सरूप लों, जो बीच कायम बका असल ॥ ७०

इस स्वप्नवत् शरीरकी बुद्धि तथा जिह्वाके अनुसार ही मैं इस दिव्य शोभाका वर्णन कर रहा हूँ. इसलिए स्वप्नवत् जगतके शब्द अखण्ड परमधामकी शाश्वतताका वर्णन कैसे कर सकते हैं ?

गौर रंग अति गालों के, ए रंग जानें इनके तन ।
अचरज अदभुत वाही देखें, जो हैं अरस मोमन ॥ ७१

श्रीश्यामाजीके गौरवर्णके कपोलोंकी सुन्दरता तो उनकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माएँ ही जान सकतीं हैं. परमधामकी ब्रह्मात्माएँ ही इस अद्भुत छवि एवं रूप लावण्यको देख सकतीं हैं.

मुख चौक नेत्र नासिका, निहायत सोभा अतंत ।
मुरली नासिका तेज में, सोभे नंग मोती लटकत ॥ ७२

श्रीश्यामाजीका मुखमण्डल, नयन तथा नासिका अत्यन्त ही सुन्दर शोभायुक्त हैं. नासिकामें बुलाक (छोटी नथ-बेसर) अति तेजोमय है. जिसमें लटके हुए मोती एवं रत्न सुशोभित हैं.

एक खसखस के दाने जेता, नंग रोसन अंबर भराए ।
क्यों कहूं नंग मुरलीय के, ये जुबां इत क्यों पोहोंचाए ॥ ७३

एक खसखसके दानेके समान रत्नका प्रकाश भी पूरे आकाशको आच्छादित कर देता है. फिर इस बुलाकमें जड़े हुए रत्नोंकी शोभा कैसे व्यक्त की जाए. यह नश्वर तनकी जिह्वा वहाँ तक पहुचनेमें असमर्थ है.

हक के अंगका नूर हैं, ए जो अरस बका खावंद ।
ए छबि इन सरूप की, क्यों केहेसी मत मंद ॥ ७४

श्रीश्यामाजी अखण्ड परमधामके स्वामी श्रीराजजीके अङ्गकी तेज स्वरूपा हैं. इसलिए यह मन्द बुद्धि इनके दिव्य स्वरूपका सौंदर्य कैसे व्यक्त कर सकती है ?

दंत लालक लिए मुख अधुर, क्यों कहूं रंग ए लाल ।
जो कछू होवे पेहेचान, तो क्यों दीजे इन मिसाल ॥ ७५

श्रीश्यामाजीके मुख मण्डलमें दन्तावलि एवं रक्तिम आभा युक्त अधरोष्ठ शोभायमान हैं. जिनकी लालिमाका वर्णन नहीं हो सकता. यदि इन दिव्य स्वरूपोंसे थोड़ासा भी परिचय हो जाता तो उनके लिए नश्वर जगतका कोई भी उदाहरण दिया नहीं जा सकता.

सुंदर सरूप स्यामाजीय को, अरस अखंड सिनगार ।
रूह मुख निरख्यो चाहत, उर पर लटकत हार ॥ ७६

श्रीश्यामाजी अप्रतिम स्वरूप एवं रूप लावण्यसे परिपूर्ण हैं. उनका शृङ्गार भी अखण्ड परमधामकी गरिमाके अनुरूप है. मेरी आत्मा उनके प्रभापूर्ण मुखारविन्द एवं वक्षस्थल पर लटकते हुए हारोंकी शोभाका दर्शन करना चाहती है.

एक हार मोती निरमल, और मानिक जोत धरत ।
तीसरा हार लसनियां, सो सोभा लेत अतंत ॥ ७७

श्रीश्यामाजी द्वारा धारण की हुई हारोंमें प्रथम निर्मल मोतीका है, दूसरा ज्योतिर्मय माणिक्यका है एवं तीसरा वैदूर्यमणि (लहसुनिया) का है. ये सभी अत्यन्त सुन्दर शोभायुक्त हैं.

चौथा हार हीरन का, पांचमा सुदर नीलवी ।
इन हारों बीच दुगदुगी, देखत सोभा अति भली ॥ ७८

चौथा हार हीरेका है एवं पाँचवाँ हार सुन्दर नीलमणिका है इन सभी कण्ठ हारोंके मध्य दुगदुगीकी शोभा अति सुन्दर दिखाई देती है.

क्यों कहूं नंग दुगदुगी, ए पांचों सेन्या चढाए ।
जंग करें माहें जुदे जुदे, पांचों अंबर में न समाए ॥ ७९

इस रत्नजड़ित दुगदुगीकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ? यह पाँचों कण्ठहारोंके बीच सेनाकी भाँति सुसज्जित है. इसके रत्नोंके प्रकाशकी तरङ्गें आकाशमें भी समातीं नहीं हैं.

पांचों ऊपर हार हेम का, मुख मोती सिरे नीलवी ।
ए हार अति बिराजत, जडतर चंपकली ॥ ८०

इन पाँचों कण्ठ हारोंके ऊपर स्वर्ण निर्मित चम्पकली हार सुशोभित है. जिसके मुख्य भागमें मोती तथा किनारे पर नीलमणि सुशोभित है. यह अत्यन्त शोभायुक्त है.

पाच पांने पुखराज, जरी माहें जडित ।
चंपकली का हार जो, उर ऊपर लटकत ॥ ८१

इस चम्पकली हारमें पाच, पन्ना एवं पुखराज रत्न जरीके साथ जड़ायमान हैं. यह कण्ठहार श्रीश्यामाजीके वक्षस्थल पर लटकता हुआ अति सुशोभित है.

ऊपर चोली के कांठले, बेल लगत कांगरी ।
ऊपर चंपकलीय के, मोती मानिक पांने जरी ॥ ८२

श्रीश्यामाजीकी चोलीके किनार पर लताएँ और काँगरी कण्ठ तक शोभायमान हैं. इसकी काँगरी पर चम्पकलीके ऊपर मोती, माणिक्य एवं पन्ना जैसे रत्न जरीमें जड़े हुए हैं.

पांच लरी चीड तिन पर, कंठ लग आई सोए ।
रंग नंग धात अरस के, इन जुबां सिफत क्यों होए ॥ ८३

उसके ऊपर पाँच लड़ीका एक कण्ठ हार (चीड़) कण्ठके साथ चिपका हुआ हैं. परमधामके रत्न तथा धातुके इस कण्ठाहारकी शोभाका वर्णन नश्वर जिह्वाके द्वारा कैसे हो सकता है ?

सातों हार के फुमक, जगमगे सातों रंग ।
मूल बंध बेनी तलें, बन रहे ऊपर अंग ॥ ८४

इन सातों हारोंके फुँदने भी विभिन्न सात रङ्गोंमें जग-मगाते हैं. इन सभीके मूल बन्धन श्रीश्यामाजीके पृष्ठ भागपर वेणीके नीचे सुशोभित हैं.

बाजूबंध दोऊ बने, जरी फुमक लटकत ।
हीरे लसनिएं नीलवी, देख देख रूह अटकत ॥ ८५

श्रीश्यामाजीकी दोनों भुजाओंमें भुजबन्ध सुशोभित हैं. जिनमें जरीके फुँदने लटक रहे हैं. उनमें जड़े हुए हीरा, वैदूर्यमणि (लहसुनिया) एवं नीलमणि जैसे रत्नोंको देखकर दृष्टि वहीं पर स्थिर हो जाती है.

नव रंग रतन चूड के, अरस धात न सोभा सुमार ।
चूड जोत जो करत है, आकास न माए झलकार ॥ ८६

श्रीश्यामाजीकी चूड़ियोंमें नौ रङ्गोंके रत्न जड़ायमान हैं. परमधामके इन दिव्य रत्नों तथा धातुओंकी शोभाका कोई पारावार नहीं है. इन चूड़ियोंकी ज्योतिर्मयी किरणोंका प्रकाश आकाशमें भी समाता नहीं है.

नव रंग रतन चूड के, जुदी जुदी चूडी झलकत ।
जोत सों जोत लरत हैं, सोभा अरस कहू क्यों इत ॥ ८७

नौ रङ्गोंके रत्नोंसे निर्मित चूड़ियोंके रत्न इस प्रकार प्रकाशमान हैं कि जिससे अलग-अलग नौ चूड़ियाँ प्रतीत होतीं हैं. इनसे निकली हुई ज्योतिर्मयी किरणें परस्पर द्वन्द्व करतीं हैं. परमधामकी इस दिव्य शोभाका वर्णन इस नश्वर जगतमें कैसे किया जाए ?

अतंत जोत इन धात में, इन नंग में जोत अतंत ।
अतंत जोत रंग रेसम, तीनों नरमाई एक सिफत ॥ ८८

परमधामके इन दिव्य धातु तथा दिव्य रत्नोंका प्रकाश अत्यन्त तेजोमय है. इनमें प्रयुक्त हुए रेशमकी रङ्गमयी छटा भी अत्यन्त प्रकाशमयी है. इन तीनोंकी अपार कोमलता एक समान है.

कंचन जडित जो कंकनी, माहें बाजत झनझनकार ।
बेल फूल नकस जडे, झलकत चूड किनार ॥ ८९

श्रीश्यामाजीकी कलाईमें सुशोभित कंकण (चूड़ी) स्वर्ण जड़ित हैं हाथोंके स्पन्दन मात्रसे ही ये झनझना उठते हैं. इनमें विभिन्न पुष्प-लताओंकी चित्रकारी है जो कंकणके किनार पर झलकती है.

निरमल पोहोंची नवघरी, पांच पांच दोऊ के नंग ।
अरस रसायन में जडे, करत मिनों मिने जंग ॥ ९०

श्रीश्यामाजीकी कलाईमें एक नवघरी एवं एक उज्ज्वल पहुँची सुशोभित है. इन दोनोंमें पाँच-पाँच रत्न जड़े हुए हैं. परमधामके रसायनमें जड़े हुए ये रत्न परस्पर द्वन्द्व करते हुए प्रतीत होते हैं.

हथेली लीकें क्यों कहूं, नरम हाथ उज्जल ।
रंग पोहोंचे का क्यों कहूं, इत जुबां न सके चल ॥ ९१

श्रीश्यामाजीके करकमलोंकी रेखाओंका वर्णन कैसे करूँ, जिनके करकमल ही अत्यन्त कोमल एवं उज्ज्वल हैं. उनके पहुँचे (हथेलीके पृष्ठ भाग) का रङ्ग कैसे व्यक्त किया जाए ? यह जिह्वा इनका वर्णन नहीं कर सकती.

पांच अंगुरियां पतली, जुदी जुदी पांचों जिनस ।
अरस अंग की क्यों कहूं, उज्जल लाल रंग रस ॥ ९२

इन हस्त कमलोंकी अलग-अलग आकार प्रकारकी पाँचों अङ्गुलियाँ पतली हैं. दिव्य परमधामके इन अङ्गोंका वर्णन कैसे किया जाए ? ये तो अति उज्ज्वल एवं लालिमा युक्त होनेसे आनन्ददायी हैं.

आठ रंग के नंग की, पेहेरी जो मुंदरी ।
एक कंचन एक आरसी, सोभित दसों अंगुरी ॥ ९३

आठों अंगुलियोंमें आठ रङ्गके रत्नोंकी मुद्रिकाएँ (अङ्गूठी) सुशोभित हैं. एवं दोनों अङ्गूष्ठोंमें एकमें कञ्चन तथा दूसरेमें दर्पण रंगकी अंगूठियाँ हैं. इस प्रकार दसों अङ्गुलियाँ सुशोभित हैं.

मानिक मोती लसनिएं, पाच पांने पुखराज ।
गोमादिक और नीलवी, आठों अंगुरी रही बिराज ॥ ९४

इन आठों अङ्गुलियोंमें माणिक्य, मोती, वैदूर्यमणि (लहसुनिया), पाच, पन्ना, पुखराज, गोमादिक एवं नीलमणि आदि आठ रत्नोंकी आठ मुद्रिकाएँ सुशोभित हैं.

अंगूठे हीरे की आरसी, दसमी जडित अति सार ।
ए जो दरपन माहें देखत, अंबर न माए झलकार ॥ ९५

अङ्गुष्ठकी नवमी अङ्गुष्ठी स्वर्णकी है तथा दसवीं दर्पणकी आभायुक्त विशेष हीरेकी है जिसमें श्रीश्यामाजी अपना शृङ्गार देखतीं हैं. उसका तेज आकाशमें भी नहीं समाता है.

नख निमूना देऊं हीरों का, सो मैं दिया न जाए ।
एक नख जरे की जोत तलें, कै सूरज कोट ढंपाए ॥ ९६

श्रीश्यामाजीके करकमलके नखोंकी उपमा हीरेसे भी नहीं दी जा सकती. क्योंकि नखके एक एक कणके प्रखर तेजमें करोड़ों सूर्यका प्रकाश भी ढँक (निस्तेज पड़) जाता है.

अब कहूं चरन कमल की, जो अरस रूहों के जीवन ।
वसत हमेसा चरन तलें, जो अरवा अरस के तन ॥ ९७

अब मैं श्रीश्यामाजीके उन चरण-कमलोंका वर्णन करता हूँ जो परमधामकी आत्माओंके जीवन (आधार) स्वरूप हैं. इन्हीं चरणों तले ब्रह्मात्माएँ सदा-सर्वदा रहतीं हैं.

चरन तली अति कोमल, रंग लाल लांके दोए ।
मीहीं रेखा माहें कै विध, ए बरनन कैसे होए ॥ ९८

श्रीश्यामाजीके चरण तल अत्यन्त कोमल हैं. इन दोनोंकी गहराई (लाँक) लालिमा युक्त है. उनके मध्यमें विभिन्न प्रकारकी सूक्ष्म रेखाएँ हैं जिनका वर्णन ही नहीं हो सकता.

ए जो सलूकी चरनकी, निपट सोभा सुन्दर ।
जो कोई अरवा अरस की, चूभ रेहेत हैडे अंदर ॥ ९९

इन चरण कमलोंकी रचना अति मनोहारी तथा अनुपम सौन्दर्ययुक्त है. परमधामकी ब्रह्मात्माओंके हृदयमें ये श्रीचरण स्वतः अङ्कित हो जाते हैं.

कोई नाहीं इनका निमूना, पोहोंचे अति सोभित ।
टांकन घूंटी कांडे एडियां, पांउ तली अति झलकत ॥ १००

इन श्रीचरणोंकी कोई उपमा ही नहीं है. इनके ऊपरका भाग (पहुँचा) भी अनुपम सौन्दर्ययुक्त है. इनके टखने, घूँटी, कांड़ा (कड़ा पहननेका स्थान), एड़ी तथा चरणतल अत्यन्त प्रकाशमय हैं.

ए छब फब सब देख के, इन चरन तलें वसत ।
ए सुख अरस रूहें जानहीं, जिनकी ए निसवत ॥ १०१

इन चरणों तले रहने वाली परमधामकी आत्माएँ ही इन श्रीचरणोंकी छविके सौन्दर्यको निहार सकतीं हैं. इनके महत्त्वको भी वे ही समझ सकतीं है, जिनका सम्बन्ध इन चरणोंके साथ है.

चारों जोडे चरन के, झांझर घूंघर कडी ।
कांबिएं नंग अरस के, जानों के चारों जोडे जडी ॥ १०२

श्रीश्यामाजीके युगलचरणोंमें झाँझरी, घुँघुरु, कड़ा तथा काँवी ये चार-चार आभूषण शोभायमान हैं. इनमें परमधामके रत्न इस प्रकार सुशोभित हैं मानों चारोंमें एक साथ समान रूपसे जड़े हुए हों.

नंग नीले पीले झांझरी, और मोती मानिक पांने जरी ।
निरमल नाके कंचन, रंग लाल लिए घूंघरी ॥ १०३

इन आभूषणोंमें-से झांझरीमें नीले तथा पीले रङ्गके रत्न जड़े हुए हैं साथ ही जरीके साथ मोती, माणिक्य तथा पन्ना जैसे रत्न सुसज्जित हैं. लालिमायुक्त घुँघुरुमें निर्मल स्वर्णके कुंदे लगे हुए हैं.

गाठें बाले रसायन सों, अरस के पांचों नंग ।
घूंघरी नाकों बीच पीपर, फुमक करत जवेरों जंग ॥ १०४

घुँघुरुके इन रत्नोंमें रसायनके साथ-साथ धातुके तारकी गाँठें हैं. ये पाँचों

रत्न परमधामके हैं. इसके कुन्दोंमें पीपर (एक आभूषण)की भाँति छोटे – छोटे फूल हैं. इनके फुँदनोंमें जड़े हुए रत्नोंकी किरणें परस्पर द्वन्द्व करतीं हैं.

हीरे लसनियएं हेम में, कडी जोत झलकत ।
नीलवी कुंदन कांबिए, जानों जोत एही अतंत ॥ १०५

स्वर्ण निर्मित कड़ेमें हीरा एवं वैदूर्यमणि (लहसुनिया) जैसे रत्न जड़े हुए हैं जिनका प्रकाश चमकता रहता है. इसी प्रकार काँवीमें कुन्दनके साथ नीलमणि जड़ा हुआ है. ऐसा प्रतीत होता है कि इन सभीमें इसीका प्रकाश सर्वोत्तम है.

बोलत बानी माधुरी, चलत होत रनकार ।
खुसबोए तेज नरमाई, जोत को नाहीं पार ॥ १०६

श्रीश्यामाजी चब चलने लगतीं हैं तब इन आभूषणोंसे कर्णप्रिय मधुर ध्वनि निकलती है. इन आभूषणोंमें सुगन्धि, कान्ति तथा मृदुलता भरपूर है. इनके प्रकाशका कोई पारावार नहीं है.

अंगुरिएं अनवट बिछिया, पांने मानिक मोती सार ।
स्वर मीठे बाजत चलते, करत हैं ठमकार ॥ १०७

श्रीश्यामाजीने अपने चरणोंकी अङ्गुलियोंमें मुद्रिकाएँ (बिछूआ) तथा अंगूठेमें अंगूठी धारण की हुई है. जिनमें पन्ना, माणिक्य तथा मोती सुन्दर ढंगसे जड़ायमान हैं. ठुमक–ठुमक कर चलते समय इनसे मधुर स्वर मुखरित होते हैं.

नख अंगूठे अंगुरियां, अंबर न माए झलकार ।
ढांपत कोटक सूरज, और सीतलता सुखकार ॥ १०८

इन श्रीचरणोंके अंगूठे तथा अङ्गुलियोंके नखोंसे निकली हुई ज्योतिर्मयी किरणोंका प्रकाश आकाशमें भी समाता नहीं है. यह शीतल तथा सुखदायी प्रकाश करोड़ों सूर्यको भी निस्तेज बना देता है.

एक नख के तेज सों, ढांपत कै कोट सूर ।
जो कहूं कोटान कोटक, तो न आवे एक नख के नूर ॥ १०९

जब एक ही नखके प्रकाशसे करोड़ों सूर्यका प्रकाश भी ढँक जाता है तो कोटि-कोटि सूर्योंकी बात करें तो भी उनका प्रकाश एक नखके प्रकाशके समक्ष अस्तित्व नहीं रखता.

कोई भांत तरह जो अरस की, पेट पांसे उर अंग सब ।
हाथ पांउ कंठ मुख की, किन विध कहूं ए छब ॥ ११०

परमधामके स्वरूपकी दिव्यता ही कुछ इस प्रकार है कि उनका उदर, पसली, वक्षस्थल आदि अंगोंके साथ साथ उनके हाथ, पाँव, कण्ठ तथा मुखारविन्दकी अनुपम छविका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

कोनी कलाई अंगुरी, पेट पांसे उर खभे ।
हाथ पांउ पीठ मुख छब, हक नूर के अंग सबे ॥ १११

श्रीश्यामाजीके अङ्गोंमें कोहनी, कलाई, अङ्गुलियाँ, उदर, पसली, वक्षस्थल, स्कन्ध, हाथ-पाँव, पृष्ठभाग, मुखारविन्द आदिकी सुन्दरता श्रीराजजीके तेजोमय आलोकसे ही आलोकित है.

मैं सोभा बरनों इन जुबां, ले मसाला इत का ।
सो क्यों पोहोंचे इन सांईको, जो बीच अरस बका ॥ ११२

इस नश्वर संसारकी जिह्वासे यहींकी सामग्रियोंकी उपमा देकर यदि इस दिव्य शोभाका वर्णन करना भी चाहें तो भी ये नश्वर वस्तुएँ दिव्य परमधामके स्वामी तक कैसे पहुँच सकेंगी ?

बीडी सोभित मुख में, मोरत लाल तंबोल ।
सोभा इन सुरत की, नहीं पटंतर तोल ॥ ११३

श्रीश्यामाजी अपने मुखारविन्दमें ताम्बूलका बीड़ा रखकर चबाने लगती हैं तब उनके लावण्यपूर्ण मुखमण्डलकी शोभाकी तुलना अन्य किसी वस्तुसे नहीं की जा सकती.

सूछम बय उनमद अंगे, सोभा लेत किसोर ।
बका बय कबूं न बदले, प्रेम सनेह भर जोर ॥ ११४

किशोर वय होते हुए भी श्रीश्यामाजीके दिव्य शरीरमें यौवनकी मस्तीका सूक्ष्म भाव शोभायुक्त प्रतीत होता है. वैसे तो परमधाममें अवस्थाका परिवर्तन नहीं है. वहाँ तो केवल शाश्वत प्रेम और स्नेहका ही साम्राज्य है.

नाम लेत इन सरूप को, सुपन देह उड जाए ।
जोलों रूह ना इसक, तोलों केहेत बनाए ॥ ११५

इस दिव्य स्वरूपका नाम मात्र लेने पर भी स्वप्नका यह तन उड़ जाता है. जब तक हृदयमें प्रेमका आविर्भाव नहीं होता तभी तक इस प्रकारका वर्णन संभव है.

कोटान कोट बेर इन मुख पर, निरख निरख बलि जाऊं ।
ए सुख कहूं मैं तिन आगे, अपनी रूह अरस की पाऊं ॥ ११६

श्रीश्यामाजीके इस दिव्य मुखारविन्दकी शोभा निहारते हुए मैं स्वयंको करोड़ों बार समर्पित कर दूँ. जब मुझे परमधामकी ब्रह्मात्मा मिलती है तब मैं उसीके आगे इस परम सुखका वर्णन करता हूँ.

मुख छब अति बिराजत, सोभित सब सिनगार ।
देख अंगूठे आरसी, भूषन करत झलकार ॥ ११७

श्रीश्यामाजीके मुखारविन्दकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है. उनका संपूर्ण शृङ्गार अद्वितीय शोभा युक्त है. अपने अंगूठेमें पहनी हुई दर्पणकी अङ्गुष्ठीमें जब वह अपना शृङ्गार देखने लगतीं हैं तब उनके सभी आभूषण झलकते हुए दिखाई देते हैं.

भौं भृकुटी नैन मुख नासिका, हरवटी अधुर गाल कान ।
हाथ पांउ उर कंठ हंसें, सब नाचत मिलन सुभान ॥ ११८

श्रीश्यामाजीकी पलकें, भृकुटि, नयन, मुखमण्डल, नासिका, चिबुक, अधर, कपोल, श्रवण, हाथ, पाँव, वक्ष, कण्ठ आदि सभी प्रियतम धनीसे मिलनेकी ललकमें झूम-झूम कर नृत्य करते हैं.

तेज जोत प्रकास में, सोभा सुंदरता अनेक ।
कहा कहूं मुखारबिंदकी, नेक नेक से नेक ॥ ११९

श्रीश्यामाजीके अङ्ग प्रत्यङ्गोंकी कान्ति, ज्योति तथा प्रकाशमें उनकी सुन्दरता की शोभा अनेक गुणा बढ़ जाती है. उसमें भी उनके मुखारविन्दकी शोभाका वर्णन कैसे करूँ ?

श्रवन कंठ हाथ पांउ के, भूषन सोभित अपार ।
एक भूषन नकस कै रंग, रूह कहा करे दिल विचार ॥ १२०

उनके श्रवण अङ्ग, कण्ठ तथा हाथ-पाँवके आभूषणोंकी शोभा भी अपार है. एक ही आभूषणकी चित्रकारीमें अनेक रङ्ग झलकते हैं तो यह आत्मा सभी आभूषणोंको अपने हृदयमें कैसे चिन्तन कर सकती है ?

नेक सिनगार कह्या इन जुबां, क्यों बरनवाए सुख ए ।
ए सोभा न आवे सबद में, नेक कह्या वास्ते रूहों के ॥ १२१

मैंने इस नश्वर जिह्वासे श्रीश्यामाजीके शृङ्गारका लेशमात्र वर्णन किया है. इस सुखद अनुभूतिको शब्दोंके द्वारा कैसे व्यक्त किया जाए ? यद्यपि यह दिव्य शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती तथापि ब्रह्मात्माओंके लिए यह संक्षिप्त वर्णन किया गया है.

मीठी जुबां स्वर बान मुख, बोलत लिए अति प्रेम ।
पीउसों बातें मुख हंसें, लिए करें मरजादा नेम ॥ १२२

श्रीश्यामाजी अपने मधुर कण्ठसे प्रेम पूर्वक माधुर्यपूर्ण वाणी बोलतीं हैं. अपने प्रीयतम धनीसे बात करती हुई भी वे अपनी मर्यादाओंमें रहतीं हैं.

सामी सैन देत सुख चैन की, उतपन अंग अतंत ।
कोमल हिरदे अति बिचार, क्यों कहूं नरमाई सिफत ॥ १२३

जब श्रीराजजी अपने संकेतोंमें प्रेमभाव व्यक्त करते हैं तब इनके अङ्ग प्रत्यङ्गमें अपार सुख उभर आता है. इस समय उनके कोमल हृदयमें उठे हुए विचारोंकी मृदुलताका वर्णन कैसे किया जाए ?

चातुरी गति की क्यों कहूं, सब बोलें चालें सुध होत ।
अव्वल इसक सब खूबियां, हकके अंग की जोत ॥ १२४

इनके हृदयका चातुर्य एवं गतिका वर्णन कैसे करें ? श्रीराजजी जो कुछ बोलते हैं तथा संकेत करते हैं उन सबकी सुधि इनको तत्काल हो जाती है. वस्तुतः प्रेमकी श्रेष्ठता ही यही है क्योंकि श्रीश्यामाजी स्वयं श्रीराजजीके ही अङ्गकी ज्योतिरूपा हैं.

मुख मीठी अति रसना, चूभ रेहेत रूहके मांहिं ।
सो जानें रूहें अरस की, न आवे केहेनी में कांहिं ॥ १२५

श्रीश्यामाजीके मुखारविन्दसे व्यक्त हुई मधुर वाणी ब्रह्मात्माओंके हृदयमें अङ्कित हो जाती है. उस आनन्दको परमधामकी ब्रह्मात्माएँ ही जान सकतीं हैं. उसे शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

क्यों कहूं गति चलन की, जो स्यामाजी पांउ भरत ।
नाहीं निमूना इनका, जो गति स्यामाजी चलत ॥ १२६

जब श्यामाजी ठुमक कर पाँव भरतीं हैं उस समय उनकी गतिके चालका वर्णन कैसे करें ? श्रीश्यामाजी जिस गतिसे चलतीं हैं उसकी कोई उपमा ही नहीं है.

बल बल जाऊं चाल गतिकी, भूषन तेज करे झलकार ।
गिरदवाए मिलावा रूहनका, सब सोभा साज सिनगार ॥ १२७

श्रीश्यामाजीकी ऐसी चाल पर मैं स्वयंको समर्पित करता हूँ. उस समय उनके श्रीचरणोंके आभूषणोंका तेज अत्यधिक प्रकाशित होता है. ब्रह्मात्माएँ शृगारसे सुसज्जित होकर उनके चारों ओर चलतीं हैं.

सोभा बडी सब रूहों की, सब के बस्तर भूषन ।
जोत न माए आकासमें, यों घेर चली रोसन ॥ १२८

इस समय ब्रह्मात्माएँ तथा उनके वस्त्र आभूषणकी शोभा अद्वितीय होती है. इन वस्त्र तथा आभूषणोंसे निकली हुई ज्योति इस प्रकार चारों ओर घेरकर प्रकाशित होती है कि वह आकाशमें भी समाती नहीं है.

अरस मिलावा ले चली, अपने संग सुभान ।
किया चाह्या सब दिलका, आगूं आए लिए मेहेरबान ॥ १२९

इस प्रकार श्रीश्यामाजी ब्रह्मात्माओंके समूहको लेकर अपने प्रियतम धनीसे मिलनेकी चाहना लेकर (तीसरी भूमिकाके आसमानी रङ्गके मन्दिरसे) आगे बढ़तीं हैं तब परमकृपालु श्रीराजजी भी उनके मनोभावोंको समझकर आगे आकर उनका स्वागत करते हैं.

ए सोभा जुगल किशोर की, चौथा सागर सुख ।
जो हक तोहे हिंमत देवहीं, तो पी प्याले हो सनमुख ॥ १३०

श्रीयुगलकिशोरके शृगारकी शोभाका यह चौथा सागर (दधिसागर) अत्यन्त सुखदायी है. हे आत्मा श्रीराजजी यदि तुझे शक्ति प्रदान करें तो इस प्रेमके प्यालेको पीकर तू उनके सम्मुख जागृत हो जा.

जुगल के सुख केते कहूं, जो देत खिलवत कर हेत ।
सो सुख इन नेहेरन सों, धनी फेर फेर तोकों देत ॥ १३१

ये युगल स्वरूप अपनी आत्माओंको प्रेम पूर्वक जो एकान्त सुख प्रदान करते हैं उसका वर्णन मैं कैसे करूँ ? तथापि हे आत्मा ! धामधनी उस अपार सुखको नहरोंकी अविरल धाराओंकी भाँति श्रीतारतम सागरके माध्यमसे तुझे प्रदान कर रहे हैं.

ए बानी सब सुपन में, और सुपने में करी सिफत ।
सो क्यों पोहोंचे सोभा जुगल को, सुपन कौन निसबत ॥ १३२

स्वप्नवत् जगतमें बैठकर ही यह वाणी कही है और स्वप्नके शब्दोंमें ही मैंने इसकी महिमा गाई है. इसलिए यह शोभा श्रीयुगलकिशोर तक कैसे पहुँच सकती है ? क्योंकि स्वप्न और शाश्वतका क्या सम्बन्ध हो सकता है ?

सबद न पोहोचे सुभान को, तो क्यों रहों चुप कर ।
दिल कान जुबां ले चलत, हक तरफ वांहें नजर ॥ १३३

यद्यपि इस जगतके शब्द परब्रह्म तक नहीं पहुँच सकते तथापि वर्णन किए बिना कैसे चुप रहा जा सकता है ? मेरा यह हृदय, श्रवण अङ्ग एवं जिह्वा

मुझे उसी ओर लेकर चल रहे हैं जहाँ पर श्रीराजजीकी बायीं ओर श्रीश्यामाजी विराजमान हैं.

एते दिन ढांपे रहे, किन कही ना हकीकत ।
जो अजूं न बोलत दुनी में, तो जाहेर होए ना हक सूरत ॥ १३४

आज तक यह रहस्य छिपा रहा, किसीने भी परमधामकी इस वास्तविकता को व्यक्त नहीं किया. यदि मैं भी अभी इस रहस्यको जगतमें प्रगट नहीं करता तो श्रीराजजीका दिव्य स्वरूप कभी भी व्यक्त नहीं होता.

ए द्वार दुनीमें क्यों खोलिए, ए जो गैब हक खिलवत ।
सो द्वार खोले मैं हुकमें, अरस बका हक मारफत ॥ १३५

परमधामके इन गूढ़ रहस्योंके द्वारोंको इस जगतमें कैसे उद्घाटित किया जाए ? मैंने तो श्रीराजजीके आदेशसे ही इन द्वारोंको खोलकर पूर्णब्रह्म परमात्मा तथा परमधामकी पहचान करवाई है.

दुनियां से ढांपे रहे, अरस बका एते दिन ।
रेहेत अब भी ढांपियां, जो करे ना रूह रोसन ॥ १३६

इस जगतमें आज तक अखण्ड परमधामका रहस्य छिपा हुआ था. यदि मेरे द्वारा यह उद्घाटित नहीं किया जाता तो अभी तक यह रहस्य ही बना रह जाता.

ए खोलें बडा सुख होते हैं, मेरी रूह और रूहन ।
इनसे हैयाती पावहीं, चौदे तबक त्रैगुन ॥ १३७

परमधामकी इन गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेसे मेरी आत्मा तथा अन्य ब्रह्मात्माओंको अपार सुखका अनुभव होता है. इसीके द्वारा ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंके जीव तथा त्रिगुणाधिपति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) भी अखण्ड मुक्ति प्राप्त करेंगे.

कयामत सरत पोहोंचे बिना, तो ढांपे रहे एते दिन ।
हकें आखर अपने कौल पर, किए जाहेर आगूं रूहन ॥ १३८

आत्म जागृतिका निश्चित अवसर अभी तक न आनेके कारण आज तक

यह रहस्य छिपा रहा. अब श्रीराजजीने अपने वचनानुसार आत्मजागृतिकी वेलामें प्रकट होकर ब्रह्म आत्माओंके समक्ष इस गूढ़ रहस्यको स्पष्ट कर दिया है.

ए जो कहे मैं सरूप, जुगल किसोर अनूप ।
दै साहेदी महंमद रूहअल्ला, किए जाहेर अरस सरूप ॥ १३९

मैंने परमधामके इन युगल स्वरूपकी अनुपम शोभाका जो वर्णन किया है उसकी साक्षी रसूल मुहम्मदने कुरानके द्वारा तथा सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजने शास्त्रोंके द्वारा देकर परमधामके इन दिव्य स्वरूपोंसे परिचित करवाया है.

एही लैलत कदरकी फजर, ऊग्या बका दिन रोसन ।
हक खिलवत जाहेर करी, अरस पोहोंचे हादी मोमन ॥ १४०

आत्मजागृतिके इस अवसरको महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कद्र) के पश्चातका प्रभातका समय (ऊषाकाल) कहा गया है. इसके बाद जगतमें अखण्ड ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैलाकर परब्रह्म परमात्मा तथा ब्रह्मज्ञानके रहस्यको स्पष्ट करते हुए श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्म आत्माएँ परमधाममें जागृत होंगी.

महामत कहे अपनी रूहको, और अरस रूहन ।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन ॥ १४१

महामति अपनी आत्मा तथा परमधामकी सभी ब्रह्म आत्माओंको कहते हैं, अब सभी इस सुख सागरमें अवगाहन (पैठ) करते हुए अपने घर परमधाममें जागृत हो जाएँ.

प्रकरण ६ चौपाई ४९०

चौसठ थंभ चौक खिलवतका बेवरा (चौंसठ स्तम्भयुक्त मूलमिलावाका विवरण)

इन विध साथजी जागिए, बताए देऊं रे जीवन ।
स्याम स्यामाजी साथजी, जित बैठे चौक वतन ॥ १

हे सुन्दरसाथजी ! श्रीराजश्यामाजीके स्वरूप एवं शृगारको हृदयमें धारण कर

इस प्रकार जागृत हो जाएँ. मैं आपको अपने प्राणाधार धामधनीकी पहचान करवाता हूँ. श्रीराजजी, श्यामाजी एवं समस्त ब्रह्मात्माएँ परमधाम रङ्ग भवनकी प्रथम भूमिकाके पाँचवें चौक मूलमिलावामें विराजमान हैं.

याद करो सोई साइत, जो हंसने मांग्या खेल ।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजिए केल ॥ २

आप उस घड़ीको याद करें जब हमने इसी मूलमिलावामें बैठकर संसारका यह (हाँसीका) खेल देखनेकी माँग की. अब इस खेलके आनन्दको हृदयमें धारण कर यहीं पर (मूलमिलावामें) जागृत होकर अपने धामधनीके साथ आनन्द विहार करें.

सुरत एकै राखियो, मूल मिलावे मांहिं ।
स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जांहिं ॥ ३

अपनी सुरता (ध्यान)को इसी मूलमिलावामें केन्द्रित करें. रङ्गभवनकी इस प्रथम भूमिकामें श्रीराजजी एवं श्यामाजी ब्रह्मात्माओं सहित विराजमान हैं.

चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेडा विराजत ।
तले गिलम ऊपर चंद्रवा, चौसठ थंभों भर इत ॥ ४

मूलमिलावाके गोल चबूतरेके ऊपर चारों ओर चौंसठ स्तम्भ सुशोभित हैं. जिन पर कटहरा (कठेड़ा) लगा हुआ है. इस चबूतरेमें नीचे (फर्सपर) कालीन (गिलम) बिछा हुआ है एवं ऊपर चौंसठ स्तम्भों पर चँदवा सुशोभित है.

कठेडा किनार पर, चबूतरे गृदवाए ।
सोलें थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए ॥ ५

चबूतरेके चारों ओर किनार पर कटहरा सुशोभित है, जो एक द्वारसे दूसरे द्वार तक विद्यमान सोलह-सोलह स्तम्भोंके साथ संलग्न है. इसकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है.

चार द्वार चारों तरफों, और कठेडा सब पर ।
चौसठ थंभों के बीच में, गिलम बिछाई भर कर ॥ ६

चबूतरेके चारों ओर चार द्वार सुशोभित हैं. उनको छोड़कर सभी स्तम्भोंके

साथ कटहरा संलग्न है. इन चौंसठ स्तम्भोंके मध्यमें पूरे चबूतरे पर सुन्दर कालीन बिछा हुआ है.

कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग ।
बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग ॥ ७

अब इन चौंसठ स्तम्भोंका विवरण देते हैं, चार धातुओं तथा बारह रत्नोंके चारों ओरके इन सोलह-सोलह स्तम्भोंमें सोलह प्रकारके रङ्गोंकी आभा झलकती है.

चारों तरफों एक एक रंग के, तैसी तरफों चार ।
नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार ॥ ८

इन चारों भागोंमें चारों ओर क्रमशः एक-एक रङ्गके स्तम्भ सुशोभित हैं. अलग-अलग रङ्गोंके ये स्तम्भ एक दूसरेके साथ मिलनेसे नये-नये रङ्गकी शोभा धारण करते हैं. इस प्रकार चारों ओरके इन चौंसठ स्तम्भोंका निरूपण हुआ है.

ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर ।
ए चार रंग का बेवरा, लिए खडे जहूर ॥ ९

इन सोलह स्तम्भोंमें जो चार स्तम्भ चार धातुओंके कहे गए हैं वे हेम (स्वर्ण), कञ्चन (शुद्ध स्वर्ण), रजत (चाँदी) एवं आयस (लोहा-नूर) के हैं. वे अपने ही चार रङ्गोंकी आभासे प्रदीप्त होते हुए सुशोभित हैं.

और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पांने हीरे पुखराज ।
मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे विराज ॥ १०
नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल ।
और रंग कपूरिया, ए रंग बारे इन मिसाल ॥ ११

शेष बारह स्तम्भोंके बारह भिन्न-भिन्न रत्नोंका विवरण इस प्रकार है- उनमें पाच, पन्ना, हीरा, पुखराज, माणिक्य, मोती, गोमादिक, पिरोजा (हरित रत्न), नीलमणि, वैदूर्यमणि (लहसुनिया), लाल वर्णका प्रवाल एवं कर्पूर वर्णका रत्न शोभायमान हैं.

चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन ।
पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन ॥ १२

चारों ओरके चार द्वार अलग-अलग चार ही रङ्गोंमें सुशोभित हैं. प्रत्येक द्वारमें दोनों ओर (दायें-बायें) एक ही रङ्गके दो-दो स्तम्भ होनेसे कुल आठ स्तम्भ चार रंग के हैं. इन चारों द्वारोंमें पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तरके द्वार क्रमशः पाच, माणिक्य, नीलवी तथा पुखराज रत्नके हैं जो अत्यन्त शोभायमान हैं.

और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग ।
द्वार नीलवी संग दो पाचके, करें साम सामी जंग ॥ १३

पूर्वके द्वारके पाचके स्तम्भोंके दोनों ओर (दाएँ-बाएँ) नीलमणिके स्तम्भ सुशोभित हैं. पश्चिमकी ओर नीलमणिके द्वारके दोनों ओर पाचके स्तम्भ सुशोभित है. इनका प्रकाश परस्पर द्वन्द्व करता है.

दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास ।
दो थंभ द्वार पुखराजके, ता संग मानिक करे प्रकास ॥ १४

दक्षिणकी ओरके माणिक्यके स्तम्भोंके दोनों ओर पुखराजके स्तम्भ हैं तथा उत्तरके द्वारके पुखराजके स्तम्भोंके दोनों ओर माणिक्यके स्तम्भ प्रकाशित होते हैं.

थंभ बारे भए इन विध, साम सामी एक एक ।
यों बारें बने साम सामी, तरफ चारों इन विवेक ॥ १५

चारों खण्डोंके शेष बारह-बारह स्तम्भ चारों ओर एक दूसरेके सम्मुख इस प्रकार सुशोभित हैं-

हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पांने परवाल ।
हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल ॥ १६
पिरोजा और कपुरिया, याके आठ थंभ रंग दोए ।
गिन छोडे दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए ॥ १७

उक्त बारह स्तम्भ (पूर्वसे दक्षिणकी ओर) क्रमशः इस प्रकार हैं- हीरा,

वैदूर्यमणि (लहसुनिया), गोमादिक, मोती, पन्ना, प्रवाल, हेम, रजत (चाँदी), आयस (नूर), कञ्चन, पिरोजा एवं कपूरिया (कर्पूर वर्णका). चारों द्वारोंके आठ स्तम्भ दो रङ्गोंके रत्नोंके हैं. इन चारों द्वारोंके (प्रत्येक द्वारके दोनों ओरके दो-दो) स्तम्भोंको छोड़कर चारों खण्डोंके स्तम्भोंकी गिनती करने पर एक-एक रङ्गके चार-चार स्तम्भ दिखाई देते हैं.

ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के ।
सो चारों तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए ॥ १८

एक खण्डके सोलह स्तम्भोंका यह विवरण है. इस गोल चबूतरे पर एक-एक रङ्गके चार-चार स्तम्भ (चारों ओर) एक दूसरेके सम्मुख हैं. इस प्रकार इन चौंसठ स्तम्भोंकी शोभा है.

चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच ।
जोत करे सब जवेरों, जेता तलें दुलीच ॥ १९

इन चौंसठ स्तम्भोंके मध्य ऊपरी भागमें चारों ओर चँदवा सुशोभित है एवं नीचे (फर्श पर) सुन्दर कालीन बिछा है. जिस पर सभी रत्नोंका ज्योतिर्मय प्रकाश सर्वत्र व्याप्त है.

माहें वृख बेली कै कटाव, कै फूल पात नकस ।
देख जवेर जुगत कै चंद्रवा, जानों के अति सरस ॥ २०

इस चँदवामें वृक्ष, लताएँ, पुष्प, पत्तियाँ आदि की सुन्दर चित्रकारी अङ्कित है. युक्ति पूर्वक रत्न जड़ित इस चँदवाकी रङ्गमयी छटा अतीव सुन्दर एवं मनोहारी है.

इन चौक बिछाई गिलम, तिन पर सिंघासन ।
चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन ॥ २१

मूलमिलावाके इस चौकमें बिछे हुए कालीन पर दिव्य सिंहासन शोभायमान है. उससे उठती हुई ज्योतिर्मयी किरणोंकी लहरें सर्वत्र झलकतीं हैं.

झलकत सुंदर गिलम, अति सोभित सिंघासन ।
यों जोत जमी जवेरन की, बीच जुगल जोत रोसन ॥ २२

चबूतरे पर बिछा सुन्दर कालीन चमकता है. उसके ऊपर देदीप्यमान

सिंहासन सुशोभित है. इस प्रकार यह दिव्य चबूतरा रत्नोंकी रङ्गमयी आभासे प्रदीप्त है. मध्यमें स्थित तेजोमय सिंहासन पर युगल स्वरूप विराजमान हैं.

लाल तकिए उपर सोभित, धरे बराबर एक दोर ।
नरमों में अति नरम हैं, पसम भरे अति जोर ॥ २३

कालीन पर प्रत्येक स्तम्भोंके पास लाल तकिए एक ही पक्तिमें समान रूपसे रखे हुए हैं. पश्मसे भरे हुए ये तकिए अत्यन्त कोमल हैं.

जेता एक कठेडा, सबमें सुंदर तकिए ।
तिन तकियों साथ भराएके, बैठे एक दिली ले ॥ २४

स्तम्भोंके मध्यमें जितने स्थान पर कटहरा है, उतने ही स्थानों पर सुन्दर तकिए सुशोभित हैं. इन तकियोंके साथ (सहारे) सभी ब्रह्मात्माएँ एकात्मभावसे बैठीं हैं.

जिन विध बैठियां बीचमें, याही विध गृदवाए ।
तरफ चारों लग कठेडे, बीच बैठा साथ भराए ॥ २५

ये ब्रह्मात्माएँ जिस प्रकार मध्यमें स्थित सिंहासनके चारों ओर बैठीं हैं. उसी प्रकार अन्य पङ्क्तियोंमें भी चारों ओर बैठीं हैं. इस प्रकार ब्रह्मात्माएँ चारों ओरके कटहरे पर्यन्त फैल कर बैठीं हुई हैं.

किरना उठें नई नई, सिंघासन के जोत ।
कै तरंग इन जोत के, नूर रंगों से होत ॥ २६

दिव्य सिंहासनसे प्रतिपल नई-नई किरणें प्रदीप्त होतीं हैं. यहाँ पर विभिन्न रत्नोंसे निकली हुई किरणोंकी विभिन्न लहरें दिखाई देतीं हैं.

पाइए इन तखत के, उतम रंग कंचन ।
छे डाडे छे पाइयों पर, अति सुंदर सिंहासन ॥ २७

इस सिंहासनके सुन्दर पाये कञ्चन रङ्गके हैं. इन छः पायोंके ऊपर छः दण्ड (अक्षदण्ड) सुशोभित हैं. इस प्रकार दिव्य सिंहासन अतीव सुन्दर है.

दस रंग डांडों देखत, नए नए सोभित जे ।
हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसों दिस देखत ए ॥ २८

इन अक्षदण्डोंमें दस रङ्गोंकी आभा झलकती है. दस पहलोंसे निकले हुए ये रङ्ग एक दूसरेसे नूतन दिखाई देते हैं. इस प्रकार दसों दिशाओंमें अलग-अलग प्रकारके रङ्ग दिखाई देते हैं.

एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग ।
यों दसों दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कै तरंग ॥ २९

एक ओरसे देखने पर एक रङ्ग दिखाई देता है तो दूसरी ओरसे देखने पर दूसरा ही रङ्ग दिखाई देता है. इस प्रकार दसों दिशाओंमें अलग-अलग रङ्ग दिखाई देते हैं. इनमें भी प्रत्येक रंगसे अनेक तरङ्गें उठतीं हैं.

तीन डांडे जो पीछले, दो तकिए बीच तिन ।
कै रंग वृख बेली बूटिया, ए कैसे होए बरनन ॥ ३०

सिंहासनके पृष्ठ भागमें लगे हुए तीन अक्षदण्डोंके मध्य दो तकिए सुशोभित हैं. उन पर विभिन्न रङ्गके वृक्ष, लताएँ तथा छोटे-छोटे फूलोंकी चित्रकारी हैं. इनका वर्णन कैसे किया जाए ?

चारों किनारें चढती, दोरी बेली चढती चार ।
चारों तरफों फूल चढते, करत अति झलकार ॥ ३१

दोनों तकियोंके चारों किनारों पर ऊपरकी ओर जाती हुई लताओंकी चार चित्रकारी हैं. उनके ऊपर चारों ओर सुन्दर फूल हैं जो अत्यन्त प्रकाशमान हैं.

तिन डांडों पर छत्रियां, अति सोभित हैं दोए ।
माहें कै दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूं सोभा सोए ॥ ३२

उक्त छः अक्षदण्डों पर दो सुन्दर छत्र सुशोभित हैं. इनमें अनेक डोरियाँ, लताएँ तथा काँगरी सुशोभित हैं. इनकी अद्वितीय शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांडन ।
आठों के अवकास में, करत जंग रोसन ॥ ३३

इन दोनों छत्रियोंके ऊपर दो कलश सुशोभित हैं एवं छः अक्षदण्डों पर अन्य छः कलश शोभायमान हैं. इन आठों कलशों से उठती हुई ज्योतिर्मयी किरणें आकाशमें द्वन्द्व करतीं हैं.

नकस फूल कटाव कै, कै तेज जोत जुगत ।
देख देख के देखिए, नैना क्योंए न होए त्रपत ॥ ३४

इन कलशोंमें चित्रकारीके अनेक प्रकारके फूल तथा कटाव सुशोभित हैं. इनसे निकली हुई ज्योतिर्मयी किरणें सर्वत्र व्याप्त हैं. इस अद्वितीय शोभाको वारंवार देखने पर भी ये नयन तृप्त नहीं होते हैं.

चाकले दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार ।
बैठे सुंदर सरूप दोऊ, देख देख जाऊ बलिहार ॥ ३५

सिंहासन पर अत्यन्त कोमल दो आसन सुशोभित हैं. उनसे रत्नोंकी भाँति अपार सौम्य किरणें निकलतीं हैं. इन आसनोंके ऊपर विराजमान युगल स्वरूप श्रीराजश्यामाजीका दर्शन कर मैं उन पर वारंवार समर्पित होता हूँ.

जरे जिमी की रोसनी, भराए रही आसमान ।
क्यों कहूं जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान ॥ ३६

परमधामकी दिव्य भूमिके एक कणके प्रकाशसे ही संपूर्ण आकाश आच्छादित हो जाता है तो फिर इस तेजोमय सिंहासन की दिव्यताको किन शब्दोंमें व्यक्त करें, जिस पर स्वयं श्रीराजजी विराजमान हैं.

बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नंग इतके नाम ।
ए सबद तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना ना भागे हाम ॥ ३७

यद्यपि मैं नश्वर जिह्वाके द्वारा परमधामके दिव्य रत्नोंके रङ्गका वर्णन कर रहा हूँ. किन्तु नश्वर जगतके ये शब्द वहाँ तक पहुँच नहीं सकते तथापि कुछ कहे बिना चाहना भी पूर्ण नहीं होती.

ए जवेर कै भांत के, सोभित भांत रूप कै ।
सो पल पल रूप प्रकासहीं, यों सकल जोत एक मै ॥ ३८

परमधामके रत्न भी विभिन्न प्रकारके हैं एवं विभिन्न रूपमें सुशोभित हैं. प्रतिपल विभिन्न रंगोंमें प्रकाशित होने वाले इन रत्नोंके प्रकाशसे दिव्य तेजपुञ्ज बन जाता है.

गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उतर ।
जोतें जोत सब मिल रही, ए रंग जुदे कहूं क्यों कर ॥ ३९

कालीन पर शोभायमान फूल तथा लताओंके प्रकाश पर जब ऊपर से चँदवाकी रत्नमयी आभा पड़ जाती है तब दोनों ओरकी किरणें एक दूसरेसे इस प्रकार हिल-मिल जातीं हैं कि उनके अलग-अलग रङ्गोंका वर्णन करना कठिन हो जाता है.

ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत ।
पलक न पीछे फेरिए, ज्यों इसक अंग उपजत ॥ ४०

हे सुन्दरसाथजी ! यही अपना मूलमिलावा है, यहीं पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करें. पल मात्रके लिए भी यहाँ से दृष्टि न हटाएँ जिससे हृदयमें प्रेम भाव जागृत हो जाए.

जो मूल स्वरूप हैं अपने, जाको कहिए पर आतम ।
सो पर आतम लेयके, बिलसिए संग खसम ॥ ४१

यहाँ पर विराजमान जो हमारे मूल स्वरूप हैं उनको ही पर-आत्मा कहा गया है. इन्हीं पर-आत्मामें जागृत होकर अपने प्रियतम धनीके साथ आनन्द विहार करें.

महामत कहे ऐ मोमिनों, करूं मूल स्वरूप बरनन ।
मेहेर करी मासूकने, लीजो रूह के अन्तसकरन ॥ ४२

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मआत्माओ ! अब मैं परमधामके मूलस्वरूप श्रीराजजीके शृगारका वर्णन करता हूँ. प्रियतम धनीने मुझ पर अपार कृपा की है. आप सभी इस स्वरूपको अपने अन्तःकरणमें धारण करें.

प्रकरण ७ चौपाई ५३२

अरस तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम ।
सेज बिछाई रुच रुच के, एही तुमारा विश्राम ॥ १

हे धामधनी ! यह मेरा हृदय आपका ही परमधाम है. आप यहाँ पर आकर विश्राम करें. मैंने अपने हृदयमें बड़ी चाहनाके साथ आपके लिए सुन्दर शय्या बिछाई है. इसलिए आप इसे अपना विश्रान्ति स्थल बनाएँ.

अरस कह्या दिल मोमिन, अरस में सब विसात ।
निमख न्यारी न होए सके, रूह निसबत हक जात ॥ २

आपने ही ब्रह्मआत्माओंके हृदयको परमधाम कहा है. परमधाममें तो सब प्रकारकी सामग्रियाँ हैं. ये ब्रह्मआत्माएँ आपकी ही अङ्गनाएँ हैं. इसलिए पल मात्रके लिए भी आपसे दूर नहीं हो सकतीं.

इसक सुराही ले हाथमें, पिलाओ आठों जाम ।
अपनी अंगना जो अरस की, ताए दीजे अपनों ताम ॥ ३

हे धनी ! अपने कर कमलोंमें प्रेमकी सुराही (पात्र) धारण कर आप अपनी आत्माओंको आठों प्रहर प्रेमका पान करवाएँ. परमधामकी इन अङ्गनाओंको अपने प्रेमका पूर्ण आहार सदैव प्रदान करें.

इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम ।
रूहें त्रखावंती हककी, सो चाहें धनी प्रेम काम ॥ ४

आपने स्वयं यहाँ पधार कर अपना (तारतम) ज्ञान प्रदान किया है. इसकी साक्षीके रूपमें रसूल मुहम्मदके माध्यमसे कुरान भी भेजा है. ब्रह्म आत्माएँ आपके निश्छल प्रेमकी प्यासी हैं. वे अपने धनीके दिव्य प्रेमकी कामना करतीं हैं.

फुरमान ल्याया दूसरा, जाको सुकजी नाम ।
दै तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्ट की, जो उतरी अव्वल से धाम ॥ ५

तारतम ज्ञानकी दूसरी भी साक्षी है, उसे लेकर शुकदेवमुनि अवतरित हुए हैं. उन्होंने भी परमधामसे अवतरित हुई ब्रह्मआत्माओं तथा तारतम ज्ञानकी साक्षी दी है.

खिलवत खाना अरसका, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम ।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम ॥ ६

परमधाम रङ्ग भवनकी एकान्त स्थली मूलमिलावाके सिंहासन पर श्यामश्यामाजी विराजमान हैं. हे धनी ! आप मुझे प्रेमकी ऐसी मस्ती प्रदान करें जिससे मैं आपके श्रीचरणोंमें तल्लीन हो जाऊँ.

तुम लिख्या फुरमानमें, हक अरस मोमिन कलूब ।
सो सुकन पालो अपना, तुम हो मेरे मेहेबूब ॥ ७

आपने ही कुरानमें लिखवाया है कि ब्रह्मआत्माओंका हृदय ही आपका परमधाम है. हे धनी ! आप उन वचनोंको पूर्ण करें. आप ही तो हमारे प्रियतम हैं.

और भी लिख्या समनून को, हक दोस्ती में पातसाह ।
सो कौल पालो अपना, में देखूं मेहेबूब की राह ॥ ८

कुरानमें समनूनका उल्लेख इस प्रकार आया है कि परमात्माके साथ मित्रता करनेवालोंमें वह शिरोमणि था. हे धनी ! आप अपने वचनोंका पालन करें. मैं अपने प्रियतम धनीकी राह देख रहा हूँ. [कतेब ग्रन्थोंमें में समनूनका उल्लेख इस प्रकार है कि वह एक बड़ा त्यागी प्रतापी शासक था. उसने जीवन भर कष्ट सहन कर जनताकी सेवा की. तब परमात्माने उसे अपने आनेके वचन दिए. इस प्रसङ्गको यहाँ इसलिए दिया कि श्री प्राणनाथजीने समनूनकी भाँति आजीवन कष्ट उठाकर ब्रह्मआत्माओंकी सेवा की इसलिए वे धामधनीसे शीघ्र पधारनेकी प्रार्थना करते हैं.]

कहूं अबलों जाहेर ना हुई, अरस बका हक सूरत ।
हिरदें आओ तो कहूं, इत बैठो बीच तखत ॥ ९

आज तक कभी भी अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माके स्वरूपकी पहचान नहीं हुई थी. अभी तक सब कुछ अप्रकट ही था. हे धनी ! यदि आप मेरे हृदयरूपी सिंहासन पर आसीन हो जाएँ तो मैं इन रहस्योंको उजागर कर दूँ.

ए बजूद न खूबी ख्वाब की, ए कदम हक बका के ।
ढूंढया बुजरकों इमदाएसे, इत जाहेर न हुए कबूं ए ॥ १०

अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माका दिव्य स्वरूप स्वप्नवत् जगतके मिथ्या शरीरकी भाँति नहीं है. उन्हीं अक्षरातीत धनीके चरण कमलोंका वर्णन अब हो रहा है. इन स्वरूपको प्राप्त करनेके लिए कितने ही आप्त पुरुषोंने प्रयत्न किया किन्तु आज तक यह रहस्य स्पष्ट नहीं हुआ था.

उजल लाल तली पांउ की, रंग रस भरे कदम ।
छबि सलूकी अंग अरस की, रूह से छूटे क्यों दम ॥ ११

श्रीराजजीके चरणतल उज्ज्वल एवं लालिमापूर्ण हैं. इन श्रीचरणोंमें अलौकिक प्रेम तथा शाश्वत आनन्दका रङ्ग समाहित है. परमधामके मूलस्वरूपके इन चरणोंकी छविको ब्रह्मात्माएँ क्षण भरके लिए भी नहीं छोड़ सकतीं हैं.

मीहीं लीकें चरनों तली, रूह के हिरदे से छूटत नाहिं ।
ए निसबत भई अरसकी, लिखी रूहके ताले माहिं ॥ १२

इन चरण तलकी सूक्ष्म रेखाएँ ब्रह्म आत्माओंके हृदयसे छूटती ही नहीं हैं. यह परमधामके सम्बन्धकी ही विशेषता है कि यह सौभाग्य केवल ब्रह्म आत्माओंको ही प्राप्त है.

नख अंगूठे अंगुरिया, सिफत न पोहोंचे सुकन ।
आसमान जिमी के बीचमें, रूह याही में देखे रोसन ॥ १३

इन श्रीचरणोंके अङ्गुष्ठ तथा अंगुलियोंके नखकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती. ब्रह्मात्माएँ इन्हीं चरण कमलोंके प्रकाशको आकाशसे लेकर भूमि तक व्याप्त देखतीं हैं.

एक छोटे नख की रोसनी, ऐसा तिन का नूर ।
आसमान जिमी के बीचमें, जिमी जरे जरा भई सब सूर ॥ १४

इन श्रीचरणोंके एक छोटेसे नखका प्रकाश भी इतना प्रखर है कि वह भूमि और आकाशके मध्यमें कण-कणमें व्याप्त है.

देख सलूकी अंगूठों, और अंगुरियों सलूकी ।
उतरती छोटी छोटेरी, जो हिरदे में छबि फबी ॥ १५

इन श्रीचरणोंके अंगुष्ठ तथा अंगुलियोंकी रचना इतनी सुन्दर है कि अंगुलियाँ अंगुष्ठसे लेकर क्रमशः छोटी होती हुई दिखाई देतीं हैं. यह सुन्दरता ब्रह्मआत्माओंके हृदयमें अमीटरूपसे अंकित हो गई है.

लाल नरम उजल अंगुरी, फना टांकन घूंटी कांडों ।
आठों जाम रस बका, पोहोंचे रूहके तालू मों ॥ १६

लालिमायुक्त ये अंगुलियाँ कोमल होती हुई भी अत्यन्त उज्ज्वल हैं. चरणतलका उपरी भाग (पहुँचा) टखना, घूँटी तथा कांडा आदि की शोभा ब्रह्मआत्माओंके हृदयमें आठों प्रहर अङ्कित रहती है.

लाल लांकें लाल एडियां, पांउ तली अति उज्जल ।
ए पांउ बसत जिन हैयडे, सोई आसिक दिल ॥ १७

चरण तलकी गहराई एवं एड़ियाँ लालिमा युक्त तथा उज्ज्वल हैं. ये चरण कमल जिसके हृदयमें अङ्कित हो जाते हैं वही आत्मा प्रियतम धनीकी अनुरागिनी कहलाती है.

बसत सुखालें नरमाई, आसमान लग रोसन ।
ए पांऊ प्यारे मासूक के, जो कोई आसिक मोमन ॥ १८

धामधनीके ये चरण कमल अति कोमल एवं सुखदायी हैं. इनका प्रकाश आकाश तक व्याप्त हो जाता है. अनुरागिनी आत्माओंको अपने प्रीयतम धनीके ये चरण कमल अति प्रिय लगते हैं.

आसिक बसत अरस तलें, या बसे अरस के माहिं ।
ए खुसबोए मस्ती अरस की, निसदिन पीवे तांहिं ॥ १९

ब्रह्मआत्माएँ दिव्य परमधाममें श्रीराजजीके चरणों तले (मूलमिलावामें) रहें या पच्ची सपक्ष परमधाममें कहीं भी रहें किन्तु वे रात-दिन परमधामकी इस मस्तीकी सुगन्धका पान करती रहतीं हैं.

सुंदर सलूकी छबि सोभित, रंग रस प्यार भरे ।
सोई मोमिन अरस दिल, जित इन हकें कदम धरे ॥ २०

श्रीराजजीके इन चरणोंकी आकृति अति सुन्दर है. उसमें प्रेम और आनन्दकी रङ्गमयी छटा गोचर होती है. उन्हीं ब्रह्मआत्माओंके हृदयको परमधाम कहा गया है जहाँ पर धामधनीने इन प्यारे चरण-कमलोंको प्रस्थापित किया है.

ए सुख देत अरस के, कोई नाहीं नमूना इन ।
ए सुख जानें अरवा अरस की, निसबत हकसों जिन ॥ २१

इन्हीं चरणकमलोंके प्रतापसे ब्रह्मआत्माओंको परमधामके शाश्वत सुखकी अनुभूति होती है. इनकी दिव्यताका उदाहरण अन्यत्र कहीं भी प्राप्त नहीं है. इनसे प्राप्त परमसुखका अनुभव परमधामकी ब्रह्मआत्माएँ ही करतीं हैं जिनका सम्बन्ध साक्षात् श्रीराजजीसे है.

रूहें इसक मांगे धनी पें, पकड धनी के कदम ।
जो छोडे इन कदम को, ताए क्यों कहिए आसिक खसम ॥ २२

ब्रह्मआत्माएँ धामधनीके इन चरण कमलोंको पकड़ कर दिव्य प्रेमकी याचना करतीं हैं. जो इन चरणकमलोंसे विमुख होतीं हैं वे आत्माएँ धामधनीकी अनुरागिनी कैसे कहलाएँगी ?

नरम तली लाल उज्जल, आसिक एही जीवन ।
धनी जिन छोडाइयो कदम, जाहेर या बातन ॥ २३

श्रीराजजीके अत्यन्त कोमल चरणतल लालिमायुक्त तथा अति उज्ज्वल हैं. ये ही अनुरागिनी आत्माओंके जीवनके आधार हैं. इसलिए हे प्रीतमधनी ! प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षरूपमें (किसी भी स्थितिमें) हमसे इन श्रीचरणोंको दूर न करें.

प्यारे कदम राखों छाती मिने, और राखों नैनों पर ।
सिर ऊपर लिए फिरों, बैठो दिलको अरस कर ॥ २४

मैं इन प्यारे चरणोंको अपने हृदयरूपी सिंहासन पर स्थापित करूँ अथवा इन्हें अपने नयनोंमें बसाऊँ, या तो अपने शिर पर धारणकर विचरण करूँ. हे धनी ! आप मेरे हृदयको परमधाम बनाकर इसीमें विराजमान हो जाएँ.

तखत धरया हकें दिलमें, राखूं दिलके बीच नैनन ।
तिन नैनों बीच नैना रूहके, राखों तिन नैनों बीच तारन ॥ २५

धामधनीने कृपापूर्वक मेरे हृदयको अपना सिंहासन बनाया. अब मैं अपने हृदयके नयनों पर इन चरणोंको स्थापित करूँ. इन नयनोंके मध्यमें आत्माके नयनोंपर अर्थात् उनकी भी पुतलीमें इन चरणोंको छिपाकर रख लूँ.

तिन तारों बीच जो पुतली, तिन पुतलियों के नैनों माहिं ।
राखूं तिन नैनों बीच छिपाए के, कहूं जाने न देऊं काहिं ॥ २६

मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं इन चरणोंको आत्माकी आँखोंकी पुतलियोंकी भी जो आँखें हैं उनके मध्यमें छिपाकर रख लूँ एवं इन्हें अन्यत्र कहीं भी जाने न दूँ.

जाथें चरन जुदे होए, सो आसिक खोले क्यों नैन ।
ए नैन कायम नूर जमाल के, जासों आसिक पावें सुख चैन ॥ २७

जिन नयनोंको खोलने पर प्रियतम धनीके चरणोंकी छवि बाहर निकल कर चली जाती हों तो अनुरागिनी आत्माएँ अपनी नयनोंको कैसे खोल पाएँगी ? अनुरागिनी आत्माओंके नयन तो निरन्तर प्रियतम धनीके दर्शन करते हैं जिससे वे सुख प्राप्त करतीं हैं.

एक अंग छोड दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए ।
ए कदम छोडे मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए ॥ २८

अनुरागिनी आत्मा धामधनीके किसी एक अङ्गकी छवि अपने हृदयमें स्थापित कर लेने पर पुनः अन्यत्र देखनेकी कामना नहीं रखती. जो आत्माएँ अपने प्रियतम धनीके श्रीचरणोंको छोड़कर अन्यत्र दृष्टि डालतीं हैं वे कैसे अनुरागिनी कहलाएँगी ?

एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकडे अंग दोए ।
मासूक अंग दोऊ बराबर, क्यों छोडे पकडे अंग सोए ॥ २९

जब कोई ब्रह्मआत्मा अपने प्रियतम धनीके किसी एक अङ्गका दर्शन करती है तो वह उसे छोड़कर दूसरे अङ्ग पर कैसे जा सकेगी ? प्रियतम धनीके

सभी अङ्ग समान रूपसे आनन्द प्रदान करने वाले हैं. इसलिए आत्मा उनके जिस अङ्गको एक बार अपनी आँखोंमें बसा लेती है, उसे कैसे छोड़ सकती है.

जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए ।
एक अंग छोड दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए ॥ ३०

यदि श्रीराजजीका कोई अङ्ग किञ्चित-न्यून (हलका) तथा दूसरा गुरुतर (भारी) प्रतीत होता तभी एक अङ्गको छोड़कर दूसरे अङ्गका ग्रहण किया जाता. किन्तु अनुरागिनी आत्माको अपने प्रियतम धनीका कोई भी अङ्ग दूसरेसे न्यून नहीं लगता है.

दूजा अंग आया नहीं, तोलों एक अंग क्यों छूटत ।
यों और अंग ना ले सके, एकै अंग में गलित ॥ ३१

जब तक किसी अन्य अङ्गकी छवि हृदयमें नहीं समाती तब तक ध्यानस्थ अङ्ग हृदयसे कैसे छूट सकता है ? इसलिए अनुरागिनी आत्मा एक अङ्गको छोड़कर दूसरा अङ्ग ग्रहण नहीं कर सकती. वह तो एक ही अङ्गकी छविमें तल्लीन रह जाती है.

जो आसिक भूषन पकडे, सो भी छूटे न आसिक सें ।
देख भूषन हक अंग के, आसिक सुख पावें यामें ॥ ३२

अनुरागिनी आत्मा अपने प्रियतम धनीके आभूषणकी छवि अपने नयनोंमें एक बार बसा लेती है तो वह भी उससे छूटती नहीं है. श्रीराजजीके अङ्गके इस भूषणको निहारती हुई अनुरागिनी आत्मा उसीसे अपार सुख प्राप्त करती है.

हकके अंग के सुख जो, सो जड भी छोडे नाहिं ।
तो क्यों छोडे अरवा अरस की, हक अंग आया हिरदें माहिं ॥ ३३

श्रीराजजीके अङ्गका अपार सुख तो जड़ वस्तुएँ भी नहीं छोड़तीं तो जो परमधामकी ब्रह्मआत्माएँ हैं, वे इन सुखोंको कैसे छोड़ सकतीं है, जिनके हृदय कमलमें प्रियतम धनीकी छवि समाई हुई है.

हेम नंग सब चेतन, अरस जिमी जड ना कोए ।
दिल चाह्या होत सब चीज का, चीज एकै से सब होए ॥ ३४

स्वर्ण हो या रत्न, परमधामके सभी पदार्थ चैतन्य हैं. वहाँ पर कुछ भी जड़ नहीं हैं. हृदयकी चाहनाके अनुरूप सभीसे समान सुख प्राप्त होता है एवं एक ही वस्तुसे सभी वस्तुओंका सुख भी प्राप्त होता है.

सब रंग गुन एक चीज में, नरम जोत खुसबोए ।
सब गुन रखें हक वास्ते, सुख लेवें हकका सोए ॥ ३५

परमधामकी एक ही वस्तुमें सभी प्रकारके गुण, रङ्ग, कोमलता, तेज तथा सुगन्धि विद्यमान हैं. धामधनीके लिए ही वे वस्तुएँ इन गुणोंको धारण करतीं हैं और उनका अपार सुख प्राप्त करतीं हैं.

आसिक एक अंग अटके, तिनको एह कारन ।
दोऊ अंग मासूक के, किन छोडे लेवे किन ॥ ३६

अनुरागिनी आत्मा अपने प्रियतम धनीके एक ही अङ्गको देखती हुई स्थिर हो जाती है. उसका यही कारण है कि धामधनीके एक ही अङ्गमें सभी प्रकारके गुण विद्यमान हैं. इसलिए आत्मा अपने प्रियतमधनीके दो अङ्गोंमें-से किसको ग्रहण करे और किसको छोड़े ?

नूर बिना अंग कोई ना देख्या, और सब अंगों वरसत नूर ।
अंबर में न समाए सके, इन अंगों का जहूर ॥ ३७

श्रीराजजीके अङ्गोंमें देदीप्यमान तेज (नूर) के अतिरिक्त अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता है. उनके अङ्ग प्रत्यङ्गोंसे तेज ही तेजकी वर्षा होती हैं. श्रीराजजीके इन अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका प्रकाश आकाशमें भी नहीं समाता है.

एक अंग मासूक के कै रंग, तिन रंग रंग कै तरंग ।
एक लेहेरी पोहोंचावे उमर लग, यों छूटे न आसिक से अंग ॥ ३८

श्रीराजजीके एक ही अङ्गसे अनेकों रङ्गोंकी आभा झलकती है. उन विविध रङ्गोंसे भी अनेक तरङ्गें उठतीं रहतीं हैं. उस एक ही लहरका गुण गाते हुए जीवन व्यतीत हो जाता है. इस प्रकार अनुरागिनी आत्मासे धामधनीके अङ्ग छुटते ही नहीं हैं.

जो कदी मेहेर करें मासूक, तो दूजा अंग देवें दिल आन ।
तो सुख लेवें सब अंग को, जो सब सुख देवें सुभान ॥ ३९

यदि कभी स्वयं श्रीराजजी कृपा करते हैं तो ब्रह्मआत्माओंके हृदयमें श्रीराजजीका दूसरा अङ्ग अङ्कित हो जाता है. जब धामधनी इस प्रकार अपनी अङ्गनाओंको अपने सभी अङ्गोंका सुख प्रदान करना चाहते हैं, तभी वे सभी अङ्गोंका सुख प्राप्त कर सकतीं हैं.

जो कदी आसिक खोले नैनको, पेहेलें हाथों पकडे दोऊ पाए ।
ए नैन अंग नूर जमाल के, सो इन आसिक से क्यों जाए ॥ ४०

यदि अनुरागिनी आत्मा अपनी दृष्टि खोलकर देखने लगेगी तो सर्व प्रथम वह श्रीराजजीके चरणोंको ही अपने हाथोंसे पकड़ लेगी. इसलिए प्रियतम धनीके ये चरण अनुरागिनी आत्माके नयनोंसे कैसे दूर हो सकेंगे ?

मंगलाचरन तमाम

इजार जो नीली लाहि की, नेफा लाल अतलस ।
नेफे बेल मोहोरी कांगरी, क्यों कहूं नंग जरी अरस ॥ ४१

श्रीराजजीके अङ्गोंमें सुशोभित इजार हरित वर्णका है. उस पर लाल रेशम (अतलस) का नेफा है. इसकी मोहरीमें लताएँ तथा काँगरीकी चित्रकारी है. उनमें जरीके साथ रत्न जड़े हुए हैं. इनका कैसे वर्णन करें ये तो साक्षात परमधामके हैं.

कांडों पर पीडी तलें, मीहीं चूडी सोभित इजार ।
जोत करें माहें दांवन, झांईं उठे झलकार ॥ ४२

पिंडलियोंके नीचे कांडा पर इजारकी मोहरीमें सूक्ष्म सलवटें (चुन्नटें) सुशोभित हैं. श्रीराजजीने धारण किए हुए जामेके अन्दरसे इस इजारकी आभा झलकती हुई दिखाई देती है.

इजार बंध नंग कै रंग, और कै कांगरी बेल माहिं ।
फूल पात कै नकस, सबद न पोहोंचे ताहिं ॥ ४३

इजारबन्दमें अनेक रङ्गोंके रत्नोंसे काँगरी, लताएँ, फूल, पात आदि विभिन्न

प्रकारकी चित्रकारी सुशोभित हैं. इनकी शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है.

कै रंग नंग माहें रेसम, रंग नंग धागा ना सूझत ।
हाथ को कछू लगे नहीं, नरम जोत अतंत ॥ ४४

रेशमके इस इजारबन्दमें विभिन्न रङ्गोंके विभिन्न रत्न इस प्रकार जड़े हुए हैं कि रेशमका धागा ही दिखाई नहीं देता है. ये रत्न इतने कोमल हैं कि हाथके स्पर्शमें ही नहीं आते हैं. इनका प्रकाश भी अत्यन्त उज्ज्वल है.

अतंत नाडी फुंदन, जोत को नाहीं पार ।
एही जानों भूल अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥ ४५

इजारबन्दमें बँधी डोरीके फुँदने भी अत्यन्त सुन्दर हैं. इनके प्रकाशका कोई पारावार नहीं है. हमारी सबसे बड़ी भूल यही है कि इन शब्दातीत वस्तुओंकी शोभाको शब्दोंकी सीमामें निबद्ध करनेका प्रयत्न करते हैं.

रंग नीला कह्या इजार का, कै रंग नंग इनमों ।
तेज जोत जो झलकत, और कछू लगे न हाथ कों ॥ ४६

हरित वर्णके इजारमें विविध रङ्गोंके विभिन्न रत्न सुशोभित हैं. इनसे प्रकाशकी किरणें निकलतीं हैं किन्तु ये हाथके स्पर्शमें नहीं आते हैं.

सब अंग पीछे कहूंगी, पेहेले कहूं पाग बांधी जे ।
सिफत न पोहोंचे अंग को, तो भी कह्या चाहे रूह ए ॥ ४७

शेष सभी अङ्गोंका वर्णन करने से पूर्व मैं श्रीराजजीके सिर पर बँधी पागकी शोभाका वर्णन करता हूँ. यद्यपि जिह्वाके द्वारा इसका वर्णन नहीं हो सकता तथापि मेरी आत्मा इसका वर्णन करना चाहती है.

हाथों पाग बांधी तो कहिए, जो हुकमें न होवे ए ।
कै कोट पाग बनें पल में, जिन समें दिल चाहें जे ॥ ४८

श्रीराजजीने यह पाग अपने हाथोंसे बाँधी है ऐसा तभी कहा जा सकता है जब उनके आदेश (हुकम) से यह काम नहीं होता हो. धामधनी इतने समर्थ

हैं कि जिस समय वे इच्छा करते हैं उस समय पल मात्रमें ऐसी करोड़ों पाग बन कर तैयार हो जातीं हैं.

पर हकें बांधी पाग रुच के, नरम हाथों पेच फिराए ।
आसिक देखे बांधते, अतंत रूह सुख पाए ॥ ४९

तथापि श्रीराजजीने अपने कोमल हाथोंसे ही बल देकर रुचिपूर्वक यह पाग बाँधी है ताकि अनुरागिनी आत्माएँ श्रीराजजीको पाग बाँधते हुए देखकर अति आनन्दित हो जाएँ.

इन विध सब सिनगार, कहियत इन जुबांए ।
तो कह्या फना का सबद, बका को पोहोंचत नाहें ॥ ५०

श्रीराजजीके सभी सिनगार इसी प्रकार अद्वितीय हैं जिनका मैंने इन शब्दोंके द्वारा वर्णन किया है. किन्तु नश्वर जगतके ये शब्द अखण्ड परमधाम तक नहीं पहुँच सकते हैं.

चुप किए भी ना बने, जाको ए ताम दिया खसम ।
ताथें ज्यों त्यों कह्या चाहिए, सो कहावत हक हुकम ॥ ५१

किन्तु मुझसे मौन भी रहा नहीं जाता,क्योंकि स्वयं धामधनीने मुझे इस प्रकारका आहार दिया है. इसलिए जो कुछ वर्णन हुआ है वह सब श्रीराजजीके आदेशकी ही प्रेरणासे है.

बाधीं पाग समार के, हाथ नरम उजल लाल ।
इन पाग की सोभा क्यों कहूं, मेरा साहेब नूरजमाल ॥ ५२

श्रीराजजीने अपने लालिमायुक्त उज्ज्वल हाथोंसे सुव्यवस्थित ढ़ँगसे पाग बाँधी है. इस पागकी शोभाका वर्णन कैसे हो सकता है, जिसको स्वयं मेरे धनी श्रीराजजीने बाँधी है.

लाल पाग बांधी लटकती, कछू ए छबि कही न जाए ।
पेच दिए कै विध के, हिरदेसों चित ल्याए ॥ ५३

श्रीराजजीने अपने हाथोंसे बाँधी हुई यह लाल रङ्गकी पाग पृष्ठ भागकी ओर

लटकती है. इसकी अनुपम छविका लेशमात्र भी वर्णन नहीं हो सकता है. श्रीराजजीने इसे बड़े प्रेमके साथ विभिन्न बल (पेच) देकर हृदयपूर्वक बाँधा है.

पाग बनाई कोई भांत की, बीच में कटाव फूल ।
बीच बेली बीच कांगरी, रूह देख देख होए सनकूल ॥ ५४

यह पाग कुछ इस प्रकारकी है कि इसके मध्यमें फूल, बेली तथा काँगरी आदिके कटावकी अनुपम चित्रकारी है. इसकी दिव्य शोभाको देखकर ब्रह्मआत्माएँ अत्यधिक प्रसन्न होतीं हैं.

जो आधा फूल एक पेच में, आवे दूजे पेचको मिल ।
यों बनी बेल फूल पाग की, देख देख जाऊं बल बल ॥ ५५

यह पाग ऐसी युक्तिसे बनी है कि एक लपेटमें आधा फूल दिखाई देता है तो दूसरी लपेटमें दूसरा आधा फूल मिलकर पूरा फूल दिखाई देता है. इस प्रकार पागमें अङ्कित फूल तथा लताओंको देखकर उन पर बार-बार समर्पित होनेका मन होता है.

कै रंग नंग फूल पात में, ए जिनस न आवे जुबांए ।
न आवे मुख केहेनी मिने, जो रूह देखें हिरदें माहें ॥ ५६

इस पाग पर चित्रित फूल एवं पत्तोमें विभिन्न रङ्गोंके रत्न जड़े हुए हैं जिसका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है. जिसको अन्तरात्मासे देखा जाता है उसे शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

पाग बांधी कोई तरह की, जो तरह हक दिलमें ल्याए ।
बल बल जाऊं मैं तिन पर, जिन दिल पैच फिराए ॥ ५७

श्रीराजजी जिस प्रकारकी इच्छा करते हैं उसी प्रकारसे यह पाग बँध जाती है. धामधनीने जिस भावसे इसको बल (पेच) दिया है उस पर मैं वारंवार समर्पित होता हूँ.

पाग ऊपर जो दुगदुगी, ए जो बनी सब पर ।
जोत हीरा पोहोंचे आकास लों, पीछे पाच रहे क्यों कर ॥ ५८

इस पागमें सबसे ऊपर सुन्दर दुगदुगी सुशोभित है. इसमें जड़े हुए हीरा तथा

पाच आदि रत्नोंका प्रकाश परस्पर स्पर्धा करता हुआ आकाशमें व्याप्त हो जाता है.

मानिक तहां मिलत है, पोहोंचत तित पुखराज ।
नीलवी तो तेज आसमानी, उत पांचों रहे बिराज ॥ ५९

हीरा तथा पाचके साथ-साथ माणिक्य, पुखराज तथा नीलमणि इन पाँचो रत्नोंका रंगीन प्रकाश पूरे आकाशमें छा जाता है.

कांध पीछे केस नूर झलके, लिए पागमें पेच बनाए ।
गौर पीठ सुध सलूकी, जुबां सके ना सिफत पोहोंचाए ॥ ६०

स्कन्ध प्रदेश (क न्धे) तथा पृष्ठ भाग (पीठ) पर श्यामल कुन्तल (केश) प्रकाशमान हैं. उनके ऊपर पाग पर लपेट (पेच) सुशोभित हैं. श्रीराजजीका पृष्ठ प्रदेश (पीठ) गौर वर्णका है. उसकी दिव्य शोभाको यह जिह्वा व्यक्त नहीं कर सकती है.

कंठ खभे दोऊ बांहोंडी, पेट पांसली बीच हैडा ।
रूह मेरी इत अटके, देख छबि रंग रस भर्‌या ॥ ६१

श्रीराजजीकी सुन्दर ग्रीवा (कण्ठ), स्कन्ध प्रदेश, दोनों भुजाएँ, उदर (पेट), पसलियाँ तथा मध्यमें स्थित वक्षस्थलकी आनन्ददायी छविको देखकर मेरी आत्मदृष्टि वहीं स्थिर हो जाती है.

मछे दोऊ बाजूअके, सलूकी अति सोभित ।
रंग छबि कोमल दिलकी, आसिक हैडे बसत ॥ ६२

दोनों भुजाओं (कोहनीके ऊपरी भाग)की सुन्दर रचना अत्यन्त सुशोभित है. इनकी सुन्दर छवि एवं हृदयकी मृदुलताकी रङ्गमयी छटा प्रणयिनी आत्माके हृदयमें सदा अङ्कित (बसी) रहती है.

हस्तकमल की क्यों कहूं, पोहोंचे हथेली कै रंग ।
लाल ऊजल रंग केहेत हों, इन रंग में कै तरंग ॥ ६३

श्रीराजजीके हस्तकमलकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए. उनकी हथेली

तथा पहुँचामें विभिन्न रङ्गोंकी आभा झलकती है. यद्यपि उनमें मुख्यतः उज्वल लाल रङ्ग है तथापि इससे अनेक तरङ्गें उठतीं हैं.

कोनी कांडें कलाईयां, रंग नरमाई सलूक ।
ऐसा सखत मेरा जीवरा, और होवे तो होए टूक टूक ॥ ६४

कोहनी, काँडा तथा कलाईयों का रङ्ग एवं रचना भी अति सुकोमल है. मेरा जीव इतना कठोर हो गया है कि इन कोमल अङ्गोंका वर्णन करते हुए इसके टुकड़े-टुकड़े भी नहीं हो रहे हैं.

ना तेहेकीक होवे रंगकी, ना छबि होए तेहेकीक ।
क्यों कहूं बीसों अंगुरिया, और मीहीं हथेलियां लीक ॥ ६५

श्रीराजजीके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका रङ्ग तथा सुन्दर छविकी शोभा ऐसी ही है यह निश्चय नहीं हो पाता फिर हाथ तथा पाँवकी बीस अङ्गुलियों तथा हथेलीकी सूक्ष्म रेखाओंका वर्णन कैसे करूँ ?

नरम अंगुरियां पतली, लगें मीठी मूठ बालत ।
ए कोमलता क्यों कहूं, जिन छबि अंगुरी खोलत ॥ ६६

श्रीराजजीके हस्त कमलकी पतली अङ्गुलियाँ अत्यन्त कोमल हैं. जब वे इनको मोड़कर मुट्ठी बाँधते हैं तब वे और भी मधुर लगतीं हैं. जब वे अपनी मुट्ठी खोलते हैं तब उनकी विशेष सुकोमलता दिखाई देती है जिसको शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

क्यों देऊं निमूना नख का, इन अंगों नखका नूर ।
दे न देखाई कछुए, जो होवें कोटक सूर ॥ ६७

इन अङ्गुलियोंके नखोंके लिए कौन सा उदाहरण दिया जाए, इनका प्रकाश इतना प्रखर है कि करोड़ों सूर्य भी यदि एक साथ उदयमान हो जाएँ तथापि उनका प्रकाश इनके समक्ष नहींवत् दिखाई देगा.

अब देखो पेट पांसली, और लांक चलत लेहेकत ।
ए सोभा सलूकी लेऊं रूह में, तो भी उडे ना जीवरा सखत ॥ ६८

अब श्रीराजजीके पेट तथा पसलियोंकी ओर दृष्टि डालते हैं, जब वे चलने

लगते हैं तब इन दोनोंके बीचकी गहराई लहकती हुई दिखाई देती है. इस दिव्य संरचनाकी शोभाको हृदयमें धारण कर लेने पर भी यह कठोर जीव शरीरको छोड़कर उड़ता नहीं है.

देख हरवटी अति सुंदर, और लाल गाल गौर ।
लांक अधुर बीच हरवटी, क्यों कहूं नूर जहूर ॥ ६९

श्रीराजजीके तेजोमय मुख मण्डलमें सुन्दर चिबुक एवं लालिमा युक्त गौर वर्णके कपोल अत्यन्त शोभायुक्त हैं. अधरोष्ठ एवं चिबुकके मध्यकी गहराईकी अद्वितीय आभाको किन शब्दोंमें व्यक्त करें ?

गाल सोभा अति देत हैं, क्यों कहूं इन मुख छब ।
उजल लाल रंग सुंदर, क्यों कहूं सलूकी फब ॥ ७०

मुख मण्डलमें लालिमा युक्त कपोल अतीव सुन्दर शोभायुक्त हैं, इस दिव्य छविको किन शब्दोंमें व्यक्त किया जाए ? उज्ज्वल एवं लालिमायुक्त सुन्दरताकी इस संरचनाको शब्दोंकी सीमामें कैसे निबद्ध करूँ ?

कानन की किन विध कहूं, जो सुने आसिक के बैन ।
सो सुन देवें पडउतर, ज्यों आसिक पावें सुख चैन ॥ ७१

श्रीराजजीके श्रवण अङ्गोंकी शोभा किस प्रकार व्यक्त की जाए, जिनके द्वारा वे अपनी आत्माओंकी वाणी सुनते हैं एवं सुनकर प्रत्युत्तर भी देते हैं. जिससे आत्माओंको परम आनन्दका अनुभव होता है.

मुख दंत लाल अधुर छब, मधुरी बोलत मुख वान ।
खैंच लेत अरवाह को, ए जो वानी अरस सुभान ॥ ७२

मुखारविन्द, दन्तावलि एवं लाल अधरोष्ठका सौन्दर्य अतीव मनमोहक है. वे अपने मुखारविन्दसे मधुर वचन बोलते हैं. अक्षरातीत धामधनी अपने प्रिय वचनोंसे ब्रह्मआत्माओंको अपनी ओर आकृष्ट करते हैं.

नैन अनियारे बंकी छवि, चंचल चपल रसाल ।
वान बंके मारत खैंच के, छाती छेद निकसत भाल ॥ ७३

श्रीराजजीके नुकीले, तिरछे नयनोंकी छवि चञ्चल, चपल तथा रसिली लगती

है. जब वे अपनी तिरछी दृष्टिसे नयनवाण चलाते हैं तो प्रणयिनीके हृदयको बींध डालते हैं.

लाल तिलक निलवट दिए, अति सुंदर सुखदाए ।
असल बन्या ऐसा ही, कै नई नई जोत देखाए ॥ ७४

श्रीराजजीके ललाट पर अत्यन्त सुन्दर सुखदायी लाल तिलक सुशोभित है. ऐसा प्रतीत होता है कि वह ललाटमें अङ्गकी भाँति सुशोभित है (लगाया नहीं गया है). उससे विभिन्न प्रकारकी नई-नई ज्योतिर्मयी किरणें प्रदीप्त होतीं हैं.

नैन कान मुख नासिका, रंग रस भरे जोवन ।
हाथ पांऊ कंठ हैयडा, सब चढते देखे रोसन ॥ ७५

श्रीराजजीके नयन, श्रवण-अङ्ग, मुखारविन्द, नासिका, हाथ, पाँव, कण्ठ, वक्षस्थल आदि सभी अङ्गोंमें यौवनका मादक रस एक दूसरेसे अधिक प्रकाशित होता है.

नख सिख बंध बंध सब अंग, मानों सब चढते चंचल ।
छब फब सोभा सुंदर, तेज जोत अंग सब बल ॥ ७६

नखसे लेकर शिखा तकके ये सभी सुसंगठित अङ्ग एक दूसरेसे अधिक चपल दिखाई देते हैं. इस प्रकार इनकी छवि, शोभा, सुन्दरता, तेज, ज्योति, शक्ति आदि सभी एक दूसरेसे अधिक लावण्यपूर्ण हैं.

सुंदर ललित कोमल, देख देख सब अंग ।
तेज जोत नूर सब चढते, सब देखत रस भरे रंग ॥ ७७

इन सभी अङ्गोंको देखने पर ऐसा लगता है कि ये सौंदर्य, लालित्य एवं सुकोमलतासे परिपूर्ण हैं. इन अङ्गोंका तेज, ज्योति एवं प्रकाश एक दूसरेसे अधिक शोभायमान हैं. इन सभी रसपूर्ण अङ्गोंको देखकर परम आनन्दका अनुभव होता है.

कंठ कोमल दिल हैयडा, अति उजल छाती सुंदर ।
चढते इसक अंग अधिक, ऐसा चूभ्या रूह के अंदर ॥ ७८

सुन्दर ग्रीवा (कण्ठ), कोमल हृदय एवं उज्ज्वल वक्षस्थल अतीव सुन्दर हैं.

ये अङ्ग-प्रत्यङ्ग ब्रह्मआत्माओंके हृदयमें इस प्रकार अङ्कित हो जाते हैं कि इनके कारण उनका प्रेम प्रति पल बढ़ जाता है.

इतथें रूह क्यों निकसे, जो इन मासूक की आसिक ।
छोड छाती आगे जाए ना सके, मार डारत मुतलक ॥ ७९

अनुरागिनी आत्माएँ प्रियतम धनीके इन अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका दर्शन छोड़कर अपनी दृष्टि अन्यत्र कैसे दृष्टि डाल सकतीं हैं ? वे तो धामधनीके हृदयको छोड़कर आगे ही नहीं बढ़ सकतीं हैं क्योंकि इसी हृदयसे बहता हुआ प्रेमका प्रवाह उन्हें निश्चय ही घायल कर देता है.

जिन विध की ए इजार, ता पर लग बैठा दांवन ।
सेत रंग दांवन देखिए, आगूं इजार रंग रोसन ॥ ८०

श्रीराजजीकी इजार जैसी सुन्दर है उसी प्रकार उसके ऊपर आया हुआ जामाका दामन भी अति सुन्दर है. स्वेत रङ्गके इस सुन्दर जामेको देखते हैं तो उसमें हरित वर्णकी इजार झलकती हुई दिखाई देता है.

गौर रंग जामा ऊजल, जुड बैठा अंग ऊपर ।
अति बिराजत इन विध, ए खूबी कहूं क्यों कर ॥ ८१

श्रीराजजीके गौर वर्णके अङ्ग पर यह उज्ज्वल स्वेत रङ्गका जामा अतीव आकर्षक लगता है. यह इस प्रकार सुशोभित है कि उसकी शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है.

ए जुगत जामें की क्यों कहूं, झलकत है चहूं ओर ।
बांहें चोली और दांवन, सोभा देत सब ठोर ॥ ८२

जामेकी यह दिव्य शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ? इसकी झलक चारों ओर प्रतिबिम्बित होती है. उसकी बाहें, चोली तथा मोहरीमें सर्वत्र उसकी सुन्दरता दृष्टिगोचर होती है.

पीछे कटाव जो कोतकी, रंग नंग जरी झलकत ।
चीन मोहोरी दोऊ हाथ की, ए सुंदर जोत अतंत ॥ ८३

जामेके पृष्ठभाग पर केवड़ेके फूलके आकारमें विभिन्न रङ्गोंके रत्न जरीके

साथ जड़े हुए हैं. दोनों हाथोंकी मोहरीकी चुन्नटें अत्यन्त सुन्दर तथा ज्योतिर्मयी हैं.

बेल नकस दोऊ बगलों, और बेल गिरवान बंध ।
चूडी समारी बांहन की, क्यों कहूं सोभा सनंध ॥ ८४

जामाके दोनों पार्श्वभाग (बगलों) में तथा तनियोंके स्थान पर सुन्दर लताओंकी चित्रकारी है. बाहोंकी मोहरी पर सुन्दर चुन्नटें शोभायमान हैं. इस समस्त शोभाका वर्णन किस प्रकार किया जाए ?

छोटी बडी न जाडी पतली, सबे बनी एक रास ।
उतरती मीहीं मीहीं से, जुबां क्या कहे खूबी खास ॥ ८५

जामेकी बाँहों पर बनी चुन्नटें न कहीं छोटी हैं और न कहीं बड़ी हैं, न पतली हैं और न ही मोटी हैं अपितु सर्वत्र एक समान हैं. ऊपर से नीचे तक पहुँचते-पहुँचते ये सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म (महीन) प्रतीत होतीं हैं. यह जिह्वा इनकी इस विशेष शोभाको कैसे व्यक्त कर पाएगी ?

पीला पटुका कमरें, रंग नंग छेडे किनार ।
बेल पात फूल नकस, होत आकास उदोतकार ॥ ८६

श्रीराजजीकी कटि पर पीला पटुका बँधा है. उसके किनारे पर विभिन्न रङ्गोंके सुन्दर रत्न जड़े हुए हैं, साथ ही लताएँ, फूल तथा पत्तोंकी इतनी सुन्दर चित्रकारी है कि उसकी ज्योति आकाशको भी प्रकाशित कर देती है.

लाल नीले सेत स्याम रंग, किनार बेल कटाव ।
सात रंग छेडों मिने, क्यों कहूं जुगत जडाव ॥ ८७

पटुकाके किनारेकी बेलियों एवं कटावमें लाल, नीला, श्वेत तथा श्याम रङ्ग झलकते हैं. उसके पल्ले पर सात रङ्गोंके रत्न जड़े हुए हैं जिनकी विशेषता कैसे व्यक्त की जाए ?

पाच पांने मोती नीलवी, हीरे पोखरे मानिक नंग ।
बेल कटाव कै नकस, कहूं गरभित केते रंग ॥ ८८

यहाँ पर पाच, पन्ना, मोती, नीलमणि, हीरा, पुखराज एवं माणिक्य जैसे

रत्नोंसे विभिन्न प्रकारकी लताएँ कटाव तथा चित्रकारी है. इसके अतिरिक्त किनारे पर अन्य भी विभिन्न रङ्गोंका सम्मिश्रण है.

जामें में झांई झलकत, हरे रंग इजार ।
लाल बंध और फुंदन, कै रंग नंग अपार ॥ ८९

श्रीराजजीके श्वेत जामेमें हरे रङ्गके इजारकी झलक दिखाई देती है. जिसके लाल इजारबन्दमें लगे फुँदनोंमें अनेक रङ्गोंके अपार रत्न सुशोभित हैं.

कहूं अंगों का बेवरा, जुदे जुदे भूषन ।
ए जो जवेर अरस के, कहूं पेहेले भूषन चरन ॥ ९०

अब श्रीराजजीके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका विवरण देते हैं, इन सभी अङ्गोंमें विभिन्न प्रकारके आभूषण सुशोभित हैं. इनमें जड़े हुए रत्न परमधामकी गरिमाके अनुरूप हैं. अब मैं सर्व प्रथम श्रीचरणोंके आभूषणका वर्णन करता हूँ.

चारों जोडे चरन के, नरमाई सुगंध सुखकार ।
बानी मधुरी बोलत, सोभा और झलकार ॥ ९१

श्रीराजजीके युगल चरणोंके चार आभूषण अत्यन्त कोमल सुगन्धित तथा सुखदायी हैं. इन चारों (झाँझरी, घुँघुरु काँबी एवं कड़ा) आभूषणोंसे चलते समय अति मधुर कर्णप्रिय ध्वनि निकलती है. इनकी शोभा एवं झलक दोनों ही अनुपम हैं.

भूषन मेरे धनीय के, किन विध कहूं जो ए ।
के कहूं खूबी नरमाई की, के कहूं अंबार तेज के ॥ ९२

मेरे प्राणाधार धामधनीके इन आभूषणोंकी शोभाको किन शब्दोंके द्वारा व्यक्त किया जाए ? इनकी कोमलता एवं प्रकाशपुञ्जकी अलौकिक आभाका वर्णन कैसे किया जा सकता है ?

एक नंग के कै रंग, सोभे झन बाजे झांझर ।
पांच नंग रंग एक के, अति मीठी बोले घूंघर ॥ ९३

इनमें एक ही रत्न से अनेकों रत्नोंकी आभा झलकती है. श्रीराजजीके चलते

समय झाँझरीके झन्झन स्वर तो और भी अत्यधिक कर्णप्रिय लगते हैं. एक एक घुँघुरुमें पाँच-पाँच रङ्गके रत्न जड़े हुए हैं. इनसे अत्यन्त मधुर ध्वनि मुखरित होती है.

नाके बाले जवेर के, माहें नरम जोत गुन दोए ।
तीसरी बानी माधुरी, चौथा गुन खुसबोए ॥ ९४

घुँघुरुके कुन्दोंमें सुशोभित रत्नोंमें कोमलता एवं तेजस्विता जैसे दोनों गुण विद्यमान हैं. इनमें तीसरा गुण कर्णप्रिय ध्वनि है तो चौथा परिपूर्ण सुगन्ध है.

सोई पांच रंग एक नंग में, तिनकी बनी जो कडी ।
देत देखाई रंग नंग जुदे, जानों किन घडके जडी ॥ ९५

इसी प्रकार कड़ीमें भी एक ही रत्नमें पाँच रङ्ग दिखाई देते हैं. ये सभी रङ्ग ऐसे प्रतीत होते हैं कि ये अलग-अलग रत्नोंके हों. मानो किसीने इनको गड़ कर यहाँ पर संलग्न कर दिया हो.

कांबी एक जवेर की, तामें झीने रंग नंग दस ।
दिल चाहे भूषन सब बने, सो हक भूषन ए अरस ॥ ९६

मुख्यतया काँबी (पायजेब) एक ही रत्न की है. उसके अन्दर छोटे-छोटे दस रङ्गोंके रत्न जड़े हुए हों ऐसा प्रतीत होता है. ये चारों आभूषण श्रीराजजीकी इच्छा अनुरूप ही बने हुए हैं. क्योंकि ये अखण्ड परमधामके आभूषण हैं.

मैं देखे जवेर अरस के, ज्यों हेम भूषन होत इत ।
कै रंग नंग मिलाए के, बहु विध भूषन जडित ॥ ९७

मैंने परमधामके इन रत्नोंको भली भाँति देखा जैसे यहाँ पर (इस जगतमें) एक स्वर्णके आभूषणमें विभिन्न रङ्गोंके रत्न जड़े हुए होते हैं उसी प्रकार इन आभूषणोंमें भी विभिन्न रत्न जड़ायमान हैं.

किन जडे घडे ना समारे, भूषन आवत दिल चाहे ।
अरस जवेर कंचन ज्यों, जानों असल ऐसे ही बनाए ॥ ९८

किन्तु परमधामके ये आभूषण न किसीके द्वारा बनाए गए हैं और न ही इनमें

किसीने रत्नोंको जड़ा है. ये सभी श्रीराजजीकी इच्छाके अनुरूप स्वतः बन जाते हैं. परमधामके ये आभूषण रत्न तथा सुवर्णकी भाँति स्वतः निर्मित हैं.

दस रंग के जवेर की, माहें कै नकस मुंदरी ।
दोए अंगुठी अंगूठों, आठों जिनस आठ अंगुरी ॥ ९९

दस विभिन्न रङ्गोंके दस रत्नोंसे जड़ी हुई श्रीराजजीकी मुद्रिकाएँ अनेक प्रकारकी चित्रकारीसे परिपूर्ण हैं. इनमें दो अंगुष्ठोंमें दो अंगूठी हैं एवं शेष आठ अंगुलियोंमें आठ मुद्रिकाएँ सुशोभित हैं.

ए नरम अंगुरियां अतंत, नख सोभित तेज अपार ।
ए देखो भूल अकल की, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥ १००

श्रीराजजीके कर-कमलकी ये अङ्गुलियाँ अत्यन्त सुकोमल हैं. इनके नखके तेजकी शोभा भी अपरम्पार है. मेरी बुद्धिकी यही सबसे बड़ी भूल है कि यह इस अपार शोभाको शब्दोंकी सीमामें बाँधकर इसका वर्णन करना चाहती है.

पोंहोंचे और हथेलियां, केहे न सकों सलूकी ए ।
छबि रंग देख हाथन की, बल बल जाऊं इनके ॥ १०१

इन कर कमलोंकी पहुँची एवं हथेलियोंकी संरचना भी शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती. श्रीराजजीके इन कर कमलोंकी गौर एवं रक्तिम छविको देखकर मैं उन पर समर्पित हो जाता हूँ.

कडियां दोऊं कांडों सोहें, सोभा तेज धरत ।
लाल नंग नीले आसमानी, जोत अवकास भरत ॥ १०२

इन हस्त कमलोंकी दोनों कलाइयोंमें दो कड़े सुशोभित हैं जिनमें देदीप्यमान आभा है. इनसे प्रकाशित हो रही लाल, हरित एवं नीले रङ्गकी किरणें पूरे आकाशमें व्याप्त हो जातीं हैं.

पोहोंची पांचों नंग की, जुबां केहे न सके जिनस ।
पाच पांने मोती नीलवी, लरें हीरे अति सरस ॥ १०३

इन हस्त कमलोंमें धारण की हुई पहुँचीमें पाच, पन्ना, मोती, नीलमणि एवं

हीरा जैसे पाँच रत्न सुशोभित हैं. इनसे निकलती हुई प्रकाशकी तरङ्गें परस्पर द्वन्द्व करतीं हुई प्रतीत होतीं हैं.

बाजू बंध की क्यों कहूं, जो बिराजे बाजू पर ।
कै मीहीं नकस कटाव, जोत भरी जिमी अंबर ॥ १०४

श्रीराजजीकी दोनों भुजाओंमें सुशोभित भुजबन्धकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ? इनमें विभिन्न प्रकारसे सुन्दर कटाव एवं चित्रकारी सुशोभित हैं, जिनकी ज्योतिर्मयी आभा भूमि तथा आकाशको भी आच्छादित कर देती है.

एक नंग एक रंग का, एक रंग नंग अनेक ।
इन विध के अरस भूषन, सो कहां लों कहूं विवेक ॥ १०५

यद्यपि इनमें एक रङ्गका एक ही रत्न है किन्तु यहाँ पर एक रङ्गके अनेक रत्न दिखाई देते हैं. परमधामके इन आभूषणोंकी विशेषता ही ऐसी है, इनका विवरण कैसे दिया जाए ?

पांच रंग जरी फुंदन, सोभा लेत अतंत ।
पाच रंग जवेर झलके, फुंदन सोहे लटकत ॥ १०६

इन भुजबन्धके जरीसे बने फुँदनेमें पाँच रङ्गोंकी आभा झलकती है, जिसकी शोभा अपरम्पार है. इन फुँदनोंमें पाँच रङ्गोंके रत्न लटकते हुए-से सुशोभित हैं.

नरम जोत खुसबोए, दिल चाही सोभा ए ।
कै विध सुख लेवे हकके, सुख भूषन कहे न जाए ॥ १०७

ये भुजबन्ध जितने सुकोमल, देदीप्यमान तथा सुगन्धित हैं उसी प्रकार हृदयकी आकांक्षाके अनुरूप सुशोभित भी हैं. ब्रह्मआत्माएँ इन आभूषणोंके माध्यमसे भी श्रीराजजीके अपार सुखोंका अनुभव करतीं हैं. इसलिए इनसे प्राप्त सुखका वर्णन नहीं किया जा सकता.

बीच हार मानिक का, और हीरों हार उजल ।
पाच मोती और नीलवी, लसनियां अति निरमल ॥ १०८

श्रीराजजीके कण्ठ पर बीचमें माणिक्यका हार सुशोभित है. इसके साथ

उज्ज्वल हीराका हार है. इसी प्रकार पाच, मोती, नीलमणि एवं वैदूर्यमणि जैसे रत्नोंके निर्मल हार भी अपार शोभा प्रदान करते हैं.

और निरमल मांहें दुगदुगी, तामें नंग करत अति बल ।
बीच हीरा छे गृदवाए, जोत आकास किया उजल ॥ १०९

इन हारोंके मध्यमें निर्मल दुगदुगीमें अनेक रत्न सुशोभित हैं. इस दुगदुगीके मध्यमें हीरा है एवं इसको घेर कर चारों ओर अन्य छः रत्न शोभायमान हैं. जिनकी उज्ज्वल ज्योति आकाशको ही प्रकाशित करती हैं.

गौर गलस्थल धनीय के, उज्जल लाल सुरंग ।
झांई उठे इन नूर में, करनफूल के नंग ॥ ११०

श्रीराजजीके गौर वर्णके कपोल (गाल) पर उज्ज्वल लालिमा सुशोभित है. श्रवण अङ्गोंमें पहने हुए कर्ण फूलके रत्नोंकी रङ्गमयी आभा इन कपोलोंपर पड़ती हुई सुशोभित होती है.

निरख नासिका धनी की, लटके मोती पर लाल ।
लेत अमी रस अधुर पर, रस अमृत रंग गुलाल ॥ १११

श्रीराजजीकी सुन्दर नासिकाको देखो, जिसमें बुलाक पर मोती एवं रक्तिम आभायुक्त माणिक्य लटके हैं. ऐसा प्रतीत होता है कि यह माणिक्य लाल अधरोष्ठको स्पर्श कर अमृतका पान करता हुआ लालिमायुक्त बन गया है.

करनफूल की क्यों कहूं, उठत किरन कै रंग ।
तिन नंग रंग कै भासत, रंग रंग में कै तरंग ॥ ११२

श्रवण-अङ्गोंमें धारण की हुई कर्ण फूलोंकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ? इनमें-से अनेक रङ्गोंकी आभा झलकती है. उनमें जड़े हुए रत्नोंमें अनेक प्रकारके रङ्ग प्रतिभासित होते हैं. इतना ही नहीं एक-एक रङ्गसे अनेक तरङ्गें ऊठतीं हैं.

करत मानिक माहें लालक, हीरे मोती सेत उजास ।
और पाच करत है नीलक, लेत लेहेरी जोत आकास ॥ ११३

इन कर्ण फूलोंमें-से माणिक्यकी लालिमा, हीरा एवं मोतीकी शुभ्रता एवं पाच रत्नकी हरित आभा आकाशके नील वर्णके साथ तरंगित होतीं हैं.

तेज भी मानिक तित मिले, पोहोंचत तित पुखराज ।
नीलवी तो तेज आसमानी, रहे रंग नंग पांचों विराज ॥ ११४

इनके साथ-साथ माणिक्यकी लाल, पुखराजकी पीली तथा नीलमणिकी नीली किरणें भी उनके साथ सम्मिलित होनेसे पाँचों रत्नोंकी अलग-अलग शोभा सुशोभित होती है.

पांच फूल कलंगी पर, उपरा उपर लटकत ।
कोई ऐसी कुदरत नूर की, लेहेरी आकास में झलकत ॥ ११५

श्रीराजजीकी पागमें लगी कलंगीमें ऊपरा-उपरी (उत्तरोत्तर) लटकते हुए-से पाँच फूल सुशोभित हैं. इनके दिव्य प्रकाशमें ऐसा चमत्कार है कि उनकी तरङ्गें आकाशमें झलकतीं हुईं दिखाई देतीं हैं.

एता इन कलंगी मिने, एकै हीरे का नूर ।
आसमान जिमी के बीच में, मानों कोटक ऊगे बका सूर ॥ ११६

यद्यपि इस कलंगीमें एक ही हीरेका प्रकाश सुशोभित है तथापि यह इतना तेजोमय है कि भूमि और आकाशके मध्यमें करोड़ों अखण्ड सूर्य उदयमान हो रहे हों, ऐसा प्रतीत होता है.

जंग जवेर करत हैं, आसमान देखिए जब ।
लरत बीच आकास में, नजरों आवत है तब ॥ ११७

जब आकाशकी ओर देखते हैं तब इन रत्नोंकी किरणें परस्पर द्वन्द्व करती हुई दिखाई देतीं हैं. आकाशमें सदा-सर्वदा इन किरणोंका द्वन्द्व ही दृष्टि गोचर होता है.

कहे महामत अरवा अरस से, जो कोई आई होए उतर ।
सो इन सरूप के चरन लेय के, चलिए अपने घर ॥ ११८

महामति परमधामकी आत्माओंसे कहते हैं, जो कोई परमधामसे इस जगतमें अवतरित हुई हैं वे श्रीराजजीके इन चरण कमलोंको हृदयमें धारण कर अपने घर (परमधाम) लौट जाएँ .

प्रकरण ८ चौपाई ६५०

बरनन करूं बडी रूह की, जो हक नूर का अंग ।
रूहें नूर इन अंगके, जो हमेसा सब संग ॥ १

अब मैं ब्रह्मआत्माओंकी शिरोमणि श्रीश्यामाजीके शृङ्गारका वर्णन करता हूँ. श्रीश्यामाजी स्वयं श्रीराजजीके प्रकाशमय अङ्गकी किरणस्वरूपा हैं. ब्रह्मआत्माएँ श्रीश्यामाजीके अङ्गकी किरणें हैं तथा सदैव उनके साथ रहतीं हैं.

हक जात अंग अरसका, क्यों कर बरनन होए ।
इन सरूप को सुपन भोमका, सबद न पोहोंचे कोए ॥ २

श्रीराजजीकी अङ्गस्वरूपा श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मआत्माएँ दिव्य परमधामकी हैं. उनकी शोभा शब्दोंके द्वारा कैसे व्यक्त हो सकती है ? परमधामके इन स्वरूपोंका वर्णन करनेके लिए नश्वर जगतके शब्द सक्षम नहीं होते हैं.

किन देख्या सुन्या न तरफ पाई, तो क्यों दुनियां सुन्या जाए ।
जो अरवा होसी अरस की, सो सुन के सुख पाए ॥ ३

परमधामके विषयमें इस जगतमें आज तक न किसीने सुना, देखा तथा अनुभव प्राप्त किया. इस नश्वर जगतके जीव अखण्डधामके विषयमें सुन ही कैसे सकते हैं ? जो परमधामकी आत्मा होगी वही उसके विषयमें सुनकर आनन्दका अनुभव करेगी.

मेरी रूह चाहे बरनन करूं, होए ना बिना अरस इलम ।
बस्तर भूषन अरस के, इत पोहोंचे ना सुपन का दम ॥ ४

मेरी आत्मा परमधामका वर्णन करना चाहती है. किन्तु परमधामके ज्ञान (तारतमज्ञान) के बिना यह सम्भव नहीं हो सकता है. नश्वर जगतके जीव परमधामके दिव्य वस्त्र एवं आभूषणोंकी शोभा नहीं देख सकते हैं.

पेहेने उतारे इन जिमी, नहीं अरस में चल विचल ।
इत नकल कोई है नहीं, अरस वाहेदत सदा असल ॥ ५

वस्त्र तथा आभूषणोंको धारण करना या उतारना तो केवल नश्वर जगतमें ही

होता है. दिव्य परमधाममें ऐसी कोई अस्थिरता या हलचल होती ही नहीं है. वहाँ पर कोई अनुकृति (नकल) ही नहीं होती है. अद्वैत परमधाम तो सदा सर्वदा शाश्वत है.

घट बढ अरस में है नहीं, मिटे न कबूं रोसन ।
तिन सरूप को इन मुख, क्यों कर होए बरनन ॥ ६

परमधाममें किसी भी वस्तुमें क्षीणता अथवा अभिवृद्धि (घट-बढ़) नहीं होती है. वहाँ पर जो वस्तु प्रकाशित होती है वह कभी नहीं मिटती है. ऐसे दिव्य परमधामके दिव्य स्वरूपकी महिमाका वर्णन नश्वर जिह्वाके द्वारा कैसे सम्भव है ?

एक पेहेर दूजा उतारना, तब तो घट बढ होए ।
जब जैसा जित चित चाहे, तब तित तैसा बनत सोए ॥ ७

किसी एक वस्त्र अथवा आभूषणको धारण कर दूसरेको उतारना होता तो वहाँ पर घट-बढ़की संभावना होती किन्तु परमधाममें यह स्थिति है कि जहाँ पर जैसी वस्तुकी इच्छा हो जाती है वहाँ पर वह वस्तु उसी रूपमें तत्काल साकार रूप ले लेती है.

अरस अरवा चाहे दिलमें, सो होए माहें पल एक ।
जिन अंग जैसा बस्तर, होए छिन में कै अनेक ॥ ८

परमधामकी ब्रह्मआत्माएँ हृदयमें जैसी चाहना करतीं हैं वह पल मात्रमें ही पूर्ण हो जाती है. उनके जिन अङ्गोंमें जैसे वस्त्र तथा आभूषण होने चाहिए उसी क्षण उनमें वैसे अनेक वस्त्र तथा आभूषण सुशोभित दिखाई देते हैं.

सुंदर सरूप सोभा लिए, सिनगार बस्तर भूषन ।
रस रंग छबि सलूकी, चाहे रूह के अंतसकरन ॥ ९

ब्रह्मआत्माएँ मनमें जैसा विचार करतीं हैं उसीके अनुरूप उनके सुन्दर स्वरूपोंमें वस्त्र तथा आभूषणोंके शृङ्गारकी शोभा दिखाई देने लगती है.

बस्तर भूषन अंग अरस के, सो सबे हैं चेतन ।
सब सुख देवें रूह को, तो क्यों न देवे नैन श्रवन ॥ १०

परमधामके वस्त्र तथा आभूषण सभी चैतन्यमय हैं उनसे भी ब्रह्मआत्माओंको

अपार सुखका अनुभव होता है तो फिर नेत्र तथा श्रवण जैसे अङ्गोंसे उन्हें अपार सुखका अनुभव क्यों नहीं हो सकता है ?

नया सिनगार साजत, तब तो नया पेहेन्या कह्या जात ।
नया पुराना अरस में नहीं, पर पोहोंचे न इतकी बात ॥ ११

यदि ब्रह्मआत्माएँ नये शृङ्गारसे सुसज्जित होतीं तो उन्होंने नया शृङ्गार धारण किया है ऐसा कहा जाता. परमधाममें तो नया या पुराना है ही नहीं. नश्वर जगतके कोई भी शब्द वहाँ तक पहुँच नहीं सकते है.

जो सिफत बडी चित लीजिए, बडी अकल सों जान ।
फना बका को क्या कहे, ताथें पोंहोंचत नहीं जुबान ॥ १२

परमधामकी इस दिव्य शोभाको जो हृदयमें धारण कर सकते हैं उनको ही विशिष्ट बुद्धिशाली (महामति) समझना चाहिए. अन्यथा नश्वर जगतकी बुद्धि अखण्डका वर्णन कैसे कर सकती है ? इसलिए यहाँके कोई भी शब्द वहाँ तक नहीं पहुँच सकते हैं.

तो भी रूह मेरी ना रहे, हक बरनन किया चाहे ।
हक इलम आया मुझपें, सो या बिन रह्यो न जाए ॥ १३

तथापि मेरी आत्मासे रहा नहीं जाता, वह अखण्ड धामका वर्णन करना चाहती है. मुझमें ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) अवतरित हुआ है, इसलिए परमधामका वर्णन किए बिना मुझसे रहा नहीं जाता.

ना तो बैठ झूठी जिमी में, ए बका बरनन क्यों होए ।
इलम हुकम खैंचे रूह को, अकल जुबां कहे सोए ॥ १४

अन्यथा इस नश्वर जगतमें बैठकर अखण्डका वर्णन कैसे हो सकता है ? यह तो श्रीराजजी द्वारा प्रदत्त तारतमज्ञान एवं उनके आदेश (हुकुम) की ही विशेषता है कि वे मेरी आत्माको इस ओर प्रेरित करते हैं. फलस्वरूप स्वप्नवत् जगतकी बुद्धि तथा जिह्वाके द्वारा अखण्डका वर्णन हो रहा है.

यासों रूह सुख पावत, अरस रूहें पावें आराम ।
कहूं सिखाई रूहअल्लाह की, ले साहेदी अल्ला कलाम ॥ १५

इस वर्णनसे मेरी आत्माको अपार सुखका अनुभव होता है एवं परमधामकी

अन्य ब्रह्मआत्माओंको भी परमसुख प्राप्त होता है. मैं श्रीश्यामाजी स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके उपदेशके आधार पर कुरानकी साक्षी लेकर परमधामका वर्णन कर रहा हूँ.

हक इलम सिर लेय के, बरनन करूं हक जात ।
रूह मेरी सुख पावहीं, हिरदे बसो दिन रात ॥ १६

श्रीराजजी द्वारा प्रदत्त ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान) को शिरोधार्य कर (उसके बल पर) मैं श्रीराजजीकी अङ्गरूपा श्रीश्यामाजीका वर्णन करना चाहता हूँ जिससे मेरी आत्माको अपार आनन्दका अनुभव होगा. इसलिए हे धामधनी ! आप रात-दिन मेरे हृदयमें विराजमान हो जाएँ.

मोमिन दिल अरस कह्या, सो अरस बसे जित हक ।
निसबत मेहेर जोस हुकम, और इसक इलम बेसक ॥ १७

ब्रह्मआत्माओंके हृदयको परमधाम कहा गया है. वह तभी परमधाम होगा जब उस पर श्रीराजजी विराजमान होंगे. इसी सम्बन्धके कारण ब्रह्मआत्माओंके हृदयमें श्रीराजजीकी कृपा, जोश, आदेश प्रेम एवं ज्ञान निश्चित रूपसे चले आते हैं.

ए बरकत हक अरस में, तो दिल अरस कह्या मोमन ।
तो बरनन होए वाहेदत का, जो यों दिल होए रोसन ॥ १८

उपर्युक्त संपूर्ण समृद्धि अखण्ड परमधामकी है. जब यह ब्रह्मआत्माओंके हृदयमें आ जाती है तभी उनका हृदय परमधाम बन जाता है. जब इस प्रकारकी सम्पदाका सौभाग्य प्राप्त हो जाता है तभी परमधामका वर्णन होना संभव है.

बारीक बातें अरस की, सो जाने अरस के तन ।
जीवत लेसी सो सुख, जिनका टूट्या अंतसकरन ॥ १९

परमधामका यह ज्ञान अतीव सूक्ष्म (सारगर्भित) है. इसे परमधामकी आत्माएँ ही जान सकतीं हैं. जिनका हृदय भौतिक जगतसे विमुख हो जाता है वे ही इस जगतमें बैठे हुए भी परमधामका सुख प्राप्त कर सकतीं हैं.

छाती मेरी कोमल, और कोमल तुमारे चरन ।
बासा करो तिन पर, तुमसों निसबत अरस तन ॥ २०

हे धनी ! मेरा हृदय अति कोमल है एवं आपके चरण कमल भी अत्यन्त कोमल हैं. इसलिए आप मेरे हृदयमें आकर वास करें. आपसे ही मेरी पर-आत्माका सम्बन्ध है.

मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखों नरम कदम ।
इतहीं सेज बिछाए देउं, जुदे करों जिन दम ॥ २१

मेरा हृदय स्थल अत्यन्त कोमल है. उसमें आप अपने कोमल चरणकमल स्थापित करें. इसी हृदय स्थलमें आपके लिए शय्या बिछा दूँ, जिससे क्षण भरके लिए भी आप मुझसे दूर न हों.

रूह छाती इनसे कोमल, तिनसे पांऊ कोमल ।
इत सुख देऊं मासूकको, सुख यों लेऊं नेहेचल ॥ २२

मेरी आत्माका हृदय स्थल तो इस से भी अधिक कोमल है एवं उससे भी अधिक कोमल आपके श्रीचरण हैं. अब मैं आत्माके हृदय स्थल पर अपने प्रियतम धनीको स्थापित कर उन्हें सुख प्रदान करूँ एवं उनसे अखण्ड सुख प्राप्त करूँ.

मेरी रूह नैन की पुतली, बीच राखूं तिन तारन ।
खिन एक न्यारे जिन करो, ए चरन बसें निस दिन ॥ २३

मैं मेरी आत्माके नयनोंकी पुतलीके अन्दर तारोंमें आपके चरणकमलोंको प्रस्थापित कर लूँ. आप क्षण भरके लिए भी इन चरणोंको वहाँसे दूर न करें. ये चरणकमल रात-दिन वहीं पर बसे रहें.

चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल ।
निस दिन राखों इन पर, जिन आवने देऊं बीच पल ॥ २४

आपके चरण तल अत्यन्त कोमल हैं. इसी प्रकार मेरी आत्माके नयन भी अतीव कोमल हैं. इन्हीं कोमल नयन कमलमें आपके चरण कमलको रात दिन स्थापित करूँ. इसके लिए एक पलका भी विलम्ब होने न दूँ.

या रूह नैन की पुतली, तिन नैनों बीच तारन ।
इत रहे सेज निस दिन, धरो उजल दोऊ चरन ॥ २५

मेरी आत्माकी नयनपुतलीके मध्य विन्दुमें आपके लिए रात-दिन शय्या बिछी हुई है. आप अपने दोनों उज्ज्वल चरण कमलोंको यहीं पर स्थापित करें.

मेरा दिल तुमारा अरस है, माहें बहु विध की मोहोलात ।
कै सेज हिडोले तखत, रूह नए नए रंगों बिछात ॥ २६

मेरा हृदय ही आपका परमधाम है. इसमें विभिन्न प्रकारके प्रासाद हैं. उनमें अनेक शय्या, झूले तथा सिंहासन हैं. मेरी आत्माने उनको बड़ी उमंगके साथ सजाया है.

आसा पूरो सुख देओ, नए नए कराऊं सिनगार ।
द्यो पूरी मस्ती ना बेहोसी, सुख लेऊं सब अंग समार ॥ २७

हे धनी ! मेरी आशाओंको पूर्ण करते हुए मुझे अपार सुख प्रदान करें. मैं आपको नित्य नूतन शृङ्गारसे सुसज्जित कर दूँ. मुझे आप प्रेमकी पूरी मस्ती प्रदान करें, किन्तु मूर्च्छा (बेहोशी) न दें ताकि मैं अपने सभी अङ्गोंको सम्हाल कर आपका अपार सुख प्राप्त कर सकूँ.

अरस तुमारा मुझ दिल, माहें अरस की सब विसात ।
खाना पीना सुख सिनगार, माहें सब न्यामत हक जात ॥ २८

मेरा हृदय ही आपका परमधाम है. इसके अन्दर परमधामकी सभी सम्पदाएँ विद्यमान हैं. इसीके अन्दर खाने-पीने तथा शृङ्गार आदिकी सुखदायी सामग्री सहित ब्रह्मात्माएँ भी विराजमान हैं.

सब गुझ तुमारे दिलका, जिन मेरा दिल किया रोसन ।
जेता मता बीच अरस के, सब आया दिल मोमन ॥ २९

आपके हृदयके गूढ़ रहस्योंने ही मेरे हृदयको आलोकित किया है. इस प्रकार परमधामकी सभी सम्पदाएँ ब्रह्मआत्माओंके हृदयमें समाहित हो गईं हैं.

तो कह्या अरस दिल मोमन, हक बैठें उठें खेलाए ।
सुख बका हक अरस रूहें, सिफत क्यों कहे दिल जुबांए ॥ ३०

इसीलिए ब्रह्मआत्माओंके हृदयको परमधाम कहा है. स्वयं धामधनी यहीं पर विराजमान होते हैं, उठते हैं तथा ब्रह्मआत्माओंको लीलासुख प्रदान करते हैं. इस प्रकार ब्रह्मआत्माएँ परमधामका अखण्ड सुख अपने हृदयमें धारण करतीं हैं. उनके हृदयकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ?

पर दिलके जो अंग हैं, धनी अरस तुमारा सोए ।
तुमें देखें कहें बातें सुनें, लेवें तुमारी बानी की खुसबोए ॥ ३१

हे धामधनी ! यह हृदय ही आपका परमधाम है किन्तु इसके सभी अङ्ग भी आपका दर्शन चाहते हैं. वे आपसे बातें करना चाहते हैं तथा आपकी मधुर वाणीकी सुगन्धि प्राप्त करना चाहते हैं.

पिएं तुमारी सुराही का, कै स्वाद फूल सराब ।
ऐसी लेऊं मस्ती मेहेबूबकी, ज्यों उड जावे ख्वाब ॥ ३२

हे धनी ! आपके हृदयरूपी सुराहीका अमृतमय स्वाद (प्रेम) प्राप्त करनेकी लालसा बनी रहती है. मैं अपने प्रियतम धनीकी ऐसी मस्ती प्राप्त करूँ जिससे यह स्वप्न तत्काल उड़ जाए.

एक स्वाद दिल देखे तुमको, सुने तुमारी बानी की मिठास ।
लेऊं खुसबोए बोलूं तुमसों, और क्यों कहूं दुलहा विलास ॥ ३३

हे धनी ! आपसे प्राप्त मस्तीका एक आस्वादन यह है कि यह हृदय आपका दर्शन करता है एवं आपकी मधुर वाणीका श्रवण करता है. मेरी हार्दिक अभिलाषा रहती है कि मैं आपसे वार्तालापकी सुगन्धि भी प्राप्त कर लूँ. आपके साथ आनन्द विहार करनेसे जो अपार सुख प्राप्त होता है उसका तो वर्णन ही नहीं हो सकता है.

जेता सुख तुमारे अरस में, सो सब हमारे दिल ।
ए सुख रूह मेरी लेवहीं, जो दिए इन अरस में मिल ॥ ३४

हे धामधनी ! परमधाममें जितने सुख हैं आपने वे सभी मेरे हृदयमें स्थापित

कर दिए हैं. मेरे हृदयको परमधाम बनाकर आप उसे जितने सुख प्रदान करते हैं वे सम्पूर्ण सुख मेरी आत्मा अनुभव करती है.

रूह बरनन करे क्या होए, जोलों स्वाद न ले निसबत ।
इसक इलम जोस हुकम, ए सब मेहेरें पाइए न्यामत ॥ ३५

इन सुखोंका मात्र वर्णन करनेसे आत्माको क्या लाभ होगा जब तक उसे आपके सम्बन्धके आस्वादनका अनुभव न हो. वस्तुतः प्रेम, ज्ञान, जोश, आवेश आदि अमूल्य निधियाँ मात्र आपकी कृपासे ही प्राप्त होतीं हैं.

दिल के अंगों बिना हकके, इत स्वाद लीजे क्यों कर ।
देखे सुने बोले बिना, तो क्या अरस नाम धर्‌या धनी बिगर ॥ ३६

जब तक धामधनी हृदयरूपी सिंहासन पर विराजमान नहीं होते हैं तब तक यह आत्मा परम आनन्दकी अनुभूति कैसे कर सकती है ? धामधनीके हृदयमें आसीन हुए बिना, उनके दर्शन किए बिना उनकी बातोंको श्रवण किए बिना तथा उनके साथ वार्तालाप किए बिना यह हृदय कैसे परमधाम बन सकता है ?

जो मासूक सेज न आइया, देख्या सुन्या न कही बात ।
सुख अंग न लियो इन सेज को, ताए निरफल गई जो रात ॥ ३७

जिनके हृदयरूपी शय्या पर प्रियतम धनीका पदार्पण नहीं हुआ तथा न उनके दर्शन हुए, न उनके वचन सुननेका अवसर प्राप्त हुआ, न उनसे कोई प्रेमालाप हो सका तथा न ही हृदयरूपी शय्याका सुख प्राप्त हो सका ऐसी आत्माका संपूर्ण जीवन (पूरीरात) व्यर्थ हो जाता है.

अरस तुमारा मुझ दिल, माहें अरस की सब विसात ।
सब न्यामतें इनमें, अरस बका हक जात ॥ ३८

हे धामधनी ! मेरा हृदय आपका परमधाम है. इसमें परमधामकी सभी समृद्धियाँ हैं. परमधामकी सभी ब्रह्मआत्माओंके हृदयमें परमधामकी सभी समृद्धियाँ समायी हुई हैं.

पेहेलें बरनन करूं सिर राखडी, पीछे बरनन करूं सब अंग ।
अखंड सिनगार अरसको, मेरी रूह हमेसा संग ॥ ३९

अब मैं सर्व प्रथम श्रीश्यामाजीके सिर पर सुशोभित राखड़ीका वर्णन करता हूँ तदुपरान्त उनके सभी अङ्गोंकी शोभाका वर्णन करूँगा. यह सम्पूर्ण शृङ्गार अखण्ड परमधामका होनेसे शाश्वत है. मेरी आत्मा सदा सर्वदा उन्हींके साथ रहती है.

मंगलाचरन तमाम

सिर पर बनी जो राखडी, कहूं किन विध सोभा ए ।
आसमान जिमी के बीचमें, एकै जोत खडी ले ॥ ४०

श्रीश्यामाजीके सिरपर सुशोभित राखड़ीकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए. आकाश और भूमिके मध्य मात्र इसीकी ज्योति दिखाई देती है.

गृदवाए मानिक बने, बीच हीरे की जोत ।
किनार ऊपर जो नीलवी, हुई जिमी अंबर उदोत ॥ ४१

इस राखड़ीके चारों ओर माणिक्य सुशोभित है एवं मध्यमें हीरेकी आभा झलकती है. किनार पर सुशोभित नीलमणिकी ज्योति आकाश तक तरङ्गित होती है.

सेंथे भी सिर कांगरी, और सिर कांगरी पान ।
इन सिर सोभा क्यों कहूं, अलेखे अमान ॥ ४२

श्रीश्यामाजीकी माँग पर सुशोभित काँगरी पानके पत्तेके आकारकी है. सिर पर यह इस प्रकार सुशोभित है कि इसकी उपमा नहीं दी जा सकती.

माहें हारे खजुरे बूटियां, बीच फूल करत हैं जोत ।
जुदे जुदे रंगो जवेर, ठौर ठौर रोसनी होत ॥ ४३

इसके मध्यमें लहरीदार पङ्क्तिबद्ध छोटे-छोटे फूल सुशोभित हैं. विभिन्न रङ्गोंके रत्नोंके इन फूलोंसे चारों ओर प्रकाश फैलता है.

लाल सेंथे जोत जवेर की, दोए पटली समारी सिर ।
बनी नंगनकी कांगरी, बल बल जाऊं फेर फेर ॥ ४४

माँगमें लाल सिन्दूर सुशोभित है. दोनों ओरकी पटली (केश बाँधनेकी पट्टी)

में अनेकों रत्नोंकी ज्योतिर्मयी किरणें प्रदीप्त हो रहीं हैं. ये दोनों पटली सिर पर सुशोभित हैं. इनमें विभिन्न रत्नोंकी काँगरी हैं. उनकी अपार शोभा पर वारंवार समर्पित होनेकी इच्छा होती है.

नीलवट पर सर मोतिन की, ऊपर नीलवी बीच मानिक ।
दोऊ तरफों तीनों सरें, तीनों बराबर माफक ॥ ४५

ललाट पर मोतीयोंकी लड़ियाँ सुशोभित हैं. इन लड़ियोंमें ऊपर नीलमणि तथा मध्यमें माणिक्यकी शोभा है. माँगके दोनों ओर समान रूपसे स्थित तीनों लड़ियाँ अति सुन्दर ढ़ँगसे सुशोभित हैं.

इन तीनों पर कांगरी, बनी सेंथे बराबर ।
पान कटाव सेंथे पर, ए जुगत कहूं क्यों कर ॥ ४६

इन तीनों लड़ियों पर काँगरी सुशोभित हैं जो माँगके साथ समानरूपसे स्थित हैं. माँगपर पानके पत्तेके आकारका आभूषण सुशोभित है. इसकी शोभा किन शब्दोंमें व्यक्त की जाए ?

मानिक मोती नीलवी, हेम हीरा पुखराज ।
इन मुख सोभा क्यों कहूं, सिर खूबी रही विराज ॥ ४७

माणिक्य, मोती, नीलमणि, हेम, हीरा, पुखराज, आदिकी यह राखड़ी श्रीश्यामाजीके सिर पर अत्यन्त शोभायमान है. इसकी अनुपम शोभा जिह्वाके द्वारा कैसे व्यक्त हो सकती है ?

बीच फूल कटाव कै, राखडी के गृदवाए ।
ए जुगत बनी मूल बेनी लग, गूंथी नंग मोती बेन बनाए ॥ ४८

इस राखड़ीके मध्यमें तथा चारों ओर पुष्प, लता आदिकी सुन्दर चित्रकारी है. युक्तिपूर्वक बनी हुई यह राखड़ी वेणी (चोटी) के मूल तक पहुँची है. यह वेणी मोती तथा रत्नोंसे गूँथी हुई होनेसे अति सुन्दर है.

तीन नंग रंग गोफने, तिन एक एक में तीन रंग ।
हीरा मानिक नीलवी, सोभित कंचन संग ॥ ४९

वेणीमें लटके तीन फुँदनोंमें तीन रङ्गके तीन रत्न लगे हुए हैं. एक-एक

रत्नसे तीन-तीन रङ्गोंकी आभा झलकती है. हीरा, माणिक्य एवं नीलमणि ये तीनों स्वर्णमें लगे हुए होनेसे अति शोभायमान हैं.

तीनों गोफने घूंघरी, बेन गूंथी नई जुगत ।
बल बल जाऊं देख देख के, रूह होए नहीं त्रपत ॥ ५०

इन तीनों फुँदनोंके किनारों पर घुँघुरु सुशोभित हैं. इस प्रकार श्रीश्यामाजीकी वेणी युक्ति पूर्वक गूँथी हुई है. उसकी अद्वितीय शोभाको देखकर स्वयं समर्पित होनेका भाव प्रकट होता है तथापि यह आत्मा तृप्त नहीं होती.

चारों बंध बेनी तलें, नीले पीले सोभित ।
सोभे नरम बंध चोलीय के, खूबी साडी तले देखत ॥ ५१

इस वेणीके नीचे पृष्ठभागमें नीले एवं पीले रङ्गमें चोलीके चार बन्ध सुशोभित हैं. अत्यन्त कोमल चोलीके इन बन्धोंकी शोभा साड़ीमें से झलकती हुई दिखाई देती है.

बेन सोभित गौर पीठ पर, चोली और बंध चोली के ।
सब देत देखाई साडी मिने, सब सोभा लेत सनंध ए ॥ ५२

श्रीश्यामाजीके गौरवर्णके पृष्ठभाग पर श्यामल वेणी सुशोभित है. इसके साथ-साथ चोली तथा उसके बन्ध भी अतीव शोभायमान हैं. ये सभी साड़ीमें-से झलकते हुए अत्यन्त शोभायुक्त लगते हैं.

लाल साडी कै नकस, माहें अनेक रंग के नंग ।
मीहीं नकस न होवे गिनती, करें जवेर माहें जंग ॥ ५३

श्रीश्यामाजीकी साड़ी लाल रङ्गकी है. उसमें विभिन्न रङ्गके रत्नोंकी अनेक चित्रकारी हैं. इन सूक्ष्म चित्रकारीकी गणना ही नहीं हो सकती. इनमें स्थित रत्नोंका प्रकाश परस्पर द्वन्द्व करता हुआ प्रतीत होता है.

सिर पर साडी सोभित, नीली पीली सेत किनार ।
तिन पर सोहे कांगरी, करें पांच नंग झलकार ॥ ५४

श्रीश्यामाजीकी यह साड़ी उनके सिर पर अतीव शोभायमान होती है. इसकी किनारी नीली, पीली तथा श्वेत रङ्गकी है. इस पर काँगरी सुशोभित है. उसमें-से पाँच रत्नोंकी आभा झलकती है.

साडी कोर किनार पर, नंग कांगरी सोभित ।
फूल बेल कै खजूरे, कै छेडों मिने झलकत ॥ ५५

साड़ीके पल्ले और किनारी पर रत्नमयी काँगरी सुशोभित है. इसमें अनेक लहरीदार पुष्प तथा लताएँ झलकतीं हैं.

कै छापे बूटी नकस, नंग साडी बीच अपार ।
कै नंग रंग झलके बीचमें, सोभा न आवे माहें सुमार ॥ ५६

लाल रङ्गकी साड़ीमें अनेक प्रकारकी चित्रकारी हैं. जिनमें विभिन्न रत्नोंके छोटे-छोटे अनेक फूल हैं. बीच-बीचमें अनेक रङ्गोंके रत्न झलकते हैं. इस प्रकार इस साड़ीकी शोभाका कोई पारावार नहीं है.

मुख उज्जल गोर लालक लिए, छबि जाए न कही जुबांएं ।
देख देख सुख पावत, रूह हिरदे के माहें ॥ ५७

श्रीश्यामाजीका गौर वर्णका मुखारविन्द अत्यन्त उज्ज्वल एवं लालिमायुक्त है. उनकी इस दिव्य छविकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती. इसे देखकर मेरी आत्मा अपने हृदयमें अपार सुखका अनुभव करती है.

मुख चौक नैत्र नासिका, ए छबि अंग अरस के ।
असलें सिफत न पोहोंचहीं, बुध माफक कही ए ॥ ५८

श्रीश्यामाजीका मुख मण्डल, नेत्र, नासिका आदिका अनुपम सौन्दर्य परमधामकी दिव्यताके अनुरूप है. यद्यपि इस अखण्ड स्वरूपके वर्णनमें नश्वर जगतके शब्द सक्षम नहीं होते तथापि अपनी बुद्धिके अनुसार यह लेशमात्र वर्णन हुआ है.

मुखारबिन्द स्यामाजीय को, रूह देख देख सुख पाए ।
निलवट सोहे चांदलो, रूह बलिहारी ताए ॥ ५९

रंग नीले जोत पाच में, रूह इतथें क्यों निकसाए ।
जो जोत देखूं मानिक, रूह वाही में डूब जाए ॥ ६०

श्रीश्यामाजीके आभापूर्ण मुखारविन्दके दर्शन कर आत्मा अपार सुखका अनुभव करती है. उनके ललाट पर टीका सुशोभित है. ऐसी अनुपम छवि

पर आत्मा वारंवार समर्पित होना चाहती है. इसमें जड़ित पाच रत्नकी नीली आभा तथा माणिक्यकी लाल आभाको देखकर आत्माकी दृष्टि वहीं पर स्थिर हो जाती है.

करे आकास मोती उज्जल, जोत लटके लेवे तरंग ।
आसिक रूह क्यों निकसे, क्योंए न छूटे लग्यो दिल रंग ॥ ६१

उसमें संलग्न उज्ज्वल मोतीका प्रकाश आकाशमें व्याप्त होता हुआ ऐसा प्रतीत होता है मानों उज्ज्वल ज्योतिकी तरङ्गें लटक रही हों. जिनके हृदयमें इस शोभाकी मस्ती आ गई है ऐसी अनुरागिनी आत्माओंकी दृष्टि इसीमें स्थिर हो जाती है, इससे किसी भी प्रकार दूर नहीं जाती है.

श्रवनों सोहे पानडी, मानिक के रंग सोए ।
और रंग माहें नीलवी, जोत करत रंग दोए ॥ ६२

श्रवण-अङ्गोंमें पानके पत्तेके आकारके आभूषण सुशोभित हैं. जिनमें माणिक्य एवं नीलमणि जड़े हुए हैं. उन दोनों रत्नोंकी अलग-अलग रङ्गकी किरणें परस्पर द्वन्द्व करती हुई दिखाई देतीं हैं.

मोती पांने पुखराज, लरें लटकत इन ।
तरंग उठत आकास में, किरना करत रोसन ॥ ६३

इसमें मोती, पन्ना एवं पुखराजकी लड़ियाँ लटकी हुई हैं. इनसे निकलती हुई किरणें इतनी ज्योतिर्मयी हैं कि उनकी तरङ्गें आकाशमें व्याप्त हो जातीं हैं.

मुरली सोभित मुख नासिका, लटके मोती नंग लाल ।
निरख देखूं माहें नीलवी, तो तबहीं बदले हाल ॥ ६४

श्रीश्यामाजीके प्रभापूर्ण मुख मण्डलकी नासिकामें मुरली (छोटी नथ) सुशोभित है, जिसमें लालिमायुक्त मोती लटका हुआ है. उसमें नीलमणि भी जड़ी हुई है. जब इस पर दृष्टि पड़ती है तब मनस्थिति ही बदल जाती है.

न्यारी गति नैनन की, अति अनियारे लोचन ।
उजल माहें लालक लिए, अतंत तेज तारन ॥ ६५

श्रीश्यामाजीके नयनोंकी चाल निराली है उनके नेत्र अति नुकीले हैं.

लालिमायुक्त ये नेत्र अति उज्ज्वल हैं. उनके मध्यकी पुतलियाँ अत्यन्त तेजोमय हैं.

भौं भृकुटी अति सोभित, रंग स्याम अंग गौर ।
केहेनी जुबां न आवत, कछू अरस रूहें जानें जहूर ॥ ६६

श्रीश्यामाजीके गौर वर्णके मुखमण्डल पर नयनोंकी पलकें एवं भृकुटीकी श्यामलता अत्यन्त सुशोभित हैं. इस अनुपम शोभाका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है. परमधामकी आत्माएँ ही इस अद्वितीय छविका दर्शन कर सकतीं हैं.

सोभा लेत हैं टेढाई, नैना रंग रस भरे ।
ए सोई रूहें जानहीं, जाकी छाती छेद परे ॥ ६७

इन नयनोंका तिरछापन अति शोभायुक्त है, इनमें प्रेमपूर्ण आनन्दकी रङ्गमयी छटा गोचर होती है. इस अनुपम छविको ब्रह्म-आत्माएँ ही जानतीं हैं जिनका हृदय इनकी तिरछी चितवनसे आहत होता है.

मीठे नैन रसीले निरखत, माहें सरम देत देखाए ।
प्यार पूरा देखत, मेहेर भरे सुखदाए ॥ ६८

इन मधुर नयनोंमें प्रेमकी मादकता झलकती है, साथ ही थोड़ी लज्जा भी दिखाई देती है. श्रीश्यामाजी इन कृपापूर्ण सुखदायी नयनोंसे प्रेम पूर्वक देखतीं हैं.

अनेक गुन इन नैन में, गिनती न होवे ताए ।
सुख देत अलेखे सब अंगों, नैना गुन क्योए ना गिनाए ॥ ६९

इन नयनोंमें असंख्य गुण परिपूर्ण हैं जिनकी गणना नहीं हो सकती. यद्यपि श्रीश्यामाजीके सभी अङ्ग असंख्य सुख प्रदान करते हैं तथापि इन नयनोंके गुणोंकी गणना तो नितान्त असम्भव है.

सनकूल मुख अति सुंदर, गोर हरवटी सलूक ।
लांक अधुर दंत देखत, जीव होत नहीं टूक टूक ॥ ७०

श्रीश्यामाजीका प्रसन्न मुख मण्डल अतीव सुन्दर है. उसमें गौरवर्णका चिबुक

(ठोड़ी) शोभायमान है. चिबुकके उपरकी गहराई, अधरोष्ठ एवं दन्तावलिकी शोभा देखकर यह जीव क्यों द्रवित (टुकड़े-टुकड़े) नहीं होता है ?

मुख चौक अति सुंदर, अति सुंदर दोऊ गाल ।
कही न जाए छबि सलूकी, निपट उजल माहें लाल ॥ ७१

श्रीश्यामाजीका मुख मण्डल एवं दोनों कपोल (गाल) अति सुन्दर हैं. लालिमायुक्त अति उज्ज्वल इस अलौकिक छविकी सुन्दरता निश्चय ही शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती.

सात रंग माहें झलकत, लेहेरी लेत दोऊ झाल ।
दोऊ फूल सोभित मुख झालके, जुबां क्या कहे इन मिसाल ॥ ७२

फिरते मोती सोभित, माहें मानिक पाच कुंदन ।
हीरे लसनिएं नीलवी, सातों अंबर करें रोसन ॥ ७३

श्रीश्यामाजीके श्रवण-अङ्गोंमें धारण किए हुए कुण्डलोंमें सात रङ्गकी किरणें लहराती हुई दिखाई देतीं हैं. इनके मुखपर दो फूल सुशोभित हैं. इनकी अनुपम शोभा शब्दोंमें कैसे व्यक्त हो सकती है ? इनके चारों ओर मोती सुशोभित हैं तथा मध्यमें माणिक्य, पाच, कुन्दन, हीरा, वैदुर्यमणि (लहसुनियाँ,) नीलमणि आदि सात रत्न जड़े हुए हैं. उनका प्रकाश पूरे आकाशको प्रकाशित करता है.

हेम नंग नाम लेत हों, मानों के पेहेने बनाए ।
ए विध अरस में है नहीं, जुबां सके न सिफत पोहोंचाए ॥ ७४

स्वर्ण तथा रत्न आदिका नाम लेनेसे ऐसा लगता है मानो ये किसीके द्वारा बनाए गए हैं किन्तु परमधाममें ऐसी स्थिति नहीं है कि वहाँ पर कोई वस्तु बनाई जाए. इसलिए वहाँके इन शाश्वत वस्तुओंकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती.

कै रंग करें एक छिन में, नई नई जुगत देखाए ।
सोहें हमेसा सब अंगों, पेहेने सोभित चित चाहे ॥ ७५

परमधामकी यह विशेषता है कि वहाँकी प्रत्येक वस्तु क्षण भरमें अनेक

रङ्गोंमें दिखाई देती है. इसी प्रकार सभी अङ्गों पर सुशोभित ये आभूषण भी हृदयकी भावनाके अनुरूप पहने हुए दिखाई देते हैं.

चीज सबे अरस चेतन, बस्तर या भूषन ।
सुख लेत हकके अंग का, यों करत अति रोसन ॥ ७६

वस्त्र तथा आभूषण सहित परमधामकी सभी वस्तुएँ चैतन्यमय हैं. वे भी श्रीराजजी एवं श्रीश्यामाजीके अङ्गोंका स्पर्श प्राप्त कर आनन्दका अनुभव करतीं हैं. इसके कारण उनकी आभा और भी प्रदीप्त होती है.

हर नंग में सब रंग हैं, हर नंग में सब गुन ।
सो नंग ले कछू न बनावत, सब दिल चाह्या होत रोसन ॥ ७७

परमधामके प्रत्येक रत्नसे सब प्रकारके रङ्गोंकी आभा झलकती है. इसी प्रकार प्रत्येक रत्नमें सब प्रकारके गुण भी विद्यमान हैं. इसलिए इन रत्नोंको लेकर कोई भी आभूषण बनाया नहीं जा सकता. ये सभी हृदयकी भावना-अनुकुल साकार रूप लेकर प्रकाशित हो जाते हैं.

बस्तर भूषन केहेत हों, हेम रेसम रंग नंग ।
ना पेहेन्या ना उतारिया, ए दिल चाह्या सोभित अंग ॥ ७८

परमधामके वस्त्र तथा आभूषणोंके विषयमें भी क्या कहें ! इनमें जड़े हुए हेम, रेशम, तथा विभिन्न प्रकारके रत्नोंकी आभा अद्वितीय होती है. इनको धारण करने अथवा उतारनेकी आवश्यकता नहीं है. ये तो हृदयकी चाहना मात्रसे अङ्गोंमें स्वतः सुशोभित हो जाते हैं.

यों दिल चाह्या बस्तर, और दिल चाह्या भूषन ।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, आगूं रोसन होत माहें छिन ॥ ७९

इस प्रकार परमधामके सारे परिधान, वस्त्र तथा आभूषण आदि सभी इच्छा-अनुकुल सुशोभित होते हैं. जिनके हृदयमें जैसी इच्छा उत्पन्न होती हैं, उसी समय ये उसी रूपमें प्रकाशित हो जाते हैं.

सुंदर सरूप छबि देख के, फेर फेर जाऊं बल बल ।
जो रूह होवे अरस की, सो याही में जाए रल गल ॥ ८०

ऐसे दिव्य वस्त्र तथा आभूषण युक्त श्रीश्यामाजीकी सुन्दर छवि देखकर मैं

वारंवार समर्पित होता हूँ. जो आत्मा परमधामकी होगी वह निश्चय ही इस अद्वितीय छविको देखकर इसीमें लीन हो जाएगी.

नरम लांक अति बारीक, पेट पांसली अति गौर ।
ए छबि रूह रंग तो कहे, जो होवे अरस सहूर ॥ ८१

श्रीश्यामाजीके पृष्ठ भागकी गहराई अति सुन्दर, सुकोमल एवं सूक्ष्म है. उनका उदर एवं पसली अत्यन्त गौर वर्णकी हैं. वही आत्मा इस दिव्य छविके रङ्गका वर्णन कर सकती है जिसके पास वहाँकी जागृत बुद्धि हो.

बल बल जाऊं मुख सलूकी, बल बल जाऊं रंग छब ।
बल बल जाऊं तेज जोत की, बल बल जाऊं अंग सब ॥ ८२

श्रीश्यामाजीका दिव्य मुख मण्डल उनका रूप लावण्य एवं गौर वर्ण पर मैं स्वयंको समर्पित कर दूँ. इसी प्रकार उनके सभी अङ्ग प्रत्यङ्गों पर स्वयंको समर्पित कर दूँ जिनसे दिव्य ज्योति निकलती है.

स्याम चोली गौर अंग पर, सोभा लेत अतंत ।
सोहें बेली कटाव, जुबां कहा कहे सिफत ॥ ८३

श्रीश्यामाजीके गौर वर्णके अङ्गपर धारण की हुई श्याम रङ्गकी चोली अत्यन्त सुशोभित होती है. उसमें की गई लताओंकी चित्रकारी इतनी सुशोभित है कि उसका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता.

मोहोरी पेट और खडपे, चोली नकस कटाव ।
बाजू खभे उर ऊपर, मानों के फूल जडाव ॥ ८४

इस चोलीकी मोहरी, उदरका भाग, खड़पा तथा उस पर की गई चित्रकारी अत्यन्त सुशोभित हैं. इसकी भुजाएँ, स्कन्ध प्रदेश, वक्षस्थल, आदि पर की गई फूलोंकी चित्रकारी मानों वास्तविक फूल ही हों, इस प्रकार सुशोभित है.

पांच हार अति सुंदर, हीरे मानिक मोती लसन ।
नीलवी हार आसमान लों, जंग पांचों करें रोसन ॥ ८५

श्रीश्यामाजीने पाँच रत्नोंकी अति सुन्दर मालाएँ पहनी हैं. हीरा, माणिक्य,

मोती, वैदूर्यमणि एवं नीलमणिके इन हारोंका ज्योतिर्मय प्रकाश आकाशमें व्याप्त होकर द्वन्द्व करता हुआ प्रतीत होता है.

इन नंगों जोत तब पाईए, जब नजर दीजे आसमान ।
सब जोत जंग करत हैं, कोई सके न काहूं भान ॥ ८६

इन रत्नोंकी ज्योति हमें तब स्पष्ट दिखाई देती है जब हम आकाशकी ओर दृष्टि करते हैं. इन सभी रत्नोंका प्रकाश परस्पर द्वन्द्व करते हैं. इनमें-से कोई भी एक दूसरेको परास्त नहीं कर सकता.

जो नंग पेहेले देखिए, पीछे देखिए आकास ।
तब याही की जोत बिना, और पाईए नहीं प्रकास ॥ ८७

इन रत्नोंमें सर्व प्रथम जिस किसीके ऊपर दृष्टि पड़ती है और उसके प्रकाशको आकाशमें देखने लगते हैं तब पूरे आकाशमें इसी एकके प्रकाशके अतिरिक्त अन्य कुछ दिखाई नहीं देता है.

बीच हारों के दुगदुगी, पाच पांने हीरे नंग ।
माहें लसनिएं नीलवी, करें पांचों आपुस में जंग ॥ ८८

इन हारोंके मध्यमें दुगदुगी सुशोभित है. जिसमें जड़े हुए पाच, पन्ना, हीरा, वैदूर्यमणि (लहसुनिया) एवं नीलमणि इन पाँचों रत्नों का प्रकाश परस्पर द्वन्द्व करता हुआ दिखाई देता है.

पांचों हारों के ऊपर, डोरा देखत जडाव ।
कै बेल फूल पात नकस, कह्यो न जाए कटाव ॥ ८९

इन पाँचों रत्नोंकी मालाओंके ऊपर जड़ी हुई एक डोरी सुशोभित है जिसमें विभिन्न प्रकारकी लताएँ, फूल, पत्तियाँ आदिकी चित्रकारी सुशोभित हैं. इनका वर्णन नहीं किया जा सकता.

मोती मानिक पांने लसनिएं, पाच हेम पुखराज ।
और भूखन कै सोभित, रह्या सब पर डोरा बिराज ॥ ९०

मोती, माणिक्य, पन्ना, वैदूर्यमणि, पाच, हेम, पुखराज आदिकी हारोंके

अतिरिक्त अन्य जो भी आभूषण हैं उन सबके ऊपर यह डोरी अत्यन्त सुशोभित है.

कांठले उपर चोलीय के, बेल धरत अति जोत ।
और भी मानिक मोती नीलवी, डोरा तिन पर करत उदोत ॥ ९१

चोलीके किनारेकी लताओंकी चित्रकारीसे ज्योतिर्मयी किरणें निकलतीं हैं. इसके अतिरिक्त माणिक्य, मोती, नीलमणि के साथ-साथ सुशोभित उक्त डोरीसे भी तेजोमय प्रकाश निकलता है.

चार सरें इत चीडकी, हर सर में रंग दस ।
सो रंग इन जुबां न आवहीं, रंग रूह चाहिल अरस ॥ ९२

श्रीश्यामाजीके कण्ठ पर चीड़ हारकी चार लड़ियाँ भी सुशोभित हैं. एक-एक लड़ीमें दस-दस रङ्गोंकी आभा झलकती है. इन रङ्गोंका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है. ये सभी रङ्ग ब्रह्म-आत्माओंके हृदयकी भावनाके अनुरूप सुशोभित हैं.

कंठसरी इन ऊपर, रही कंठ को मिल ।
न आवे निमूना इनका, जाने आसिक रूह का दिल ॥ ९३

इन सभीके ऊपर कण्ठके साथ संलग्न (सटी हुई) कण्ठसरी सुशोभित है. इस दिव्य आभूषणकी कोई उपमा ही नहीं है. अनुरागिनी आत्माओंका हृदय ही इसकी शोभाका अनुभव कर सकता है.

नाम नंगों का लेत हों, केहेत हों जडाव जुबांएं ।
सबदातीत तो कहावत, जो सिफत इत पोहोंचत नाहें ॥ ९४

यद्यपि इन दिव्य आभूषणोंमें जड़े हुए रत्नोंका नाम लेकर उनके जड़ावकी बात कह रहा हूँ. इनकी शोभा इसलिए शब्दातीत कहलाती है कि जगतके कोई भी शब्द इसको व्यक्त नहीं कर सकते.

दोऊ बाजूबंध बिराजत, तामें केहेत जडाव ।
माहें रंग नंग कै आवत, ए जडाव कह्या इन भाव ॥ ९५

श्रीश्यामाजीकी दोनों भुजाओंमें भुजबन्ध सुशोभित हैं. उनमें भी विभिन्न रत्न

जड़े हुए हैं. उनके अन्दर विभिन्न रङ्गोंके अनेक रत्न सुशोभित हैं. इसी भावसे इनको जड़े हुए कहा गया है.

जो सोभा बाजूबंध में, हिसा कोटमा कह्या न जाए ।
मैं कहूं इन दिल माफक, वह पेहेनत हैं चित चाहे ॥ ९६

इस भुजबन्धकी अद्वितीय शोभाका करोड़वाँ भाग भी शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकता. मैं तो अपने हृदयकी समझके अनुरूप इनका वर्णन कर रहा हूँ. श्रीश्यामाजी अपनी इच्छा अनुरूप इनको धारण करतीं हैं.

स्याम सेत लाल नीलवी, बाजूबंध और फुमक ।
तिन फुंदन जरी झलकत, लेत लेहेरी जोत लटकत ॥ ९७

इस भुजबन्धमें श्याम, स्वेत, लाल तथा नीलवर्णके रत्न सुशोभित हैं. इनके फुँदनोंमें भी जरीके साथ जड़े हुए ये रत्न सुशोभित हैं. लटकती हुई इन फुँदनोंसे प्रकाशकी तरङ्गें झलकतीं हैं.

मोहोरी तले जो कंकनी, स्वर मीठे झन बाजत ।
नंग कटाव ए कांगरी, चूड पर जोत अतंत ॥ ९८

इस चोलीकी मोहरीके नीचे कंकणी है जिससे मधुर स्वर निकलता हैं. चूड़ीके किनार पर विभिन्न रत्नोंकी काँगरी तथा कटाव सुशोभित हैं. उनसे अनन्त ज्योति निकलतीं हैं.

चूड कोंनी कांडे लग, चूडी चूडी हर नंग ।
नंग नंग कै रंग उठें, तिन रंग रंग में कै तरंग ॥ ९९

श्रीश्यामाजीकी बाँहोंमें कोहनीसे लेकर कलाई पर्यन्त बड़ा चूड़ा सुशोभित है, उसके ऊपर विभिन्न रङ्गोंके रत्नोंकी चूड़ियाँ शोभायमान हैं. प्रत्येक रत्नोंसे अनेक रङ्गोंकी अनेक तरङ्गें उठतीं रहती हैं.

इन विध के रंग इन जुबां, क्यों कर आवे सुमार ।
न आवे सुमार रंग को, ना कछू जोत को पार ॥ १००

इन विभिन्न रङ्गोंका वर्णन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है क्योंकि इनका कोई पारावार नहीं है. न उन रङ्गोंका ही पारावार है और न ही उनसे निकलती

हुई ज्योतिका कोई पारावार है.

चूड आगूं डोरे दो सोभित, और कंकनी सोभे ऊपर ।
दोऊ तरफों तेज जोत के, कंकनी बोलत मीठे स्वर ॥ १०१

चूड़ीके आगे दो डोरे सुशोभित हैं. उसके ऊपर कंकणी शोभा दे रही है. इन दोनोंका प्रकाश दोनों ओरसे झलकता है एवं दोनोंसे मधुर स्वर निकलता है.

डोरे कंचन नंग के, तिन आगूं नवघरी ।
नव रंग नवघरी मिने, रही आकास जोत भरी ॥ १०२

इन दोनों डोरोमें कञ्चन रङ्गके रत्न सुशोभित हैं. उनके आगे नवघरी है. इस नवघरीमें नौ प्रकारके रङ्ग हैं. जिनकी ज्योति पूरे आकाशमें व्याप्त हो जाती है.

पोहोंचे हथेली हाथ के, अतंत रंग उजल ।
बल जाऊं छबि लीकों पर, निपट अति कोमल ॥ १०३

हथेलीके पृष्ठ भागमें अति उज्ज्वल रङ्गकी पहुँची धारण की हुई है. अत्यन्त कोमल हथेलीकी सूक्ष्म रेखाओंकी शोभा पर मैं स्वयंको समर्पित करता हूँ.

दोऊ हाथ की अंगुरी, पतलियां कोमल ।
चरन न छुटे आसिक से, इतथें न निकसे दिल ॥ १०४

दोनों हस्त कमलकी पतली अङ्गुलियाँ अत्यन्त कोमल हैं. जब अनुरागिनी आत्माके हृदयसे चरणकमलकी शोभा ही दूर नहीं होती है, तो वह करकमलोंकी शोभाको कैसे धारण कर सकती है.

पांच पांच अंगुरी जुदी जुदी, अति कोमल छवि अंगुरी ।
दोऊ अंगूठों आरसी, और आठों रंग आठ मुंदरी ॥ १०५

पाँचों अङ्गुलियोंकी शोभा अलग-अलग प्रकारकी है. ये सभी अङ्गुलियाँ अत्यन्त कोमल हैं. दोनों अङ्गुष्ठोंमें दर्पण रङ्गकी अंगूठियाँ (आरसी) हैं एवं अन्य आठों अङ्गुलियोंमें आठ मुद्रिकाएँ हैं.

पाच पांने कंचन के, नीलवी और हीरे ।
लसनिएं और गोमादिक, रंग पीत पोखरे ॥ १०६

ये आठों मुद्रिकाएँ पाच, पन्ना, कञ्चन, नीलमणि, हीरा, वैदूर्यमणि, गोमादिक एवं पुखराजकी हैं.

दरपन रंग दोऊ अंगुठी, और नंगो के दरपन ।
कर सिनगार तामें देखत, नख सिख लग होत रोसन ॥ १०७

दो अंगुष्ठोंकी अंगूठियाँ दर्पण रङ्गकी हैं क्योंकि इनमें दर्पण रङ्गके रत्न सुशोभित हैं. श्रीश्यामाजी शृङ्गार कर इस अंगूठीमें देखतीं हैं. उसमें नखसे लेकर शिखा तकका सम्पूर्ण शृङ्गार दिखाई देता है.

आगूं इन नख जोत के, होवें सूर कै कोट ।
सो सूर न आवे नजरों, एक नख अनी की ओट ॥ १०८

इन अंगुलियोंके अग्र भागमें प्रकाशमय नख सुशोभित हैं. उनकी ज्योतिके समक्ष करोड़ों सूर्यकी ज्योति भी निस्तेज हो जाती है. इतना ही नहीं एक नखके कणकी ओटमें भी वे सूर्य दिखाई नहीं देते हैं.

ए झूठ निमूना इत का, हकको दिया न जाए ।
चुप किए भी ना बने, केहे केहे रूह पछताए ॥ १०९

यद्यपि इस नश्वर जगतका कोई भी उदाहरण परमात्माके लिए दिया नहीं जा सकता, किन्तु कुछ कहे बिना मौन भी नहीं रहा जा सकता. इन नश्वर उदाहरणोंको देकर यह आत्मा पश्चात्ताप करती है.

नीली अतलस चरनियां ,कै बेल कटाव नकस ।
चीन किनारे जो देखों, जानो एकपें और सरस ॥ ११०

श्रीश्यामाजीने नीले रङ्गका अत्यन्त कोमल रेशमी चरणिया धारण की है. इसमें अनेक प्रकारके कटाव तथा लताओंकी चित्रकारी है. इसके किनारेकी चुन्नटोंको यदि देखें तो ये सलवटें एकसे बढ़कर दूसरी सुन्दर लगतीं हैं.

माहें बेल फूल कै खजूरें, नंगै के बस्तर ।
नरम सखत जो दिल चाहे, जोत सुगंध सब पर ॥ १११

इसके अन्दर विभिन्न प्रकारके पुष्प तथा लताएँ इस प्रकार लहरीदार ढङ्गसे

सुशोभित हैं कि इनके कारण सारा वस्त्र ही रत्नमय दिखाई देता है. इन रत्नोंमें इच्छानुकुल कोमलता तथा कठोरता दिखाई देती है. इन सभीमें सुगन्ध है तथा सभीसे ज्योति निकलती है.

नव रंग इन नाडी मिने, ताना बाना सब नंग ।
जानो बने जवेरनके, नकस रेसम या रंग ॥ ११२

इजारबन्द (नाड़े) में नौ रङ्ग हैं. नौ रङ्गोंके विभिन्न रत्नोंके ताने-बानेसे यह बनाया गया है. ऐसा प्रतीत होता है कि यह रत्नोंसे ही बना हुआ है या रेशम पर रत्नोंकी अथवा रङ्गोंकी चित्रकारी की गई है.

अचरज अदभुत देखत, बस्तर या भूषन ।
नरम खूबी खुसबोए, भर्‌या आसमान में रोसन ॥ ११३

इन वस्त्र तथा आभूषणोंमें अद्भुत विचित्रता दिखाई देती है. इनकी कोमलता एवं सुगन्धिकी भी अद्भुत शोभा है. इनका प्रकाश आकाशमें छा जाता है.

अरस में नकल है नहीं, ज्यों अंग त्यों बस्तर भूषन ।
जब जिन अंग जो चाहिए, तिन सौ बेर होए मिने खिन ॥ ११४

परमधाममें किसी प्रकारकी अनुकृति (नकल) नहीं है. वहाँके स्वरूपोंके जैसे दिव्य अङ्ग हैं उसी प्रकार वस्त्र तथा आभूषण भी दिव्य हैं. जब जिन अङ्गोंको वस्त्र अथवा आभूषणकी आवश्यकता होती है उसी समय उनमें वस्त्र तथा आभूषण क्षण मात्रमें ही सौ बार बदलते हुए दिखाई देते हैं.

जैसा सुख दिल चाहे, बस्तर भूषन तैसे देत ।
सब गुन अरस चीजमें, सब सुख इसक समेत ॥ ११५

उनका हृदय जैसी सुखद अनुभूति चाहता है ये वस्त्र तथा आभूषण उसी प्रकारकी अनुभूति प्रदान करते हैं. परमधामकी प्रत्येक वस्तुमें सब प्रकारके गुण विद्यमान हैं उनसे प्रेमके साथ-साथ सब प्रकारके सुख प्राप्त होते हैं.

ए चरन अंग अरस के, सबद न पोहोंचे इत ।
लाल उजल रंग सलूकी, मुख कही न जाए सिफत ॥ ११६

श्रीश्यामाजीके ये चरण परमधामके ही अङ्ग हैं, इनका वर्णन करनेमें संसारके

शब्द सक्षम नहीं हैं. इन चरणोंका लाल रङ्ग अत्यन्त उज्ज्वल है. इसकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती.

मैं कहूं सिफत सलूकी, पर केहे न सकों क्योंए कर ।
पूरा एक अंग केहे ना सकों, जो निकस जाए उमर ॥ ११७

मैं इनकी दिव्य संरचनाका वर्णन करना चाहता हूँ परन्तु किसी भी प्रकारसे वर्णन नहीं कर पा रहा हूँ. पूरी आयु व्यतीत होने पर भी किसी एक अङ्गका पूर्णरूपसे वर्णन नहीं हो सकता है.

जो कदी कहूं नरमाई की, और लीकों सिफत ।
आए जाए आरवल, सबद न इत पोहोंचत ॥ ११८

इन चरणोंकी कोमलता तथा इनकी रेखाओंकी महिमाका गायन करने लग जाएँ तो कितनी ही आयु व्यतीत हो जाएगी तथापि ये शब्द वहाँ तक नहीं पहुँच सकते.

जो कहूं खूबी रंग की, जोत कहूं लाल उजल ।
ए क्यों आवे सबद में, जो कदम बका नेहेचल ॥ ११९

यदि मैं इनकें रङ्गोंका वर्णन करूँ तो उनके उज्ज्वल लाल वर्णकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती. क्योंकि ये चरण कमल अखण्ड परमधामके हैं.

रंग उजल नरमाई क्यों कहूं , और चरन की खूसबोए ।
ए जुबां अरस चरन की, क्यों कर बरनन होए ॥ १२०

इन चरणोंकी कोमलता उज्ज्वलता एवं सुरभिताका वर्णन कैसे करूँ ? क्योंकि स्वप्नवत् जगतकी जिह्वाके द्वारा अखण्ड परमधामके इन चरणकमलोंकी शोभाका वर्णन कैसे हो सकता है ?

फना टांकन घूंटियां, और कांडे अति कोमल ।
रंग सोभा सलूकी छोडके, आगूं आसिक न सके चल ॥ १२१

इन श्रीचरणोंका पञ्जा, टखना, घूँटी (गाँठ) एवं काँडा अत्यन्त कोमल हैं. इनकी लाल रङ्गकी शोभा एवं सुन्दरताको छोड़कर प्रणयिनी आत्माकी दृष्टि आगे नहीं बढ़ सकती.

अब कहूं भूषन चरन के, काबी कडली घूंघरी ।
झलके नंग जुदे जुदे, इन पर झन बाजे झांझरी ॥ १२२

अब चरणोंके आभूषणोंका वर्णन करते हैं. जिनमें काँवी, कड़ा, घुँघुरु सुशोभित हैं. इनमें अलग-अलग रत्नोंकी आभा झलकती है. इनके ऊपर पहनी हुई झाँझरी झनझन ध्वनि करती है.

एक हीरे की झांझरी, दिल रुचती रंग अनेक ।
नकस कटाव बुटी ले, किन विध कहूं विवेक ॥ १२३

यद्यपि यह झाझरी एक ही हीरे की है. किन्तु इसमें इच्छाके अनुरूप अनेक रङ्गोंकी आभा झलकती है. इसमें चित्रकारीके साथ अनेक कटाव एवं छोटे-छोटे फूल सुशोभित हैं. इस प्रकार इसकी शोभाका वर्णन नहीं किया जा सकता है.

पांच नंग की घूंघरी, दिल रुचती बोलत ।
दिल चाही रंग देखावत, दिल चाही सोभित ॥ १२४

घुँघुरुमें पाँच रत्न सुशोभित हैं. उनसे मनोनुकुल ध्वनि निकलती है. उनमें इच्छाके अनुरूप रङ्ग दिखाई देते हैं. उनकी सम्पूर्ण शोभा हृदयकी कामनाके अनुरूप होती है.

कै रंग कडी में देखत, जानों के हेम नंग जडित ।
सो सोभित सब दिल चाहे, नित नए रूप धरत ॥ १२५

कड़ेमें भी अनेक रङ्गोंकी आभा झलकती है. ऐसा प्रतीत होता है मानों उसमें हेम (स्वर्ण) में रत्न जड़े हुए हैं. वह भी हृदयकी इच्छाके अनुरूप नित्य नूतन रूप धारण करता है.

कै बेल कडी में पात फूल, सब नंग नकस कटाव ।
मानो हेम मिलाए के, कियो सो मिहीं जडाव ॥ १२६

इस कड़ेमें चित्रकारीके द्वारा अङ्कित अनेक लताएँ, पत्तियाँ, फूल आदिके साथ विभिन्न रत्नोंके कटाव सुशोभित हैं. ऐसा प्रतीत होता है जैसे इसमें स्वर्णसे ही इन रत्नोंको जड़ा गया हो.

या विध कांबी सनंध, या नंग या धात ।
जैसा दिल में आवत, तैसा तित सो भात ॥ १२७

इसी प्रकारकी स्थिति काँवीकी भी है. इसमे जड़े हुए रत्न अथवा धातु भी हृदयकी इच्छाके अनुरूप सुशोभित होते हैं.

जडे घडे ना किन किए, दिल चाह्या सब होत ।
दिल चाह्या मीठा बोलत, दिल चाही धरे जोत ॥ १२८

यद्यपि इन आभूषणोंको न किसीने बनाया है और न ही इनमें कुछ जड़ा गया है. इच्छा मात्रसे ही ये तैयार होते हैं. इसी प्रकार इच्छा मात्रसे ही उनमें-से मधुर ध्वनि निकलती है एवं वे इच्छानुकुल प्रकाशित होते हैं.

कहूं अनवट पाचके, माहें करत आंभलिया तेज ।
निरखत नख सिख सिनगार, झलकत रेजारेज ॥ १२९

श्रीचरणोंके अङ्गुष्ठमें पहनी हुई अङ्गुष्ठी (अनवट) पाच नामक रत्नकी है इसके मध्यमें दर्पणके रङ्गका हीरा चमकता है. इसमें देखने पर नखसे लेकर शिखा पर्यन्त सम्पूर्ण शृङ्गार दिखाई देता है.

और अंगुरियों बिछिएं, करें स्वर रसाल ।
हीरे और लसनिएं, मानिक रंग अति लाल ॥ १३०

अन्य अङ्गुलियोंमें मुद्रिकाएँ (बिछुआ) सुशोभित हैं. उनसे कर्ण प्रिय ध्वनि निकलती है. इनमें हीरा एवं वैदूर्यमणि (लहसुनियाँ) के अतिरिक्त रक्तिम आभायुक्त माणिक्य विशेषरूपसे सुशोभित है.

माहें और रंग हैं कै, कै नकस करें चित्र ।
सोभा पर बल जाइए, देख देख एह विचित्र ॥ १३१

इनके मध्यमें विभिन्न रङ्गोंकी अनेक प्रकारकी चित्रकारी चित्रित है. इनकी विचित्र शोभाको देखकर इनपर समर्पित होनेकी इच्छा होती है.

जो सलूकी फनन की, और अंगुरी फनों तली ।
ए बका बरनन कबूं ना हुई, गई अव्वल से दुनी चली ॥ १३२

श्रीश्यामाजीके इन चरण-कमलोंके पञ्जे तथा अङ्गुलियोंकी संरचना अतीव

सुन्दर है. यद्यपि यह सृष्टि अभी तक कितनी ही बार लय हो गई है किन्तु इन नित्य अङ्गोंका वर्णन आज तक कभी भी नहीं हुआ है.

सलूकी नखन की, और छवि अंगुरियों ।
खूबी सिफत चरन की, कही न जाए जुबां सों ॥ १३३

इन अङ्गुलियोंके नखोंकी संरचना एवं अङ्गुलियोंकी छविसे चरणोंकी शोभा इतनी बढ़ जाती है कि उसे शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

जोत धरत आकास रोसनी, क्योंकर कहूं नख जोत ।
मानों सूरज अरस के, कोटक हुए उदोत ॥ १३४

इन नखोंकी ज्योतिका वर्णन कैसे किया जाए, ये तो पूरे आकाशमें छा जाती है. ऐसा प्रतीत होता है मानों परमधामके करोड़ों सूर्य एक साथ उदयमान हो गए हों.

दोऊ अंगूठे चरन के, और खूबी अंगुरियों ।
सोभा सुंदर फनन की, आवत ना सिफत मों ॥ १३५

इन श्रीचरणोंके दोनों अङ्गुष्ठ, अन्य अङ्गुलियाँ तथा पञ्जेकी शोभा एवं सुन्दरताका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

मीहीं लीकां देखूं लांक में, इतहीं करूं विश्राम ।
बल बल जाऊं देख देख के, एही रूह मोमिनों ताम ॥ १३६

चरण तलके मध्यकी गहराई एवं उनकी रेखाओंकी अनुपम शोभाको देखकर यहीं पर विश्राम करनेकी इच्छा होती है. इनकी अद्वितीय शोभाको देखकर इन पर समर्पित होता हूँ क्योंकि ये चरण कमल ही ब्रह्मआत्माओंके आहार हैं.

चरन तली लांक एडियां, उजल रंग अति लाल ।
केहेते छवि रंग चरन की, अजूं लगत न हैडे भाल ॥ १३७

चरणतल, उनकी गहराई एवं एड़ियोंका रङ्ग अति उज्ज्वल लालिमायुक्त है. ऐसे दिव्य अनुपम श्रीचरणोंकी छविका वर्णन करने पर भी न जाने अभी तक हृदयको कोई चोट क्यों नहीं लगी है.

दिल चाही खूबी सलूकी, दिल चाही नरम छब ।
दिल चाह्या रंग खुसबोए, रही दिल चाही अंग फब ॥ १३८

इन श्रीचरणोंकी सुन्दरता, संरचना, सुकोमलता, आकृति एवं सुगन्धि हृदयकी चाहनाके अनुरूप ही सुशोभित है.

यों दिल चाहे बस्तर, और दिल चाहे भूषन ।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, सो आगूंहीं बन्यो रोसन ॥ १३९

इसी प्रकार वस्त्र तथा आभूषण भी हृदयकी भावनाके अनुरूप स्वतः सुसज्जित होते हैं. जिन अङ्गोंमें जब जैसे वस्त्र आभूषणोंकी चाहना होती है, उससे पूर्व ही उन अङ्गोंमें वे वस्त्र एवं आभूषण सुशोभित हो जाते हैं.

जिन अंग जैसा भूषन, दिल चाह्या सब होत ।
खिन में दिल और चाहत, आगूं तैसी करे जोत ॥ १४०

जिन अङ्गोंमें जैसे आभूषणोंकी चाहना होती है वे उन अङ्गोंमें तत्काल सुसज्जित हो जाते हैं. दूसरे क्षणमें यदि अन्य आभूषणोंकी चाहना हुई तो वे भी उसी क्षण वहाँ पर प्रकाशित होने लगते हैं.

खिन में सिनगार बदले, बिना उतारे बदलत ।
रंग तित भूषन नए नए, रंग जो दिल चाहत ॥ १४१

इस प्रकार सम्पूर्ण शृङ्गार क्षण मात्रमें ही बदल जाता है. इसके लिए आभूषणोंको उतारनेकी ही आवश्यकता नहीं होती है. इसी प्रकार आभूषणोंमें भी हृदयकी भावनाके अनुकूल नित्य नूतन रंगोकी सृजना होती है

दिल चाही सोभा धरे, दिल चाही खुसबोए ।
दिल चाही करे नरमाई, जोत करे जैसी दिल होए ॥ १४२

यह सम्पूर्ण शोभा हृदयकी इच्छाके अनुकुल है. इसी प्रकार इसकी सुगन्धि, कोमलता, एवं तेजस्विता भी हृदयकी इच्छाके अनुकुल ही होती है.

रूहें बसत इन कदमों तलें, जासों पाईए पेहेचान ।
सब रूहें नूर इन अंगको, ए नूर अंग रेहेमान ॥ १४३

सभी ब्रह्मआत्माएँ इन्हीं श्रीचरणों तले निवास करतीं हैं. इन्हीं चरणोंकी

कृपासे उन्हें अपने परआत्मा एवं प्रियतम धनीकी पहचान होती है. सभी ब्रह्मआत्माएँ श्रीश्यामाजीके इन्हीं चरणकमलोंकी तेजरूपा हैं एवं स्वयं श्रीश्यामाजी भी परमकृपालु परब्रह्म परमात्माके अङ्गकी तेजरूपा हैं.

ए जो अरवाहें अरस की, पडी रहें तले कदम ।
खान पान इनों इतहीं, रूहें रहें तले हुकम ॥ १४४

जो परमधामकी आत्माएँ हैं. वे सदा सर्वदा इन्हीं चरणोंमें रहतीं हैं (इनका ही चिन्तन करतीं हैं). उनका खान पान एवं अधिष्ठान इन्हीं चरणोंके अधीन हैं.

याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकूल ।
हक अरस मोमिन दिल, तिन निमख न पडे भूल ॥ १४५

इन्हीं चरणोंमें रहती हुई ब्रह्मआत्माएँ रात-दिन प्रसन्नताका अनुभव करतीं हैं. क्योंकि ब्रह्मआत्माओंका हृदय ही श्रीराजजीका परमधाम है. इसलिए उनसे लेशमात्र भी भूल नहीं हो सकती है कि वे इन चरणोंसे दूर हो जाएँ.

हक कदम हक अरसमें, सो अरस मोमिन दिल ।
छूटे ना अरस कदम, जो याहीं की होए मिसल ॥ १४६

श्रीराजजीके ये चरणकमल परमधाममें ही हैं. अब ब्रह्मआत्माओंका हृदय परमधाम बन गया है. इसलिए जो परमधामकी इन आत्माओंके समूहमें-से होंगी उनसे धामधनीके ये चरणकमल क्षणमात्रके लिए भी नहीं छुटेंगे.

ए चरन राखों दिलमें, और ऊपर हैडे ।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए ॥ १४७

इसलिए इन श्रीचरणोंको अपने हृदयमें धारण करता हूँ. मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं इनको अपने वक्षस्थलपर अङ्कित कर अपनी आँखोंमें समा लूँ एवं सिर पर धारण कर घुमने लग जाऊँ.

भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन ।
भी राखों रूहके नैनमें, ज्यों रूह पावें सुख चैन ॥ १४८

मुझे यह भी इच्छा बनी रहती है कि इन चरणोंको मैं अपने आँखोंके अन्दर

स्थापित करूँ. उससे भी अन्दर हृदयके आँखोंमें धारण कर उससे भी आगे बढ़कर आत्माकी आँखोंमें इन्हें स्थापित करूँ जिससे आत्माको सुख एवं शान्तिका अनुभव हो.

महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तसकरन ।
या रूह नैन की पुतली, बीच राखों तिन तारन ॥ १४९

महामति कहते हैं, मैं इन श्रीचरणोंको अपनी आत्माके अन्तःकरणमें स्थापित करता हूँ अथवा तो आत्माके नयनोंकी पुतलीमें बसा लेता हूँ या फिर उसके भी तारोंमें स्थापित करता हूँ (ताकि ये चरण कमल मुझसे कभी भी दूर न हो जाएँ).

प्रकरण ९ चौपाई ७९९

श्रीराजजीका सिनगार तीसरा

फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होए नहीं त्रपत ।
मोमिन दिल अरस कह्या, लिखी ताले ए निसबत ॥ १

महामति कहते हैं, श्रीराजजीके स्वरूपका वारंवार दर्शन करने पर भी ये नयन तृप्त नहीं होते हैं. ब्रह्मआत्माओंके हृदयको इसलिए परमधाम कहा है कि यह सम्बन्ध मात्र उनके ही सौभाग्यमें है.

चाहिए निसदिन हक अरस में, और इत हक खिलवत ।
होए निमख न न्यारे इन दिल, जेती अरस न्यामत ॥ २

ब्रह्मआत्माओंके हृदयमें रात-दिन श्रीराजजीका स्वरूप एवं मूलमिलावाकी स्मृति अक्षुण्ण बनी रहनी चाहिए. उनके हृदयसे परमधामकी सभी सम्पदा पल मात्रके लिए भी दूर नहीं होनी चाहिए.

बरनन किया हक सूरत का, रूह देख्या चाहे फेर फेर ।
एही अरस दिल रूह के, बैठे सिनगार कर ॥ ३

मैंने श्रीराजजीके स्वरूपका जैसा वर्णन किया है मेरी आत्मा वारंवार उसीका दर्शन करना चाहती है. ब्रह्मआत्माओंका हृदय ही परमधाम होनेसे स्वयं श्रीराजजी सम्पूर्ण शृङ्गारसे सुसज्ज होकर इसमें विराजमान हुए हैं.

अब निसदिन रूह को चाहिए, फेर सब अंग देखे नजर ।
सूरत छबि सलूकी, देखों भूषन अंग बस्तर ॥ ४

इसलिए आत्माको चाहिए कि अब वह रात-दिन वारंवार इस स्वरूपका दर्शन करें. वह वारंवार इस दिव्य छवि एवं उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंके वस्त्र एवं आभूषणोंका दर्शन करें.

सिनगार किया सब दुलहे, बस्तर या भूषन ।
अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन ॥ ५

प्रियतम धनीने वस्त्रों तथा आभूषणोंसे पूर्ण शृङ्गार किया हुआ है. अब उनके दर्शनका समय हो गया है. इसलिए आत्मदृष्टिसे मैं उनका दर्शन करता हूँ.

सब अंग देखों फेरके, और देखों सब सिनगार ।
काम हुआ अपनी रूह का, देख देख जाऊं बलिहार ॥ ६

अब मैं पुनः श्रीराजजीके अङ्ग-प्रत्यङ्ग एवं उनके संपूर्ण शृङ्गारका दर्शन कर लूँ जिससे आत्माकी सम्पूर्ण कामना पूर्ण हो जाएगी. ऐसे स्वरूपके दर्शन कर स्वयंको समर्पित कर देता हूँ.

रूह चाहे बका सरूप की, करके नेक बरनन ।
देखों सोभा सिनगार, पेहेनाए बस्तर भूषन ॥ ७

मेरी आत्मा चाहती है कि अखण्ड स्वरूपका थोड़ा-सा वर्णन कर उनको वस्त्र तथा आभूषण धारण करवाकर उनकी सम्पूर्ण शृङ्गारकी शोभाका दर्शन कर लूँ.

कलंगी दुगदुगी पगडी, देख नीके फेर कर ।
बैठ खिलवत बीच में, खोले रूह की नजर ॥ ८

परमधाम मूलमिलावामें विराजमान श्रीराजजीके सिर पर सुशोभित पाग एवं उसपर लगी हुई कलङ्गी तथा दुगदुगीको मैं आत्मदृष्टि खोलकर पुनः भलीभाँति निहार लूँ.

पेहेले देख पाग सलूकी, माहें कै विध फूल कटाव ।
जोत करी है किन विध, जानों के नकस नंग जडाव ॥ ९

हे आत्मा ! सर्वप्रथम तू इस पागकी संरचनाको देख, इसमें विभिन्न प्रकारके

फूलोंकी चित्रकारी है. उनसे किस प्रकारका प्रकाश प्रकाशित हो रहा है ? ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें रत्न जड़ित चित्रकारी है.

देख कलंगी जोत दुगदुगी, जेता अरस अवकास ।
सो सारा ही तेज में, पूरन भया प्रकास ॥ १०

हे आत्मा ! इस पाग पर सुशोभित कलङ्गीकी संरचनाको तो देख, परमधामका सम्पूर्ण आकाश इसीके देदीप्यमान प्रकाशसे आलोकित हो रहा है.

और खूबी इन कलंगी, और दुगदुगी सलूक ।
और पाग छवि रूह देख के, होए जात नहीं भूक भूक ॥ ११

कलंगीके साथ-साथ दुगदुगीकी संरचना भी अतीव शोभायुक्त है. ऐसे अलौकिक पागकी अनुपम छविको देखकर यह आत्मा उस पर क्यों सर्मपत नहीं होती है ?

देख सुंदर सरूप धनीय को, ले हिरदें कर हेत ।
देख नैन नीके कर, सामी इसारत तोको देत ॥ १२

हे आत्मा ! श्रीराजजीके सुन्दर स्वरूपको अपने हृदयमें प्रेमपूर्वक धारण कर अपनी दृष्टिसे उनके नेत्रोंको भली-भाँति देख. वे तुझे सामनेसे सङ्केत कर रहे हैं.

नैन रसीले रंग भरे, भौं भृकुटी बंकी अति जोर ।
भाल तीखी निकसे फूटके, जो मारत खैंच मरोर ॥ १३

श्रीराजजीके रसीले नेत्र प्रेमकी मस्तीसे परिपूर्ण हैं. उनकी पलकें एवं भृकुटी तिरछी तथा नुकीली हैं. इन नयनोंसे निकले हुए वाण हृदयको ही घायल कर देते हैं.

हंसत सोभित हरवटी, अंग भूषन कै विवेक ।
मुख बीडी सोभित पान की, क्यों वरनों रसना एक ॥ १४

मुस्कराते समय श्रीराजकी ठोड़ी सुन्दर दिखाई देती है. उन्होंने अपने अङ्गोंमें विभिन्न प्रकारके आभूषण धारण किए हुए हैं. उनके मुखारविन्दमें पानका

बीड़ा सुशोभित है. मात्र एक जिह्वाके द्वारा इस अद्वितीय छविका वर्णन कैसे किया जाए ?

लाल रंग मुख अधुर, तंबोल अति सोभाए ।
ए लालक हक के मुख की, मेरे मुख कही न जाए ॥ १५

श्रीराजजीके मुखारविन्द तथा अधरोष्ठमें ताम्बूलकी लालिमा अति शोभायमान है. श्रीराजजीके मुखारविन्दकी यह लालिमा मुझसे शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती.

गौर मुख अति उजल, और जोत अतंत ।
ए क्यों रहे रूह छवि देख के, ऐसी हक सूरत ॥ १६

श्रीराजजीका गौरवर्णका मुख मण्डल अतीव उज्ज्वल है. उससे अपार ज्योति निकलती है. ऐसे दिव्यस्वरूपके अनुपम छविको देखकर मेरी आत्मा शरीरमें कैसे टिकी हुई है ?

अति उजल मुख निलवट, सुंदर तिलक दिए ।
अति सोभित है नासिका, सब अंग प्रेम पिए ॥ १७

श्रीराजजीका मुख मण्डल अति उज्ज्वल है. उनके ललाट पर सुन्दर तिलक सुशोभित है. उनकी नासिका भी अति शोभायमान है. इस प्रकार श्रीराजजीके सभी अङ्ग शाश्वत प्रेमसे परिपूर्ण हैं.

निलवट चौक चारों तरफों, रंग सोभित जोत अपार ।
निरख निरख नेत्र रूह के, सब अंग होए करार ॥ १८

उनके ललाट तथा मुख मण्डलके चारों ओर रङ्गमयी छटा प्रकाशित हो रही है. ऐसे दिव्य स्वरूपको आत्मदृष्टिसे देखकर सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग तृप्त हो जाते हैं.

देख निलवट तिलक, मुख भौं भासत अति सुंदर ।
सब अंग दृढ करके, ले रूह के नैनों अंदर ॥ १९

हे आत्मा ! श्रीराजजीके ललाट पर सुशोभित तिलकको देख, उनका मुख

मण्डल एवं भृकुटी अत्यन्त सुन्दर शोभायुक्त हैं. अपने अङ्गोंको दृढ़कर इस दिव्य स्वरूपको आत्माकी दृष्टिके अन्दर बसा ले.

नैन निपट बंकी छबि, अति चंचल तेज तारे ।
रंग भीने अति रस भरे, बका निसबत रूह प्यारे ॥ २०

श्रीराजजीके नयनोंका तिरछापन, ललाटकी छवि, चंचल एवं तेजस्वी नयन पुतलियाँ मस्ती तथा आनन्दसे भरपूर हैं. अखण्ड परमधामकी आत्माओंको ये अति प्रिय लगते हैं.

ए रस भरे नैन मासूक के, आसिक छोडे क्यों कर ।
कै कोट गुन कटाक्ष में, रूह छोडी न जाए नजर ॥ २१

प्रणयिनी आत्मा अपने प्रियतम धनीके ऐसे मस्तीभरे नयनोंको पल भरके लिए भी दूर होने नही देती है. उनके कटाक्षमें करोड़ों गुण भरे हुए हैं. इसलिए आत्मा इन्हें अपनी दृष्टिसे दूर नहीं करती.

जो देवें पल आडी मासूक, तो जानों बीच पड्यो ब्रह्मांड ।
रूह अन्तराए सहे ना सरूप की, ए जो दुलहा अरस अखंड ॥ २२

यदि प्रियतम धनी पलमात्रका भी व्यवधान दे दें तो ऐसा प्रतीत होता है मानों उनके और हमारे मध्यमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही अवरोधरूप बन गया हो. ब्रह्मात्माएँ पल भरके लिए भी अखण्ड परमधामके ऐसे प्रियतम धनीका वियोग सहन नहीं कर सकती.

नैन सुख देत जो अलेखें, मीठे मासूक के प्यारे ।
मेहेर भरे सुख सागर, रूह तर न सके तारे ॥ २३

प्यारे प्रियतम धनीकी सुमधुर दृष्टि अनुरागिनी आत्माओंको अपार सुख प्रदान करती है. इस दृष्टिमें उनकी अहैतुकी कृपाका विशाल सागर छिपा हुआ है. यदि यह आत्मा तैर कर उसे पार करना चाहे तो भी वह पार नहीं कर सकती.

मीठे लगें मरोरते, मीठी पापन लेत चपल ।
फिरत अनियारे चातुरी, मान भरे चंचल ॥ २४

प्रियतम धनी जब अपनी दृष्टि घुमाते हैं तब उनकी चपल पलकें सुमधुर

लगतीं हैं. जब वे अपने नुकीले नेत्रको चतुराईसे घुमाते हैं, तब वे चञ्चल होते हुए भी गम्भीर लगते हैं.

बीडी लेत मुख हाथ सों, सोभित कोमल हाथ मुंदरी ।
लेत अंगुरियां छविसों, बल जाऊं सबे अंगुरी ॥ २५

धामधनी जब अपने कर कमलोंसे पानका बीड़ा मुखमें डालते हैं उस समय उनकी कोमल अंगुलियोंमें धारण की हुई मुद्रिकाएँ अत्यन्त सुशोभित होतीं हैं. इन अङ्गुलियोंकी सुन्दर छविको हृदयमें धारणकर मैं उनपर समर्पित हो जाता हूँ.

बीडी मुख आरोगते, अधुर देखत अति लाल ।
हंसत हरवटी सोभा सुंदर, नेत्र मुख मछराल ॥ २६

पानका बीड़ा चबाते समय उनके अधरकी लालिमा और भी बढ़ जाती है. उनके मन्द मुस्कानके समय उनका चिबुक (ठोड़ी) अत्यधिक सुशोभित होता है एवं नेत्र कमल तथा मुखारविन्द भी प्रेम गर्वित दिखाई देते हैं.

अधबीच आरोगते, वचन केहेत रसाल ।
नैन बान चलावत सेहेजे, छाती छेद निकसत भाल ॥ २७

पान आरोगते हुए वे रसपूर्ण मधुर वचन बोलते हैं. जब वे अपनी कटाक्षसे वाण चलाते हैं तब आत्माओंका हृदय विदीर्ण हो जाता है.

मोरत पान रंग तंबोल, मानों झलके माहें गाल ।
जो नैनों भर देखिए, रूह तबहीं बदले हाल ॥ २८

वे पानका बीड़ा आरोगते हैं तो उसका लाल रङ्ग उनकी कपोलों पर झलकता हुआ प्रतीत होता है. जब आत्मा श्रीराजजीकी ऐसी भाव भङ्गिमाको देखने लगते हैं तो उसी समय आत्माकी भावदशामें परिवर्तन आ जाता है.

मरकलडे मुख बोलत, गौर हरवटी हंसत ।
नैन श्रवन निलवट नासिका, मानों अंग सबे मुसकत ॥ २९

श्रीराजजी मन्द हास्यके साथ जब मधुर वाणी बोलते हैं, उस समय उनके गौरवर्णके मुख मण्डलपर उनका चिबुक भी मुस्कराता हुआ प्रतीत होता है.

इतना ही नहीं उनके नेत्र, श्रवण-अङ्ग, ललाट एवं नासिका आदि सभी अङ्ग मन्द हास्य कर रहे हों ऐसा प्रतीत होता है.

जोत धरत चित चाहती, चित चाही नरम लगत ।
कै रंग करें चित चाहती, खुसबोए करत अतंत ॥ ३०

श्रीराजजीका मुखमण्डल उनकी इच्छा अनुसार विकसित होता है. उसकी प्रदीप्तता तथा कोमलता भी उनकी इच्छाके अनुसार ही हैं. इसी प्रकार उसमें विभिन्न रङ्गोंकी छटा भी इच्छानुकुल दिखाई देती है जिसके कारण सारा वातावरण सुरभित हो जाता है.

चित चाहे सुख देत हैं, लाल मोती कानन ।
देख देख जाऊं वारने, ए जो भूषन चेतन ॥ ३१

उनके श्रवण अङ्गोंमें सुशोभित लालिमायुक्त मोती भी इच्छानुकुल सुख प्रदान करते हैं. इन चेतनायुक्त आभूषणोंको देखकर मैं स्वयंको वारंवार समर्पित कर दूँ.

सुपन सरूप जिन विध के, ए जो पेहेनत हैं भूषन ।
सो तो अरस में है नहीं, जो सिनगार करें विध इन ॥ ३२

नए सिनगार जो कीजिए, उतारिए पुरातन ।
नया पुराना पेहेन उतारना, ए होत सुपन के तन ॥ ३३

इस स्वप्नवत् संसारमें जिस प्रकार आभूषण धारण किए जाते हैं, वह स्थिति परमधाममें नहीं है. यहाँ पर (जगतमें) नयाँ शृङ्गार तभी किया जा सकता है जब पुरानेको उतारा जाए. इस प्रकार पुराने शृङ्गारको उतारना एवं नये शृङ्गारको धारण करना स्वप्नके शरीरमें ही होता है.

ए बारीक बातें अरस की, सो जानें अरवा अरसै के ।
नयां पुराना घट बढ, सो कबूं न अरस में ए ॥ ३४

परमधामकी यह वास्तविकता अत्यन्त गूढ़ है, उसे केवल परमधामकी आत्माएँ ही समझ सकतीं हैं. क्योंकि परमधाममें नयाँ पुराना अथवा घटना-बढ़ना आदि कुछ भी नहीं होता है.

अरस में सदा एक रस, करें पलमें कोट सिनगार ।
चित चाहे अंगों सब देखत, नया पेहेन्या न जूना उतार ॥ ३५

परमधाममें सदैव एकरस स्थिति होती है तथापि पलमात्रमें करोड़ों शृङ्गार हो जाते हैं. वे सभी इच्छा अनुसार अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें सुशोभित दिखाई देते हैं. वहाँ पर न नये शृङ्गारको धारण करनेकी आवश्यकता होती है और न ही पुरातनको उतारनेकी आवश्यकता होती है.

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूषन, करें कोट रंग चित चाहे ।
अरस जूना न कबूं कोई रंग, देखत पलमें नित नए ॥ ३६

वहाँ पर जैसे दिव्य अङ्ग हैं उसी प्रकार वस्त्र एवं आभूषण भी दिव्य हैं. वे इच्छानुकुल करोड़ों रङ्गोंमें दिखाई देते हैं. इसलिए परमधाममें कोई भी रङ्ग पुराना नहीं होता है. वहाँ पर तो प्रतिपल नित्य नूतन दिखाई देता है.

देत खुसबोए खुसाली, श्रवनों अति सुंदर ।
बात सुनत मेरी रीझत, सुख पावत रूह अंदर ॥ ३७

श्रीराजजीके अति सुन्दर श्रवण अङ्ग प्रसन्नताके साथ-साथ सुगन्धि भी प्रदान करते हैं. जब वे मेरी बात सुनकर प्रसन्न होते हैं तब पर-आत्मा अन्दरसे अपार सुखका अनुभव करती है.

जो अटकों इन अंगमें, तो जाए न सकों छोड कित ।
गुझ गुन कै श्रवन के, रूह इतहीं होवे गलित ॥ ३८

जब मेरी दृष्टि इस अङ्गमें स्थिर हो जाती है तब उसे छोड़कर अन्यत्र जाया नहीं जा सकता. श्री राजजीके इन अङ्गोंमें अनेक प्रकारके गुण छिपे हुए हैं. इसलिए आत्मा यहीं पर द्रवित हो जाती है.

जामा अंग जवेर का, भूषन नंग कै रंग ।
जोत पोहोंचे आकासमें, जाए करत मिनों मिने जंग ॥ ३९

श्रीराजजीके अङ्गपर सुशोभित जामा रत्नमयी है. उन्होंने अनेक रङ्गोंके रत्नोंके आभूषण धारण किए हुए हैं. इनकी ज्योति आकाशमें पहुँचकर परस्पर द्वन्द्व करती रहती है.

याही विध जामा पटुका, याही विध पाग वस्तर ।
करें चित चाहे अंग रोसनी, अनेक जोत अंग धर ॥ ४०

इसी प्रकारकी शोभा जामाके ऊपर बँधे हुए पटुकेकी भी है एवं इसी प्रकारकी शोभा सिर पर बँधी हुई पाग एवं अन्य वस्त्रोंकी भी है. इस प्रकार श्रीराजजीके सभी अङ्ग इच्छानुकुल ज्योति धारण कर इच्छानुकुल प्रकाशित होते हैं.

जामा पटुका चोली बांहेंकी, चीन मोहोरी बंध बगल ।
ए आसिक अंग देख के, आगूं नजर न सके चल ॥ ४१

श्रीराजजीने अङ्गोंमें धारण की हुई जामा, पटुका, कञ्चुकी, उसकी बाहें, उसकी किनारकी चुन्नटें तथा स्कन्धके नीचे जामेके बन्ध या डोरीकी शोभा देखकर अनुरागिनी आत्माओंकी दृष्टि वहीं पर स्थिर हो जाती है, उससे आगे कहीं भी नहीं जा सकती.

चोली अंग को लग रही, हार लटके अंग हलत ।
तलें हार बीच दुगदुगी, नेहेरें लेहेरें जोत चलत ॥ ४२

श्रीराजजीके अङ्गोंको स्पर्श करतीं हुई जामाकी कञ्चुकी पर लटकती हुई मालाएँ अङ्गोंके हलके स्पन्दन (हिलाने) से ही लहराने लगतीं हैं. इन मालाओंके नीचे दुगदुगी सुशोभित है. उनसे उठती हुई ज्योतिकी तरङ्गें नहरोंकी भाँति चलती हुई प्रतीत होतीं हैं.

बगलों बेली फूल खभे, गिरबान बेली जर ।
पीछे कटाव जो कोतकी, रूह छोड न सके क्योंए कर ॥ ४३

जामाके पार्श्व भागमें तथा स्कन्ध प्रदेशमें अनेक लताएँ एवं फूल सुशोभित हैं. उसके किनारकी पट्टी पर भी जरीकी लताएँ बनी हुई हैं. पृष्ठ भागपर केतकीके फूलके आकारकी चित्रकारी सुशोभित है. इस अनुपम छविको छोड़कर यह आत्मा कैसे आगे बढ़ सकती है ?

कहे हार हम हैडे पर, अति विराजे अंग लाग ।
सुख दें हक सूरत को, ए कौन हमारो भाग ॥ ४४

श्रीराजजीके कण्ठ पर सुशोभित हार कहते हैं, हम बड़े भाग्यशाली हैं क्योंकि

हम श्रीराजजीके अङ्गोंमें सुशोभित हैं. हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है कि हम श्रीराजजीके दिव्य स्वरूपकी शोभा बढ़ा रहे हैं.

कंठ हार नंग सब चेतन, देख सोभा सब चढती देत ।
ए सुख रूह सोई जानहीं, जो सामी हक इसारत लेत ॥ ४५

कण्ठमें धारण की हुई रत्नोंकी ये सभी मालाएँ चेतन हैं एवं एक दूसरेसे बढ़कर अधिक सुन्दर हैं. इस अपार शोभाका आनन्द वही ब्रह्मआत्मा अनुभव कर सकती है जो श्रीराजजीके सम्मुख रह कर उनके नेत्रोंका सङ्केत समझ लेती है.

ए जंग रूह देख्या चाहे, मिल जोतें जोत लरत ।
कै नंग रंग अवकास में, मिनों मिने जंग करत ॥ ४६

मेरी आत्मा इन आभूषणोंसे निकलती हुई ज्योतिका परस्पर द्वन्द्व देखना चाहती है. क्योंकि विभिन्न प्रकारके रत्नोंके रङ्ग आकाशमें परस्पर द्वन्द्व करते हुए दिखाई देते हैं.

जोत अति जवेरन की, बांहों पर बाजूबंध ।
जात चली जोत चीर के, कै विध ऐसी सनंध ॥ ४७

श्रीराजजीकी भुजाओं पर बँधे भुजबन्धोंमें जड़ित रत्नोंमें इस प्रकारकी विशेषता है कि उनकी ज्योतिर्मयी किरणें अन्य रत्नोंके प्रकाशको चीरती हुई आगे बढ़ रही दिखाई देतीं हैं.

हाथ कांडों कडी पोहोंचियां, जानों ए जोत इनथें अतंत ।
जोत सागर आकासमें, कोई सके ना इत अटकत ॥ ४८

हस्त कमलोंकी कलाईमें पहनी हुई कड़ी एवं पहुँचियोंमें जड़ित रत्नोंकी ज्योतिर्मयी आभा इन भुजबन्धोंसे भी अधिक है. इनसे निकलती हुई किरणोंको कोई भी प्रकाश रोक नहीं सकता. ये तो विशाल सागर तलको स्पर्श करती हुई आकाश तक व्याप्त हो जातीं हैं.

बाजूबंध पोहोंची कडी, ए भूषन सोभा अपार ।
नरम हाथ लीकें हथेलियां, क्यों आवे सोभा सुमार ॥ ४९

भुजबन्ध, पहुँची, कड़ा आदि आभूषणोंकी शोभा ही अपरम्पार है. अत्यन्त

कोमल हस्त कमलकी हथेलियोंमें अङ्कित रेखाओंकी अपार शोभा भी शब्दोंकी सीमामें नहीं आ सकती.

जुदे जुदे रंगों जोत चले, ए जो नंग हाथ मुंदरी ।
ए तेज लेहेरें कै उठत हैं, ज्यों ज्यों चलवन करें अंगुरी ॥ ५०

इन हस्त कमलोंकी प्रत्येक अङ्गुलियोंमें सुशोभित मुद्रिकाओंके रत्नोंसे भी अलग-अलग रङ्गोंकी किरणें प्रदीप्त होतीं हैं. श्रीराजजी इन अङ्गुलियोंको जैसे जैसे चलाते हैं वैसे वैसे इन किरणोंकी लहरें उठती हुई दिखाई देतीं हैं.

क्यों कहूं जोत नखन की, ए सबथें अति जोर ।
जानों तेज सागर अवकास में, सबको निकसे फोर ॥ ५१

इन अङ्गुलियोंके नखोंकी ज्योतिका वर्णन कैसे करें, ये तो सबसे अधिक प्रकाशित दिखाई देते हैं. इनसे निकलता हुआ प्रकाश पुञ्ज आकाशको भी चीर कर आगे बढ़ता हुआ दिखाई देता है.

रंग देखूं के सलूकी, छबि देखूं के नरम उजल ।
जो होए कछुए इसक, तो इतथें न निकसे दिल ॥ ५२

इन नखोंकी संरचना, इनका रङ्ग, इनकी कोमल तथा उज्ज्वल छविको देखने पर ऐसा लगता है, यदि हृदयमें लेशमात्र भी प्रेम हो तो इनसे दृष्टि ही नहीं हटेगी.

कैसी नरम अंगुरियां पतली, देख सलूकी तेज ।
आसमान रोसनी पोहोंचाए के, मानों सूर जिमी भरी रेजा रेज ॥ ५३

ये अङ्गुलियाँ इतनी कोमल एवं पतली हैं कि इनकी संरचना एवं प्रदीप्त तेजको देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों सूर्यका प्रकाश पूरे आकाशको प्रकाशित कर भूमिके कण-कणको प्रकाशित कर रहा है.

जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाए ।
जो रूह नैनों में न समावहीं, सो जुबां कह्यो क्यों जाए ॥ ५४

श्रीराजजीके स्वरूपकी ज्योति इतनी प्रखर है कि वह नयनोंमें समा नहीं

सकती. जो शोभा आत्माकी आँखोंमें भी समा नहीं पाती हो तो शब्दोंके द्वारा उसे कैसे व्यक्त किया जा सकता है ?

यों वस्तर भूषन अंग चेतन, सब लेत आसिक जवाब ।
केहे सब का लेऊं पडउतर, ए नहीं रूह मिने ख्वाब ॥ ५५

इस प्रकार श्रीराजजीके वस्त्र तथा आभूषण सभी चेतनमय हैं. ये सभी अनुरागिनी आत्माको प्रत्युतर भी देते हैं. आत्माएँ भी सभीके प्रश्नोंका उत्तर देना चाहतीं हैं क्योंकि वे स्वयं स्वप्नमें नहीं हैं.

रद बदल भूषन सों, और करे वस्तरों सों ।
और अंग लग जाए ना सके, फारग न होए इनमों ॥ ५६

जब आत्मा इन वस्त्र एवं आभूषणोंसे वार्तालाप करती है तब एक अङ्गके वस्त्र तथा आभूषणसे ही उसको निवृत्ति (फुरसद) नहीं हो पाती कि वह उस अङ्गको छोड़कर अन्य अङ्गोंकी ओर जा सके.

ए वस्तर भूषन हक के, सो सारे ही चेतन ।
सब जवाब लिया चाहिए, आसिक एही लछन ॥ ५७

इस प्रकार श्रीराजजीके अङ्गोंके सभी वस्त्र तथा आभूषण चेतनमय हैं. आत्माएँ उनसे प्रत्युत्तर चाहतीं हैं. यही तो अनुरागिनियोंके लक्षण हैं.

आसिक रूह जित अटकी, अंग भूषन या वस्तर ।
यासों लगी गुफतगोए में, सो छूटे नहीं क्योंए कर ॥ ५८

अनुरागिनी आत्माओंकी दृष्टि जिन वस्त्र अथवा आभूषणोंमें स्थिर हो जाती है, वे उन्हींके साथ गुह्य वार्तालाप करने लगतीं हैं. इसलिए उनकी दृष्टि वहाँसे किसी भी प्रकार हट नहीं सकती.

इसक बसत सब अंगमें, सब विध देत हैं सुख ।
कै सुख हर एक अंग में, सो कह्यों न जाए या मुख ॥ ५९

श्रीराजजीके सभी अङ्ग प्रेमसे परिपूर्ण हैं. इसलिए वे सब प्रकारका सुख प्रदान करते हैं. इनमें प्रत्येक अङ्गसे अपार सुख प्राप्त होता है जिसका वर्णन जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

प्रेम लिए सोभा गुन, सब सुख देत पूरन ।
या वस्तर या भूषन, सुख जाहेर या बातन ॥ ६०

ये वस्त्र तथा आभूषण प्रेमसे परिपूर्ण होने से अपार गुणोंकी शोभा धारण करते हैं. इसलिए इनसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें पूर्ण सुख प्राप्त होता है.

सुख इसक हक जात के, तिनसे अंग सुखदाए ।
बाहेर सुख सब अंग में, ए सुख जुबां कह्यो न जाए ॥ ६१

ब्रह्मआत्माओंका सुख ही प्रेम है इसलिए प्रेम प्राप्त करने पर इनके अङ्ग प्रत्यङ्ग आनन्दित होते हैं. प्रत्यक्षरूपमें प्राप्त होनेवाले इन अङ्गोंके सुखका वर्णन भी जिह्वाके द्वारा नहीं हो सकता है.

अंग वस्तर या भूषन, सब सुख दिया चाहे ।
कै सुख जाहेर कै बातन, सब मिल प्रेम पिलाए ॥ ६२

श्रीराजजीके अङ्गोंके वस्त्र अथवा आभूषण सभी ब्रह्मआत्माओंको सुख प्रदान करना चाहते हैं. उनसे प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरूपमें अपार सुख प्राप्त होता है. ये सभी मिलकर प्रेमका ही अनुपान करवाते हैं.

इसक देवें लेवें इसक, और ऊपर देखावें इसक ।
अरस इसक जरे जरा, ए जो सूरत इसक अंग हक ॥ ६३

ये सभी वस्त्र तथा आभूषण स्वयं भी प्रेम ग्रहण करते हैं एवं आत्माओंको भी प्रेम प्रदान करते हैं. बाहरसे भी इनमें प्रेम ही दिखाई देता है. इस प्रकार परमधामके कण-कणमें प्रेम ही व्याप्त है क्योंकि ये सभी श्रीराजजीके ही स्वरूपके आनन्द (प्रेम) अङ्ग हैं.

एक अंग जिन देख्या होए, सो पल रहे न देखे बिगर ।
हुई बेसकी इन सरूपकी, रूह अंग न्यारी रहे क्यों कर ॥ ६४

जिसने श्रीराजजीके एक अङ्गका भी दर्शन प्राप्त कर लिया हो वह पल मात्रके लिए भी उस स्वरूपसे दूर नहीं रह सकता. किन्तु जिस ब्रह्मआत्माको निसन्देह ही इन पूर्ण स्वरूपके दर्शन हो गए हैं वह उनसे कैसे दूर रह सकती है ?

सब अंग दिल में आवते, बेसक आवत सूरत ।
हाए हाए रूह रेहेत इत क्यों कर, आए बेसक ए निसबत ॥ ६५

श्रीराजजीके सभी अङ्ग जब हृदयमें अङ्कित हो जाते हैं तब उनका सम्पूर्ण स्वरूप हृदयमें बस जाता है. इस प्रकार जब उसे श्रीराजजीके साथके शाश्वत सम्बन्धकी पहचान हो जाती है तो वह आत्मा इस जगतमें कैसे रह सकती है ?

चारों जोडे चरन के, ए जो अरस भूषन ।
ए लियें हिरदे मिने, आवत सरूप पूरन ॥ ६६

श्रीराजजीके युगल चरणोंमें सुशोभित चारों आभूषण परमधामकी दिव्यतासे परिपूर्ण हैं. जो आत्माएँ इनको अपने हृदयमें धारण करतीं हैं उनके हृदयमें श्रीराजजीका पूर्ण स्वरूप अङ्कित हो जाता है.

जो सोभावत इन चरन को, ए भूषन सब चेतन ।
अनेक गुन याके जाहेर, और अलेखे बातन ॥ ६७

श्रीराजजीके श्रीचरणोंमें सुशोभित ये चारों आभूषण सभी चेतनमय हैं. उनमें प्रकट तथा अप्रकट रूपमें अनेक प्रकारके गुण विद्यमान हैं.

नंग नरम जोत अतंत, और अतंत खुसबोए ।
ए भूषन चरनों सोभित, बानी चित चाही बोलत सोए ॥ ६८

इन आभूषणोंमें जड़ायमान रत्न तेजोमय, सुकोमल तथा सुगन्धियुक्त हैं. श्रीराजजीके श्रीचरणोंमें सुशोभित ये आभूषण इच्छानुरूप मधुरवाणीका उच्चारण भी करते हैं.

गौर चरन अति सोभित, और सिनगार भूषन सोभित ।
ए अंग संग न्यारे न कबहुं, अति बारीक समझन इत ॥ ६९

श्रीराजजीके गौरवर्णके ये चरण अति शोभायुक्त हैं. इन पर आभूषणोंका शृङ्गार सुशोभित है. ये आभूषण इन अङ्गोंसे कदापि दूर नहीं हैं. इस प्रकारकी समझ अत्यन्त सूक्ष्म (गूढ़) है.

एही ठौर आसिकन की, अरस की जो अरवाहें ।
सो चरन तली छोड़े नहीं, पडी रहें तले पांए ॥ ७०

ये श्रीचरण ही परमधामकी आत्माओंके लिए विश्राम स्थल हैं. इसलिए ब्रह्मआत्माएँ इन चरणोंको क्षणभरके लिए भी नहीं छोड़तीं एवं सदैव इन्हीं चरणोंका आश्रय लेतीं हैं.

अरस रूहें आसिक इनकी, जिन पायो पूरन दाव ।
ठौर ना और रूहन को, जाको लगे कलेजे घाव ॥ ७१

परमधामकी आत्माएँ इन्हीं श्रीचरणोंकी अनुरागिनी हैं. उनको ही इनके सान्निध्यका अवसर प्राप्त हुआ है. इनके अतिरिक्त उनका कोई आश्रय स्थान ही नहीं है, ये श्रीचरण इनके हृदयमें चुभ गए हैं.

कै रंग नंग वस्तर भूषन के, चढी आकास जोत लेहेर ।
जो जोत नख चरन की, मानों चीर निकसी नेहेर ॥ ७२

विभिन्न प्रकारके रङ्गोंके रत्नोंसे जड़े हुए श्रीराजजीके वस्त्र-आभूषणोंकी ज्योति आकाशमें लहराती है. इन सभी ज्योतियोंको चीरता हुआ चरणके नखका प्रकाश उनसे भी आगे निकलता है.

केहेती हों इन जुबांन सों, और सुपन श्रवन नजर ।
जो नजरों सूरज ख्वाब के, सों हकें सिफत पोहोंचे क्योंकर ॥ ७३

श्रीराजजीके इन श्रीचरणोंकी शोभाको स्वप्नकी दृष्टिसे देखकर एवं स्वप्नके श्रवणोंसे सुनकर मैं स्वप्नकी जिह्वाके द्वारा उनका वर्णन कर रहा हूँ. जो दृष्टि स्वप्नवत् संसारके सूर्यके प्रकाशसे प्रकाशित होती है वह अखण्डकी शोभाका दर्शन कैसे कर सकती है ?

कट चीन झलके दांवन, बैठ गई अंग पर ।
कै रंग नंग इजार में, सो आवत जाहेर नजर ॥ ७४

श्रीराजजीकी कटि (कमर) पर रेशमकी दावन झलकती है. यह कटि पर कसी हुई होनेसे इजारमें जड़ित विविध प्रकारके रङ्गोंके रत्नोंकी ज्योतिर्मयी आभा जामासे भलीभाँति दिखाई देती है.

और भूषन जो चरन के, सो अति धरत हैं जोत ।
नरम खुसबोए स्वर माधुरी, आसमान जिमी उद्योत ॥ ७५

श्रीचरणोंके आभूषण ज्योतिर्मयी आभासे परिपूर्ण हैं. इनमें कोमलता, सुगन्धि तथा स्वरमाधुर्य है. इनके तेजसे भूमिसे लेकर आकाश तक प्रकाशित होता है.

पांऊं तली नरम उजल, लीकें एडी लांक लाल ।
ए रूह आसिक से क्यों छूटहीं, ए कदम नूर जमाल ॥ ७६

श्रीराजजीके चरण तल अत्यन्त कोमल एवं उज्ज्वल हैं. चरण तलकी रेखाएँ, गहराई एवं एड़ी लालिमायुक्त हैं. अपने प्रियतम धनीके ऐसे श्रीचरण अनुरागिनी आत्माओंसे कैसे छूट सकते हैं ?

तली हथेली हाथ पांऊं की, लाल अति उजल ।
और बीसों अंगुरियां नरम पतली, नख नरम निरमल ॥ ७७

श्रीराजजीके चरण तल तथा हस्त कमलकी हथेलियाँ अत्यन्त उज्ज्वल एवं लालिमापूर्ण हैं. उनकी बीसों अङ्गुलियाँ कोमल तथा पतली हैं. इन सभीके नख अत्यन्त कोमल तथा निरमल हैं.

कांडे कोमल हाथ पांऊ के, फने पीडी अंग माफक ।
उजल अति सोभा लिए, ए सूरत सोभा नित हक ॥ ७८

हस्त कमल तथा चरण कमलकी कलाई एवं काँडा अत्यन्त कोमल हैं. इसके साथ ही पंजा तथा पिंडली भी अन्य अङ्गोंके अनुरूप शोभायुक्त हैं. इस प्रकार श्रीराजजीके अङ्गोंकी उज्ज्वल शोभा नित्य एवं शाश्वत है.

रंग रस इंद्री नौतन, चढता अंग नौतन ।
तेज जोत सोभा नौतन, नौतन चढता जोवन ॥ ७९

श्रीराजजीके सुन्दर किशोर स्वरूपकी अङ्ग, इन्द्रियाँ नित्य नवीन एवं शाश्वत हैं तथा उनमें नित्य नूतनता है. उनका तेज, ज्योति तथा शोभा भी नूतन है एवं नित्य प्रति बढ़ता हुआ यौवन भी नूतनरूपमें परिलक्षित होता है.

छब फब मुख सनकूल, चढती कला देखाए ।
कायम अंग अरसके, सब चढता नजरों आए ॥ ८०

मुखारविन्दकी छवि, अप्रतिम सौंदर्य एवं प्रसन्न वदन नित्य नवीन कलाओंमें प्रकट होता है. ये अङ्ग अखण्ड परमधामके हैं इसलिए नित्यप्रति उत्तरोत्तर बढ़ते हुए प्रतीत हो रहे हैं.

ए अंग सब अरस के, अरस वस्तर भूषन ।
अरस जरे जवेर को, सिफत न पोहोंचे सुकन ॥ ८१

ये सभी अङ्ग प्रत्यङ्ग एवं उनमें धारण किए हुए वस्त्र तथा आभूषण परमधामकी दिव्यतासे परिपूर्ण है. इसलिए इनमें जड़ायमान रत्नोंकी शोभा भी शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती.

सब अंग इसक के, गुन अंग इन्द्री इसक ।
सबद न पोहोंचे सिफत, इन विध सूरत हक ॥ ८२

श्रीराजजीके ये अङ्ग प्रत्यङ्ग शाश्वत प्रेमसे परिपूर्ण हैं. उनके गुण अङ्ग इन्द्रियोंमें प्रेमका अविरल प्रवाह है. श्रीराजजीका दिव्य स्वरूप इस प्रकार सुशोभित है कि उसे व्यक्त करनेके लिए कोई भी शब्द सक्षम नहीं हैं.

केहे केहे दिल जो केहेत है, ताथें अधिक अधिक अधिक ।
सोभा इसक बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक ॥ ८३

मेरा हृदय इस शोभाका जितना वर्णन करना चाहता है, यह शोभा उससे अधिक बढ़ती जाती है. क्योंकि अखण्ड स्वरूपके प्रेमकी यह शोभा है, इसलिए मैं इसका लेशमात्र भी वर्णन नहीं कर सकता.

अब लग जानती अरस के, हेम नंग लेत मिलाए ।
पैदास भूषन इन विध, वे पेहेनत हैं चित चाहे ॥ ८४

अभी तक मुझे यही ज्ञात था कि परमधामके सभी रत्न हेम (स्वर्ण) के साथ जड़े हुए हैं किन्तु इन आभूषणोंकी उत्पति ही ऐसी है कि वे इच्छाके अनुरूप स्वतः प्रकट होते हैं.

एक ले दूजा मिलावहीं, तब तो घट बढ होए ।
सो तो अरस में है नहीं, वाहेदत में नहीं दोए ॥ ८५

यदि किसी एक धातुमें दूसरा धातु या रत्न मिलाया जाए तो उनमें न्यूनता तथा अधिकता का भाव बना रहता. किन्तु परमधाममें यह स्थिति नहीं है क्योंकि अद्वैत भूमिकामें दो भाव होते ही नहीं हैं.

घडे जडे ना समारे, ना सांध मिलाई किन ।
दिल चाहे नंगों के असल, बस्तर या भूषन ॥ ८६

परमधामके वस्त्र तथा आभूषणोंको न किसीने बनाया है, न उनमें रत्न आदिको जड़ा है और न ही कुछ जोड़कर उनको तैयार किया है. वस्तुतः ये वस्त्र तथा आभूषण हृदयकी इच्छाके अनुरूप रत्नोंके हैं तथा स्वतः बने हुए हैं.

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत ।
जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत ॥ ८७

परमधाममें किसी वस्त्र या आभूषणको धारण करना अथवा उतारना नहीं होता है. वे तो हृदयकी चाहनाके अनुरूप स्वतः अङ्कित हो जाते हैं. जब जहाँ पर जैसी शोभा चाहिए वे वहाँ पर पहलेसे ही अङ्कित हो जाते हैं.

जो रूह कहावे अरस की, माहें बका खिलवत ।
सो जिन खिन छोडो सरूपको, कहे उमत को महामत ॥ ८८

महामति अपनी आत्माओंको कहते हैं, जो आत्मा स्वयंको परमधामकी कहती है एवं मूलमिलावेमें बैठी हुई समझती है उसको अपने धनीके इस दिव्य स्वरूपसे पलमात्रके लिए भी दूर नहीं होना चाहिए.

प्रकरण १० चौपाई ८८७

श्रीसुन्दरसाथका सिनगार

सुंदर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल ।
अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल ॥ १

सभी सुन्दरसाथ अभिन्न अङ्गके रूपमें हिलमिलकर मूलमिलावेमें आश्चर्य

जनक मुद्रामें बैठें हैं. सभीके अङ्ग परस्पर इस प्रकार मिले हुए हैं कि उनमें एकात्मभावकी शोभा दिखाई दे रही है.

जानों मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार ।
सागर भर्‌या सब एक रस, माहें कै विध तरंग अपार ॥ २

मानों इस अपूर्व मिलनमें उन सभीकी मुखाकृति एक समान है एवं सभी एक ही प्रकारके शृङ्गारसे सुशोभित हैं. उनके मनमें आनन्दका सागर समान रूपसे लहराता है जिससे अपार तरङ्गें उठ रहीं हैं.

निलवट बेना चांदलो, हरी गरदन मुख मोर ।
नैन चोंच सिर सोभित, बीच बने तरफ दोऊ जोर ॥ ३

उनके ललाट पर टीका सुशोभित है जो हरित रंगके ग्रीवा, नयन, चोंच तथा सिरके कारण मयूरकी भाँति सुशोभित है. इसके दोनों ओर मयूरका-सा मुख बना हुआ है.

निरमल मोती नासिका, कै विध नथ बेसर ।
जोत जोर नंग मीहीं नकस, ए वरनन होए क्यों कर ॥ ४

सभी सुन्दरसाथकी नासिकामें सुन्दर नथ सुशोभित है जिसमें निर्मल मोतीके साथ-साथ विभिन्न रत्नोंकी सूक्ष्म चित्रकारी चित्रित है. इस अद्वितीय शोभाका वर्णन नहीं हो सकता है.

सोभित हैं सबन के, कानन झलकत झाल ।
माहें मोती नंग निरमल, झांई उठत माहें गाल ॥ ५

सभीके श्रवण-अङ्गोंमें सुन्दर कुण्डल सुशोभित हैं जिनमें निर्मल मोती एवं अन्य रत्न लगे हुए हैं. उनकी प्रतिछाया कपोलोंपर पड़ती हैं.

चार चार हार सबन के, उर पर अति झलकत ।
कंठसरी कंठन में, सबन के सोभित ॥ ६

सभीके कण्ठ पर लटके हुए रत्नोंके चार-चार हार वक्षस्थल पर अत्यन्त सुशोभित हैं. इसके साथ-साथ सभीके कण्ठमें कण्ठसरी सुशोभित है.

एक हार हीरन का, दूजा हेम कंचन ।
तीजो हार मानिक को, चौथा हार मोतीयन ॥ ७

इन कण्ठ हारोंमें एक हार हीराका, दूसरा कञ्चनका, तीसरा माणिक्यका एवं चौथा मोतियोंका है.

कहूं डोरे कहूं बादले, कहूं खजूरे हार ।
कहा कहूं जवेर अरस के, झलकारों झलकार ॥ ८

इन हारोंमें कहीं डोरी, कहीं जरी तो कहीं लहरीदार भारियाँ (खजुरे) सुशोभित हैं. परमधामके इन रत्नोंके विषयमें क्या कहें सर्वत्र इन्हींका प्रकाश चमकता हुआ दिखाई देता है.

हाथ चूडी नंग नवघरी, अंगूठिएं झलकत नंग ।
उजल लाल हथेलियां, पोहोंचों पोहोंची नंग कै रंग ॥ ९

हस्त कमलकी चूड़ियाँ, नवघरी तथा मुद्रिकाओंमें सुन्दर रत्न सुशोभित हैं. लालिमायुक्त हथेलियाँ भी अति उज्ज्वल हैं. पहुँचा पर पहनी हुई पहुँचीमें अनेक रङ्गोंके रत्न सुशोभित हैं.

जैसे सरूप अरस के, भूषन तिन माफक ।
याही रवेस वस्तर जवेर के, ए अंग बडी रूह हक ॥ १०

परमधामके ये स्वरूप (ब्रह्मआत्माएँ) जितने दिव्य हैं, उसीके अनुरूप उनके आभूषण भी दिव्य हैं. इसी भाँति रत्नोंके वस्त्र भी दिव्य हैं. ये सभी आत्माएँ श्रीश्यामाजी तथा श्रीराजजीकी अङ्गरूपा हैं.

जैसी सोभा भूषन की, कहूं तैसी सोभा वस्तर ।
कछू पाइए सोभा सरूप की, जो खोले रूह नजर ॥ ११

इनके आभूषणोंकी जैसी शोभा है उसी प्रकारकी शोभा वस्त्रोंकी भी है. इनकी अद्वितीय शोभाकी झलक तभी प्राप्त हो सकती है जब आत्मदृष्टि खुल जाएगी.

वस्तरों के नंग क्यों कहूं, कै जवेरों जोत ।
सबे भई एक रोसनी, जानों गंज अंबार उदोत ॥ १२

इनके वस्त्रोंमें जड़े हुए रत्न आदिकी शोभाका क्या वर्णन करें ? इन सभीसे

निकलती हुई ज्योति तेज पुञ्जके रूपमें पूरे आकाशको प्रकाशित करती है.

अतंत नंग अरस के, और नरम जवेर अतंत ।
अतंत अरस रसायन, खूबी खुसबोए अति बेहेकत ॥ १३

परमधामके ये अनन्त रत्न अति सुकोमल प्रतीत होते हैं. इसी प्रकार यहाँके रसायनकी भी यही विशेषता है. उनसे अपार सुगन्ध फैल जाती है.

कहूं केते नाम जवेरन के, रसायन नाम अनेक ।
कै नाम भूषन एक अंग, सो कहां लग कहूं विवेक ॥ १४

कितने रत्नोंका नाम लिया जाए, यहाँ पर तो रसायन भी अनेक हैं. इसी प्रकार एक अङ्गमें धारण किए जानेवाले आभूषणोंके भी अनेक नाम हैं. उन सभीका कहाँ तक विस्तार करें.

सूरत सकल साथ की, मुख कोमल सुंदर गौर ।
ए छवि हिरदे तो फबे, जो होवे अरस सहूर ॥ १५

इन सुन्दरसाथके दिव्य स्वरूप, कोमल मुखारविन्द एवं सुन्दर गौर वर्णकी छवि हृदयमें तभी अङ्कित हो सकती है, जब अपने पास परमधामकी जागृत बुद्धि होती है.

रूहें सुंदर सनकूल मुख, नहीं सोभा को पार ।
घट बढ कोई न इनमें, एक रस सब नार ॥ १६

इन ब्रह्मआत्माओंकी प्रसन्न मुखमुद्राकी शोभाका कोई पारावार नहीं है. इन सभीमें किसी भी वस्तुकी न्यूनता अथवा अधिकता नहीं है अपितु ये सभी एक रस हैं.

कै रंग सोभित साडियां, रंग रंग में कै नंग सार ।
भिंन भिंन झलके एक जोत, कै किरनें उठें बेसुमार ॥ १७

ये ब्रह्मआत्माएँ विभिन्न रङ्गोंकी साड़ियोंमें सुसज्जित हैं. इन भिन्न-भिन्न रङ्गोंमें अनेक रत्न सुशोभित हैं. इनसे झलकती हुई भिन्न-भिन्न प्रकारकी ज्योतिसे असंख्य किरणें उठतीं हैं.

हर एक के सिनगार, तिन सिनगार सिनगार कै नंग ।
नंग नंग में कै रंग हैं, तिन रंग रंग कै तरंग ॥ १८

प्रत्येक आत्माके शृङ्गारमें अनेक प्रकारके रत्न सुशोभित हैं. प्रत्येक रत्नसे अनेक रङ्ग निकलते हैं. उन रङ्गोंकी अनेक तरङ्गें सुशोभित हैं.

तरंग तरंग कै किरनें, कै रंग नंग किरनें न समाए ।
यों जोत सागर सरूपों को, रह्यो तेज पुंज जमाए ॥ १९

प्रत्येक तरङ्गसे अनेक किरणें झलक रहीं हैं. अनेक रङ्गोंके रत्नोंसे निकली हुई ये किरणें वहाँ पर कहीं भी समा नहीं पा रहीं हैं. इस प्रकार ब्रह्मआत्माओंके स्वरूपोंकी ज्योति सागरके समान प्रतीत होती है जिनसे सर्वत्र तेज पुञ्ज दिखाई देता है.

अब इनके अंग की क्यों कहूं, ठौर नहीं बोलन ।
क्यों कहूं सोभा अखंड की, बीच बैठ के अंग सुपन ॥ २०

अब इन आत्माओंके अङ्ग प्रत्यङ्गका वर्णन कैसे करें, इसके लिए तो उपयुक्त शब्द भी नहीं हैं. इस स्वप्नवत् जगतमें बैठकर स्वप्नकी जिह्वासे अखण्ड धामके स्वरूपोंकी शोभाका वर्णन कैसे किया जा सकता है ?

रंग तरंग किरनें कही, कही तेज जोत जुबां इन ।
प्रकास उदोत सब सबद में, जो कह्या नूर रोसन ॥ २१

मैंने इस नश्वर जगतकी जिह्वाके द्वारा ही विविध रङ्गोंमें उठती हुई तरङ्गें तथा किरणोंका उल्लेख किया है किन्तु परमधामके दिव्य, अलौकिक, तेजपुञ्जकी व्याख्या अनित्य जगतके शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकती है.

ज्यों ज्यों बैठियां लग लग, त्यों त्यों अरस परस सुख देत ।
बीच कछू ना रेहे सके, यों खैंच खैंच ढिग लेत ॥ २२

ये आत्माएँ जिस प्रकार परस्पर मिल कर अभिन्नरूपसे बैठी हुईं हैं, उसी प्रकार परस्पर अपार सुखका आदान-प्रदान करतीं हैं. एक दूसरेके मध्यमें कोई भी स्थान खाली न रह जाए ऐसा सोचकर ये दूसरी आत्माको भी अपने पास ही खींचकर बैठा लेतीं हैं.

जानों सागर सब एक जोत में, नूर रोसन भर पूरन ।
झांई झलके तेज दरियाव ज्यों, कै उठे तरंग भिंन भिंन ॥ २३

ऐसा प्रतीत होता है जैसे मूलमिलावाकी इस गोल हवेलीमें ज्योतिर्मय प्रकाशका एक सागर तरङ्गित हो रहा हो क्योंकि सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त है. इन तेजोमय स्वरूपोंका प्रकाश सागरकी भाँति झलकने लगता है जिससे भिन्न-भिन्न प्रकाकी अनेक तरङ्गें उठतीं हुई-सी दिखाई देतीं हैं.

ऊपर तलेकी रोसनी, और वस्तर भूषन की जोत ।
और जोत सरूपों की क्यों कहूं, ए जो ठौर ठौर उदोत ॥ २४

मूलमिलावाके इस हवेलीमें ऊपर लगा हुआ चँदवा तथा चबूतरे पर बिछी हुई कालीनसे निकलते हुए प्रकाश, ब्रह्मआत्माओंके वस्त्र तथा आभूषणोंकी ज्योति एवं उनके दिव्य स्वरूपोंसे निकलती हुई ज्योतिर्मयी किरणोंका वर्णन कैसे किया जाए ? सम्पूर्ण हवेली ही प्रकाशित हो रही है.

ऊपर तले थंभ दिवालें, सब जोत रही भराए ।
बीच समूह जोत साथ की, बनी जुगल जोत बीच ताए ॥ २५

इस प्रासादमें ऊपर नीचे तथा स्तम्भों एवं दीवालोंमें सर्वत्र तेज भरा हुआ है. चारों ओर बैठीं हुईं ब्रह्मआत्माएँ तथा मध्यमें सिंहासन पर विराजमान श्रीराजश्यामाजीका दिव्य तेज सर्वत्र देदीप्यमान है.

ए जोत में सोभा सुंदर, और सरूपों की सुखदाए ।
देख देख के देखिए, ज्यों नख सिख रहे भराए ॥ २६

इस देदीप्यमान प्रकाशमें सुशोभित युगल स्वरूप एवं ब्रह्मआत्माओंकी सुन्दर शोभाको देखते हुए दृष्टि स्थिर हो जाती है. यह सुखदायी शोभा नखसे लेकर शिखा तक सर्वत्र परिपूर्ण है.

ज्यों दरिया तेज जोत का, त्यों सब दिल दरिया एक ।
एक दिल एक रोसनी, जुबां क्यों कर कहे विवेक ॥ २७

जिस प्रकार देदीप्यमान तेजका सागर लहरा रहा हो उसी प्रकार सबके हृदयका ऐक्यभाव (एकदिली) भी सागरकी भाँति प्रकाशित हो रहा है. इस

प्रकार समानरूपसे प्रकाशित हो रही इस दिव्य शोभाकी ज्योतिका वर्णन यह जिह्वा कैसे कर पाएगी ?

जोत उपली कही जुबांन सों, पर रेहेस चरित्र सुख चैन ।
सुख पर आतम तब पाइए, जब खुलें अन्तर के नैन ॥ २८

मैंने तो मात्र बाह्य ज्योतिका ही वर्णन किया है किन्तु इन पर-आत्माओंकी रहस्यमयी लीलाएँ एवं निश्छल प्रेमकी सुखद अनुभूति तभी प्राप्त हो सकती है जब अन्तरकी दृष्टि खुल जाती है.

एक रस होइए इसक सों, चलें प्रेम रस पूर ।
फेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामाजी हजूर ॥ २९

जब यह आत्मा परमात्माके प्रेममें एक रस हो जाती है तभी प्रेमका प्रवाह प्रवाहित होने लगेगा. तब आत्माएँ श्यामश्यामाजीके चरणोंमें जागृत होकर वारंवार प्रेम सुधाका पान करतीं हुईं तृप्त हो जाएँगी.

क्यों कहूं सुख सबन के, सब अंगों के एक चित ।
अरस परस सुख लेवहीं, अंग नए नए उपजत ॥ ३०

इन सभी आत्माओंके अपार सुखका वर्णन कैसे करूँ ? ये सभी एकात्मभावसे मूलमिलावामें बैठीं हुई हैं एवं परस्पर अपार सुखका अदान-प्रदान करतीं हैं. इस प्रकार इनके हृदयमें नित्य नूतन आनन्द प्रकट होता है.

साथ समूह की क्यों कहूं, जाको इसकै में आराम ।
अरस परस सब एक रस, पीउ विलसत प्रेम काम ॥ ३१

इन समस्त ब्रह्मआत्माओंके समूहके विषयमें क्या कहा जाए, वे तो श्रीराजजीके प्रेममें ही आनन्दका अनुभव करतीं हैं. परस्पर एक रस होकर अपने प्रियतमके साथ प्रेमपूर्वक विलास करतीं हैं.

इन धाम के जो धनी, तिन अंगों का सनेह ।
हेत चित आनन्द इनका, क्यों कहूं जुबां इन देह ॥ ३२

दिव्य परमधामके स्वामी अक्षरातीत धामधनीकी अङ्गनाओंका यह स्नेह है

कि उनका चित्त प्रेम एवं आनन्दसे परिपूर्ण है. अनित्य देहकी जिह्वासे उसका वर्णन कैसे करूँ ?

सुख अन्तर अन्तसकरन के, आवें नहीं जुबांन ।
प्रेम प्रीत रीत अन्तर की, सो क्यों कर होए बयान ॥ ३३

जब अन्तःकरण द्वारा अनुभूत सुख भी शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकता तो अन्तरात्माकी प्रीति, प्रेम एवं रीतिका वर्णन शब्दोंके द्वारा कैसे हो सकता है ?

सत सरूप जो धाम के, तिनके अन्तसकरन ।
इसक तिनके अंग का, सो कछुक करूं वरनन ॥ ३४

तथापि दिव्य परमधामके सत्य स्वरूप ब्रह्मआत्माओंके अन्तःकरणमें स्थित प्रेम भावका लेशमात्र वर्णन करना चाहता हूँ.

नख सिख अंग इसक के, इसकै संधों संध ।
रोम रोम सब इसक के, क्यों कर कहूं सनंध ॥ ३५

नखसे लेकर शिखा पर्यन्त इन ब्रह्मआत्माओंके सभी अङ्ग प्रेमसे परिपूर्ण हैं. इनकी प्रत्येक सन्धियाँ भी प्रेमसे ही पूरित हैं. इतना ही नहीं रोम-रोम भी प्रेमसे परिपूर्ण हैं. इनकी दिव्य शोभाका वर्णन कैसे किया जाए ?

अन्तसकरन इसक के, इसकै चित चितवन ।
बातां करें इसक की, कछू देखें ना इसक बिन ॥ ३६

इनका अन्तःकरण भी प्रेमसे ओत प्रोत है. ये अपने चित्तसे प्रेमका ही चिन्तन करतीं हैं. इनमें परस्पर वार्तालाप भी प्रेमका ही होता है. इन्हें प्रेमके अतिरिक्त अन्य कुछ दिखाई नहीं देता है.

तत्व गुन अंग इंद्रियां, सब इसकै के भीगल ।
पख सारे इसक के, सब इसक रहे हिल मिल ॥ ३७

इन ब्रह्मआत्माओंके सभी तत्त्व गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ तथा पक्ष आदि सभी प्रेमसे ओत प्रोत हैं. इसलिए ये सभी हिलमिल कर प्रेम पूर्वक बैठीं हुईं हैं.

ए सुख संग सरूप के, जो अन्तर अंदर इसक ।
आतम अन्तसकरन विचारिए, तो कछू बोए आवे रंचक ॥ ३८

इन ब्रह्मआत्माओंके अन्तःकरणमें जो प्रेम भाव परिपूर्ण है, यदि हम अन्तरात्मासे विचार करेंगे तो उसमें से लेशमात्र सुगन्ध ही हमें प्राप्त हो सकती है.

जो कोई आतम धाम की, इत हुई होए जागृत ।
अंग आया होए इसक, तो कछू बोए आवे इत ॥ ३९

परमधामकी जो आत्मा इस जगतमें आकर जागृत हो जाती है, उसीके हृदयमें इस दिव्य प्रेमकी सुगन्धि आ सकती है.

पीउ नेत्रें नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन ।
तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपन ॥ ४०

इसलिए अपने प्रितयम धनीके नयनोंसे नयन मिलाएँ जिससे अपार आनन्दका अनुभव हो जाए. तब आत्मामें प्रस्फुटित प्रेम रसायनका पान कर लिया करें.

आतम अन्तसकरन विचारिए, अपने अनभव का जो सुख ।
बढत बढत प्रेम आवहीं, पर आतम सनमुख ॥ ४१

अपने अनुभवोंसे प्राप्त सुखको अन्तःकरणमें विचार करने लग जाएँ तब प्रेमका प्रवाह बढ़ता हुआ चला आएगा. जिससे अपनी पर-आत्माको प्रत्यक्ष अनुभव होने लगेगा.

इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन ।
नीके सरूप जो निरखिए, ज्यों आतम होए सुख चैन ॥ ४२

इसलिए इस मूलमिलावासे अपनी दृष्टि न हटाएँ. इतना ही नहीं अपने नेत्रोंकी पलकें भी बन्द होने न दें एवं श्रीराजश्यामाजीके दिव्य स्वरूपके भलीभाँति दर्शन करें, जिससे आत्मामें परमसुख एवं शान्तिका अनुभव हो जाए.

तब प्रेम जो उपजे, रस पर आतम पोहोंचाए ।
तब नैन की सैन कछू होवहीं, अन्तर आंखां खुल जाए ॥ ४३

तब हृदयमें जो प्रेम भाव जागृत होगा वह प्रेमरस अपनी सुरताको पर आत्मामें पहुँचा देगा. तब अन्तर्दृष्टि खुल जाएगी एवं आत्मा श्रीराजजीके नयनोंके सङ्केत समझ पाएगी.

अन्तसकरन आतम के, जब ए रह्यो समाए ।
तब आतम पर आतम के, रहे न कछू अन्तराए ॥ ४४

जब आत्माके अन्तःकरणमें अपने प्रियतम धनीकी छवि समा जाएगी. तब आत्मा और पर-आत्माके बीचका अन्तर तत्काल दूर हो जाएगा.

पर आतम के अन्तसकरन, पेहेलें उपजत है जे ।
पीछे इन आतम के, आवत है सुख ए ॥ ४५

सर्वप्रथम पर-आत्माके अन्तःकरणमें जो चाहना उत्पन्न होती है एवं परमधाममें उसे जो सुख प्राप्त होता है, तत्पश्चात् वही सुख इस आत्मामें उतर आता है.

ताथें हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल ।
सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल ॥ ४६

इसलिए मूलमिलावामें ब्रह्मआत्माओंके मध्य विराजमान युगल स्वरूपको आत्माके अन्तःकरणमें धारण करें. अपनी सुरताको उससे हटने न दें एवं वारंवार इन्हीं युगल स्वरूप पर समर्पित हो जाएँ.

सोभा मुखारबिन्द की, क्यों कर कहूं तेज जोत ।
रस भर्‌यो रसीलो दुलहा, जामें नित नई कला उदोत ॥ ४७

श्रीराजजीके मुखारविन्दकी अनुपम शोभा एवं उनके देदीप्यमान तेजका वर्णन कैसे करें ? मेरे प्रियतम धनी परम आनन्दके स्रोत हैं. उनसे नित्य नूतन कलाएँ उत्पन्न होतीं रहतीं हैं.

कमी जो कछुए होवहीं, तो कहिए कला अधिकाए ।
ए तो बढे तरंग रंग रस के, यों प्रेमें देत देखाए ॥ ४८

यदि परमधाममें किसी वस्तुकी कमी होती तो कहा जा सकता कि ये कलाएँ

उनसे अधिक हैं किन्तु प्रेमरसकी ये तरङ्गें प्रतिपल बढ़तीं रहतीं हैं. इसलिए प्रेमके द्वारा ही इनका अनुभव किया जा सकता है.

बल बल सोभा सरूप की, बल बल वस्तर भूषन ।
बल बल मीठी मुसकनी, बल बल जाऊं खिन खिन ॥ ४९

ऐसे दिव्य स्वरूपकी शोभा, उनके वस्त्र, आभूषण एवं मधुर मुस्कान पर मैं पल-पल समर्पित हो जाता हूँ.

बल बल बंकी पाग की, बल बल बंके नैन ।
बल बल बंके मरोरत, बल बल चातुरी चैन ॥ ५०

श्रीराजजीके सिर पर सुशोभित बङ्किम (तिरछी) पाग, बङ्किम नेत्र तथा कटाक्ष एवं आनन्द प्रदायिनी चातुर्यपूर्ण रीति पर मैं स्वयंको समर्पित करता हूँ.

बल बल तिरछी चितवनी, बल बल तिरछी चाल ।
बल बल तिरछे बचन के, जिन किया मेरा तिरछा हाल ॥ ५१

उनकी तिरछी चितवन, तिरछी चाल तथा तिरछे वचनों पर मैं स्वयंको समर्पित कर दूँ, जिनसे मेरी मन स्थिति ही उन्हींके अनुकूल तिरछी हो गई है.

बल बल छबीली छबि पर, दंत तंबोल मुख लाल ।
बल बल आठों जाम की, बल बल रंग रसाल ॥ ५२

श्रीराजजीकी अनुपम छविकी शोभा, ताम्बूलके कारण रक्तिम दन्तावलि एवं लालिमायुक्त मुख मण्डल तथा आठों याम रस प्रदान करने वाले शाश्वत प्रेम पर मैं स्वयंको समर्पित कर देता हूँ.

बल बल मीठे मुख की, अंग अंग अमी रस लेत ।
कै विध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत ॥ ५३

जिस माधुर्यपूर्ण मुखारविन्दसे मेरे अङ्ग प्रत्यङ्गोंमें अमृतमय आनन्दका संचार होता है, मैं उस पर समर्पित होता हूँ. इस प्रकार प्रियतम धनी अपनी आत्माको विभिन्न प्रकारके अपार सुख प्रेम पूर्वक प्रदान करते हैं.

बल बल जाऊं चरन की, बल बल हस्त कमल ।
बल बल नख सिख सब अंगों, बल बल जाऊं पल पल ॥ ५४

श्रीराजजीके श्रीचरणों पर, हस्तकमल पर तथा नखसे लेकर शिखा पर्यन्त सभी अङ्गों पर मैं प्रतिपल समर्पित हो जाता हूँ.

बल बल पियाजी के प्रेम पर, बल बल चितवन हेत ।
महामत बल बल सब अंगों, फेर फेर वारने लेत ॥ ५५

प्रियतम धनीके शाश्वत प्रेम पर, उनकी प्रेमयुक्त चितवन पर तथा उनके सभी अङ्ग प्रत्यङ्गों पर महामति वारंवार समर्पित होते हैं.

प्रकरण ११ चौपाई ९४२

सागर पांचमा इसकका

पांचमा सागर पूरन, गेहेरा गुझ गंभीर ।
प्याले इसक दरियाव के, पीवें अरस रूहें फकीर ॥ १

पाँचवाँ सागर (प्रेमका सागर) प्रेमसे परिपूर्ण होनेसे गहन, रहस्यपूर्ण तथा गंभीर है. भौतिक सुखोंका परित्याग करनेवाली परमधामकी आत्माएँ श्रीराजजीके इस सागरकी प्रेम सुधाका पान करतीं हैं.

इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर ।
ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर ॥ २

यह सागर युगलकिशोर श्रीराज श्यामाजीके प्रेम रससे परिपूर्ण है. इस पाँचवें सुख सागरसे प्रेमकी तरङ्गें उठती रहतीं हैं.

अति सुख बडी रूह को, इसक तरंग अतंत ।
मुख मीठी अपनी रूह को, रस रसना पिलावत ॥ ३

इस सागरसे श्रीश्यामाजीको अपार सुखका अनुभव होता है. इसमें प्रेमकी अनन्त तरङ्गें उठतीं हैं. श्रीश्यामाजी अपनी आत्माओंको मधुरवानी से प्रेमरसका पान करवातीं हैं.

हेत कर इन रूहन की, प्यार सों बात सुनत ।
सो वचन अंदर लेयके, मुख सामी बान बोलत ॥ ४

श्रीश्यामाजी ब्रह्म आत्माओंकी बातें प्रेमपूर्वक सुनतीं हैं. उनके वचनोंको हृदयङ्गम कर उनका प्रत्युत्तर भी देतीं हैं.

नैनों नैन मिलाए के, अमी रस सींचत ।
अपने अंग रूहें जानके, नेह नये नये उपजावत ॥ ५

वे ब्रह्म आत्माओंके नयनोंसे अपने नयन मिलाकर अमृतरसका सिञ्चन भी करतीं हैं. ब्रह्म आत्माओंको अपनी अङ्गना जानकर उनके हृदयमें प्रेमके नये नये भाव भी प्रकट करतीं हैं.

सुख केते कहूं स्यामाजीय के, हक सुख बिना हिसाब ।
ए सुख सोई जानहीं, जो पिए इन साकी सराब ॥ ६

श्रीश्यामाजीसे प्राप्त इन अपार सुखोंका वर्णन कैसे करें. श्रीराजजीसे प्राप्त सुख तो और भी असंख्य हैं. वही आत्मा इन सुखोंको जानती है, जो इनसे शाश्वत प्रेम सुधाका पान करती है.

रस भरी अति रसना, अति मीठी वल्लभ बान ।
ए सुख कह्यो न जावहीं, जो सुख देत जुबांन ॥ ७

प्रियतम धनीकी रसना रसपूर्ण है. वे अति मधुर वाणी बोलते हैं. वे अपने वचनोंसे जो सुख प्रदान करते हैं उसे शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता.

कै सुख मीठी बान के, हक देत कर प्यार ।
ज्यों मासूक देत आसिकको, एक तन यार को यार ॥ ८

श्रीराजजी अपनी मधुर वाणीका अपार सुख प्रेम पूर्वक प्रदान करते हैं. प्रियतम धनी श्रीश्यामाजीको जो अपार सुख प्रदान करते हैं, श्रीश्यामाजी भी वे सुख ब्रह्मआत्माओंको प्रदान करतीं हैं.

नैन रसीले रंग भरे, प्रेम प्रीत भीगल ।
देत हैं जब हेत सुख, चूभ रेहेत रूह के दिल ॥ ९

श्रीराजजीके नेत्र प्रेम रससे परिपूर्ण हैं. उनमें प्रेम तथा प्रीति ओत प्रोत है.

जब वे प्रेम पूर्वक सुख प्रदान करते हैं तब वह सुख ब्रह्म आत्माओंके हृदयकी गहराई तक पहुँच जाता है.

इसक प्याला रंग रस का, जब देत नैन मरोर ।
फूल पोहोंचे तालू रूहके, कायम चढाव होत जोर ॥ १०

जब श्रीराजजी अपने नेत्रोंके कटाक्षसे प्रेम रसका प्याला भर कर प्रदान करते हैं तब वह प्रेममद ब्रह्मआत्माओंके मस्तिष्कमें पहुँच जाता है जिससे उनमें अखण्ड मस्ती आ जाती है.

कै सुख अंग सरूप के, कै सुख रंग रसाल ।
कै सुख मीठी जुबांन के, कै प्याले देत रस लाल ॥ ११

श्रीराजजीके अङ्गोंमें तथा उनके प्रेम रसमें अपार सुख हैं. इसी प्रकार वे अपनी मधुरवाणीसे प्याले भर-भरकर ब्रह्मआत्माओंको प्रेमसुधाका पान करवाते हैं एवं उन्हें निमग्न कर देते हैं.

कै सुख अमृत सींचत, ज्यों रोप सींचत बन माली ।
इन विध नैनों सींचत, रूह क्यों न लेवे गुलाली ॥ १२

जैसे माली पौधों पर जलका सिञ्चन करता है उसी प्रकार श्रीराजजी अपनी आत्माओं पर अमृत रसका सिंचन करते हैं. वे अपने नयनोंसे जब इस प्रकार प्रेमका सिञ्चन करते हैं तब आत्माएँ प्रेमकी मस्तीमें लाल क्यों न हो जाएँ ?

जो कछु बोले रूह मुखथें, सो नीके सुनें हक कान ।
ऐसा मीठा जवाब तोहे देवहीं, कोई ना सुख इन समान ॥ १३

ब्रह्मआत्माएँ अपने मुखसे जो कुछ बोलतीं हैं उसे श्रीराजजी ध्यान पूर्वक सुनते हैं फिर उन्हें ऐसे मधुर स्वरमें उत्तर देते हैं कि उसके समान अन्य कोई सुख ही नहीं होता है.

अरस परस सुख देवहीं, नाहीं इन सुख को पार ।
ए रस इसक सागर को, अरस रूहें पीवें बारंबार ॥ १४

इस प्रकार श्रीराजजी एवं ब्रह्मआत्माएँ परस्पर सुखका आदान प्रदान करते

हैं. इस सुखका कोई पारावार नहीं है. ब्रह्मात्माएँ ही प्रेम सागरके इस रसका वारंवार अनुपान करतीं हैं.

ए सुख सागर पांचमा, इसक सागर दिल हक ।
पेहेले चार देखे सागर, कोई ना हक दिल माफक ॥ १५

यह पाँचवाँ सागर श्रीराजजीके हृदयके प्रेमका सागर है. इससे पूर्व अन्य चारों सागरोंका वर्णन हुआ है किन्तु इस सागरके समान अन्य कोई भी सागर नहीं है.

हकें तोहे खेल देखाइया, बेवरा वास्ते इसक ।
क्यों न देखो पट खोलके, नजर खोली है हक ॥ १६

हे आत्मा ! श्रीराजजीने तुझे प्रेमका विवरण समझानेके लिए ही यह खेल दिखाया है. उन्होंने तारतम ज्ञानके द्वारा तेरी दृष्टि भी खोल दी है. अब तू अपने अन्तर पट खोलकर क्यों नहीं देखती है.

इन ठौर बैठे देखाइया, साहेबी हक बुजरक ।
पैठ हक दिल बीच में, पी प्याले इसक ॥ १७

श्रीराजजीने मूलमिलावामें बैठकर (इस खेलके माध्यमसे) अपनी श्रेष्ठ प्रभुताका दर्शन करवाया है. इसलिए हे आत्मा ! उनके हृदयमें प्रवेश कर उनकी प्रेम सुधाका पान कर.

तो हकें कह्या अरस अपना, इसक दिल मोमन ।
सो इसक करे जाहेर, दिल पैठ हक के तन ॥ १८

इसीलिए श्रीराजजीने ब्रह्मआत्माओंके प्रेमपूर्ण हृदयको अपना परमधाम कहा है. अतः अब वे ही ब्रह्मआत्माएँ धामधनीके हृदयमें प्रवेश कर उनका प्रेम प्रकट कर रहीं हैं.

इसक गुझ दिल हक का, सो करे जाहेर माहें खिलवत ।
सो खिलवत ल्याए इत आसिक, करी इसकें जाहेर न्यामत ॥ १९

श्रीराजजी अपने हृदयमें स्थित प्रेमके गूढ़ रहस्यको मूलमिलावामें प्रकट करते

हैं. उसी मूलमिलावाको अपने हृदयमें धारण कर ब्रह्मआत्माएँ इस जगतमें आई हैं एवं परमधामकी अमूल्य निधि स्वरूप प्रेमको प्रकट कर रहीं हैं.

इत दुनियां चौदे तबक में, एक दम उठत है जे ।
जो हक सहूर कर देखिए, तो सब वास्ते इसक के ॥ २०

इन चौदह लोकोंमें यदि हम एक भी श्वास ले रहे हैं तो वह प्रेमके लिए ही है. श्रीराजजी प्रदत्त तारतमज्ञान पर विचार करनेसे ही यह ज्ञात होता है.

ए इसक सब हक का, अरस हादी रूहों सों ।
ए अरस दिल जाने मोमिन, जो हक की वाहेदत मों ॥ २१

यह सम्पूर्ण प्रेम श्रीराजजीका ही है. वे श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मआत्माओंको यह प्रदान कर रहे हैं. धामहृदया ब्रह्मआत्माएँ ही इस रहस्यको समझ सकतीं हैं. जिनके मूल स्वरूप (पर-आत्मा) मूलमिलावेमें विराजमान हैं.

ए किया एतेही वास्ते, तुमारे दिल उपजाया एह ।
ए खेल में देखे जुदे होए, लेने मेरा इसक सनेह ॥ २२

श्रीराजजीने ब्रह्मआत्माओंको यही कहा, हे आत्माओ ! इसी प्रेमके लिए तुम्हें जगतका यह खेल दिखाया है एवं तुम्हारे हृदयमें भी इसे देखनेकी इच्छा उत्पन्न करवाई. मेरे प्रेम और स्नेहका अनुभव करनेके लिए ही तुम मुझसे दूर होकर यह खेल देख रहीं हो.

ए इसक सागर अपार है, वार न पाइए पार ।
ए लेहेरी इसक सागर की, हक देवें सोहागिन नार ॥ २३

वस्तुतः प्रेमका यह सागर अपार है. श्रीराजजी अपनी सुहागनी आत्माओंके लिए ही प्रेम सागरकी इन तरङ्गोंका सुख प्रदान कर रहे हैं.

जो हक तोहे अन्तर खोलावहीं, तो आवे हक लजत ।
और बडे सुख कै अरस के, पर ए निपट बडी न्यामत ॥ २४

जब श्रीराजजी तुम्हारी अन्तरदृष्टि खोल देंगे तभी तुम्हें उनका आनन्द प्राप्त हो सकेगा. यद्यपि परमधाममें अन्य अपार सुख हैं तथापि यह प्रेम सबसे बड़ी अमूल्य निधि है.

लेहेरी इसक सागर की, जो तूं लेवे रूह इत ।
तो तूं देखे सुख इसक के, ए होए ना बिना निसबत ॥ २५

हे आत्मा ! यदि तू प्रेम सागरकी तरङ्गोंको यहाँ पर प्राप्त करना चाहती है तो प्रेमके आनन्दका अनुभव कर. परन्तु यह पूर्व सम्बन्धके बिना प्राप्त नहीं होता है.

और सुख इन लेहेरन को, आवत खिलवत याद ।
इन हक इसक सागर की, कै नेहेरें सुख स्वाद ॥ २६

इसके अतिरिक्त इन लहरोंका दूसरा आनन्द यह भी है कि इससे हमें मूलमिलावाका स्मरण हो आता है. धामधनीके प्रेम सागरकी इन धाराओंसे अनेक प्रकारके सुखोंका स्वाद प्राप्त होता है.

यों सुख इसक सागर को, धनी प्यारें देत रूहन ।
सो इत देखाए मेहेर कर, जो इसकें किए रोसन ॥ २७

इस प्रकार श्रीराजजी अपनी आत्माओंको प्रेमके सागरके अपार सुख प्रेमपूर्वक प्रदान करते हैं. अपनी अहैतुकी कृपा द्वारा प्रेम प्रदान कर उन्होंने यहाँ भी ब्रह्मआत्माओंके हृदयको प्रकाशित किया है.

जो सुख इसक सागर को, माहें हेत प्रीत तरंग ।
ए जो अरस अरवाहों को, आए खिलवत के रस रंग ॥ २८

प्रेम सागरके इन अपार सुखोंमें प्रीति एवं स्नेहकी तरङ्गें उठतीं रहतीं हैं. जिससे परमधामकी आत्माओंको मूलमिलावेके आनन्दका अनुभव होता है.

जो हक तोहे देवें हिंमत, तो रूह तूं पी सराब ।
ए कायम मस्ती अरस की, जो साकी पिलावे आब ॥ २९

हे आत्मा ! यदि श्रीराजजी तुझे साहस प्रदान करें तो तू इस प्रेम सुधाका पान कर. यह परमधामकी शाश्वत मस्ती है. स्वयं श्रीराजजी अमृतके रूपमें इसका पान करवा रहे हैं.

सुख हक इसक के, जिनको नाहीं सुमार ।
सो देखन को ठौर इत है, जो रूह सों करो विचार ॥ ३०

श्रीराजजीके प्रेममें प्राप्त होने वाले सुखोंका कोई पारावार नहीं है. यदि

आत्मदृष्टिसे विचार करेगी तो ज्ञात होगा कि यह नश्वर जगत धनीके इसी प्रेमका महत्व समझनेका स्थान है.

जेते सुख इसक के, लेते अरस के मांहिं ।
सो देखन को ठौर एह है, और ऐसा न देख्या कांहिं ॥ ३१

हमें परमधाममें धामधनीके प्रेमका जो आनन्द प्राप्त होता था उसीका अनुभव करनेका स्थान यह नश्वर जगत है. इस जगतके अतिरिक्त अन्य किसी भी स्थानमें इस प्रेमका महत्त्व समझा नहीं जा सकता.

कबूं अरस में न होए जुदागी, ना जुदागी ए न्यामत ।
ए बातें दोऊ अनहोनियां, सो हक हम वास्ते करत ॥ ३२

परमधाममें धामधनीसे कभी भी हमारा वियोग नहीं होता और न ही उनके प्रेमका वियोग हो सकता है. इसलिए इन दोनों असम्भवोंको धामधनी हमारे लिए इस जगतमें सम्भव करवा रहे हैं.

इसक पाइए जुदागिएं, सो तुम पाई इत ।
वतन हकीकत सब दई, ऐसा दाव न पाइए कित ॥ ३३

हे आत्मा ! वियोग होने पर ही प्रेमका वास्तविक अनुभव होता है. इसलिए इस जगतमें तुझे यह वियोग प्राप्त हुआ है. श्रीराजजीने तुझे तारतम ज्ञानके द्वारा इस जगतमें परमधामकी संपूर्ण वास्तविकताका परिचय करवाया है. ऐसा सुन्दर अवसर अन्यत्र कहीं भी प्राप्त नहीं हो सकता है.

फेर कब जुदागी पाओगे, छोड के हक अरस ।
बैठे खेल में पिओगे, हक इसक का रस ॥ ३४

हे आत्मा ! धामधनीके दिव्य परमधामको छोड़ने पर तुझे पुनः ऐसा वियोग कब प्राप्त होगा ? इस प्रकार नश्वर जगतमें बैठकर धामधनीके प्रेमका रसपान तू पुनः कब कर पाएगी ?

याद करो इसक को, कायम अरस में लेत जो सुख ।
अलेखे अनगिनती, सो देत लजत माहें दुख ॥ ३५

हे आत्मा ! अब उस प्रेमको याद कर जिसे तू दिव्य परमधाममें सदैव प्राप्त

करती थी. अब इस दुःखरूपी संसारमें भी धामधनी तुझे उसी शाश्वत सुखका स्वाद प्रदान करा रहे हैं.

जो सहूर करो तुम दिल से, खेल में किए बेसक ।
तो फुरसद न पाओ दमकी, सुख इसक गिनती हक ॥ ३६

यदि हृदय पूर्वक विचार करके देखेगी, तो तुझे ज्ञात होगा कि धामधनीने इस नश्वर जगतमें भी तुझे तारतम ज्ञानके द्वारा सन्देह रहित बना दिया है. इस प्रकार धामधनी द्वारा प्रदान किए गए सुखोंकी गणना करने लग जाएगी तो तुझे पल मात्रका भी अवकाश (फुरसद) प्राप्त नहीं होगा.

ए किया तुमारे वास्ते, जो धनी खोले नजर एह ।
तो कै देखो माहें बातून, हक का प्रेम सनेह ॥ ३७

यदि धामधनीने तारतम ज्ञानके द्वारा तेरी आत्मदृष्टि खोल दी है तो तुझे ज्ञात होना चाहिए कि यह खेल तेरे लिए ही बनाया गया है. तब तू श्रीराजजीके प्रेम एवं स्नेहके गूढ़ रहस्योंको भी समझ लेगी.

ए नजर तुमें तब खुले, जो पूरन करें हक मेहेर ।
तो एक हक के इसक बिना, और देखो सब जेहेर ॥ ३८

तेरी आत्मदृष्टि तभी खुलेगी जब श्रीराजजी तुझ पर पूर्णरूपसे कृपा करेंगे. तब तुझे श्रीराजजीके प्रेमके अतिरिक्त अन्य सब कुछ विषतुल्य लगने लगेगा.

हकें मेहेर विध विध करी, पर किन किन खोली ना नजर ।
सो भी वास्ते इसक के, करसी बातें हांसी कर ॥ ३९

श्रीराजजीने तो अपनी आत्माओं पर अनेक प्रकारसे कृपा की है तथापि कितनी आत्माओंने अभी तक अपनी दृष्टि नहीं खोली (जागृत नहीं हुई) हैं. धामधनीने प्रेमकी पहचानके लिए ही ऐसा करवाया है. परमधाममें जागृत होने पर ऐसी आत्माओंकी हँसी करते हुए वे इनसे बात करेंगे.

खेल बनत याही विध, एक भागे एक लरें ।
इनकी हांसी बडी होएसी, जब घरों बैठ बातां करें ॥ ४०

इस खेलकी रचना ही इस प्रकार हुई है कि यहाँ पर कोई दौड़ रहे हैं तो

कोई परस्पर झगड़ रहे हैं. जब परमधाममें जागृत होकर इस खेलकी बातें करेंगे तब ऐसी आत्माओं पर बड़ी हँसी होगी.

ए खेल सोई हांसी सोई, और सोई हक का इसक ।
सो सब वास्ते हांसीय के, जो इत तुमें किए बेसक ॥ ४१

इस खेलकी रचना इसीलिए हुई है एवं उपहास भी इसीलिए होगी कि तुमने इसकी माँग की थी. इसमें भी तुम्हें श्रीराजजीका प्रेम ही प्राप्त हो रहा है. अब श्रीराजजी तुम्हें तारतम ज्ञान प्रदान कर सन्देह रहित बना रहे हैं, यह भी हँसीके लिए ही है.

जो देखे इत आंखां खोल के, तो देखे हक का इसक अपार ।
सोई हांसी देखे आप पर, तो क्यों कहूं औरों सुमार ॥ ४२

जो आत्मा यहीं पर जागृत होकर देखने लगेगी तो उसे धामधनीके अपार प्रेमका अनुभव होगा. वही आत्मा स्वयं पर हो रहे उपहासको भी देख पाएगी, किन्तु जिनमें जागृति ही नहीं है, ऐसी आत्माओं पर होने वाली अपार हँसीके विषयमें मैं क्या कहूँ ?

मैं बोहत हांसी देखी आप पर, अनगिनती हक इसक ।
इलम धनी के देखाइया, मैं दोऊ देखे बेसक ॥ ४३

मैंने जागृत होकर मुझपर हो रहे उपहासको स्वयं देखा एवं श्रीराजजीके अपार प्रेमका अनुभव भी किया. धामधनी द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञानके द्वारा ही मैंने निस्सन्देह इन दोनोंका अनुभव किया है.

मोकों धनिएं देखाइया, सब इसक चौदे तबक ।
इत जरा न बिना इसक, अपना ऐसा देखाया हक ॥ ४४

धामधनीने मुझे चौदह लोकयुक्त इस नश्वर जगतमें भी अपना ही प्रेम दिखाया है. उन्होंने ऐसा प्रेम दिखाया कि उसके अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता है.

जो जागो सो देखियो, मेरी तो निसा भई ।
रूह देखे सो दिल लग न आवहीं, तो क्यों सके जुबां कही ॥ ४५

जो आत्मा जागृत हो गई है वह इस वास्तविकताका अनुभव करे. मुझे तो

निश्चय हो गया है. आत्मा जिस प्रेमका अनुभव करती है वह हृदयमें ही उतर नहीं पाता तो उसे शब्दोंके द्वारा कैसे व्यक्त करूँ ?

ए तो केहेती हों खेल का, और कहां कहूं अरस की इत ।
अरस का इसक तो कहों, जो ठौर जरे की पाउं कित ॥ ४६

यह तो मैंने खेलकी स्थिति बताई है. इस नश्वर जगतमें परमधामकी वास्तविकताको कैसे व्यक्त करूँ ? परमधामके शाश्वत प्रेमके विषयमें तो तभी कहा जा सकता है जब कहनेके लिए लेशमात्र भी कहीं कोई स्थान प्राप्त हो .

मोमिन होए सो समझियो, ए वीतक कहे महामत ।
अब बात न रही बोलन की, कह्या चलते जान निसबत ॥ ४७

जो ब्रह्मआत्माएँ हैं वे समझें. महामतिने यह आपबीती कही है अब तो कहनेकी भी कोई बात शेष नहीं रही है. इतना भी अपने आत्म सम्बन्धी समझकर प्रसङ्गानुसार कहा है.

प्रकरण १२ चौपाई ९८९

सागर छठा खुदाई इलम का (ब्रह्मज्ञानका सागर)

सागर छठा है अति बडा, जो खुदाई इलम ।
जरा सक इनमें नहीं, जिनमें हक हुकम ॥ १

ब्रह्मज्ञानका यह छठा सागर अतीव विशाल है. इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है कि इस सागरमें स्वयं श्रीराजजीका आदेश समाया हुआ है.

जेता तले हुकम के, ए जो कादर की कुदरत ।
ए सब बेसक तौलिया, सक न पाइए कित ॥ २

समर्थ परमात्माकी यह सम्पूर्ण सृष्टि (प्रकृति) उनके ही आदेशके अधीन है. मैंने इसपर भलीभाँति विचार किया है, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है.

आसमान जिमी के बीचमें, बेसक हुता न कोए ।
जब लग सक दुनियां मिने, तो कायम क्यों कर होए ॥ ३

पृथ्वीसे लेकर आकाश तक इस समस्त ब्रह्माण्डमें आज तक कोई भी सन्देह

रहित नहीं हुआ है. जब तक इस जगतमें सन्देह ही बना रहेगा तब तक यह अखण्ड कैसे हो सकेगा ?

अव्वल से आखर लग, इत जरा न काहूं सक ।
रूहअल्ला के इलम से, हुए कायम चौदे तबक ॥ ४

सद्‌गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराज द्वारा लाए गए तारतम ज्ञानके द्वारा आदिसे लेकर अन्त तक समग्र सृष्टिके विषयमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं रहा है. अब तो ये चौदह लोक अखण्ड हो जाएँगे.

इसक काहूं ना हुता, तो नाम आसिक कह्या हक ।
सो बल इन कुंजीय के, पाया इसक चौदे तबक ॥ ५

इस ब्रह्माण्डमें कहीं भी प्रेमकी सुधि नहीं थी. इसलिए परमात्माको अनुरागी (आशिक) कहा जाता था. अब तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीके प्रतापसे चौदह लोकोंके जीवोंको भी प्रेमकी पहचान हो गई है.

ए दुनियां पैदा किन करी, हुती न काहूं खबर ।
सो सक मेटी सबन की, इलम खुदाई आखर ॥ ६

आज तक किसी को भी यह सुधि नहीं थी कि इस जगतकी रचना किसने की है. अब इस अन्तिम समयमें तारतम ज्ञानका अवतरण होनेसे सभीका यह सन्देह मिट गया है.

वेद और कतेब में, कहूं सुध न हुती मुतलक ।
खोल हकीकत मारफत, किन काढी न सुभे सक ॥ ७

वेद तथा कतेब आदिके द्वारा किसीको भी आज तक परमात्माकी वास्तविक सुधि नहीं हुई थी. आज तक किसीने भी परमात्माकी यथार्थता (हकीकत) स्पष्ट कर उनकी पूर्ण पहचान (मारफत) नहीं करवाई जिसके कारण किसीके भी सन्देह दूर नहीं हुए.

बडे सात निसान आखर के, जासों पाइए क्यामत ।
खिताब हादी जाहेर कर, दई सबों को नसीहत ॥ ८

इस सृष्टिके अन्तिम समयके लिए कुरानमें सात चिह्न निर्देशित किए गए थे.

जिससे जीवोंकी मुक्तिका समय ज्ञात होगा, ऐसा कहा गया था. स्वयं सद्गुरुने (मेरे अन्दर बैठकर) प्रकट रूपसे सभीको इस निश्चित समयका बोध करवाया है.

आजूज माजूज लेसी सबों, ऊगे सूरज मगरब ।
ईसा मारें दजाल को, एक दीन करसी सब ॥ ९

कुरानमें ऐसा वर्णन है कि अन्तिम समयमें याजूज तथा माजूज (दिन रात) सभीकी आयु समाप्त कर देंगे, पश्चिमसे सूर्य उदय होगा तथा ईसा (सद्गुरु) प्रकट होकर नास्तिकता रूपी शैतान (दज्जाल) को मारकर सभीको एक ही परब्रह्म परमात्माकी उपासना करने वाले सत्य धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म) की ओर प्रेरित करेंगे.

दाभा होसी जाहेर, मेहेदी मोमिनों इमामत ।
उडावे सूर असराफील, बेसक पाया बखत ॥ १०

तब मनुष्यकी आकृतिका भयङ्कर पशु (दाभातुलअर्ज) पृथ्वी पर प्रकट होगा एवं महदी (सद्गुरु) ब्रह्मआत्माओंके समुदायके साथ प्रकट होकर धर्मका नेतृत्व करेंगे. इस्त्राफील नामक देवदूत (फरिस्ता) प्रकट होकर ज्ञानका शङ्खनाद करेगा. उस समय सभीको सन्देह रहित ज्ञान प्राप्त होगा.

काफर और मुनाफक, हंसते थे महंमद पर ।
सोई दिन अब आए मिल्या, जो महंमदें कही थी आखर ॥ ११

रसूल मुहम्मदकी इस भविष्यवाणी पर नास्तिक तथा मिथ्याचारी लोग उपहास करते थे. अब वह समय आ गया है जिसको रसूल मुहम्मदने अन्तिम (आत्म-जागृतिका) समय कहा था.

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत ।
करें सिफायत आखर, खासल खास उमत ॥ १२

रसूल मुहम्मदने बशरी (मानवी), मलकी (दैवी सम्पदा सम्पन्न) एवं हकी (ब्रह्मज्ञानयुक्त) इन तीन स्वरूपोंका उल्लेख किया था और यह भी कहा था कि ये तीनों अन्तिम समयमें श्रेष्ठ समुदाय (ब्रह्म-सृष्टि) के साथ प्रकट होकर सभी जीवोंकी अनुशंसा (सिफारिश) करेंगे.

करम कांड और सरीयत, किन किन लई तरीकत ।
दुनियां चौदे तबक में, किन खोली ना हकीकत ॥ १३

जगतके अधिकांश जीव कर्मकाण्ड अथवा शराअके मार्ग पर चलते हैं. उनमें कतिपय लोगोंने उपासना (तरीकत) का मार्ग ग्रहण किया. किन्तु इन चौदह लोकोंके जीवोंमें किसी ने भी परमात्माकी यथार्थताको स्पष्ट नहीं किया है.

नासूत मलकूत लाए की, ना सुध थी जबरूत ।
नाम पढे जानत हैं, कहें बका लाहूत ॥ १४

इन जीवोंको मृत्यु लोक (नासूत) से लेकर बैकुण्ठ (मलकूत) तथा शून्य निराकार (ला-मकान) सहित यह समग्र क्षर ब्रह्माण्ड तथा इससे परे अक्षरधाम (जबरूत)की सुधि नहीं थी. यहाँके पठित लोग भी अखण्ड परमधाम (लाहूत) का नाम ही जानते थे, उन्हें इसकी यथार्थ सुधि ही नहीं थी.

ए सुध न पाई काहूं ने, क्यों है कहां ठौर विध किन ।
खोज खोज चौदे तबक का, दिल हुआ न किन रोसन ॥ १५

आज तक किसीको भी यह सुधि नहीं थी कि अखण्ड परमधाम कहाँ पर स्थित है तथा वह किस प्रकारका स्थान है. उन्होंने चौदह लोकोंमें अखण्ड धामको खोजनेका प्रयत्न अवश्य किया किन्तु किसीको भी इस धामकी झलक नहीं मिली.

सो इलम खुदाई लुदंनी, पोहोंच्या चौदे तबक ।
सो इतथें मेहेर पसरी, सबे हुए बेसक ॥ १६

अब तो परब्रह्म परमात्मा द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञान इन चौदह लोकोंमें प्रसारित हुआ है. यहीं से धामधनीकी अपार कृपा चारों ओर प्रसारित हुई है जिससे सभी लोग सन्देह रहित हो जाएँगे.

अव्वल कह्या फुरमान में, इत काजी होसी हक ।
करसी कायम सबन को, ऐसी मेहेर होसी मुतलक ॥ १७

रसूल मुहम्मदने कुरानमें पहले से ही कह दिया था कि परब्रह्म परमात्मा

न्यायाधीश बनकर इस जगतमें आएँगे एवं सभी जीवोंको शाश्वत मुक्ति स्थान प्रदान करेंगे. परमात्माकी यह अपार कृपा अवश्य ही सभीको प्राप्त होगी.

ए खेल किया किन वास्ते, और हुआ किन के हुकम ।
ए सुध काहूं ना परी, कहां अरस बका खसम ॥ १८

संसारकी यह रचना किस लिए हुई है, किसके आदेश से हुई है, अखण्ड परमधाम तथा परब्रह्म परमात्मा कहाँ पर हैं ? इत्यादि सुधि आज तक किसीको भी नहीं हुई थी.

गिरो रूहें फिरस्ते लैल में, किन वास्ते आए उतर ।
कुंन केहेते खेल पैदा किया, ए किनने किन खातर ॥ १९

ब्रह्मआत्माएँ तथा ईश्वरी सृष्टि इस महिमामयी रात्रिमें किस लिए अवतरित हुईं हैं तथा 'हो जा' (कुन) कह कर यह सम्पूर्ण सृष्टि किसने तथा किसके लिए उत्पन्न की है. यह सुधि किसीको भी नहीं थी.

किन कौल किया बीच अरस के, कहे अरवाहें जो मोमिन ।
सो पढे वेद कतेब को, ए खोली ना हकीकत किन ॥ २०

परमधाम मूलमिलावामें ब्रह्मआत्माओंसे किसने अपने आनेका वचन दिया था ? अनेक लोगोंने वेद तथा कतेबको अवश्य पढ़ा किन्तु किसीने भी इस यथार्थताको स्पष्ट नहीं किया.

ए इलमें सब विध समझे, सांचा इलम जो हक ।
सब मर मर जाते हुते, किए इलमें बका मुतलक ॥ २१

अब इस तारतम ज्ञानके द्वारा समस्त वास्तविकताका परिचय हुआ है. यही सत्य ब्रह्मज्ञान है. आज तक जन्म मृत्युके चक्करमें पड़े हुए ये जीव अब इस ब्रह्मज्ञानके द्वारा निश्चय ही अखण्ड हो गए हैं.

क्यों सदर तुल मुंतहा, क्यों है अरस अजीम ।
क्यों कौल फैल हक के, क्यों हक सूरत हलीम ॥ २२

अक्षरधाम (सद्र-तुल-मुंतहा) कहाँ पर है, श्रेष्ठ परमधाम (अर्श-ए-अजीम) कैसा है, परब्रह्म परमात्माका दिव्य स्वरूप, उनकी वाणी तथा लीला कैसी है ? यह सुधि अभी तक किसीको नहीं थी.

क्यों अरस आगूं जोए है, क्यों अरस ढिग है ताल ।
क्यों पसू पंखी अरस के, क्यों बाग लाल गुलाल ॥ २३

परमधाममें रङ्ग महलके सम्मुख यमुनाजीका प्रवाह कैसा है, इसी रङ्ग भवनके निकट स्थित ताल (हौजकौसर)की शोभा कैसी है, वहाँके पशु, पक्षी तथा वन-उपवनकी लालिमायुक्त शोभा कैसी है ? इन विषयोंमें भी किसीको सुधी नहीं थी.

क्यों खासल खास उमत, बीच नूरतजल्ला जे ।
क्यों खास उमत दूसरी, जो कही बीच नूर के ॥ २४

श्रेष्ठ आत्माएँ परमधाममें परब्रह्म परमात्माके दिव्य प्रकाशसे कैसे आलोकित हैं ? अक्षरधाममें स्थित दूसरी ईश्वरीसृष्टि कौन-सी है इत्यादि ज्ञान किसीको नहीं था.

ए नाम निसान सबों लिखे, खुसबोए जिमी उजल ।
और कह्या पानी दूध सा, ताल जोए का जल ॥ २५

परमधामकी उज्ज्वल भूमिकी सुगन्ध तथा दूधकी भाँति श्वेत यमुनाजी एवं हौजकौसर तालका जल इत्यादिका वर्णन एवं उनका सङ्केत कुरानमें है.

जोए किनारे जरी देहुरी, पूर जवेर दरखत ।
ए नाम निसान सबे लिखे, पर कोई पावे ना हकीकत ॥ २६

यमुनाजीका रत्न जड़ित तट, उस पर स्थित देहुरियाँ तथा तालके पाल पर सुशोभित रत्नमय वृक्ष आदि सभीका उल्लेख कुरानमें है. किन्तु किसीने भी इस वास्तविकताको नहीं पहचाना है.

नेक नेक निसान केहेत हों, वास्ते साहेदी महंमद ।
ए पट खुल्या नूर पार का, कहों कहां लग काहूं न हद ॥ २७

रसूल मुहम्मदकी साक्षीके लिए ही मैंने कुरानके संकेतोंको संक्षेपमें कहा है. अब तो अक्षरसे भी परे अक्षरातीत परमधामके द्वार खुल गए हैं. उसकी असीम शोभाका वर्णन कहाँ तक किया जाए ?

इलम खुदाई लुदंनी, रूहअल्ला ल्याए इत ।
उमियों पट खोल बका मिने, बैठाए कर निसबत ॥ २८

परब्रह्म परमात्माका अखण्ड तारतम ज्ञान लेकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी इस जगतमें अवतरित हुए हैं. उन्होंने पारके द्वार खोलकर अपनी अङ्गस्वरूपा प्रेमी (लौकिक प्रपञ्चसे अनभिज्ञ) ब्रह्मआत्माओंको परमधाममें जागृत कर दिया.

ए बल इन कुंजीय का, काहूं हुता न एते दिन ।
रूहअल्ला पैगाम उमत को, द्वार खोल्या बका वतन ॥ २९

यह सामर्थ्य इसी तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीका है. आज तक यह ज्ञान इस जगतमें नहीं था. सद्गुरुश्री देवचन्द्रजी ही ब्रह्मआत्माओंके लिए यह सन्देश लेकर आए हैं और उन्होंने ही अखण्ड परमधामके द्वार खोल दिए हैं.

ए कायम अरस अपार है, जो कहावत है वाहेदत ।
कोई पोहोंचे न अरस रूहों बिना, जिनकी ए निसबत ॥ ३०

अखण्ड परमधामकी शोभा अपरम्पार है. इसे अद्वैत भूमि कहा गया है. यहाँ पर ब्रह्मआत्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी पहुँच नहीं सकता. क्योंकि उनका ही सम्बन्ध इसके साथ है.

ए बल देखो कुंजीय का, जिन बेवरा किया बेसक ।
ए भी बेवरा देखाइया, जो गैब खिलवत का इसक ॥ ३१

तारतमज्ञानरूपी कुञ्जीका सामर्थ्य तो देखो, जिसने निसन्देह ही अखण्ड धामका विवरण देते हुए वहाँके एकान्त स्थल मूलमिलावेके प्रेमका रहस्य स्पष्ट कर दिया है.

ए बल देखो कुंजीय का, जिन देखाई निसबत ।
ए जो रूहें जात हक की, जिन बेसक देखी वाहेदत ॥ ३२

इस ब्रह्मज्ञानके सामर्थ्यको तो देखो, जिसने अपने मूल सम्बन्धका अनुभव करवा दिया है. अक्षरातीत परमात्माकी अङ्ग स्वरूपा ब्रह्मआत्माओंने इसी ज्ञानके प्रतापसे निश्चय ही अपने अद्वैत भावका अनुभव किया है.

ए बल देखो कुंजीय का, खूब देखी हक सूरत ।
हक के दिल के भेद जो, सो इलमें देखी मारफत ॥ ३३

इसी तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीके प्रतापसे ही श्रीराजजीके स्वरूपकी पहचान हुई है. उनके हृदयके गूढ़ रहस्योंकी पूर्ण पहचान भी इसीके द्वारा हुई है.

कहा कहूं बल कुंजीय का, रूहें बडी रूह निसबत ।
और हक बडी रूह रूहन की, इन इलमें देखी खिलवत ॥ ३४

इस तारतमज्ञानकी क्षमताका क्या वर्णन करें ? इसके प्रतापसे ही ब्रह्मआत्माओंको श्रीश्यामाजी तथा श्रीराजजीके अद्वैत सम्बन्धकी पहचान हुई एवं मूलमिलावेके दर्शन हुए.

ए बल देखो कुंजीय का, नीके देख्या हक इसक ।
जुदे बैठाए लिखी इसारतें, जासों समझें रूहें बेसक ॥ ३५

इसी ब्रह्मज्ञानके प्रतापसे श्रीराजीके प्रेमकी भलीभाँति पहचान हुई कि उन्होंने ब्रह्मआत्माओंको दूर (मायामें) भेज कर भी परमधामके सङ्केत दिए, जिनको समझकर सभी सन्देह दूर हो गए हैं.

ए बल देखो इन कुंजीय का, बातें छिपी हक दिल की ।
सो सब समझी जात हैं, हैं अरस की गुझ जेती ॥ ३६

इस ब्रह्म ज्ञानमें यह शक्ति है कि इसके प्रतापसे श्रीराजजीके हृदयके एवं परमधामके सभी गूढ़ रहस्य समझमें आ जाते हैं.

देखो बल इन कुंजीय का, ए जो लिखी रमूजें हक ।
आखर रसूल होए आवहीं, दे इलम खोलावे बेसक ॥ ३७

इसी तारतम ज्ञानके प्रतापसे यह ज्ञात हुआ कि श्रीराजजीने कुरानके माध्यमसे इस प्रकार संकेत भेजे हैं. अन्तिम समयमें वे स्वयं अपना संदेश लेकर आएंगे एवं ब्रह्मज्ञान देकर सभीके सन्देह दूर करेंगे.

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बैठाई जुदी कर ।
आप केहे संदेसे कहावहीं, आप ल्यावें जुदे नाम धर ॥ ३८

इसी ज्ञानके प्रतापसे यह ज्ञात हुआ कि श्रीराजजीने अपनी आत्माओंको अपने चरणोंमें बैठाकर सुरताके रूपमें नश्वर जगतमें भेजा है एवं स्वयं विभिन्न

स्वरूपोंमें प्रकट होकर उन्हें भिन्न-भिन्न नामोंसे अपना ही सन्देश दे रहे हैं.

बल क्यों कहूं इन कुंजीय का, जो हक दिल गुझ इसक ।
तिन दरियाव की नेहेरें, उतरी नासूत में बेसक ॥ ३९

इस तारतम ज्ञानकी शक्तिका वर्णन कैसे करें ? जिसके द्वारा श्रीराजजीके हृदयमें स्थित प्रेमके सागरकी नहरें निश्चय ही इस नश्वर जगतमें उतर आई हैं.

बल कहा कहूं कुंजीय का, ए जो झूठा खेल रंचक ।
सो रूहों सांच कर देखाइया, बंध बांधे कै बुजरक ॥ ४०

इस ब्रह्मज्ञानकी क्षमताका वर्णन कैसे करें ? जिसके द्वारा यह सब ज्ञात हुआ कि ब्रह्म आत्माओंने नश्वर जगतके इस खेलको भी अखण्ड कर दिया है. श्रीराजजीने ही विभिन्न शास्त्रोंकी रचना करवा कर इसकी साक्षी दिलाई है.

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बीच चौदे तबक के आए ।
सो इलमें देखाया झूठ कर, बीच अरस के बैठाए ॥ ४१

इस ब्रह्मज्ञानकी शक्तिको तो देखो इसने चौदह लोकयुक्त जगतमें सुरताके रूपमें आई हुई ब्रह्म-आत्माओंको इस जगतकी अनित्यताका अनुभव करवाकर परमधाम मूलमिलावेमें जागृत कर दिया.

इन हक का इसक दुनी मिने, न पाइए लुदंनी बिन ।
बिना इसक न इलम आवही, दोऊ तौले अरस परस वजन ॥ ४२

वस्तुतः तारतम ज्ञानके बिना इस नश्वर जगतमें परब्रह्म परमात्माके शाश्वत प्रेमका अनुभव नहीं किया जा सकता. यद्यपि प्रेमके बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता, किन्तु दोनोंकी तुलना करने पर ज्ञात होता है कि दोनोंका पारस्परिक समान महत्त्व है.

ए कुंजी बल अपार है, जिनसों पाया अपार ।
लिया हक दिल गुझ इसक, जिनको काहूं न सुमार ॥ ४३

इस तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीका बल अपार है. इसीके द्वारा परमधामकी अपार सम्पदा प्राप्त होती है. श्रीराजजीके हृदयमें स्थित शाश्वत प्रेमकी अनुभूति भी इसी ज्ञानके द्वारा हुई है, जिसकी कोई सीमा ही नहीं है.

ए इलम कुंजी अरस की, रूहअल्ला ल्याए हकपें ।
माहें कै गुझ हक दिल की, सो सब देखी इन कुंजी सें ॥ ४४

निजानन्दाचार्य श्रीदेवचन्द्रजी श्रीराजजीके पाससे ही परमधामकी कुञ्जी स्वरूप यह ब्रह्मज्ञान लेकर इस जगतमें आए हैं. जिसमें श्रीराजजीके हृदयके अनेक गूढ रहस्य छिपे हुए हैं. उन सभीका ज्ञान इसीके द्वारा प्राप्त हुआ है.

आसमान जिमीके बीच में, बातें बिना हिसाब ।
तिनमें बातें जो हक की, सो लिखी मिने किताब ॥ ४५

इस जगतमें अध्यात्म विषयक अनेक चर्चाएँ हुई हैं. उनमें कुरानमें इस प्रकारका उल्लेख है कि एक ही परमात्माकी उपासना करनी चाहिए.

या जाहेर या बातून, रमूजें इसारत ।
सो खोल्या सब इन कुंजीएं, हकीकत या मारफत ॥ ४६

कुरानमें प्रकट तथा अप्रकट रूपमें जो भी सङ्केत दिए गए हैं उनकी यथार्थता तथा पूर्णज्ञान इसी तारतम ज्ञानके द्वारा स्पष्ट होता है.

अव्वल से आखर लग, किया कुंजिएं सबका काम ।
हैयाती चौदे तबकों, दै कायम भिस्त तमाम ॥ ४७

सृष्टिके आरम्भसे लेकर अन्त तक जो भी परमात्मा विषयक मनोरथ शेष रहे थे. उन सभीकी परिपूर्ति इसी ब्रह्मज्ञानके द्वारा हुई है. इतना ही नहीं इस ब्रह्मज्ञानके प्रतापसे यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अखण्ड हुआ तथा यहाँके सभी जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थल प्राप्त हुआ.

कहूं दुनियां चौदे तबक में, कह्या न हक का एक हरफ ।
तो हक सूरत क्यों केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ ॥ ४८

चौदहलोक युक्त इस ब्रह्माण्डमें किसीने भी परमात्माके विषयमें स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है. जिन्होंने परमात्माकी दिशा ही प्राप्त नहीं की वे उनके स्वरूपके विषयमें क्या कह सकते हैं ?

तिन हक के दिल का गुझ जो, सो कुंजिएं खोल्या इन ।
तो बात दुनी की इत कहां रही, कुंजी ऐसी नूर रोसन ॥ ४९

ऐसे पूर्णब्रह्म परमात्माके हृदयके प्रेमका रहस्य इसी तारतम ज्ञानके द्वारा स्पष्ट

हुआ है. इस ब्रह्मज्ञान रूपी कुञ्जीमें इतना अधिक प्रकाश है कि उसके समक्ष नश्वर जगतका ज्ञान निस्तेज हो जाता है.

सदर तुल मुंतहा अरस अजीम, जबरूत या लाहूत ।
इत जरा सक कहूं ना रही, ए बल कुंजी कूवत ॥ ५०

अक्षरधाम तथा परमधामके लिए सद्रतुलमुंतहा, अर्स-ए-अजीम अथवा जबरूत या लाहूत आदि शब्दोंका प्रयोग क्यों न हुआ हो, यह सब अक्षरधाम तथा परमधामके लिए है ऐसा स्पष्ट करनेकी क्षमता तारतम ज्ञानमें ही है. इस विषयमें कोई सन्देह ही नहीं है.

अरस अजीम के बाग जो, हौज जोए जानवर ।
इत सक जरा न काहूं में, मोहोलात या अन्दर ॥ ५१

परमधामके वन, उपवन, ताल, यमुनाजी, पशु, पक्षी तथा प्रासादोंकी आन्तरिक या बाह्य शोभाके विषयमें अब किसीमें भी कोई भी सन्देह नहीं रह गया है.

इन अरसों की भी क्या कहूं, इन कुंजी अतंत बुझ ।
और बात इत कहां रही, काढ्या हक के दिल का गुझ ॥ ५२

इन धामों (अक्षरधाम तथा परमधाम) की शोभाके विषयमें क्या कहा जाए ? यह तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी सर्व समर्थ है. जब इसने श्रीराजजीके हृदयमें स्थित प्रेमके गूढ रहस्यको भी स्पष्ट कर दिया है तो अन्य कौन-सी बात यहाँ पर शेष रह गई है ?

महामत कहे ऐ मोमिनो, ए ऐसी कुंजी इलम ।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढाए आप खसम ॥ ५३

महामति कहते हैं, हे ब्रह्म-आत्माओ ! यह तारतमज्ञान इस प्रकारकी महत्त्वपूर्ण कुञ्जी है. अपने प्रियतम धनीकी अपार कृपाको तो देखो. वे स्वयं तुम्हें यह ब्रह्मज्ञान प्रदान कर रहे हैं.

प्रकरण १३ चौपाई १०४२

अब कहूं दरिया सातमा, जो निसबत भर पूर ।
याको वार न पार काहूं, जो नूर के नूर को नूर ॥ १

अब मैं सातवाँ सागरका वर्णन कर रहा हूँ जो अद्वैत सम्बन्धसे परिपूर्ण है. श्रीराजजीकी तेजरूपा श्रीश्यामाजी एवं उनकी तेजरूपा ब्रह्मआत्माओंके सम्बन्धके इस सागरका कोई पारावार ही नहीं है.

बेसुमार ल्याए सुमार में, ए जो करत हों मजकूर ।
क्यों आवे बीच हिसाब के, जो हक अंग सदा हजूर ॥ २

इस शब्दातीत सम्बन्धको शब्दोंकी सीमामें निबद्धकर व्यक्त करनेका प्रयत्न कर रहा हूँ किन्तु जो सदा सर्वदा श्रीराजजीके निकट रहतीं हैं ऐसी श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्मआत्माओंके सम्बन्धकी अपार शोभाका वर्णन सीमित शब्दोंके द्वारा कैसे हो सकता है ?

खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत ।
तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत ॥ ३

इस सम्बन्धकी शोभाको शब्दोंमें कैसे व्यक्त किया जाए ? परमधामके इन सम्बन्धोंकी वास्तविकताके परिचयके लिए ही तारतम ज्ञानका अभ्युदय हुआ है. तभी श्रीराजजी और ब्रह्मआत्माओंके सम्बन्धकी पूर्ण पहचान हो सकी है.

निसबत असल सबन की, जित निसबत तित सब ।
सब निसबत के वास्ते, इलमें जाहेर किया अब ॥ ४

श्रीराजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मआत्माओंका यह सम्बन्ध शाश्वत एवं अखण्ड है. इस सम्बन्धमें परमधामकी सम्पूर्ण सम्पदा निहित है. इसी सम्बन्धकी पहचानके लिए तारतम ज्ञानका अवतरण हुआ है और वह सभी रहस्योंको प्रकट कर रहा है.

निसबत हक की जात हैं, निसबत में इसक ।
निसबत वास्ते इलम, इत आया बेसक ॥ ५

ब्रह्मात्माओंका सम्बन्ध श्रीराजजीके अङ्गोंसे है. इसीमें उनका शाश्वत प्रेम

समाया हुआ है. इसीकी पहचानके लिए इस जगतमें तारतम ज्ञानका अवतरण हुआ है और अब सभी सन्देह दूर हो गए हैं.

ए हकें किया इसक सों, कै बंध बांधे जहूर ।
सो जानत हैं निसबती, जो खिलवत हुई मजकूर ॥ ६

अपने प्रेमकी पहचानके लिए ही श्रीराजजीने इस खेलकी रचना करवाई एवं विभिन्न धर्मग्रन्थोंकी साक्षियाँ दिलवाई. परमधाम मूलमिलावामें हुई प्रेम चर्चाका रहस्य परमधामके सम्बन्धी ब्रह्मआत्माएँ ही जान सकतीं हैं.

हके निसबत वास्ते, कै बंध बांधे माहें खेल ।
सब सुख देने निसबत को, तीन बेर आए माहें लैल ॥ ७

इसी सम्बन्धकी पहचान करवानेके लिए श्रीराजजीने इस जगतमें विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ कीं. अपने सम्बन्धी ब्रह्मआत्माओंको अपार सुख प्रदान करनेके लिए ही वे इस महिमामयी रात्रिमें तीन बार (व्रज, रास एवं जागनीमें) आए हैं.

अव्वल देखाया लैल में, निसबत जान इसक ।
दूसरी बेर देखाइया, गुझ इसक मुतलक ॥ ८

सर्व प्रथम व्रज लीलामें उन्होंने अपनी आत्माओंको प्रेमका अनुभव करवाया. दूसरी बार रासकी लीलामें प्रेमके गूढ रहस्यको स्पष्ट किया.

वास्ते निसबत बेर तीसरी, खेल देखाया हक ।
इलम बडाई इसक की, देख्या गुझ बका का बेसक ॥ ९

इस सम्बन्धकी पूर्ण पहचान करवानेके लिए श्रीराजजीने तीसरी बार यह जागनी लीला दिखाई. जहाँ पर उनके तारतम ज्ञानके प्रतापसे सन्देह रहित होकर दिव्य प्रेम एवं अखण्ड परमधामके गूढ रहस्योंका स्पष्ट अनुभव किया.

निसबत वास्ते इसक, निसबत वास्ते इलम ।
खुसाली निसबत वास्ते, आखर ल्याए खसम ॥ १०

इसी सम्बन्धके लिए यह प्रेम है, इसीके लिए यह तारतमज्ञान है. इन्हीं ब्रह्मात्माओंको आनन्द प्रदान करनेके लिए धनी तारतम ज्ञान लेकर आए हैं.

ए इलम अंदर यों केहेत है, ए जो निसबत देखत दुख ।
इन दुख में बका अरस के, हैं हक दिल के कै सुख ॥ ११

तारतम ज्ञानके द्वारा यह ज्ञात हुआ कि ब्रह्मआत्माएँ जगतका दुःखरूपी खेल देख रहीं हैं परन्तु उसमें भी अखण्ड परमधाम तथा श्रीराजजीके हृदयके अपार सुख अन्तर्निहित हैं.

ए सुख सागर निसबत का, तिनका सुमार न आवे कांहिं ।
सब हकें मपाए सागर, पर निसबत तौल कोई नाहिं ॥ १२

यह सुख सागर मूल सम्बन्धका है. इसकी शोभाका कोई पारावार नहीं है. श्रीराजजीकी कृपासे अन्य सभी सागरोंका वर्णन हुआ किन्तु इस सम्बन्धके सागरकी तुलना अन्य किसीसे नहीं हो सकती.

मापे गेहेरे सागर, जिनको थाह न देखे कोए ।
तिन हक दिल अंदर पैठ के, मापे इसक सागर सोए ॥ १३

श्रीराजजीने मेरे हृदय पर विराजमान होकर इन गहन सागरोंका प्रेम पूर्वक वर्णन करवाया, जिनके सम्बन्धमें आज तक किसीको भी सुधि नहीं थी.

जो हक काहूं न पाइया, ना किन सुनिया कान ।
पाया न वाके अरस को, जो कौन ठौर मकान ॥ १४

जिन परमात्माके विषयमें आज तक किसीने न सुना था और न ही उनको प्राप्त किया था. इतना ही नहीं उनके धामकी भी सुधि किसीको नहीं थी कि वह कहाँ पर है.

सब बुजरकों ढूंढियां, किन पाई न बका तरफ ।
दुनियां चौदे तबक में, किन कह्या न एक हरफ ॥ १५

अनेक मनीषियोंने परमात्माकी खोज की किन्तु किसीको भी परमधामकी दिशा प्राप्त नहीं हुई. इसलिए इन चौदह लोकोंमें किसीने भी परमात्माके सम्बन्धमें एक शब्दका भी उच्चारण नहीं किया.

तिन हक दिल अंदर पैठके, माप्या सागर इसक ।
इन हक के इलमें रोसनी, सब मापे सागर बेसक ॥ १६

स्वयं परब्रह्म परमात्माने मेरे हृदयमें विराजमान होकर इन सागरोंका प्रेम

पूर्वक वर्णन करवाया है. इन्हीं परमात्माके द्वारा प्राप्त ब्रह्म ज्ञानके प्रकाशमें निश्चय ही मैंने इन सागरोंका वर्णन किया है.

सो इसक इलम सुख सागर, वास्ते आए निसबत ।
इन निसबत के तौल कोई, ल्याऊं कहां से हक न्यामत ॥ १७

प्रेम और ज्ञानके सुख सागरका वर्णन भी इसी सम्बन्धकी पहचानके लिए ही है. इसलिए इस सम्बन्धकी तुलनामें परमधामकी कौनसी अखण्ड सम्पदाका वर्णन करूँ ?

ए निसबत जो सागर, जानें निसबती मोमिन ।
कहूं थाह न गेहेरा सागर, कोई पावे न निसबत बिन ॥ १८

इस सम्बन्धके सागरको ब्रह्मआत्माएँ ही जान सकतीं हैं. यह सागर इतना अथाह एवं गहन है कि परमधामके सम्बन्धके बिना कोई भी इसकी गहराईको छू नहीं सकता.

तो क्यों कहूं जोड निसबत की, जो दीजे निसबत मान ।
निसबत हक की जात हैं, जो हक वाहेदत सुभान ॥ १९

इस अलौकिक सम्बन्धकी समानता किसके साथ की जाए ? यह तो श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्म-आत्माओंका सम्बन्ध है जो श्रीराजजीके एकात्मभावका द्योतक है.

बोहोत लेहेरी इन सागर की, मेहेर इसक इलम ।
सोभा तेज सुख कै बका, ए निसबत में जात खसम ॥ २०

इस सम्बन्धके सागरमें श्रीराजजीकी कृपा, प्रेम एवं ज्ञानकी अनेक तरङ्गें हैं. श्रीराजजीकी अङ्गस्वरूपा इन ब्रह्मात्माओंमें परमधामकी शोभा, तेज तथा अखण्ड सुख हैं.

ए इलम ए इसक, और निसबत कही जो ए ।
ए तीनों सिफत माहें मोमिनों, निसबत हक की जे ॥ २१

उपर्युक्त ज्ञान, प्रेम एवं सम्बन्ध जैसे तीनों गुणोंकी शोभा ब्रह्मआत्माओंमें ही निहित है क्योंकि ब्रह्मआत्माएँ श्रीराजजीकी अङ्गरूपा हैं.

किन पाया न इन इलम को, किन पाया ना ए इसक ।
तो क्यों पावे ए निसबत, पहेलें सूरत न पाई हक ॥ २२

इन ब्रह्मआत्माओंके अतिरिक्त अन्य किसीने भी आज तक इस ब्रह्मज्ञानको तथा दिव्य प्रेमको प्राप्त नहीं किया है. अतः ऐसे लोग ब्रह्मात्माओंके सम्बन्धकी पहचान कैसे कर सकते हैं जिनको परमात्माके स्वरूपकी ही पहचान नहीं है.

ए गुझ भेद हक रूहन के, हक दिल की भी और ।
ए जानें हक निसबती, जाको हक कदम तले ठौर ॥ २३

श्रीराजजी एवं ब्रह्मआत्माओंके सम्बन्धके गूढ़ रहस्यको तथा श्रीराजजीके हृदयके प्रेम भावको उनकी अङ्गरूपा ब्रह्मआत्माएँ ही जान सकतीं हैं जो स्वयं उनके श्रीचरणोंमें बैठीं हैं.

जब देखों हक निसबत, तब एकै हक निसबत ।
और हक का हुकम, कछू ना हुकम बिना कित ॥ २४

जब श्रीराजजीके इस अटूट सम्बन्ध पर दृष्टि पड़ती है तो उस समय मात्र उनका ही शाश्वत सम्बन्ध दिखाई देता है. जब जगतकी ओर दृष्टि पड़ती है तब सर्वत्र श्रीराजजीका ही आदेश दिखाई देता है, उसके अतिरिक्त कहीं कुछ भी नहीं है.

जो कोई हक के हुकम का, ताए जो इलम करे बेसक ।
लेवें अपनी मेहेर में, तो नेक दीदार कबूं हक ॥ २५

जो ब्रह्मआत्माएँ श्रीराजजीके आदेशके द्वारा जगतका यह खेल देखनेके लिए आईं हैं. यदि वे तारतमज्ञानके द्वारा सन्देह रहित हो जातीं हैं तो उन्हें श्रीराजजी अपनी अपार कृपाके अन्दर ले लेते हैं जिससे उनको श्रीराजजीके दर्शनका कुछ सौभाग्य प्राप्त होता है.

पर कबूं दीदार ना निसबत का, ना काहूं को एह न्यामत ।
ए जुबां इन निसबत की, कहा करसी सिफत ॥ २६

परन्तु अपनी अङ्गरूपा श्यामाजी एवं ब्रह्मआत्माओंके दर्शनका सौभाग्य कभी

भी किसीको प्राप्त नहीं हो सकता है. इसलिए इन अङ्गनाओंकी महिमाका वर्णन कैसे हो सकता है ?

ए जो सरूप निसबत के , काहूं न देवें देखाए ।
बदले आप देखावत, प्यारी निसबत रखें छिपाए ॥ २७

श्रीराजजी किसीको भी अपनी अङ्गनाओंका दर्शन नहीं कराते हैं. उनके स्थान पर वे स्वयं दर्शन देते हैं. वे सदैव अपनी प्रिय अङ्गनाओंको गुप्त रखते हैं.

निमूना इन निसबत का, कोई नाहीं इन समान ।
ज्यों निमूना दूसरा, दिया न जाए सुभान ॥ २८

इन अङ्गनाओंका कोई उदाहरण ही नहीं है क्योंकि इनके समान अन्य कोई नहीं है. जैसे श्रीराजजीके लिए अन्य किसीका उदाहरण नहीं दिया जा सकता उसी प्रकार इनका भी कोई उदाहरण नहीं है.

क्यों दीजे निमूना इनका, जो कही हक की जात ।
निसबत इसक इलम, ज्यों वृख फल फूल पात ॥ २९

इनके लिए उदाहरण ही कैसे दिया जा सकता है, ये तो स्वयं श्रीराजजीकी अङ्गनाएँ हैं. इन अङ्गनाओंका प्रेम तथा ब्रह्म ज्ञानका वही सम्बन्ध है जैसा वृक्ष, फल, फूल और पत्तेका होता है.

सब लगे हैं निसबत को, इसक इलम हुकम ।
ना तो कैसे इत जाहेर होए, हम तुम इसक इलम ॥ ३०

इस लिए प्रेम, ज्ञान एवं आदेश इन्हीं ब्रह्मआत्माओंके साथ संलग्न हैं. अन्यथा हमारे तथा तुम्हारे अवतरणके साथ शाश्वत प्रेम एवं तारतम ज्ञानका अवतरण कैसे हो सकता था ?

ए सब निसबत वास्ते, जो कछू सबद उठत ।
या जो नजरों देखत, या जो कानों सुनत ॥ ३१

शब्दोंके द्वारा जो वर्णन हो रहा है, जो दृष्टिसे दिखाई दे रहा है अथवा जो श्रवण-अङ्गोंसे सुनाई दे रहा है यह सब ब्रह्मआत्माओंके लिए ही है.

ज्यों हाथ पांऊं सूरत के, मुख नेत्र नासिका कान ।
त्यों सब मिल एक सूरत, यों वाहेदत अंग सुभान ॥ ३२

जिस प्रकार हाथ, पाँव, मुख, नेत्र, नासिका, कर्ण आदि सभी अङ्ग एक ही शरीरके कहलाते हैं उसी प्रकार ब्रह्मआत्माएँ तथा श्यामाजी सभी श्रीराजजीके ही अद्वैत स्वरूपमें हैं.

अब कहा कहूं निसबत की, दिया न निमूना जात ।
और सबद ना इन ऊपर, अब कहा कहूं मुख बात ॥ ३३

श्रीराजजीकी इन अङ्गनाओंके विषयमें अब अधिक क्या कहा जाए ? इनके लिए कोई उदाहरण ही नहीं है. इनके वर्णनके लिए अन्य कोई शब्द भी तो नहीं है. इस लिए जिह्वाके द्वारा अधिक क्या कहूँ ?

सिफत अलेखे निसबत, ज्यों सिफत अलेखें हक ।
सबदातीत न आवे सबद में, मैं कही इन बुध माफक ॥ ३४

जिस प्रकार श्रीराजजीकी महिमा शब्दातीत है उसी प्रकार उनकी अङ्गनाओं (श्यामाजी तथा ब्रह्मआत्माओं) की महिमा भी शब्दातीत है. यद्यपि शब्दातीतकी शोभा शब्दोंके द्वारा व्यक्त नहीं हो सकती तथापि मैंने अपनी बुद्धिकी सीमाके अनुसार इसके लिए प्रयत्न किया है.

जो कहिए सारी उमर लग, तो सिफत न आवे सुमार ।
ए दरिया निसबत का, याकी लेहेरें अखंड अपार ॥ ३५

पूरी आयु तक इनकी महिमाका गायन किया जाए तो भी इसका पार पाया नहीं जा सकता. यह तो श्रीराजजीकी अङ्गना ब्रह्मआत्माओं तथा श्यामाजीका सागर है. इसकी तरङ्गें अखण्ड तथा अपार हैं.

ए बात बडी हक निसबत, सो झूठे खेल में नाहिं ।
ए बात होत बका मिने, हक खिलवत के माहिं ॥ ३६

श्रीराजजीकी अङ्गनाओंकी विशेषता अपरिमित है. इस नश्वर खेलमें उनके सम्बन्धकी पहचान नहीं हो सकती. यह तो अखण्ड परमधाममें मूलमिलावाके अन्दर ही सम्भव है.

जो खेल में खबर ना हक की, तो निसबत खबर क्यों होए ।
हक आसिक निसबत मासूक, वाहेदत में ना दोए ॥ ३७

इस नश्वर जगतमें जब परमात्माकी ही सुधि नहीं है, तो यहाँ पर उनकी अङ्गनाओंकी सुधि कैसे हो सकती है ? यद्यपि इस जगतमें अपनी प्रणयिनी आत्माओंके लिए स्वयं श्रीराजजी चाहक (आशिक) बन कर आए हैं किन्तु अद्वैत परमधाममें ये सभी एक ही अद्वैत स्वरूपमें हैं.

ए बात सुने जो खेल में, बडा अचरज होवे तिन ।
किन पाई ना तरफ हक की, ए तो हक मासूक वतन ॥ ३८

इस नश्वर जगतमें जो अद्वैत स्वरूपके विषयमें सुनता है उसे बड़ा आश्चर्य होता है क्योंकि इस जगतमें किसीने भी आज तक परमात्माकी दिशा नहीं पाई है. यह परमधाम तो श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मआत्माओंका घर है.

तीन सूरत महंमद की, गुझ हक का जानें सोए ।
हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए ॥ ३९

रसूल मुहम्मदने जिन तीन स्वरूपों (सुरतों) की चर्चा की है वे ही श्रीराजजीके हृदयके गूढ रहस्यको जान सकते हैं. या तो स्वयं श्रीराजजी इस रहस्यको जानते हैं या उनकी अङ्गनाएँ (ब्रह्मआत्माएँ) जानतीं हैं. इनके अतिरिक्त अन्य कोई हो तभी तो जान सकते.

वाहेदत की ए पेहेचान, अरस दिल कह्या मोमन ।
मासूक कह्या महंमद को, जो अरस में याके तन ॥ ४०

एकात्मता (वाहेदत) की पहचान ही यही है कि ब्रह्मआत्माओंके हृदयको ही श्रीराजजीका परमधाम कहा गया है. इसलिए श्रीश्यामाजी (मुहम्मद)को माशूक (प्रेमपात्र) कहा गया क्योंकि इनका मूल स्वरूप परमधाममें विराजमान है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, ए निसबत इसक सागर ।
ल्यो प्याले हक हुकमें, पिओ फूल भर भर ॥ ४१

महामति कहते हैं, हे ब्रह्म-आत्माओ ! श्रीराजजी, श्रीश्यामाजी एवं ब्रह्म-

आत्माओंके प्रेमका यह सागर है. अब श्रीराजजीके आदेशसे प्याले भर-भर कर इस प्रेम सुधाका निरन्तर पान करो.

प्रकरण १४ चौपाई १०८३

सागर आठमा मेहेरका (श्रीराजजीकी कृपाका आठवां सागर)

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत ।
लेहेरें आवे मेहेर सागर, खूबी सुख समेत ॥ १

श्रीराजजीकी कृपाका यह (मेहेर) सागर अतिशय शोभा सम्पन्न है. इसमें अपार सुखोंकी लेहेरें निरन्तर उठा करतीं हैं.

[पूर्व वर्णित सातों सागरोंमें प्रत्येकमें एक-एक रसका वर्णन है परन्तु इस मेहेर सागरमें पूर्व कथित सभी सागरोंके रसके साथ-साथ कृपाका विशेष रस समाहित है इसलिए यहाँ पर 'और' कहा है.]

हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग ।
इसक आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग ॥ २

श्री राजजीका आदेश उनकी कृपाके अधीन है, जोश भी कृपाका अङ्ग स्वरूप है. शाश्वत प्रेम एवं जागृत बुद्धिका ज्ञान भी उनकी कृपासे ही प्राप्त होते हैं.

पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत ।
हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत ॥ ३

जहाँ पर श्रीराजजीकी असीम कृपा पूर्णरूपसे होती है, वहाँ अन्य किस वस्तुकी आवश्यकता शेष रहेगी ? किन्तु श्रीराजजीकी कृपा उन पर ही होती है जिनका मूल सम्बन्ध श्रीराजजीसे है.

मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम ।
जलुस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम ॥ ४

सर्व प्रथम ब्रह्मात्माओं पर श्रीराजजीकी असीम कृपा होती है. तदुपरान्त उनका आदेश उनको प्राप्त होता है इसके साथ-साथ ज्ञान एवं आवेश आदि भी प्राप्त होते हैं. अपनी अङ्गनाओंके लिए श्रीराजजी किसी भी प्रकारकी कमी रहने नहीं देते हैं.

ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर ।
जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर ॥ ५

ब्रह्मात्माओं पर अपार कृपा कर उन्हें प्रेमका महत्त्व समझानेके लिए ही इस नश्वर जगतकी रचना हुई है. इसीलिए इस खेलमें भी श्रीराजजी उनको कृपापूर्वक खेला रहे हैं. जिससे श्रीराजजीकी कृपा दूर हो जाती है उसे यह सम्पूर्ण खेल विषतुल्य लगने लगेगा.

दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखे ऊपर का जहूर ।
जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखर होत हक से दूर ॥ ६

इस जगतके खेलमें श्रीराजजीकी कृपा दो प्रकार से (बाह्य तथा आन्तरिक) देखी जाती है. जगतके जीव उनकी बाह्यकृपा (भौतिक सुख) को देखते हैं किन्तु जो आन्तरिक कृपा (आत्मिक सुख) से वञ्चित रह जाते हैं वे अन्ततोगत्वा श्रीराजजीके सान्निध्यसे भी वञ्चित रह जाएँगे.

मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहिं ।
आखर लग तरफ धनीकी, कमी कछु ए आवत नाहिं ॥ ७

वास्तवमें आन्तरिक कृपा ही विशेष मानी गई है. जो बाह्य (भौतिक) एवं आन्तरिक (आत्मिक) दोनों सुख प्रदान करती है. जो अन्तिम पल तक श्रीराजजीके प्रति दृढ़ श्रद्धा रखता है उसे किसी भी प्रकारकी कमी नहीं आती है.

मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व ।
पिंड ब्रह्मांड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत ॥ ८

श्रीराजजीकी असीम कृपा जिस पर होती है वह आत्मा पाँचों तत्त्वोंमें (पूरे जगतमें) उनकी कृपाके ही दर्शन करती है. उसके लिए पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड भी कृपामय हो जाते हैं. ऐसी आत्मा सर्वदा स्वयंको कृपाके अन्तर्गत पाती है.

ए दुख रूपी इन जिमीमें, दुख न काहूं देखत ।
बात बडी है मेहेर की, जो दुखमें सुख लेवत ॥ ९

जिस पर श्रीराजजीकी कृपा होती है वह आत्मा इस दुःखमय जगतमें भी

दुःखका नहीं अपितु सुखका ही अनुभव करती है. यही तो श्रीराजजीकी कृपाकी विशेषता है.

सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर ।
दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर ॥ १०

परमधाममें सर्वदा सुख ही सुख हैं. इसलिए वहाँ पर ब्रह्मात्माओंको सुखके स्वादका अनुभव नहीं हुआ. वस्तुतः दुःख प्राप्त होने पर ही तो सुखका स्वाद प्राप्त हो सकता है. (इसलिए ब्रह्मात्माओंको दुःखमय जगतमें भेजा गया). अब श्रीराजजीकी कृपासे ही उनकी आत्मदृष्टि खुल रही है.

इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखे दुख दूर ।
कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर ॥ ११

इस दुःखमय जगतमें रहते हुए भी श्रीराजजीकी कृपासे स्वयंको दुःखसे दूर देख सकते हैं. श्रीराजजीकी कृपासे ही सर्वदा उनके अखण्ड सुख प्राप्त होते हैं.

मैं देख्या दिल विचार के, इसक हक का जित ।
इसक मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित ॥ १२

मैंने हृदयपूर्वक विचार करके देखा तो ज्ञात हुआ कि जहाँ भी उनका प्रेम है वहाँ पर उससे पूर्वसे ही उनकी कृपा है. क्योंकि उनकी कृपासे ही प्रेमका आविर्भाव होता है.

अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक ।
मेहेर सब विध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक ॥ १३

श्रीराजजी जिसको अपना ज्ञान देते हैं उसे अपनी कृपासे सन्देह रहित बना देते हैं. उनकी कृपा सभी गुणोंको खींच लेती है, जिससे उनका आदेश तथा जोश भी खींचे हुए चले आते हैं.

जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावे वजूद ।
गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूकत माहें बूंद ॥ १४

श्री राजजी जिसको अपनी कृपा दृष्टिके अन्तर्गत लेना चाहते हैं, वे उसके

शरीरको भी पहलेसे ही योग्य बना देते हैं. जिससे उसके गुण, अङ्ग तथा इन्द्रियाँ आदि सभी कृपामय हो जाते हैं फिर उस शरीरमें कृपापूर्वक आत्माका प्रवेश करवाते हैं.

मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चंवर सिर छत्र ।
सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र ॥ १५

जिसके ऊपर श्रीराजजीकी अपार कृपा होती है उसके लिए उनकी कृपाकी ही बैठक, सिंहासन, चँवर, सिरछत्र, सहचारी सैन्य तथा इच्छानुकूल वाद्ययन्त्र आदि प्राप्त होते हैं.

[तात्पर्य यह है कि जिसको धनीकी कृपाका अनुभव हुआ उसे उसी कृपामें सम्पूर्ण भौतिक वैभवका भी अनुभव हो जाता है. जैसे इन्द्रावतीको हुआ है.]

बोली बोलावे मेहेर की, और मेहेरै का चलन ।
रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन ॥ १६

जिस पर धनीकी अपार कृपा होती है उसकी वाणी तथा व्यवहारमें भी रात-दिन वही कृपा झलकती रहती है. अन्ततः आत्माको मूलमिलावाका सुख भी इसी कृपासे प्राप्त होता है.

बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम ।
रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इसक इलम ॥ १७

श्रीराजजीकी कृपा एवं उनके आदेशसे ही ब्रह्मात्माएँ पूजा-अर्चना तथा वन्दना करतीं हैं. इस प्रकार ब्रह्मात्माएँ कृपाकी छत्रछायामें बैठकर प्रेम तथा ज्ञानका रस आस्वादन करतीं हैं.

जित मेहेर तित सब हैं, मेहेर अव्वल लग आखर ।
सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर ॥ १८

जहाँ पर कृपा होती है, वहीं सब कुछ हो जाता है. यह कृपा आरम्भसे लेकर अन्त तक बनी रहती है. इसी कृपाके कारण सत्य सङ्गत प्राप्त होता है. इस प्रकार इस कृपाकी महिमाका वर्णन कैसे करें ?

एह जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत ।
सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत ॥ १९

इस कृपाके सागरमें बाह्य तथा आन्तरिक (भौतिक तथा आध्यात्मिक) दोनों प्रकारके सुख प्राप्त हैं. वस्तुतः जहाँ कृपा होती है वहाँ सर्वप्रकारके सुख प्राप्त होते हैं.

बीच नाबूद दुनीय के, आई मेहेर हक खिलवत ।
तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत ॥ २०

श्री राजजीकी कृपासे ही इस नश्वर जगतमें ब्रह्मात्माएँ अवतरित हुई हैं. उन्हींके द्वारा जगतके जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थलका सुख प्राप्त होगा. वस्तुतः यह सब श्रीराजजीकी कृपाका ही प्रताप है.

वरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत ।
ए मेहेर हककी बातूनी, नजर माहें बसत ॥ २१

श्रीराजजीकी कृपाका वर्णन कैसे करें ? उसकी प्रशंसाके लिए शब्द भी मौन रह जाते हैं. उनकी यह आन्तिरक कृपा उनकी ही दृष्टिमें रहती है अर्थात् जिस पर उनकी कृपादृष्टि होती है उसे अपार सुख प्राप्त होता है.

ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तोलत ।
जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत ॥ २२

इसी कृपासे सभी रहस्य स्पष्ट हो जाते हैं, इसीसे सबके सिद्धान्तोंका मूल्याङ्कन होता है. जिस पूर्णब्रह्म परमात्माके विषयमें आज तक किसीने यथार्थ रूपसे सुना भी नहीं था उनके गूढ़ रहस्योंको भी इसी कृपाने स्पष्ट कर दिया है.

वरनन करूं क्यों मेहेरकी, जो बसत हक के दिल ।
जाको दिलमें लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल ॥ २३

श्रीराजजीके हृदयमें स्थित इस कृपाका वर्णन कैसे करें ? वे जिसको हृदयमें ले लेते हैं वहाँ पर सभी सम्पदाएँ स्वतः चली आतीं हैं.

वरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक ।
जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक ॥ २४

श्रीराजजीके अन्दर सर्वदा रहनेवाली इस कृपाका वर्णन ही कैसे करें ? जिसको वे अपनी कृपासे विभूषित कर देते हैं उसे वे उसकी क्षमताके अनुरूप सामर्थ्य प्रदान करते हैं.

बात बडी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब ।
निमख ना छोडें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब ॥ २५

इस कृपाकी बात ही निराली है. जिस पर कृपा दृष्टि होती हो, उसे सब कुछ प्राप्त हो जाता है. वे उसे पल मात्रके लिए भी अपनी दृष्टिसे दूर नहीं करते. अब इससे अधिक क्या कहूँ ?

जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर ।
मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर ॥ २६

जिन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें श्रीराजजी का वास है उन्हीं पर उनकी दृष्टि भी है. जहाँ पर उनकी दृष्टि होती है वहीं पर उनकी कृपा होती है. इसलिए ब्रह्मात्माओंको श्रीराजजीकी कृपाके अतिरिक्त सब कुछ विषतुल्य लगता है.

बात बडी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकुर ।
अंकुर सोई हक निसबती, माहें बसत तजल्ला नूर ॥ २७

श्रीराजजीकी कृपाकी महिमा अति विशेष है किन्तु सम्बन्धके बिना वह प्राप्त नहीं होती है. वस्तुतः ब्रह्मात्माओंका ही सम्बन्ध श्रीराजजीसे है, वे ही तेजोमय भूमि परमधाममें रहतीं हैं.

ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम ।
मेहेर रेहेत नूर बल लिएं, तहां हक इसक इलम ॥ २८

जैसे ही श्रीराजजीकी कृपा प्राप्त होती है वैसे ही उनका जोश तथा उनकी आज्ञा प्राप्त होती है. वस्तुतः यह कृपा तेजोमय शक्तिके साथ ही रहती है उसके साथ श्रीराजजीका प्रेम तथा ज्ञान भी रहते हैं.

मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम ।
मेहेर इसक हक अंग है, मेहेर इसक प्रेम काम ॥ २९

श्रीराजजीकी इस कृपा सागरमें मधुर सुख तथा शान्ति है. कृपा तथा प्रेम दोनों श्रीराजजीके ही अङ्ग हैं. कृपाके द्वारा धामधनीसे मिलनेकी उत्कण्ठा उत्पन्न होती है.

काम बडे इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक ।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक ॥ ३०

धामधनीकी कृपाके कार्य अति महान हैं जिनके ऊपर यह कृपा होती है उसे वे अपने अनुरूप बना देते हैं.

मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमन ।
मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फिरस्तन ॥ ३१

श्रीराजजीकी कृपासे ही ब्रह्मात्माओंके लिए इस नश्वर जगतकी रचना हुई है एवं इसमें ब्रह्मात्माओं तथा ईश्वरीसृष्टिका अवतरण सुरताके रूपमें हुआ है.

मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान ।
कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान ॥ ३२

श्रीराजजीकी कृपासे ही उनका सन्देश लेकर रसुल मुहम्मद इस जगतमें आए हैं. सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराज भी उन्हींकी कृपासे तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर आए और उन्होंने पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान करवाई.

दै मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत ।
मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत ॥ ३३

श्रीराजजीकी कृपासे ही सद्गुरु (श्री देवचन्द्रजी) ने मुझे तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी प्रदान की जिससे मैंने रसूल मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट तीनों स्वरूपोंका रहस्य स्पष्ट किया. इसी कृपाने मुझे शक्ति दी जिसके कारण मैंने परमधामकी यथार्थता स्पष्ट कर दी.

सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखरत ।
मेहेरे समझे मोमन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत ॥ ३४

श्रीराजजीकी कृपाने ही कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट किए एवं आत्मजागृतिका (अन्तिम) दिन भी प्रकट कर दिया. इसी कृपाके द्वारा ब्रह्मात्माओंने यह रहस्य समझा और मूलमिलावेके प्रेम सम्वादके गूढ़ रहस्य भी स्पष्ट कर दिए.

ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत ।
दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत ॥ ३५

वस्तुतः ब्रह्मात्माओं पर ही यह कृपा हुई है क्योंकि ये ही सर्वश्रेष्ठ समुदाय (खासलखास उमत) हैं. इसी कृपाके प्रतापसे उन्होंने जगतके जीवोंको मुक्तिस्थलका सुख प्रदान किया है.

मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तलें कदम ।
मेहेरें क्यामत करके, मेहेरें हंसके मिले खसम ॥ ३६

श्रीराजजीकी कृपासे ही ब्रह्मात्माओंने यह खेल देखा है और वे इस खेलमें भी श्रीराजजीके चरणोंमें आ गईं हैं. अब इसी कृपाके द्वारा जागृत होकर वे हँसती हुई अपने धनीसे मिलेंगी.

मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार ।
मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नाहीं सुमार ॥ ३७

यदि कृपाका कोई पारावार होता तो मैं उसकी चर्चा अवश्य करता. इस कृपाने सभी सम्पदाओंका निरूपण किया (मापा) किन्तु यह स्वयं अपना निरूपण नहीं कर सकता है.

जो मेहेर ठाढी रहे, तो मेहेर मापी जाए ।
मेहेर पलमें बढे कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए ॥ ३८

यदि यह कृपा स्थिर होती तो इसे मापा जा सकता किन्तु यह तो पलमात्रमें करोड़ों गुणा बढ़ जाती है. इसलिए इसे कैसे मापा जाए ?

मेहेरें दिल अरस किया, दिल मोमिन मेहेर सागर ।
हक मेहेर ले बैठे दिलमें, देखो मोमिनों मेहेर कादर ॥ ३९

श्रीराजजीकी कृपाने ही ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम बनाया है. अब उनके हृदयमें कृपाका अथाह सागर उमड़ने लगा. हे ब्रह्मात्माओ देखो ! तुम्हारे हृदयमें श्रीराजजी कृपापूर्वक विराजमान हो गए हैं. यह उनकी महती कृपाका परिणाम है.

बात बडी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार ।
सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार ॥ ४०

श्रीराजजीकी यह कृपा अति श्रेष्ठ है. यह तो उनके हृदयका प्रेम स्वरूप है. इसके महत्त्वको या उनका हृदय जानता है या उनकी यह कृपा ही जानती है.

जो एक वचन कहूं मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए ।
अपार उमर अपार जुबांए, तो मेहेर को हिसाब न होए ॥ ४१

श्रीराजजीकी कृपाका एक भी शब्द मुझसे कहा जा रहा है तो उसे तुम उसी कृपाके द्वारा समझनेका प्रयत्न करो. अन्यथा अपार समय तक असंख्य जिह्वासे इसका वर्णन करने लगें तो भी इसका निरूपण नहीं हो सकता.

निपट बडा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान ।
जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेरकी होए पेहेचान ॥ ४२

श्रीराजजीकी कृपाका यह आठवाँ सागर वस्तुतः अति विशाल है. हे आत्मा ! तुझ पर श्रीराजजीकी असीम कृपा हुई है जिससे तुझे इसकी पहचान हो गई.

सात सागर वरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब ।
ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कै कोट करूं किताब ॥ ४३

सातों सागरोंका वर्णन हो गया किन्तु इस कृपा सागरका कोई पारावार नहीं है. इसका वर्णन करते हुए यदि करोड़ों ग्रन्थोंकी रचना भी करने लगें तथापि इसका कोई पार पाया नहीं जा सकेगा.

ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर ।
ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर ॥ ४४

इस कृपा सागरको तो ब्रह्मात्माएँ ही जान सकतीं हैं जिन पर यह कृपा हुई है. इसलिए ब्रह्मात्माओंको श्रीराजजीकी कृपाके अतिरिक्त अन्य सब कुछ विषतुल्य लगने लगता है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, ए मेहेर बडा सागर ।
सो मेहेर हक कदमों तलें, पीओ अमीरस हक नजर ॥ ४५

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! श्रीराजजीकी कृपाका यह सागर अति महान है. अब इसी कृपाके द्वारा श्रीराजजीके चरणोंमें जागृत होकर उनकी दृष्टिके अमृत रसका पान करो.

प्रकरण १५ चौपाई ११२८

श्री सागर सम्पूर्ण

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहां नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

– *महामति श्री प्राणनाथ*

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर